प्राथमिक ७

नया नियम
आयु ८–११

प्राथमिक ७

नया नियम
आयु ८–११

आठ से ग्यारह वर्ष की आयु के बच्चों को शिक्षा देने के लिए

अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर
सॉल्ट लेक सिटी, यूटाह
द्वारा प्रकाशित

© 1994, 1997 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा
सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत में छपी
अंग्रेजी अनुमति : 06/97
अनुवाद अनुमति : 06/97
Primary 7: New Testament का अनुवाद
Hindi
34604 294

विषय-सूची

पाठ संख्या और शीर्षक		पृष्ठ
शिक्षिका के लिए सहायता		v
१	नये नियम से परिचित होना	१
२	यीशु मसीह ने हमारा उद्धारकर्ता होना स्वीकार किया था	४
३	यूहन्ना बपतिस्मा वाले ने यीशु मसीह के लिए रास्ता तैयार किया था	८
४	यीशु मसीह स्वर्गीय पिता का पुत्र है	११
५	यीशु मसीह का बचपन	१३
६	यीशु मसीह का बपतिस्मा	१६
७	यीशु मसीह शैतान के द्वारा लालच में पड़ता है	१९
८	यीशु मसीह मंदिर की सफाई करता है	२३
९	यीशु मसीह अपने प्रेरितों को नियुक्त करता है	२७
१०	पहाड़ पर उपदेश	३१
११	यीशु मसीह प्रार्थना के बारे में शिक्षा देता है	३५
१२	चट्टान पर बना घर	३९
१३	यीशु मसीह बीमारों को चंगा करता है	४२
१४	यीशु मसीह और सब्त का दिन	४५
१५	यीशु मसीह ने अपने पौरोहित्य शक्ति का उपयोग दूसरों को आशीष देने के लिए किया था	४८
१६	यीशु मसीह ने चमत्कार किये थे	५२
१७	बीज बोनेवाले और गेहूँ और जंगली बीज के दृष्टांत	५५
१८	जन्म से एक अन्धे मनुष्य को यीशु मसीह चंगा करता है	५८
१९	खोई हुई भेड़, खोया हुआ सिक्का, और उड़ाऊ पुत्र	६१
२०	अच्छे सामरी का दृष्टांत	६४
२१	यीशु मसीह दस कोढ़ियों को चंगा करता है	६७
२२	निर्दयी सेवक	७०
२३	अच्छा चरवाहा	७३
२४	विधवा की दमड़ी	७६
२५	दस कुंवारियों का दृष्टांत	८१
२६	तोड़ों का दृष्टांत	८५

२७	भेड़ और बकरी का दृष्टांत	८९
२८	यीशु मसीह लाजर को जीवित करता है	९२
२९	यीशु मसीह का विजय प्रवेश और आखिरी भोज	९५
३०	गतसमनी में यीशु मसीह	९८
३१	यीशु मसीह से विश्वासघात, बंदीगृह और परीक्षा	१०३
३२	यीशु मसीह का क्रूसारोहण और दफन-क्रिया	१०६
३३	यीशु मसीह का पुनरूत्थान	११०
३४	मेरी भेड़ों की रखवाली करो	११३
३५	यीशु मसीह का प्रचार कार्य	११७
३६	पिन्तेकुस्त का दिन	१२१
३७	प्रेरित पतरस	१२५
३८	बरनबास, हनन्याह, और सफीरा	१२९
३९	शहीद स्तिफनुस	१३३
४०	पतरस और कुरनेलियुस	१३७
४१	याकूब हमें अपनी जीभ पर लगाम लगाना सीखाता है	१४१
४२	शाऊल का परिवर्तन	१४५
४३	पौलुस यीशु मसीह की गवाही देता है	१४९
४४	प्रचारक पौलुस	१५२
४५	पौलुस की रोम यात्रा	१५६
४६	यीशु मसीह फिर से आएगा	१६०
४७	पौरोहित्य हमारे जीवन को आशीषित कर सकता है (पौरोहित्य के लिए तैयारी पाठ)	१६५

शिक्षिका के लिए सहायता

उद्धारकर्ता ने आज्ञापालन और आज्ञाओं को सीखाने के महत्व की शिक्षा दी थी जब उसने कहा था, "जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा" (मत्ती ५:१९) । बच्चों की सीखने में सहायता के लिए आपको एक पवित्र भरोसा दिया गया है कि वे अपने बपतिस्मा के अनुबंधों को कैसे रखें और सेवा करें । जैसे-जैसे प्रत्येक लड़की युवती बनने की तैयारी करता है और प्रत्येक लड़का युवक बनने की तैयारी करता है और पौरोहित्य प्राप्त करता है, आप उनके 'जजीवन में एक महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकती हैं ।

१८३१ में, गिरजाघर के स्थापित होने के शीघ्र पश्चात, उद्धारकर्ता ने शिक्षा दी थी कि शिक्षकों को उसके उन सुसमाचार सिद्धांतों की शिक्षा देनी चाहिए जोकि बाइबिल और मॉरमन की पुस्तक में हैं, उस समय केवल वही उपलब्ध थे । आज शिक्षकों के ऊपर सभी आदर्श कार्यों की पवित्र सच्चाइयों की शिक्षा की जिम्मेदारी है, सिद्धांत और अनुबंध और अनमोल मोती को सम्मिलित करते हुए जो बच्चों की परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास को बढ़ाने में सहायता करता है ।

अध्ययन के पाठ्यक्रम

सभी बच्चे जो १ जनवरी को आठ से ग्यारह वर्ष के हो जाते हैं उन्हें प्राथमिक ४,५,६ और ७ पुस्तिकाओं में से एक से पढ़ना होता है । इस आयु के सभी बच्चों के लिए प्रत्येक वर्ष अध्ययन के पाठ्यक्रम में से केवल एक का उपयोग किया जाता है । अध्ययन का प्रत्येक पाठ्यक्रम धर्मशास्त्र की एक विशेष किताब पर आधारित होता हैः प्राथमिक ४ मॉरमन की पुस्तक पर, प्राथमिक ५ सिद्धांत और अनुबंध पर, प्राथमिक ६ पुराने नियम पर, और प्राथमिक ७ नये नियम पर । ४ वर्ष की अवधि के ऊपर के बच्चे आदर्श कार्यो में से प्रत्येक का अध्ययन करेंगे ।

स्थानीय पढ़ना और आठ से ग्यारह वर्ष की आयु के बच्चों की संख्या पर निर्भर करते हुए, कक्षाओं को एक ही आयु के दलों में, एक साथ सभी आयु के दलों में, या अलग-अलग लड़के और लड़कियों की कक्षाओं में संगठित किया जा सकता है । फिर भी कक्षा को व्यवस्थित करने के लिए आपको यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि प्रत्येक बच्चे पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए ।

जब बच्चे बारह वर्ष के हो जाते हैं, वे युवतियों की सभा या हारूनी पौरोहित्य में उपस्थित होना आरंभ करते हैं । फिर भी, जनवरी के पहले सप्ताह तक वे रविवार विद्यालय के समय के दौरान अपनी प्राथमिक कक्षा में उपस्थित होना जारी रखते हैं, जब वे रविवार विद्यालय में उपस्थित होना आरंभ करते हैं ।

पौरोहित्य तैयारी पाठ

एक विशेष पाठ, "पौरोहित्य हमारे जीवन को आशीषित कर सकता है", इस पुस्तिका में सम्मिलित है । इस पाठ का उपयोग ११ वर्ष के बच्चों की शिक्षिकाओं के द्वारा किया जाता है जब लड़के डीकन बनने की और लड़कियाँ युवतियों की सभा में जाने की तैयारी करती हैं । आपकी कक्षा में पहले बच्चे के १२ वर्ष का होने से पहले इस पाठ को पढ़ायें । प्रभु की सहायता के लिए प्रार्थना करें जब आप पाठ की तैयारी करती हैं और प्रस्तुत करती हैं ताकि बच्चे समझ सकें कि पौरोहित्य क्या है, यह उनके जीवन को कैसे आशीषित कर सकता है, और वे पौरोहित्य से सम्मान के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को कैसे पूरा कर सकते हैं ।

ईस्टर और बड़े दिन पर पाठ

इस पुस्तिका में ईस्टर और बड़े दिन पर कोई विशेष पाठ नहीं पाये जाते हैं । क्योंकि पुस्तिका यीशु मसीह के जीवन और प्रचार कार्य पर प्रकाश डालती है, आपको शायद ईस्टर और बड़े दिन के लिए अतिरिक्त पाठों की आवश्यकता महसूस नही होगी । यदि आप एक विशेष पाठ की शिक्षा देना चाहती हैं तो आप एक की तैयारी मॉरमन की पुस्तक और नये नियम के सन्दर्भो और अन्य साधन जैसे कि सुसमाचार कला चित्र किट और लियाहोना के उपयुक्त प्रकाशनों का उपयोग करते हुए कर सकती हैं । उन पाठों की योजना बनाएं जो बच्चों को यीशु मसीह के नजदीक महसूस होने और उसके प्रचार कार्य को समझने में सहायता करेंगे ।

इस पुस्तिका से शिक्षा देना

अध्ययन का यह पाठ्यक्रम नये नियम की शिक्षाओं पर केन्द्रित है, यीशु मसीह के जीवन और सेवकाई पर जोर देते हुए । जब आप इस शिक्षाओं को बाँटती हैं और उनपर चर्चा करती हैं, बच्चे यीशु मसीह की सेवकाई और प्रायश्चित को अच्छी तरह से समझने में समर्थ होते हैं और उसमें महान विश्वास को बढ़ाते हैं और उसमें अपनी गवाही को बढ़ाते हैं । उन्हें सीखना चाहिए कि उनके स्वयं के जीवन में यीशु मसीह की शिक्षाओं को कैसे लागू किया जाए और उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए एक मजबूत इच्छा को पाया जाए ।

बच्चों को घर पर नये नियम को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । यीशु के प्रेम को सीखने और उसकी शिक्षाओं को अच्छी तरह से समझने के द्वारा, बच्चे उद्धारकर्ता के प्रेम में बढ़ेंगे और उसकी तरह बनना चाहेंगे । महत्वपूर्ण सच्चाइयाँ जिसे बच्चे यीशु के जीवन और शिक्षाओं से सीखते हैं वे उनकी अनुबंधों को रखने की तैयारी में और उनके सारे जीवन में गिरजाघर में सेवा करने में सहायता करेंगे । आज के संसार में बुराइयों का सामना करने के लिए ये सच्चाइयाँ उन्हें बल भी देंगी ।

शिक्षा देने के लिए स्वयं को तैयार करना

बच्चों को पढ़ाने की आपकी पवित्र बुलाहट को पूरा करने के लिए, आपको मानसिक और आत्मिक दोनों रूप से तैयार होना चाहिए । इस तैयारी का हिस्सा उन सिद्धांतों को समझना और एक गवाही को प्राप्त करना है जिसकी आप शिक्षा देती हैं । उद्धारकर्ता, सभी से महान शिक्षक ने हमें सीखाया है कि अन्यों के लिए उसके सुसमाचार की शिक्षा की तैयारी कैसे करनी चाहिए:

- प्रभु ने हमें विनम्र बनने की आज्ञा दी थी, और प्रतिज्ञा की थी कि जब हम विनम्र बनते हैं, वह हाथ के द्वारा हमारा मार्गदर्शन करेगा और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा । यदि हम विनम्र बनते हैं तो हमें जानने का अधिकार होता है कि प्रभु कैसे चाहता है कि हम उसके बच्चों को सीखाएं ।

- धर्मशास्त्रों और जीवित भविष्यवक्ताओं के शब्दों का अध्ययन करें । प्रभु के शब्दों को सीखने और मनन करने में महान शक्ति है । उसने हमें सबसे पहले उसके शब्दों को प्राप्त करना खोजने की आज्ञा दी थी, और तब हमारी जबान नम्र होगी । तब, यदि हम चाहेंगे, हमारे पास मनुष्यों को समझाने के लिए उसकी आत्मा और उसके शब्द, परमेश्वर की शक्ति होगी (देखें सि.और अनु ११:२१) ।

  एक अन्तिम-दिन भविष्यवक्ता, अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने प्रभु के शब्दों को सीखने की हमारी आवश्यकता पर फिर से कहा था : "मैं आपसे अपने आपको धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने के लिए फिर से वचनबद्ध होने के लिए अनुरोध करता हूँ । अपने आपको इनमें डुबो दो ताकि आपके पास अपनी बुलाहट को पूरा करने के लिए आत्मा की शक्ति हो" (*Ensign*, मई १९८६, पृ. ८२) ।

- अपने अनुबंधों को रखें । उन अनुबंधों को मानने में जिसे आपने स्वर्गीय पिता के साथ बनाया है उसमें आपके विश्वासपूर्णता के आधार पर आपकी योग्यता आत्मा के द्वारा निर्देशित की जाएगी । आप एक अच्छा उदाहरण रखेंगे जब आप उन अनुबंधों को मानने की कोशिश करते हैं जिसे आपने बनाया है (देखें सि. और अनु.) । जब बच्चे उद्धारकर्ता के प्रति आपके प्रेम और जीवित सुसमाचार के प्रति समर्पण को देखते हैं तो वे उसका अनुसरण करने के लिए अधिक प्रेरित होंगे ।

- उन तरीकों को खोजें जो उद्धारकर्ता के प्रेम को महसूस करने में बच्चों की सहायता करता है । अक्सर उन्हें बताएं कि आप उनसे कितना प्रेम करते हैं और उनकी योग्यता और क्षमता को स्वीकार करें । आपका प्रेम और उदारता, बच्चों को स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रेम को समझने में सहायता करेगा जो उनके पास बच्चों के लिए है । यह उनकी अन्यों को प्रेम करना सीखने में भी सहायता करेगा ।

अपने पाठों की तैयारी करना

यब पुस्तिका आपकी उन पाठों को संगठित करने में सहायता करेगा जो धर्मशास्त्रों पर प्रकाश डालता है । बच्चों की सुसमाचार सिद्धांतों को समझने में सहायता के लिए पाठों में नये नियम से वृतान्तों और सन्दर्भों का उपयोग किया गया है । पाठ बिल्कुल उसी तरह से संकेत नहीं करता है जैसा कि धर्मशास्त्र वृतान्तों की शिक्षा देनी चाहिए । जब आप आत्मा के द्वारा तैयारी करती हैं और शिक्षा देती हैं तब आप बच्चों की धर्मशास्त्र वृतान्तों, नियम जो उसमें पाये जाते हैं, और कैसे बच्चे इन नियमों को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं को अच्छी

तरह से समझने में सहायता करेंगी । जब आपके पाठ अच्छी तरह से तैयार हो जाएं और रूचीकर हो जाएं तब बच्चे सुनने और सीखने के लिए अधिक प्रोत्साहित होंगे ।

आपकी कक्षा में बच्चों को प्रभावपूर्ण तरीके से पढ़ाने के लिए निम्नलिखित चरण आपकी अच्छी तरह से तैयारी करने में सहायता करेंगेः

१. पाठ को सीखाने से एक या दो सप्ताह पहले खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध पाठ के उद्देश्य और धर्मशास्त्र उद्धरणों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें । पाठ के उद्देश्य और धर्मशास्त्र उद्धरणों को दुबारा पढ़ें और विचार करें कि कैसे आपकी कक्षा में ये बच्चों पर लागू होते हैं । अपने आपसे पूछेंः "स्वर्गीय पिता क्या चाहता है कि प्रत्येक बच्चा सीखे और इस पाठ के परिणाम के रूप में करे ? यह पाठ कैसे बच्चों की यीशु मसीह में विश्वास को बढ़ाने, उनकी गवाहियों को मजबूत करने और उन बुराइयों का सामना करने में उन्हें मजबूत करने में सहायता कर सकता है ?" उन विचारों को लिखें जो आपके पास आते हैं ।

   किताब *सुसमाचार सिद्धांत* (३१११०) को, मूल सुसमाचार नियमों और सिद्धांतों पर एक व्यक्तिगत अध्ययन निर्देशिका होने के लिए तैयार किया गया था । *सुसमाचार सिद्धांतों* से विशेष अध्यायों को कुछ पाठों के "तैयारी" खण्ड में सूचीबद्ध किया गया है । ये अध्याय पाठ में पाये जाने वाले मुख्य नियम और सिद्धांत की शिक्षा की आपकी तैयारी में सहायता कर सकते हैं । आपके सभाघर पुस्ताकालय में एक कॉपी शायद उपलब्ध हो सकती है या आपके स्थानीय वितरण केन्द्र से खरीदी जा सकती है ।

२. निश्चय करें कि प्रस्तावित ध्यान गतिविधि का उपयोग पाठ के आरंभ में करना है या अपने आपका एक बनाना है, सुनिश्चित होते हुए कि धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के लिए यह उपयुक्त और प्रासंगिक है ।

३. पाठ आपको यह नहीं बताते हैं कि धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे दी जाए, इसलिए या निर्धारित करने में कि क्या और कैसे पढ़ाया जाए, में सहायता के लिए आपको आत्मा को खोजना चाहिए । प्रत्येक सप्ताह शिक्षा की विधियों के विभिन्न तरीकों का उपयोग करें (इस पृष्ठ पर देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना") । सीखने की गतिविधियों में जितना संभव हो उतना कक्षा के सदस्यों को शामिल करने की योजना बनाएं, और अपने पाठ को सीखाएं ताकि बच्चे धर्मशास्त्र विवरण को अन्यों को दुबारा बताने में समर्थ होंगे ।

४. "चर्चा और लागू करने वाले प्रश्नों" से उन्हें चुनें जो बच्चों की अच्छी तरह से धर्मशास्त्रों को समझने और उनकी जिन्दीगियों में उन्हें लागू करने में सहायता करेगा । आप प्रश्नों का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय कर सकते हैं । आपको सभी के उपयोग की आवश्यकता नहीं है ।

५. "समृद्धि गतिविधियां" को पढ़ें और योजना बनाएं कि कब और कैसे उनका उपयोग करना है जो आपकी कक्षा में धर्मशास्त्रों को और पाठ के उद्देश्य को समझने में बच्चों की अच्छी तरह सहायता करेगा । प्रत्येक कक्षा विभिन्न होगी और कुछ गतिविधियाँ जो एक दल के लिए अच्छी हो सकती हैं वह दूसरे दल के लिए ठीक नहीं हो सकती हैं ।

६. उन उपयुक्त व्यक्तिगत अनुभवों को बाँटने की योजना बनाएं जो पाठ के उद्देश्य का समर्थन करता हो । जब आप कक्षा के साथ अनुभवों को बाँटते हैं और कक्षा के सदस्य आपके साथ और एक दूसरे के साथ अनुभवों को बाँटते हैं तब आत्मा को आपका निर्देशन करने दें । कुछ पारिवारिक और व्यक्तिगत अनुभव जो बहुत पवित्र या निजी होते हैं उन्हें सार्वजनिक नहीं बनाना चाहिए ।

धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना

आपको सदैव आत्मा को पाने का प्रयास करना चाहिए जब आप पाठों की तैयारी करती हैं और शिक्षा देती हैं (देखें अलमा १७:२–४; सि. और अनु. ४२:१२–१४; ५०:१७–२२) । आत्मा आपकी जानने में सहायता करेगा कि आप अपने पाठों को बच्चों के लिए कैसे रूचीकर और अर्थपूर्ण बनाएंगी ।

आपकी कक्षा में कुछ बच्चे शायद धर्मशास्त्रों से परिचित न हों । जब आप एक साथ पढ़ते हैं, कक्षा के उन सदस्यों के साथ संवेदनशील रहें जिन्हें शायद धर्मशास्त्रों को कैसे देखना है सीखने में सहायता की आवश्यका हो । वर्ष के

आरंभ में आपको अधिक समय की आवश्यकता हो सकती है, खासकर तब जब आप छोटे बच्चों को धर्मशास्त्र संदर्भों को खोजना सीखाती हैं ।

बच्चों की रूची को बनाए रखने के लिए सामग्रियों को प्रस्तुत करने के विभिन्न तरीकों को अपनाएं । निम्नलिखित सुझाव धर्मशास्त्रों से विभिन्न तरीकों से शिक्षा देने में आपकी सहायता कर सकते हैं ।

१. धर्मशास्त्र विवरण को अपने स्वयं के शब्दों में बताएं । घटनाओं और उसमें के सभी लोगों की कल्पना करने में बच्चों की सहायता करने की कोशिश करें । बच्चों की समझने में सहायता करें कि आप जिन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं वे रहे थे और घटनाएं वास्तव में घटी थीं ।

२. बच्चों को सीधा धर्मशास्त्रों से पूरा विवरण या चुने हुए उद्धरणों को पढ़ने दें । ध्यान रखें कि सभी बच्चे शायद अच्छी तरह से पढ़ न सकें और कि पठन क्षमता उम्र के द्वारा निर्धारित नहीं होती है । यदि सभी पढ़ सकते हों, आप उन्हें कुछ मिनट के लिए चुपचाप पढ़ने दे सकती हैं । उसके पश्चात, आप उस पर चर्चा कर सकती हैं जिसे उन्होंने पढ़ा है । जब बच्चे पढ़ना पूरा कर चुके हों तब कठिन शब्दों और उद्धरणों को समझने में उनकी सहायता के लिए चर्चा समय का उपयोग करें ।

३. बच्चों की कल्पना करने में सहायता के लिए कि क्या हुआ था, धर्मशास्त्र विवरणों से प्रस्तावित चित्रों का उपयोग करें । अधिकतर पाठों के खण्ड "आवश्यक सामग्रियाँ" के अंतर्गत प्रस्तावित चित्र पाये जाते हैं । चित्रों पर संख्या होती है और वे पुस्तिका में सम्मिलित होते हैं । कुछ चित्र सुसमाचार कला चित्र किट में भी होते हैं और शायद सभाघर पुस्तकालय में भी हो सकते हैं (सभाघर पुस्तकालय संख्याओं को खण्ड "आवश्यक सामग्रियाँ" में सूचीबद्ध किया गया है) । अधिकतर चित्रों के पीछे छपे हुए सार होते हैं । यदि उपयुक्त हो तो आप अन्य चित्रों का उपयोग भी कर सकतीं हैं ।

४. बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण का नाटकीकरण करने दें । (सुनिश्चित करें कि नाटकीकरण धर्मशास्त्रों की पवित्रता की निन्दा न करे) । आप साधारण सहारे भी ला सकतीं हैं, जैसा कि एक वस्त्र, रूमाल, और इत्यादि, और बच्चों को सभी विवरण या उसके हिस्से का नाटक करने दें । उनसे पूछें कि वे कैसा महसूस करते यदि वे वही व्यक्ति होते जिनका वे प्रतिनिधित्व कर रहे हैं । एक जन्मोत्सव के दृश्य के अलावा उद्धारकर्ता को कहीं भी चित्रित नहीं करना चाहिए । स्वर्गीय पिता और पवित्र आत्मा को कभी भी चित्रित नहीं करना चाहिए ।

५. चॉकबोर्ड पर साधारण आकृतियों या उदाहरणों को बनाएं, या चित्रों या कतरनों का उपयोग करें जब आप धर्मशास्त्र विवरण को बताती हैं या पढ़ती हैं ।

६. एक नाटक का संचालन करें जहाँ कई बच्चे धर्मशास्त्र विवरण में दिए गए लोगों के स्थान पर नाटक करें । जहाँ उपयुक्त हो, बच्चों को सीधा धर्मशास्त्रों से ही संवाद पढ़ने दें ।

७. विवरण को बताने के लिए एक माता-पिता, वार्ड या शाखा के एक सदस्य, या कक्षा के एक सदस्य को आमंत्रित करें । व्यक्ति को तैयारी के लिए एक या दो सप्ताह पहले समय दें, और प्रस्तुतिकरण के लिए उसे एक समय-सीमा देना सुनिश्चित करें ।

८. धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा से पहले बच्चों से एक साधारण परीक्षा लें, जैसा कि एक सच या झूठ पूछना या छोटा सा प्रश्नोत्तरी । कक्षा को समझाएं कि आप पता करना चाहती हैं कि वे विवरण के बारे में कितना जानते हैं । फिर बाद में वही परीक्षा लें ताकि वे देख सकें कि उन्होंने कितना सीखा है ।

९. चॉकबोर्ड पर धर्मशास्त्र विवरण से महत्वपूर्ण शब्दों और लोगों के नामों को सूचीबद्ध करें । जब आप विवरण बताती हैं तब बच्चों को इन शब्दों और नामों को सुनने दें । बच्चों की उनके शब्दसंग्रह को बढ़ाने में सहायता करें ताकि वे धर्मशास्त्र को अच्छी तरह से समझ सकेंगे और घर पर पढ़ने में आनन्द महसूस करें ।

१०. पाठ को प्रस्तुत करने से पहले, चॉकबोर्ड पर विवरण के बारे में प्रश्नों को लिखें । विवरण के दौरान जब बच्चे उत्तरों को सुनते हैं, उनपर चर्चा करना बन्द कर दें ।

११. विवरण बताएं, और बच्चों को उनके पसंदीदा हिस्से को बताने के लिए आगे आने दें । आप कक्षा के एक सदस्य से विवरण को आरंभ करने और दूसरे बच्चों से उसे जारी रखने के लिए कह सकती हैं ।

१२. धर्मशास्त्रों से चुनी हुई आयतों की एक रिकार्डिंग चलाएं ।

१३. मिलान करने का खेल खेलें । छोटे-छोट कार्ड या कागज के टुकड़ों से ३" x ५" के मिलते-जुलते चार से आठ सेट तैयार करें । निम्नलिखित उदाहरण में, प्रत्येक आशीर्वचन के आधे पहले हिस्से को कार्ड पर लिखें और दूसरे आधे, या आशीष को कार्ड के दूसरी तरफ लिखें । कार्ड या कागजों को ऊपर के तरफ से मिलाएं और मेज या फर्श पर उसके सामने का हिस्सा नीचे के तरफ करके रखें । एक समय में एक बच्चे को आने दें और दो कार्डों को पलटने दें । जोर से पढ़ें कि प्रत्येक कार्ड क्या कहता है । यदि कार्ड मिलते हैं (इस मामले में यदि वे आशीर्वचन को पूरा करते हैं), उन्हें ऊपर के तरफ रहने दें । यदि कार्ड नहीं मिलते हैं तब उनके सामने के हिस्से को नीचे के तरफ करके फिर से रख दें और दूसरे बच्चे को मौका लेने दें । यह तब तक जारी रखें जब तक कि सभी कार्ड सही-सही मेल नहीं खाते ।

आशीर्वचन के मेल-जोल वाले खेल के लिए आठ सेट हैं जिनका आप उपयोग कर सकतीं हैं ।

सेट १: धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है ।

सेट २: धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे ।

सेट ३: धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे ।

सेट ४: धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और पियासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे ।

सेट ५: धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उनपर दया की जाएगी ।

सेट ६: धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे ।

सेट ७: धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे ।

सेट ८: धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का होगा ।

१४. प्रश्न पूछने वाला खेल खेलें । एक बोतल या डिब्बे में कई प्रश्नों को रखें, और कक्षा के सदस्यों को उन प्रश्नों को बारी बारी से उठाने दें और उनका उत्तर देने दें ।

कक्षा चर्चाओं का संचालन करना

चर्चाओं और अन्य सीखने वाली गतिविधियों में हिस्सा लेना बच्चों की सुसमचार नियमों को सीखने में सहायता करेगा । निम्नलिखित सहायक अर्थपूर्ण प्रश्नों को पूछने में और कक्षा चर्चाओं को प्रेत्साहित करने में आपकी सहायता कर सकते हैं:

१. प्रश्नों को पूछें और धर्मशास्त्र सन्दर्भों को दें ताकि कक्षा के सदस्य धर्मशास्त्रों में उत्तरों को खोज सकें ।

२. उन प्रश्नों को पूछें जिनका उत्तर "हाँ" या "नहीं" नहीं हो सकता परन्तु जिसमें विचार और चर्चा की आवश्यकता हो । प्रश्न जिनका *आरंभ क्यों, कैसे, क्या, कब, और कहाँ* से होता है वे ज्यादातर अधिक प्रभावी होते हैं ।

३. उन बच्चों को शामिल करें जो ज्यादातर, उनका नाम बुलाने के द्वारा और उन प्रश्नों को पूछने के द्वारा जिसे आप समझती हैं कि वे उत्तर दे सकेंगे, हिस्सा नहीं लेते हैं । जबाव देने के लिए उन्हें समय दें । उनकी सहायता करें यदि उन्हें आवश्यकता हो, परन्तु तभी जब उनके पास विचार करने और उत्तर देने के पश्चात समय हो ।

४. बच्चों को उनके अहसासों को बाँटने के लिए प्रोत्साहित करें जिसे वे धर्मशास्त्रों से सीख रहे हों । उनके योगदान के बारे में सकारात्मक टिप्पणियां दें ।

५. ईमानदारी से बच्चों की प्रशंसा करें जब वे उत्तर देते हैं । उनकी पहचानने में सहायता करें कि उनके विचार और अहसास महत्वपूर्ण हैं । उन बच्चों के प्रति संवेदनशील रहें जो शायद हिस्सा लेने में अनिच्छुक हों ।

धर्मशास्त्रों को लागू करने में बच्चों की सहायता करना

बच्चों की उन चीजों को उनके जीवन में लागू करने में सहायता करें जिसे उन्होंने सीखा है । याकूब ने हमें "परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नही जो अपने आप को धोखा देते हों " (याकूब १:२२) बनने की चुनौती दी है । इस काम को पूरा करने में निम्नलिखित सुझाव आपकी सहायता कर सकते हैं:

१. जब आत्मा आपके प्रति फुसफुसाती है तब उस सच्चाई की व्यक्तिगत गवाही दें जिसकी आप शिक्षा देती हैं । आपके पाठ अधिक शक्तिशाली हो जाएंगे जब आप सच्चाई और दृढ़ता के साथ शिक्षा देती हैं ।

२. बच्चों को घर पर उन्हें अकेले और परिवार के साथ धर्मशास्त्रों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । बच्चों को कक्षा में उनके साथ उनके स्वयं की धर्मशास्त्रों की कॉपियों को लाने के लिए प्रोत्साहित करें । यदि बच्चों के पास धर्मशास्त्रों की व्यक्तिगत कॉपियाँ न हो या वे उन्हें कक्षा में लाना भूल गए हों तो कक्षा में बच्चों के उपयोग के लिए अतिरिक्त कॉपियाँ रखें । यदि आपके पास एक वार्ड या शाखा पुस्तकालय हो, आप धर्मशास्त्रों की कॉपियाँ वहाँ से प्राप्त कर सकती हैं ।

३. बच्चों से उन चीजों को बाँटने के लिए कहें जिसे उन्होंने सीखा है । उनसे पूछें कि वे अपने जीवन में उन सुसमाचार नियमों को कैसे लागू कर सकते हैं जिसे पाठ में सीखाया गया है ।

४. एक संवाददाता का अभिनय करें, और बच्चों का साक्षात्कार करें जैसे कि वे धर्मशास्त्रों के पात्र हों । उनसे धर्मशास्त्र विवरण का ब्योरा बताने के लिए कहें और जो हुआ उसके बारे में उन्होंने कैसे महसूस किया वह बताने के लिए कहें ।

५. कक्षा को दो या और अधिक छोटे दलों में विभाजित करें । धर्मशास्त्र विवरण को बाँटने के पश्चात, प्रत्येक दल को विवरण के महत्वपूर्ण नियमों को लिखने दें । तब दलों को बारी-बारी से चर्चा करने दें कि कैसे ये नियम उनके जीवन में लागू होते हैं ।

६. एक धर्मशास्त्र खोज करें: पूरे वर्ष के दौरान कक्षा के सदस्यों को उन विशेष धर्मशास्त्रों की आयतों पर चिन्ह लगाने के लिए प्रोत्साहित करें जो उनके जीवन में अर्थपूर्ण तरीके से लागू होते हों । उदाहरण के तौर पर, वे मत्ती ७:१२, लूका ११:९, यूहन्ना ३:१६, और प्रेरितों के काम २:३८ पर चिन्ह लगा सकते हैं । उन्हें एक सूत्र दें, जैसा कि एक घटना, परिस्थिति, या समस्या; तब कक्षा के सदस्यों को एक धर्मशास्त्र खोजने के लिए कहें जो लागू होता हो । जो बच्चा इसे पहले खोज लेता है उसे कक्षा के बाकी बच्चों को धर्मशास्त्र खोजने में सहायता करने दें । तब उन्हें बताने दें कि क्यों ये धर्मशास्त्र सूत्र पर सही है ।

७. विशेष उदाहरणों को बाँटें जब आपने बच्चों को उन नियमों का पालन करते हुए देखा है जिकी चर्चा हो चुकी हो । उदाहरण के तौर पर, यदि आप उदार होने पर एक पाठ की शिक्षा देती हैं, आप कुछ उदाहरणों पर संकेत कर सकती हैं जब आपने बच्चों को दूसरों के प्रति उदार होते हुए देखा हो ।

८. कार्यों पर ध्यान देते रहें । जब भी आप एक काम या चुनौती दें, अगले रविवार को कक्षा के आरंभ में बच्चों से उनके अनुभवों के बारे में पूछना सुनिश्चित करें ।

धर्मशास्त्रों को स्मरण करने में बच्चों की सहायता करना

सुसमाचार सच्चाइयों की शिक्षा के लिए एक प्रभावी तरीका धर्मशास्त्रों को स्मरण करना हो सकता है । अधिकतर बच्चे स्मरण करने में खुश होते हैं जब आप आमोद-प्रमोद और रचनात्मक तरीकों का उपयोग करती हैं । बच्चों की स्मरण रखने में सहायता के लिए निम्नलिखित सुझाव आमोद-प्रमोद वाले हैं:

१. उस शब्द के पहले अक्षर को चॉकबोर्ड पर लिखें या एक सारणी बनाएं जिसे स्मरण रखना है । उदाहरण के तौर पर, आप पहले विश्वास के अनुच्छेद में शब्दों के लिए निम्नलिखित सारणी बना सकती हैं:

ह अ पि प औ उ पु यी म औ प आ में वि क है

अक्षरों की तरफ संकेत करें जब आप प्रत्येक अनुरूप शब्द को दोहराएं । उसे कुछ समय के लिए दोहराएं और बच्चों को उसे दोहराने दें जब वे समर्थ होते हैं । बड़े शब्द के पहले उन्हें सारणी की आवश्यकता नहीं होगी ।

२. धर्मशास्त्र को छोटे-छोटे वाक्यांशों में विभाजित करें । पीछे से आरंभ करते हुए और उसपर काम करते हुए प्रत्येक मुहावरे को जोर से दोहराएं ताकि बच्चे कम जान-पहचान वाले हिस्से को पहले दोहराएं । उदाहरण के तौर पर, मत्ती ५:१६ में दिए गए "तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें" को बच्चे कई बार दोहरा सकें । तब वे दूसरे मुहावरे को शामिल कर सकते हैं, " ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देख सकें" । तब वे पूरी आयत को दोहरा सकते हैं ।

३. यदि बच्चे अच्छी तरह से पढ़ते हैं, प्रत्येक बच्चे के लिए धर्मशास्त्र की एक लिखित प्रति तैयार करें । प्रत्येक प्रति को शब्द या मुहावरे की पट्टियों में काटें । कुछ समय के लिए आयत को एक साथ कहने के पश्चात, बच्चों को पट्टियों का एक बिखरा हुआ सेट दें, और उन्हें अकेले या कक्षा के रूप में उन पट्टियों को सही तरीके से व्यवस्थित करने दें ।

४. धर्मशास्त्र को कई बार दोहराएं, एक बच्चे को अगले शब्द या वाक्यांश को कहने से रोकते हुए । तब दूसरे बच्चे को कुछ अधिक शब्दों को कहने दें । यब तब तक जारी रखें जब तक कि सभी बच्चे कम से कम एक बार अपनी बारी न ले लें ।

५. बच्चों की याद करने में सहायता के लिए संगीत का उपयोग करें ।

६. बच्चों को दो दलों में विभाजित करें । प्रत्येक दल को शब्दों या वाक्यांशों को सही तरीके में दोहराने की बारी लेने दें । आप ऐसा होने दे सकती हैं कि पहला दल पहले शब्द को कहे, दूसरा दल दूसरे शब्द को कहे, और पूरी आयत के दौरान ऐसा ही चलता रहे ।

७. एक धर्मशास्त्र उद्धरण को चुनें जिसे आप चाहती हैं कि बच्चे याद करें । धर्मशास्त्र को चॉकबोर्ड या एक पोस्टर पर लिखें । जब तक कि बच्चे पूरे धर्मशास्त्र को याद न कर लें तब तक उद्धरण को कई बार दोहराएं, अन्त तक अधिक से अधिक शब्दों को जोड़ते या मिटाते हुए ।

बचे हुए समय का बुद्धिमत्ता से उपयोग करना

कक्षा समय खत्म होने से पहले यदि आप तैयार किए हुए पाठ को पूरा कर लेती हैं, बाकी बचे समय को पूरा करने के लिए आप शायद एक तत्कालिक गतिविधि का प्रबंध करना चाहें । इस समय के प्रभावपूर्ण उपयोग के लिए निम्नलिखित सुझाव आपकी सहायता कर सकते हैं :

१. कुछ बच्चों को धर्मशास्त्र से उनकी पसंदीदा कहानियों के बारे में बात करने दें ।

२. बच्चों को महत्वपूर्ण धर्मशास्त्र सन्दर्भों के लिए सुत्रों को देने के द्वारा जिसपर उन्होंने पहले से ही चिन्ह लगाया हो, एक धर्मशास्त्र खोज का संचालन करें ।

३. बच्चों की पाठ से एक धर्मशास्त्र या एक विश्वास के अनुच्छेद को याद करने में सहायता करें ।

४. बच्चों को उन विचारों को बाँटने दें कि कैसे वे पाठ के सिद्धांतों का उपयोग घर पर, विद्यालय पर, और उनके मित्रों ते साथ कर सकते हैं ।

५. कक्षा को दलों में विभाजित करें, और पाठ के बारे में एक दूसरे से प्रश्नों को पूछने के लिए उन्हें बारी लेने दें ।

६. प्रत्येक बच्चे को पाठ से संबंधित एक चित्र बनाने दें, या एक उद्धरण को लिखने दें जिसे वे घर ले जाकर पाठ के उद्देश्य के एक स्मरण के रूप में प्रदर्शन कर सकें ।

७. भविष्य के अध्ययन के लिए धर्मशास्त्र सन्दर्भों पर चिन्ह लगाने के लिए बच्चों को आमंत्रित करें । आप उनसे पाठ के उन आयतों पर चिन्ह लगाने के लिए कह सकती हैं जिसे वे विशेष रूप से पसंद करते हैं, या आप उन आयतों का सुझाव दे सकती हैं जो आपके विचार से बच्चों को पाठ के उद्देश्य को स्मरण कराएगा ।

८. धर्मशास्त्रों में दी गई किताबों को क्रमानुसार याद रखने में बच्चों की सहायता करें ।

९. पहले के पाठों में दिए गए सिद्धांतों और धर्मशास्त्र विवरणों की समीक्षा करें ।

कक्षालय में संगीत

संगीत के द्वारा सुसमाचार सीखने को समृद्ध और मजबूत बनाया जा सकता है । अक्सर बच्चे संगीत के द्वारा अच्छी तरह से याद रखने और सीखने में समर्थ होते हैं ।

बच्चों की आत्मा को महसूस करने और सुसमाचार को सीखने में सहायता के लिए, उपयुक्त संगीत के उपयोग के लिए आपको एक संगीतकार होने की आवश्यकता नहीं हैं । पाठ के दौरान या आरंभ में ऑडियो कैसेट या एक संगीत दल सम्मिलित हो सकता है । बच्चों को पाठ में शामिल करने के लिए आप गीत के शब्दों को गा या पढ़ भी सकती हैं ।

बाँटने वाला समय

अवसरानुसार प्राथमिक के बाँटने वाले समय के दौरान, कक्षा से साधारण सुसमाचार प्रस्तुतिकरण देने के लिए पूछा जाएगा । ये प्रस्तुतिकरण पाठों से लिए जा सकते हैं, थोड़े बहुत पूर्वाभिनय की आवश्यकता हो सकती है, और उन सिद्धांतों के प्रबल होने में सहायता हो सकती है जिसकी आप शिक्षा देती रही हैं । बाँटने वाले समय के लिए आप निम्नलिखित सुझावों का उपयोग कर सकती हैं:

१. एक धर्मशास्त्र विवरण का नाटक करें ।

२. याद किए हुए धर्मशास्त्रों को एक साथ कठस्थ करें ।

३. एक विश्वास के अनुच्छेद को दोहराएं या गाएं और उसके मतलब को समझाएं ।

४. एक सुसमाचार नियम के एक आधुनिक उपयोग की भूमिका करें ।

विश्वास के अनुच्छेद

आपको अपने पाठों में विश्वास के अनुच्छेद को समाविष्ट करना चाहिए और प्रत्येक बच्चे को प्राथमिक से अगली कक्षा में जाने से पहले विश्वास के अनुच्छेद को स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए । प्रत्येक अवसर का उपयोग बच्चों की विश्वास के अनुच्छेद को याद करने और समझने में सहायता के लिए करें ।

आठ से ग्यारह वर्ष के बच्चों को समझना

आत्म-विश्वास को सीखने और उसे प्राप्त करने में बच्चों की सहायता के लिए, आपको उनकी आवश्यकताओं और विशिष्टताओं को समझने और उपयुक्त गतिविधियों और कक्षाओं की योजना की आवश्यकता है । इस उम्र के बच्चों की विशिष्टताओं के बारे में अधिक जानकारी के लिए, देखें *Teaching—No Greater Call* (३३०४३), pages ३७–३८ ।

विशिष्टता

शारीरिक

तेज और धीमी गति से उन्नति की अवधि
अकुशल हो सकती है
दलों में खेलना आनन्ददायक होता है

मानसिक

सीखने के लिए उत्सुक है
भूतकाल के अनुभवों के बारे में सोचता है
तर्कशास्त्र के आधार पर निर्णयों को आरंभ करता है
जानना चाहता है कि क्यों
न्यायी है
नायकों की आराधना करता है
अधिक जिम्मेदार बनता है
स्मरण करने का काम पसंद करता है

सामाजिक

विरोधी लिंग के प्रति एक नापसंद से, लड़के और लड़कियों के बीच अधिक पारस्परिक क्रिया के लिए एक इच्छा के तरफ जाना आरंभ करता है ।
दोनों, दल और व्यक्तिगत रूप में समय का आनन्द उठाता है
स्वतंत्रता के लिए एक मजबूत आवश्यकता को महसूस करता है
एक विस्तृत विनोद-वृत्ति को बढ़ाता है
दूसरों में रूची को प्राप्त करता है

भावनात्मक

आलोचना को पसंद नहीं करता है
यदि समकक्ष समस्याएं हों तो अनुपयुक्त बरताव का प्रदर्शन कर सकता है
अधिक विश्वसनीय और भरोसे लायक बनता है
सच्चा रहने के बारे में सचेत रहता है
अपने योग्य होने के बारे में संदेह करना आरंभ करता या करती है
अपने स्वयं के तरीके के लिए कम दबंग और दृढ़निश्चय बनना

आत्मिक

सुसमाचार सिद्धांतों को सीखने और प्रयोग करने में आनंदित होता है
दूसरों की गवाहियों के द्वारा प्रभावित होता है
सुसमाचार सिद्धांतों को समझने की तैयारी में बढ़ता है
सही और गलत के लिए एक मजबूत समझ होता है

जो विकलांग हैं उन्हें सम्मिलित करने के लिए विशेष निर्देश

उद्धारकर्ता ने हमारे लिए उन लोगों के प्रति करूणा महसूस करने और दिखाने के लिए उदाहरण रखा है जो विकलांग हैं । अपने पुनरूत्थान के पश्चात जब वह नफायटियों से मिलने गया तब उसने कहाः

"तुममें क्या कोई ऐसा भी है जो बीमार है ? उसे यहां लाओ । तुम्हारे पास कोई लंगड़ा, अंधा, या पंगु जो निर्बल हो चुका हो, या बहिरा, या किसी भी प्रकार के कष्ट में है ? उन्हें यहां लाओ और मैं उन्हें ठीक करूंगा, क्योंकि तुमपर मैं दया करता हूं" (३ नफी १७:७) ।

एक प्राथमिक शिक्षिका के रूप में आप करूणा दिखाने की एक उत्तम स्थिति में हैं । यद्यपि आप व्यवसायिक सहायता देने के लिए संभवतः प्रशिक्षित नहीं हैं, आप उन बच्चों को समझ सकती हैं और उनका पोषण कर सकती हैं जो विकलांग हैं । सीखने की गतिविधियों में कक्षा के प्रत्येक सदस्य के प्रति चिन्ता, समझ, और एक इच्छा की आवश्यकता है ।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि विलांग बच्चों की समझ की क्या स्थिति है, वे आत्मा के द्वारा छुए जा सकते हैं । यद्यपि कुछ बच्चे प्राथमिक के पूरे समय में उपस्थित रहने में समर्थ नहीं हो सकते हैं, उन्हें आत्मा को महसूस करने के लिए थोड़े से अवसर की आवश्यकता है । शायद एक साथी की भी आवश्यकता हो सकती है जो प्राथमिक के दौरान उस बच्चे की जरूरतों के प्रति संवेदन हो, उस मामले में जब बच्चा पूरे दल से दूर रहना चाहता हो ।

कक्षा के कुछ सदस्यों को, विकलांगता, बुद्धिजीवी क्षति, भाषा या बोलने की समस्याओं, दिव्यदर्शनों या क्षमता के खोने, आचरण और सामाजिक समस्याएं, मानसिक बीमारी, गति और गतिशीलता वाली समस्याएं, या पुरानी स्वास्थ्य क्षति के द्वारा चुनौती दी जा सकती है । कुछ सदस्यों के लिए भाषा या सांस्कृतिक मेल मिलाप अपरिचित या कठिन हो सकता है । व्यक्तिगत हालात की परवाह किए बिना, प्रेम किए जाने और स्वीकार किए जाने,

सुसमाचार को सीखने, आत्मा को महसूस करने, सफलतापूर्वक हिस्सा लेने, और दूसरों की सेवा करने की समान आवश्यकता को प्रत्येक बच्चा बाँटता है ।

एक विकलांग बच्चे की शिक्षा में ये निर्देश आपकी सहायता कर सकते हैं :

विलांगता के आगे देखें और बच्चे को समझें । वास्तविक, मैत्रीपूर्ण और गर्मजोशी के साथ रहें ।

बच्चे के विशेष बल और चुनौतियों के बारे में जानें ।

शिक्षा के लिए प्रत्येक प्रयास करें और कक्षा के सदस्यों को, कक्षा के प्रत्येक सदस्यों के प्रति सम्मान की उनकी जिम्मेदारियों को स्मरण कराएं । कक्षा के एक विकलांग सदस्य की सहायता करना, पूरी कक्षा के लिए मसीह की तरह सीखने का अनुभव हो सकता है ।

माता-पिता, अन्य पारिवारिक सदस्यों, और यदि उपयुक्त हो तो बच्चे के साथ सलाह मशवरा करने के द्वारा बच्चे की शिक्षा के लिए उत्तम तरीकों को खोजें ।

विकलांग बच्चे को पढ़ने, प्रार्थना करने, या हिस्सा लेने के लिए बुलाने से पहले, उससे पूछें कि वह कक्षा में हिस्सा लेने के बारे में कैसा महसूस करता या करती है । प्रत्येक बच्चे की योग्यताओं और प्रतिभाओं पर बल दें और उन तरीकों को खोजें जिससे प्रत्येक बच्चा आरामदेह और सफलतापूर्वक हिस्सा ले सकता है ।

हर एक विकलांग बच्चे की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा करने के लिए पाठ की सामग्रियों और आस-पास के प्राकृतिक वातावरण को अनुकूल बनाएं ।

दुर्व्यवहार की समस्या के साथ बरताव

एक शिक्षिका के रूप में आप अपनी कक्षा के उन बच्चों के बारे में जानकारी रख सकती हैं जो भावनात्मक और शारीरिक दुर्व्यवहार के पीड़ित हों । यदि आप अपनी कक्षा के एक बच्चे के बारे में चिन्तित होती हैं, कृप्या अपने धर्माध्यक्ष से सलाह लें । जब आप पाठों की तैयारी करती हैं और उन्हें प्रस्तुत करती हैं, प्रभु की सहायता और निर्देश के लिए प्रार्थना करें । अपनी कक्षा के प्रत्येक बच्चे को महसूस करने में सहायता करें कि वह स्वर्गीय पिता का एक मूल्यवान बच्चा या बच्ची है और स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह हममें से प्रत्येक को प्रेम करते हैं और चाहते हैं कि हम प्रसन्न और सुरक्षित रहें ।

नये नियम से परिचित होना

पाठ
१

उद्देश्य

बच्चों की नये नियम के साथ जान-पहचान करवाना और उन्हें धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक २ तीमुथियुस ३:१–७, १३–१७ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि कैसे आप पाठ के मुख्य उद्देश्य की शिक्षा बच्चों को देना चाहती हैं । (देखें "अपने पाठ की तैयारी करना", पृ. vi और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. vii) ।

२. अतिरिक्त पठनः *सुसमाचार सिद्धांत*, अध्याय १० ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. निम्नलिखित आठ शब्दपट्टियों की तैयारी करें: धर्मशास्त्र, आदर्श कार्य, बाइबिल, पुराना नियम, नया नियम, मॉरमन की पुस्तक, सिद्धांत और अनुबंध, अनमोल मोती (शब्दपट्टियों के स्थान पर आप चॉकबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं) ।

५. आवश्यक सामग्रियाँः
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. आदर्श कार्यों का एक सेट ।

सूचनाः आपकी कक्षा में वे बच्चे हो सकते हैं जिन्हें अच्छी तरह से पढ़ना नहीं आता हो । हिस्सा लेने में उनकी सहायता के लिए तरीकों को खोजें जिससे उन्हें संकोच महसूस न हो । प्रत्येक सप्ताह सभी बच्चों को धर्मशास्त्रों के प्रति एक सकारात्मक अनुभव होना चाहिए । धर्मशास्त्रों के प्रति आपका उत्साह उनके स्वयं के प्रति अध्ययन और सीखने के लिए उनकी सहायता करेगा ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को निम्नलिखित सूत्र दें और उनके हाथों को ऊपर उठाने दें जब वे सोचें कि वे उस शब्द को जानते हैं जो सूत्रों के साथ सही बैठता हो ।

ये इनमें से चार हैं ।

(कक्षा में एक बच्चे का नाम या किसी को जिसे वे जानते हों जिसके पास धर्मशास्त्र की सभी चार किताबें हैं) ये हैं ।

इन्हें आदर्श कार्य कहा जाता है ।

इनमें परमेश्वर का शब्द पाया जाता है ।

ये किताबें हैं ।

जब बच्चे शब्द धर्मशास्त्रों का अनुमान लगा चुके हों, समझाएं कि यह पाठ उन्हें धर्मशास्त्रों के बारे में सीखाएगा और हमारे जीवन में उनके महत्व को समझाएगा ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- धर्मशास्त्र क्या हैं ? धर्मशास्त्र अन्य लेखों से विभिन्न कैसे है ? (२ तीमुथियुस ३:१६) ।
- हमें धर्मशास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता क्यों है ? हमें धर्मशास्त्रों के अध्ययन को कब आरंभ करना चाहिए ? (२ तीमुथियुस ३:१४–१५) । जब हम युवा होते हैं तभी से धर्मशास्त्रों के अध्ययन को आरंभ करना क्यों महत्वपूर्ण है ?

धर्मशास्त्रों की अपनी कॉपी को दिखाएं, और शब्दपट्टी "आदर्श कार्य" का प्रदर्शन करें । समझाएं कि हम धर्मशास्त्रों को आदर्श कार्य कहते हैं क्योंकि वे आधिकारिक धर्मशास्त्र हैं जिनका उपयोग हम गिरजाघर में करते हैं ।

बच्चों को कक्षा के साथ धर्मशास्त्रों के बारे में बाँटने के लिए आमंत्रित करें जिसे वे जानते हैं । जब आप धर्मशास्त्र की प्रत्येक पुस्तक पर चर्चा करते हैं, उपयुक्त शब्पट्टियों को दिखाएं और शब्दों को चॉकबोर्ड पर लिखें । (देखें *सुसमाचार सिद्धांत*, अध्याय १०) ।

- आदर्श कार्यों के किस हिस्से में हम यीशु मसीह के बारे में पढ़ते हैं ? निम्नलिखित आयतों को पढ़ें या पढ़ने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें: मूसा ८:२४ (शब्द *पवित्र आत्मा* के द्वारा), सिद्धांत और अनुबंध २०:२९, २ नफी २५:२६, और भजन संहिता ८३:१८ (समझाएं कि यहोवा यीशु मसीह का दूसरा नाम है) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि सभी चार आदर्श कार्य यीशु मसीह की गवाही देते हैं ।
- बच्चों को बाइबिल के विषय-सूची पृष्ठ को खोलने दें (पुराने और नये नियम की किताबों की सूची) । बाइबिल के किन दो मुख्य खण्डों को उसमें विभाजित किया गया है ? प्रत्येक खण्ड के अंतर्गत क्या सूची है ? समझाएं कि पुराने और नये नियम की छोटी किताबों को विभिन्न भविष्यवक्ताओं और गिरजाघर के मार्गदर्शकों के द्वारा लिखा गया है । (यदि संक्षेपण की एक सारणी हो, बच्चों को इसे समझाएं) । यीशु मसीह के नश्वर जीवन और प्रचार कार्य के विवरण को हम कहाँ खोजते हैं ? (नये नियम में) । बच्चों को नये नियम की सूची देखने दें, और समझाएं कि इस वर्ष पाठ नये नियम की शिक्षाओं पर प्रकाश डालते हैं ।
- मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना कौन थे ? उन्होंने किस के बारे में लिखा था ? (बच्चों की समझने में सहायता करें कि इन चार लोगों में से प्रत्येक ने यीशु के जीवन के विवरण को लिखा था, अक्सर समान घटना के बारे में लिखा था, और गवाही दी थी कि वही उद्धारकर्ता था) । बच्चों को यीशु के जीवन से उनके पसंदीदा कहानियों और शिक्षाओं को बाँटने के लिए आमंत्रित करें ।
- बच्चों को प्रेरितों के काम, अध्यय १ पर जाने दें । समझाएं कि प्रेरितों का काम, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के पश्चात प्रेरितों द्वारा सुसमाचार की शिक्षा के बारे में बताता है । आपके विचार से यीशु के समय के प्रेरितों ने क्या काम किए थे ? आज प्रेरित क्या करते हैं ?
- बच्चों को फिर से विषय-सूची पर जाने दें । समझाएं कि नये नियम में दी गई बाकी की अधिकतर किताबें पत्र हैं जो यीशु के प्रेरितों के द्वारा लीखी गई हैं या अन्य गिरजाघर के मार्गदर्शकों के द्वारा गिरजाघर के सदस्यों के लिए । आपके विचार से उन्होंने इसे क्या लिखा था ? समझाएं कि इन पत्रों ने गिरजाघर के आरंभिक सदस्यों की सुसमाचार को समझने में सहायता किया था और विश्वासी रहने के लिए सलाह दिया था । आज हमारे पास गिरजाघर में क्या है जो इन पत्रों की तरह है ? (लियाहोना में जनरल अधिकारियों के द्वारा दिए गए अनुच्छेद, सेटेलाईट प्रसारण, और जनरल और स्टेक सम्मेलन) ।

समझाएं कि नये नियम की प्रत्येक किताब को अध्यायों और आयतों में विभाजित किया गया है ताकि आसानी से हम धर्मशास्त्रों में वाक्यांश को खोज सकें ।

- चॉकबोर्ड पर मत्ती २८:२–९ लिखें । इस धर्मशास्त्र को हम कौन से आदर्श कार्य में खोजेंगे ? कौन सी संख्या हमें अध्याय बताती है ? कौन सी संख्या हमें आयतों को बताती है ? बच्चों के साथ इन आयतों को पढ़ें । यह धर्मशास्त्र विवरण किस के बारे में है ? इस घटना को धर्मशास्त्रों में अभिलेखित करना क्यों महत्वपूर्ण है ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों की क्रमानुसार में नये नियम की किताबों को याद रखने में सहायता करें । अगले कुछ सप्ताहों के दौरान किताबों की समीक्षा करें ।

२. बच्चों के साथ आठवें विश्वास के अनुच्छेद पर चर्चा करें, और उन्हें उसे याद करने में सहायता करें (देखें "बच्चों की धर्मशास्त्रों को याद करने में सहायता करना", पृ. x(००) । बच्चों को याद दिलाएं कि हमारे बाइबिल को पुराने दस्तावेजों से अनुवादित किया गया था जिसकी प्रतिलिपियाँ हाथों के द्वारा बनाई गई थीं और वे गलतियाँ अनुवाद और प्रतिलिपियाँ दोनों में हुई थीं । यहाँ तक बाइबिल में अधिकतर सही है, भविष्यवक्ता नफी ने कई "स्पष्ट और अनमोल बातें" लिखीं जिसे निकाल दी गईं थीं (१ नफी १३:२८) । भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा बाइबिल की समीक्षा की थी और उन हिस्सों को शामिल किया था जिसे निकाल दिया गया था या बदल दिया गया था । समझाएं कि ये हिस्से हमें सुसमाचार के बारे अधिक समझने में सहायता करते हैं ।

३. लूका २४:२७ को पढ़ें और चर्चा करें । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु अक्सर धर्मशास्त्रों का अध्ययन करता था और उनसे शिक्षा देता था । यीशु ने किस धर्मशास्त्र का अध्ययन किया होगा ? (पुराना नियम) ।

४. शब्दपट्टियों को निकालें, उन्हें मिलाएं और फर्श या एक मेज पर उन्हें रखें । बच्चों से उन प्रश्नों को पूछें जो निम्नलिखित के समान हो:

- किन दो शब्दपट्टियों का मतलब एक है ? ("धर्मशास्त्र" और "आदर्श कार्य") ।
- कौन से दो शब्दपट्टी उन किताबों के नाम बताते हैं जोकि एक तीसरी किताब का हिस्सा है ? ("नया नियम" और "पुराना नियम", जोकि बाइबिल के हिस्से हैं) ।
- कौन सी किताबें आदर्श कार्य में सम्मिलित हैं ? (बाइबिल, मॉरमन की पुस्तक, सिद्धांत और अनुबंध, और अनमोल मोती) ।

जब एक बच्चा प्रश्न का उत्तर देता है तब उसे उपयुक्त शब्दपट्टियों के प्रदर्शन के लिए आने दें ।

निष्कर्ष

गवाही

धर्मशास्त्रों की सच्चाई और अपने जीवन में इनके महत्व की गवाही दें । बच्चों के बारे में अपने जीवन के एक समय को बाँटें जब धर्मशास्त्रों के पठन ने आपकी सहायती की थी । नियमित रूप से धर्मशास्त्रों को पढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहन दें ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की समीक्षा के रूप में २ तीमुथियुस ३:१४–१७ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
२

यीशु मसीह ने हमारा उद्धारकर्ता होना स्वीकार किया था

उद्देश्य

यह शिक्षा देने के द्वारा कि पहले के जीवन में यीशु ने उद्धारकर्ता होने के लिए स्वीकार किया था, बच्चों की यीशु मसीह के प्रति महान प्रेम को अनुभव करने में सहायता करें ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक यूहन्ना १५:१३, इब्रानियों १२:९, प्रकाशितवाक्य १२:७–९, सिद्धांत और अनुबंध ९३:२१, और मूसा ४:१–४ का अध्ययन करें । *Gospel Principles* के अध्यायों २ और ३ को भी देखें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम और एक अनमोल मोती ।
   ख. चित्र ७-१, यीशु मसीह है (सुसमाचार कला चित्र किट २४०; ६२५७२), और एक नवजात शिशु का चित्र, खासकर आपकी या कक्षा के एक सदस्य की ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

एक नवजात शिशु का चित्र दिखाएं, और कक्षा को अनुमान लगाने दें कि वह कौन है ।

- इस व्यक्ति के जीवन यह आरंभ क्यों नहीं था ?

बच्चों को गवाही दें कि पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले हम सभी स्वर्गीय पिता के साथ उनके बच्चों के रूप में रहते थे । समझाएं कि हमारे शरीर जो आत्मा के रूप में थे वह हमारे शारीरिक शरीरों की तरह थे, हाथों, पैरों, आँखों, और इत्यादि के साथ, लेकिन मांस और हड्डी का नहीं था । यह भी समझाएं कि बच्चों की आत्मा के रूप में यह जीवन पहले का जीवन कहलाता है । इस पहले के जीवन के दौरान, हमारे स्वर्गीय माता-पिता ने हमें सुसमाचार और जीवन की योजना की शिक्षा दी थी ।

आप ब्रिगहम यंग के इस उद्धरण को शायद बाँटना चाहेंः "आप हमारे परमेश्वर, स्वर्गीय पिता से अच्छी तरह से परिचित हैं...बिना अपवाद के आप में से हर कोई जो आज यहाँ पर है वह परमेश्वर का एक पुत्र या एक पुत्री है" *Discourses of Brigham Young,* (पृ. ५०) ।

धर्मशास्त्र विवरण

निम्नलिखित के समान प्रश्न पूछें, और बच्चों को उनके अनुभवों पर चर्चा करने के लिए अवसर प्रदान करें:

- कौन आपसे प्रेम करता है ?
- आप कैसे बताएंगे कि कोई आपसे प्रेम करता है ?
- आप किससे प्रेम करते हैं ?

किसी के बारे में एक कहानी बताएं जिसने किसी व्यक्ति से इतना प्रेम किया था कि उसने उसके लिए कुछ महत्वपूर्ण काम किए थे, जैसे कि एक मां रात में अपने बीमार बच्चे की देखभाल के लिए जागती है या एक बड़ा भाई या बड़ी बहन, छोटे भाई या बहन को उसके विद्यालय के एक काम में उसकी सहायता करते हैं ।

समझाएं कि यह पाठ उसके बारे में जिसे यीशु ने पहले के जीवन में किया था जो हमारे प्रति उसके महान प्रेम को व्यक्त करता है ।

यीशु मसीह के चित्र का प्रदर्शन करें और वह कहानी बताएं जिसमें यीशु ने हमारा उद्धारकर्ता होना स्वीकार किया था । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । निम्नलिखित विचारों को समझने में बच्चों की सहायता करें:

१. पहले के जीवन में हम बच्चों के रूप में आत्मा थे और हमारे स्वर्गीय माता-पिता के साथ रहते थे (इब्रानियों १२:९) ।

२. यीशु स्वर्गीय पिता से जन्मा पहिलौठा बच्चा था जो आत्मा था (सि. और अनु. ९३:२१) और हमारी आत्माओं का बड़ा भाई है ।

३. लूसीफर, जो शैतान बन गया था, वह भी स्वर्गीय पिता का एक बच्चा था जो आत्मा था ।

४. स्वर्गीय पिता ने अपने सभी बच्चों के लिए जो आत्मा थे, एक सभा बुलाई थी । इस सभा में उसने उसकी तरह बनने की अपनी योजना को समझाया था । उसने हमसे कहा कि वह चाहता है कि हम एक शारीरिक शरीर को प्राप्त करने के लिए पृथ्वी पर जाएं । उसने समझाया कि पृथ्वी पर हमारी परीक्षा ली जाएगी कि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं या नहीं ।

५. इस सभा में स्वर्गीय पिता ने यह भी समझाया कि पृथ्वी पर हम सभी पाप करेंगे और हम सभी की मृत्यु होगी । स्वर्गीय पिता को आवश्यकता थी कि कोई हमारा उद्धारकर्ता बने, हमारे पापों के लिए सहे, और हमारे लिए मर जाए ताकि हम पुनरूत्थारित हो सकें ।

६. लूसीफर चाहता था कि स्वर्गीय पिता अपनी योजना को बदले । लूसीफर ने कहा कि सभी के चुनने की सवतंत्रता को लेने के द्वारा उन्हें बचाएगा, जिसने हमारे लिए गलतियों को करना या धार्मिक होने को असंभव बनाया होता । लूसीफर सभी सम्मान को भी लेना चाहता था (मूसा ४:१)

७. क्योंकि उसने हमसे प्रेम किया था (यूहन्ना १५:१३), यीशु ने हमारा उद्धारकर्ता होना स्वीकार किया था । वह स्वर्गीय पिता की योजना का अनुसरण करना चाहता था और स्वर्गीय पिता को महिमा देना चाहता था (मूसा ४:२) ।

८. स्वर्गीय पिता ने यीशु को हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए चुना था । लूसीफर क्रोधित हुआ था और स्वर्गीय पिता के खिलाफ विद्रोही हो गया था (प्रकाशितवाक्य १२:७–९; मूसा ४:३–४) ।

९. स्वर्गीय पिता के उन बच्चों को निर्णय लेना था जो आत्मा थे कि यीशु का अनुसरण करें या लूसीफर का ।

१०. स्वर्गीय पिता के एक-तिहाई बच्चे जो आत्मा थे उन्होंने लूसीफर का अनुसरण करने का चुनाव किया था, और उन सभी को स्वर्ग से निकाल दिया गया था । लूसीफर शैतान बन गया था, और वे आत्माएं जिन्होंने उसका अनुसरण किया था वे बुरी आत्माएं बन गई थीं, जो हमसे गलत काम करवाने की कोशिश करती हैं । वे आत्माएं जिन्होंने शैतान का अनुसरण किया था उन्होंने शारीरिक शरीरों को प्राप्त नहीं किया था ।

११. वे सभी आत्माएं जिन्होंने स्वर्गीय पिता की योजना को चुना था और पहले के जीवन में यीशु का अनुसरण किया था वे मांस और हड्डी वाले शारीरिक शरीरों के साथ पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं या लेंगे ।

१२. कक्षालय के सभी बच्चों ने स्वर्गीय पिता की योजना के अनुसरण को चुना था और पृथ्वी पर नश्वर शरीरों के साथ जन्म लिया था ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- आपके विचार से स्वर्गीय पिता के साथ स्वर्ग में रहना किसकी तरह था ?
- यह जानकर आपको कैसा महसूस होता है कि स्वर्गीय पिता आपकी आत्मा का पिता है ?
- इसका क्या मतलब है कि यीशु हमारी आत्मा का बड़ा भाई है ?
- किसी तरह से लूसीफर स्वर्गीय पिता की योजना को बदलना चाहता था ?
- यह जानकर आपको कैसा महसूस होता है कि यीशु ने हमारे लिए सहना और मरना स्वीकार किया था ?
- आप कैसे जानते हैं कि आपने पहले के जीवन में यीशु के अनुसरण को चुना था ? आप क्यों खुश हैं कि आपने इसे चुना था ?
- आपने पहले के जीवन में यीशु के अनुसरण को चुना था, यह सत्य आपको अपने स्वयं के बारे में क्या बताता है ?
- अब यह कि हम नश्वरता में पैदा हुए हैं, यह हमारे लिए महत्वपूर्ण क्यों हो जाता है कि हम अब भी यीशु के अनुसरण को चुनते हैं ?

बच्चों को बाइबिल दिखाएं और समझाएं कि बाइबिल का नया नियम उन चीजों के बारे में बताता है जिसे यीशु और उसके शिष्यों ने तब किया था जब वे पृथ्वी पर रहते थे । समझाएं कि इस वर्ष के पाठ यीशु और उसके शिष्यों के जीवन पर आधारित हैं । प्रत्येक रविवार कक्षा में बाइबिल लाने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. एक समीक्षा के रूप में, चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित शब्दों को लिखें:

एक-तिहाई
पहिलौठा
बड़ा भाई
हमारी आत्माओं का पिता
स्वर्ग में सभा
लूसीफर

कक्षा को छोटे-छोटे दलों में विभाजित करें । प्रत्येक दल को इन धारणाओं में से एक या अधिक पर चर्चा करने के लिए कहें और कक्षा को उसे बताने की तैयारी के लिए कहें जिसके बारे में उन्हें याद हो । कुछ मिनट के पश्चात प्रत्येक दल को कक्षा में रिपोर्ट देने के लिए कहें ।

२. बच्चों को उनके बाइबिल के नये नियम की किताबों की सूची को खोलने दें । निम्नलिखित प्रश्नों में से कुछ को पूछने के द्वारा पाठ १ की समीक्षा करें : किस तरह के मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की किताब एक समान है ? किस तरह से वे अलग हैं ? प्रेरितों के काम की किताब किसके बारे में है ? बाकी की अधिकतर किताबों को धर्मपत्र क्यों कहा जाता है ? चॉकबोर्ड पर सन्दर्भों को लिखने और उनकी बाइबिल की कॉपियों में उन सन्दर्भों को खोजने के द्वारा बच्चों की नये नियम की किताबों के साथ अच्छी तरह से परिचित होने में सहायता करें ।

३. बच्चों की यूहन्ना १५:१३ को याद करने में सहायता करें ।

४. बच्चों की नये नियम की किताबों को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि आप और आपकी कक्षा के बच्चे स्वर्गीय पिता के वे बच्चे हैं जो आत्मा थे और कि यीशु हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने पहले के जीवन में हमारा उद्धारकर्ता होना स्वीकार किया था । हम स्वर्गीय पिता से इतना प्रेम करते हैं कि हमने उसकी योजना के अनुसरण को चुना था । बल दें कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि बच्चे यहाँ पृथ्वी पर स्वर्गीय पिता की योजना का अनुसरण करना जारी रखें । गवाही दें कि सच्ची प्रसन्नता का एकमात्र तरीका यीशु का अनुसरण करना और उसकी आज्ञाओं को मानना है ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर बच्चे इस पाठ की समीक्षा के रूप में मूसा ४:१–४ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
३

यूहन्ना बपतिस्मा वाले ने यीशु मसीह के लिए रास्ता तैयार किया था

उद्देश्य

बच्चों की समझने में सहायता करना कि पृथ्वी पर स्वर्गीय पिता के एक महत्वपूर्ण काम को करने के लिए उन्हें पहले सी ही नियुक्त किया गया था ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक लूका १:५–२५, ५७–८०; मत्ती ३:१–६; और सिद्धांत और अनुबंध ८४:२७–२८ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।
   ख. प्रत्येक बच्चे के लिए एक कागज जिसपर शब्द *मैं एक चुनी हुई आत्मा हूं,* लिखा हुआ हो ।
   ग. चित्र ७-२, वीरान भूमि में यूहन्ना प्रचार करता हुआ (सुसमाचार कला चित्र किट २०७; ६२१३२) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

कक्षा के आरंभ होने से पहले गुप्त रूप से एक बच्चे से उन कागजों को आरंभिक प्रार्थना के तुरन्त पश्चात दूसरे बच्चों को देने के लिए कहें जिसे आपने तैयार किया है ।

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

उस बच्चे को कक्षा के सदस्यों को कागजों को देने दें । समझाएं कि कक्षा के आरंभ होने से पहले ही कागजों को बाँटने के काम को करने के लिए आपने बच्चे को चुन लिया था । पहले से नियुक्ति इसी तरह होती है । (पहले से नियुक्ति को चॉकबोर्ड पर लिखें) । पहले के जीवन में स्वर्गीय पिता ने हमें पहले से ही नियुक्त कर लिया था जब उसने हमें पृथ्वी पर उसके लिए एक विशेष काम को करने के लिए चुना था । पहले से नियुक्त होने का मतलब यह नहीं है कि हमें उस काम को करना ही है; हमारे पास अब भी हमारी आजादी और स्वतंत्रता है, परन्तु अवसर हमारा होता है यदि हम चुनते हैं । समझाएं कि इस पाठ में बच्चे यूहन्ना बपतिस्मा वाले के बारे में सीखेंगे, जिसे पृथ्वी पर एक महत्वपूर्ण काम को करने के लिए पहले से ही नियुक्त किया गया था या चुना गया था । बच्चों को उनके कागजों पर लिखे हुए शब्दों को जोर से पढ़ने दें । उन्हें बताएं कि धर्मशास्त्र जिसे वे पढ़ेंगे, समझाते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा वाला एक चुनी हुई आत्मा थी, पहले के जीवन में यीशु मसीह के लिए एक रास्ते को तैयार करने के लिए चुनी हुई ।

धर्मशास्त्र विवरण

खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध धर्मशास्त्रों से यूहन्ना बपतिस्मा वाले के जन्म, बचपन, और काम की कहानी की शिक्षा दें । वीरान भूमि में यूहन्ना प्रचार करता हुआ, के चित्र का एक उपयुक्त समय पर प्रदर्शन करें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यूहन्ना बपतिस्मा वाले को लोगों की तैयारी के लिए पहले से ही नियुक्त किया गया था कि वे यीशु मसीह को सुनें ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक

होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यूहन्ना बपतिस्मा वाले के माता-पिता के बारे में हम क्या जानते हैं ? (लूका १:५–७) ।
- जकरयाह गूँगा क्यों हो गया था कि वह बोल न सके ? (लूका १:१८–२०) ।
- जकरयाह और इलीशिबा को उनके बेटे का नाम यूहन्ना क्यों रखना था ? (लूका १:१३) ।
- यूहन्ना के बचपन के बारे में हम क्या जानते हैं ? (लूका १:८०; सि. और अनु. ८४:२७–२८) ।
- क्या करने के लिए यूहन्ना बपतिस्मा वाले को पहले से नियुक्त किया गया था ? (लूका १:१५–१७, ७६–७७) ।
- यूहन्ना बपतिस्मा वाले में यीशु मसीह के लिए रास्ता तैयार करने के अपने पहले से नियुक्त किए गए काम को कैसे पूरा किया था ? (मत्ती ३:१–६) ।

समझाएं कि जैसे यूहन्ना बपतिस्मा वाला एक चुनी हुई आत्मा थी जिसे यीशु मसीह के लिए रास्ते को तैयार करने के द्वारा स्वर्गीय पिता के राज्य के निर्माण में सहायता के लिए चुना गया था, बिल्कुल वैसे ही हम भी चुनी हुई आत्माएं हैं जिसे यीशु मसीह के बारे में लोगों को अधिक जानने में सहायता करने के द्वारा स्वर्गीय पिता के राज्य के निर्माण में सहायता के लिए चुना गया है ।

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन द्वारा दिए गए उद्धरण को पढ़ें: "आप चुनी हुई आत्माएं हैं, आप में कई लोगों को लगभग ६,००० वर्ष पहले ही इस दिन और इस समय में आने के लिए आरक्षित किया गया था जहां बुराइयाँ, जिम्मेदारियाँ, और अवसर बहुत हैं" (Conference Report, अक्टू. १९७७, पृ. ४३; या *Ensign*, नव. १९७७, पृ. ३० में) ।

- यह जानकर आप कैसा लगता है कि स्वर्गीय पिता आपको व्यक्तिगत तौर पर जानता है और इस समय पृथ्वी पर आने के लिए उसने आपको चुना था ?
- कौन से कुछ काम हैं जिन्हें शायद स्वर्गीय पिता के राज्य के निर्माण की सहायता में हमारे लिए पहले से ही चुन लिया गया था ? (प्रचार कार्य करना, अपने अनुबंधों को मानने के द्वारा अच्छे उदाहरण बनना, पौरोहित्य धारक होना, धार्मिक परिवारों को बनाना, गिरजाघर की बुलाहटों को पूरा करना) ।
- आप कैसे पता कर सकते हैं कि स्वर्गीय पिता क्या चाहता है कि आप पृथ्वी पर करें ? (निर्णयों के बारे में प्रार्थना करें, आत्मा को सुनें) । समझाएं कि स्वर्गीय पिता ने हमें एक स्टेक कुलपति से कुलपति के आशीर्वादों को तब प्राप्त करने के लिए अवसर को भी प्रदान किया है जब हम काफी बड़े हो जाएं । अक्सर कुलपति के आशीर्वाद उन बुलाहटों और कार्यों के तरफ संकेत करते हैं जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं या जिसे स्वर्गीय पिता चाहता है कि हम अपने जीवन में करें । आप उन चीजों को करने के लिए अपने आपको कैसे तैयार कर सकते हैं जिसे स्वर्गीय पिता चाहता है कि आप करें ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. प्रत्येक बच्चे के लिए निम्नलिखित वक्तव्यों के साथ एक कागज तैयार करें (बिना उत्तर के) या चॉकबोर्ड पर वक्तव्यों को लिखें:

यूहन्ना बपतिस्मा वाला:

क. में रहता था ।

ख. यीशु से _____ महीने बड़ा था ।

ग. और _____ से बना हुआ कपड़ा पहनता था ।

घ. और _____ खाता था ।

च. के लिए रास्ता तैयार किया था ।

उत्तरः क. वीरान भूमि; ख. छः; ग. ऊँट के बाल, चमड़ा, घ. टिड्डियाँ, जंगली शहद; च. यीशु मसीह ।

खाली स्थानों को भरने के लिए बच्चों को लूका १:२६–२७, ३५–३६, ७६ और मत्ती ३:१, ४ को पढ़ने दें । (यदि बच्चे नहीं जानते हैं कि टिड्डियाँ क्या होती हैं तो समझाएं कि वे बड़े आकार के उड़ने वाले कीड़े होते हैं) । उन्हें अनुभूति करवाएं कि यद्यपि वीरान भूमि में यूहन्ना बपतिस्मा वाला एक साधारण, विनम्र जीवन जीया था, विश्वासी रहते हुए उसने अपने काम को पूरा किया था और यीशु मसीह के लिए रास्ता तैयार किया था ।

२. उन लोगों के बारे में खोज करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को पढ़ने दें जिन्हें उनके पार्थिव कार्यों को करने के लिए पहले से ही नियुक्त किया गया थाः

यिर्मयाह १:५—यिर्मयाह
१ नफी ११:१८—मरियम, यीशु की माँ (नफी को दिया हुआ दिव्यदर्शन)
एथर ३:१४—यीशु मसीह
सिद्धांत और अनुबंध १३८:५३, ५५—जोसफ स्मिथ और अन्य
इब्राहीम ३:२३— इब्राहिम

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि जैसे यूहन्ना बपतिस्मा वाले को यीशु मसीह के लिए रास्ता तैयार करने और उसके प्रति एक साक्षी बनने के लिए उसे पहले से ही नियुक्त किया गया था, उसी तरह हममें से प्रत्येक को पृथ्वी पर अपने काम को करने के लिए पहले से ही नियुक्त किया गया है । सुसमाचार को जीने की और उन सब को करने में योग्य होने के महत्व के बारे में अपने अनुभवों को व्यक्त करें जिसे स्वर्गीय पिता ने हमें करने के लिए पहले से ही नियुक्त किया है ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में लूका १:५–२३, ५७–८० का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह स्वर्गीय पिता का पुत्र है

पाठ
४

उद्देश्य

बच्चों की समझने में सहायता करना कि मांस के शरीर में यीशु मसीह ही एकमात्र परमेश्वर का पुत्र है ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती १:१८–२५ और लूका १:२६–३८, २:१–२० का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त अध्ययनः यूहन्ना ३:१६–१७, अलमा २२:१४, सिद्धांत और अनुबंध १९:१६–१९ और *सुसमाचार सिद्धांत*, अध्याय ११ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।
   ख. चित्र ७-१, यीशु ही मसीह है (सुसमाचार कला चित्र किट २४०; ६२५७२) ७-३, यीशु का जन्म (सुसमाचार कला चित्र किट २००; ६२११६); ७-४, चरवाहों के लिए मसीह के जन्म की घोषणा (सुसमाचार कला चित्र किट २०२; ६२११७); और ७-५, एक बच्चे के साथ परिवार (६२३०७) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

चित्र ७-५ का प्रदर्शन करें, एक बच्चे के साथ परिवार । बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें :

- आपके विचार से ये माता-पिता बच्चे के होने से कैसा महसूस करते हैं ?
- जन्म लेने से पहले इस बच्चे की आत्मा कहाँ रहती थी ?
- इसकी पार्थिव माता कौन है ? इसका पार्थिव पिता कौन है ? इसकी आत्मा का पिता कौन है ?

समझाएं कि बिल्कुल इस बच्चे की तरह हममें से प्रत्येक के पास एक पार्थिव पिता और माता है और यह कि स्वर्गीय पिता हमारी आत्माओं का पिता है ।

यीशु ही मसीह है, के चित्र का प्रदर्शन करें ।

- यीशु की माता कौन है ? यीशु का पिता कौन है ?

बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु हम सभी से विभिन्न है क्योंकि यीशु के पार्थिव शरीर का पिता स्वर्गीय पिता है । उन्हें बताएं कि यह पाठ यीशु के जन्म के बारे में अधिक सीखाएगा ।

धर्मशास्त्र विवरण

खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध धर्मशास्त्रों से मरियम और युसूफ और यीशु के जन्म की कहानी की शिक्षा दें, जहाँ उपयुक्त हो वहाँ चित्रों का उपयोग करते हुए । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि स्वर्गीय पिता ही यीशु मसीह के आत्मा वाले शरीर का और उसके शारीरिक शरीर का पिता है ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु के जन्म से पहले स्वर्गीय पिता के दूतों ने मरियम और युसूफ से उसके बारे में क्या कहा ? (मत्ती १:१९–२३; लूका १:३०–३३, ३५) क्यों ?
- आपके विचार से दूत चरवाहों को क्यों दिखाई दिए थे ? (लूका २:९–१४) । (चरवाहों की साक्षी के लिए कि स्वर्गीय पिता के इकलौता प्रिय पुत्र का जन्म बेतेलेहम में हो चुका है) ।
- आपके विचार से चरवाहों ने यीशु के बारे में लोगों से क्या कहा था ? (लूका २:१५–२०) ।
- यीशु पिता का इकलौता प्रिय क्यों कहलाता है ? (यीशु ही एकमात्र वह व्यक्ति है जिसने नश्वरता में जन्म लिया था जिसका शारीरिक पिता स्वर्गीय पिता है) । समझाएं कि मरियम के पति के रूप में युसूफ को वह व्यक्ति होने के लिए चुना गया था जो यीशु की शिक्षा और उसके बढ़ने में उसकी सहायता कर सके ।
- स्वर्गीय पिता के साथ यीशु के संबंध, स्वर्गीय पिता के साथ हमारे संबंधों से विभिन्न कैसे है ?
- यीशु की माता का नश्वर होना क्यों महत्वपूर्ण था ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि क्योंकि मरियम नश्वर थी, यीशु भी नश्वर था और हमारे लिए मर सकता था । बच्चों की यह भी समझने में सहायता करें कि क्योंकि स्वर्गीय पिता यीशु के शारीरिक शरीर का पिता है, यीशु को मरने की आवश्यकता नहीं थी (देखें यूहन्ना ५:२६; १०:१७–१८) । उसने हमारे पापों के लिए मरना और मृत्यु पर विजय प्राप्त करना चुना था (देखें अलमा २२:१४; सि. और अनु. १९:१६–१९) ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. लड़कों से कल्पना करने के लिए कहें कि युसूफ की तरह होना कैसा हो सकता है । लड़कियों से कल्पना करने के लिए कहें कि मरियम की तरह होना कैसा हो सकता है । उन्हें आपको बताने दें कि उन्होंने क्या सोचा होता जब दूत उनसे मिलने आया होता । उनसे पूछें कि उन्होंने कैसा अनुभव किया होता जब उनसे कहा गया होता कि वे उद्धारकर्ता के पार्थिव माता-पिता हैं ।

२. प्रत्येक बच्चे को निम्नलिखित धर्मशास्त्रों में से एक को देखने दें, जहाँ यीशु को इकलौते प्रिय पुत्र के रूप में उल्लेखित किया गया है: यूहन्ना १:१४; ३:१६–१८; १ यूहन्ना ४:९; याकूब ४:५, ११; अलमा ५:४८; १२:३३–३४; सिद्धांत और अनुबंध २९:४२, ४६; ९३:११; और मूसा १:६ । (यदि कक्षा में नौ से अधिक बच्चे हों तो आप दो बच्चों को एक धर्मशास्त्र खोजने के लिए नियुक्त कर सकती हैं) । जब कक्षा इस गतिविधि को पूरा कर ले, वे समझ जाएंगे कि शीर्षक *इकलौता प्रिय पुत्र* हमें बताता है कि यीशु ही एकमात्र व्यक्ति है जिसने पृथ्वी पर जन्म लिया था जोकि स्वर्गीय पिता का शारीरिक पुत्र है ।

३. बच्चों को आपको कुछ ऐसा बताने के लिए कहें जिसे वे यीशु के बारे में जानते हों और वह उनके लिए महत्वपूर्ण हो ।

४. बच्चों के साथ पहले विश्वास के अनुच्छेद की समीक्षा करें ।

निष्कर्ष

गवाही

यीशु मसीह की गवाही दें इस बात पर बल देते हुए कि वह स्वर्गीय पिता का इकलौता पुत्र है, या पृथ्वी पर जन्मा एकमात्र व्यक्ति जिसका शारीरिक पिता स्वर्गीय पिता था । गवाही दें कि यीशु हमारा उद्धारकर्ता है । बच्चों को अध्ययन करने और एक गवाही को प्राप्त करने में प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करें कि यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता है ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की समीक्षा के रूप में लूका १:२६–३८ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह का बचपन

पाठ
५

उद्देश्य

यीशु के बचपन के बारे में सीखने में और यह समझने में बच्चों की सहायता करना कि परमेश्वर ने साक्षियों को प्रदान किया था इस बात की गवाही देने के लिए कि यीशु मसीह उसका पुत्र है ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक लूका २:२१–५२, मत्ती २, और सिद्धांत और अनुबंध ९३:११–१४ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।
   ख. एक रोचक वस्तु, जैसे कि एक पारिवारिक स्मृति चिन्ह, जोकि इतना छोटा है कि कक्षालय में आसानी से छुपाया जा सकता है ।
   ग. चित्र ७-६, मंदिर में बालक यीशु (सुसमाचार कला चित्र किट २०५; ६२५००) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

जब बच्चे कक्षा में आते हैं, उनमें से दो या तीन बच्चों को वह वस्तु दिखाएं जिसे आप लाई हैं; तब कक्षा के बाकी बच्चों के आने से पहले उसे छुपा दें । एक बच्चा जिसने उस वस्तु को देखा है उससे उस वस्तु का वर्णन बिना उसका नाम लिए करने को कहें कि वह क्या है । तब कक्षा से पूछें कि क्या वे उस वस्तु के बारे में जानते हैं । अन्य बच्चों से उस वस्तु का वर्णन करने के लिए कहें जिन्होंने उसे देखा है । बच्चों की समझने में सहायता करें कि वे किसी चीज के बारे में अधिक सुनिश्चित हो सकते हैं यदि वे उसी के बारे में एक से अधिक लोगों से सुनें । कक्षा को वह वस्तु दिखाएं ।

समझाएं कि वे बच्चे जिन्होंने उस वस्तु को पहले देखा था वे साक्षियों की तरह हैं क्योंकि वे उस वस्तु को जानते थे और उसका वर्णन किया था कि वह किसकी तरह था । एक साक्षी वह होता है जिसे किसी चीज के बारे में व्यक्तिगत रूप से जीनकारी होती है और उस ज्ञान को वह दूसरों के साथ बाँटता है । जो किसी चीज के बारे में प्रमाण या सबूत देते हैं वह भी साक्षी हो सकते हैं, उदाहरण के तौर पर, मॉरमन की पुस्तक गवाही देती है कि यीशु ही मसीह है । समझाएं कि जब यीशु एक बच्चा था, स्वर्गीय पिता ने कई साक्षियों को प्रदान किया था यह गवाही देने के लिए कि यीशु उसका पुत्र था ।

धर्मशास्त्र विवरण

जैसा कि खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध किए गए धर्मशास्त्रों में यीशु के बचपन का विवरण पाया जाता है, उसकी शिक्षा दें (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों

की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा । इस पाठ की शिक्षा देने से पहले, आप समृद्धि गतिविधि १ का उपयोग पहले के पाठ का एक समीक्षा के रूप में कर सकती हैं ।

- मरियम और युसूफ बालक यीशु की मंदिर में क्यों लाए थे ? (लूका २:२१–२४) ।
- शमौन कैसे जानता था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है ? (लूका २:२५–३०) ।
- हन्नाह ने कैसे साक्षी दी थी कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था ? आपके विचार से वह कैसे जानती थी कि वह कौन था ? (लूका २:३६–३८) ।
- ज्योतिषी कैसे जानते थे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था ? उन्होंने उसे उपहार क्यों दिए थे ? (मत्ती २:२, ११) ।
- आप यीशु मसीह के लिए एक साक्षी कैसे हो सकते हैं ?
- स्वर्गीय पिता ने युसूफ से उसके परिवार को लेकर मिस्र देश जाने के लिए क्यों कहा था ? (मत्ती २:१३–१४) । हेरोदेस ने यीशु को राजा बनने से रोकने के लिए क्या किया था ? (मत्ती २:१६) । युसूफ को कैसे पता चला था कि मिस्र वापस जाना अब सुरक्षित था ? (मत्ती २:१९–२०) । रहने के लिए परिवार कहाँ गया था ? (मत्ती २:२१–२३) ।
- आपके विचार से बालक के रूप में यीशु ने अनुभव और ज्ञान को प्राप्त करने के लिए क्या किया था ? (लूका २:४०, ५२; सि. और अनु. ९३:११–१४) । जैसे-जैसे आप बढ़ते हैं, आपके लिए किन चीजों को जानना महत्वपूर्ण हो जाता है ? आपने किन उद्देश्यों को निर्धारित किया है ?
- मंदिर में बालक यीशु के चित्र को दिखाएं । मंदिर के लोग यीशु से प्रभावित क्यों हुए थे ? (लूका २:४६–४७ । ध्यान दें कि इस धर्मशास्त्र के लिए जोसफ स्मिथ का अनुवाद कहता है, "और वे उसे सुन रहे थे, और उससे प्रश्न पूछ रहे थे") । यह उसके बारे में क्या बताता है कि यीशु ने अपने बचपन में कितना सीखा था ? सुसमाचार के बारे में अधिक जानने के लिए आप क्या कर सकते हैं ? मंदिर में यीशु अपने पिता को कैसे सम्मान दे रहा था और कैसे उसका आज्ञापालन कर रहा था ?
- युसूफ और मरियम के सम्मान और आज्ञापालन के लिए यीशु ने क्या किया था ? (लूका २:५१–५२) । समझाएं कि युसूफ और मरियम ने यीशु को उसके बचपन के दौरान उसी तरह से सीखाया था जैसे कि हमारे माता-पिता हमारे बचपन के दौरान हमें सीखाते हैं । आप अपने माता-पिता का सम्मान कैसे कर सकते हैं ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. पहले सप्ताह के पाठों से बच्चों को अधिक से अधिक उन लोगों के नाम बताने दें जिन्होंने साक्षी दी थी कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र था । इन साक्षियों को याद रखने में बच्चों की सहायता के लिए, आप उन्हें निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को देखने दे सकती हैं: लूका १:३०–३२ (जिब्राईल), लूका १:४१–४३ (इलीशिबा), यूहन्ना १:२९–३४ (यूहन्ना बपतिस्मा वाला), और लूका २:८–१७ (दूत और चरवाहे) ।

२. उन उद्देश्यों पर चर्चा करें जिसे बच्चे सुसमाचार के बारे में अधिक सीखने में सहायता के लिए कर सकते हैं, जैसै कि हर दिन धर्मशास्त्रों को पढ़ना, प्रार्थना करना, पारिवारिक घरेलू संध्या में भाग लेना, और इत्यादि । बच्चों को कागज के एक टुकड़े पर दो उद्देश्यों को लिखने के लिए कहें जो इस वर्ष सुसमाचार के बारे में अधिक सीखने में उनकी सहायता करेगा । उन्हें कागज को उस जगह रखने के लिए प्रोत्साहित करें जहाँ से वे उसे अक्सर देख सकें ।

३. आपकी कक्षा के प्रत्येक बच्चे के लिए पाठ के अन्त में मानचित्र की एक कॉपी बनाएं । बच्चों को उन स्थानों को खोजने दें और उनपर लेबल लगाने दें जहाँ यीशु रहता था: यरूशलेम, बेतलेहम, मिस्र, और नासरत ।

४. पहले विश्वास के अनुच्छेद को याद रखने में बच्चों की सहायता करें ।

५. चॉकबोर्ड पर उस समय के धर्मशास्त्र सन्दर्भों को लिखें जब स्वर्गीय पिता ने साक्षी दी थी कि यीशु उसका पुत्र है (मत्ती ३:१६–१७; १७:५; ३ नफी ११:६–८; जोसफ स्मिथ—इतिहास १:१७)। बच्चों को सन्दर्भों को देखने दें और प्रत्येक घटना पर चर्चा करने दें कि क्या हुआ था।

६. बच्चों की लूका २:५२ को याद करने में सहायता करें।

निष्कर्ष

गवाही

बच्चों के साथ यीशु मसीह के बारे में अपने अनुभवों को बाँटें, और उन्हें बताएं कि यह आपके लिए महत्वपूर्ण क्यों है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। उनकी समझने में सहायता करें कि यदि वे यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं तो वे उसकी तरह अधिक बन सकते हैं।

समृद्धि गतिविधि २ का पाठ के लिए जीवन में लागू होने की तरह उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की समीक्षा के रूप में लूका २:४०–५२ का अध्ययन करें।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें।

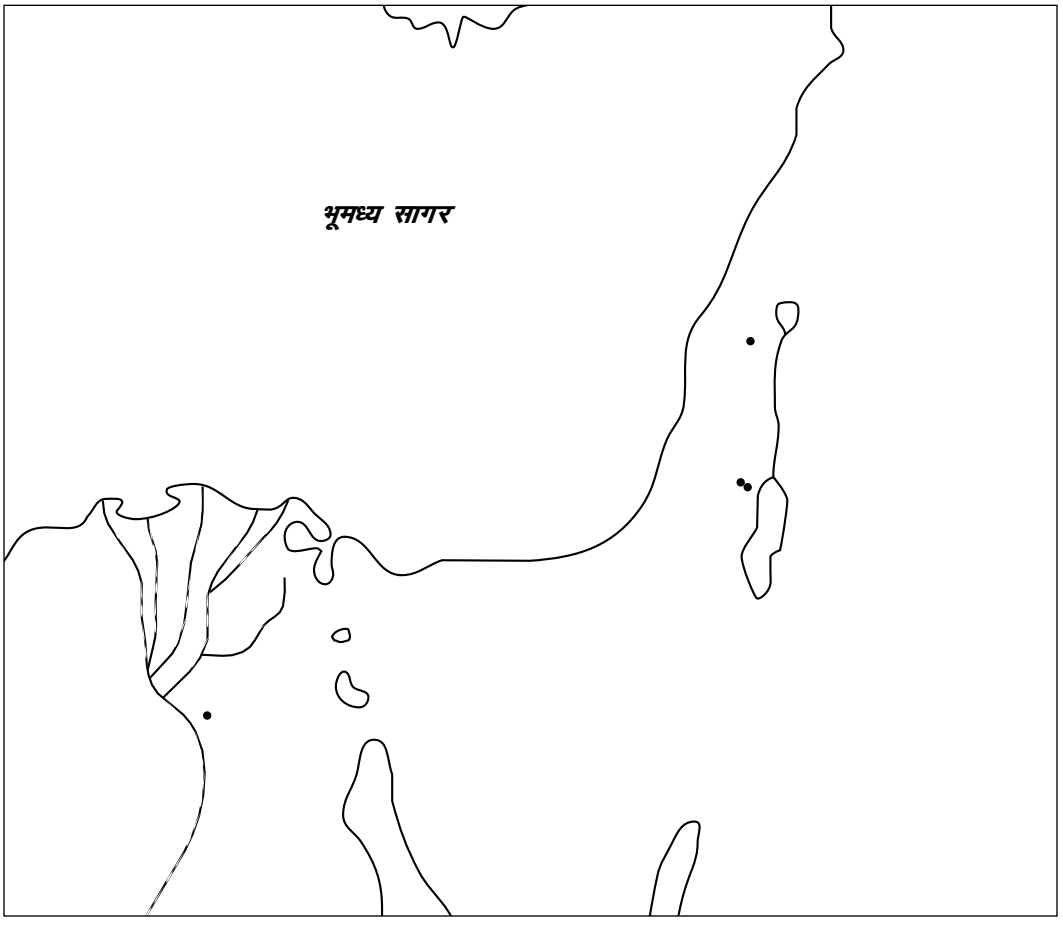

स्थान जहां यीशु रहता था।

पाठ
६

यीशु मसीह का बपतिस्मा

उद्देश्य

बच्चों की उनके बपतिस्मे के अनुबंधों को मानने में सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ३:१३–१७; यूहन्ना ३:५; २ नफी ३१:४–१०, १७–२१; मुसायाह १८:८–१७; और सिद्धांत और अनुबंध ३३:१५ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः यूहन्ना १:२९–३४, सिद्धांत और अनुबंध २०:३७, और *सुसमाचार सिद्धांत,* अध्याय २० ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. एक मॉरमन की पुस्तक ।
   ग. विश्वास के अनुच्छेद का पोस्टर (६४३७०) ।
   घ. चित्र ७-७, यूहन्ना बपतिस्मा वाला यीशु को बपतिस्मा देता हुआ (सुसमाचार कला चित्र किट २०८; ६२१३३) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

दो बच्चों को कक्षा के सामने बुलाएं, उन्हें एक दूसरे के सामने खड़े होकर उनके सिर के ऊपर से एक दूसरे का हाथ पकड़ने के लिए कहें ताकि उसके नीचे से दूसरे बच्चे चल सकें । समझाएं कि ये बच्चे एक अत्याधिक महत्वपूर्ण द्वार का प्रतिनिधित्व करते हैं । बच्चों को बताएं कि यह द्वार उस सकेत और संकरे रास्ते का दरवाजा है जो अनन्त जीवन के तरफ ले जाता है । एक बच्चे को २ नफी ३१:१७ पढ़ने दें । समझाएं कि अनन्त जीवन के तरफ जाने के चरणों में से पहला कदम उस द्वार से जाना है (बपतिस्मा लेना) । बच्चों को द्वार से जाने दें ।

धर्मशास्त्र विवरण

यूहन्ना बपतिस्मा वाला यीशु को बपतिस्मा देता हुआ, का चित्र दिखाएं । खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध किए गए धर्मशास्त्रों में पाये जाने वाले विवरण की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii)।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु को बपतिस्मा किसने दिया था ? (मत्ती ३:१३) ।
- यूहन्ना बपतिस्मा वाला यीशु को बपतिस्मा करने में क्यों हिचकिचा रहा था ? (मत्ती ३:१४) ।
- यीशु बपतिस्मा क्यों लेना चाहता था ? (मत्ती ३:१५; २ नफी ३१:७, ९) ।

- हमें बपतिस्मा लेने की आवश्यकता क्यों है ? (यूहन्ना ३:५) । डुबने का मतलब क्या है ? जब हम बपतिस्मा लेते हैं तब हमें पानी के नीचे पूरी तरह से क्यों डुबना होता है ? (३ नफी ११:२६–२८) ।
- यीशु के बपतिस्मा के तुरन्त पश्चात क्या हुआ था ? (मत्ती ३:१६–१७) ।
- हम पवित्र आत्मा का उपहार कैसे प्राप्त करते हैं ? (सि. और अनु. ३३:१५) ।
- आपने कैसा अनुभव किया था जब आपका बपतिस्मा हुआ था ? आपने कैसा अनुभव किया था जब आपका पुष्टिकरण हुआ था और आपको पवित्र आत्मा का उपहार दिया गया था ?
- जब आपका बपतिस्मा हुआ था तब आपने क्या प्रतिज्ञा किया था ? स्वर्गीय पिता ने हमसे क्या प्रतिज्ञा की थी ? (मुसायाह १८:८–१३; सि. और अनु. २०:३७) ।

समझाएं कि ये प्रतिज्ञाएं जो हमारे और स्वर्गीय पिता के बीच हुई थीं उसे बपतिस्मा के अनुबंध कहते हैं । जब हमारा बपतिस्मा हुआ था तब हमने अनुबंध किया था:

यीशु के गिरजाघर का सदस्य होने के लिए ।
दूसरों की सहायता के लिए ।
सारे समय और सभी स्थानों पर स्वर्गीय पिता की साक्षी के रूप में खड़े होने के लिए ।
स्वर्गीय पिता की करने और उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए ।

यदि हम अपने अनुबंधों को मानते हैं, स्वर्गीय पिता हमसे अनुबंध करता है:

हमारे पापों को क्षमा करने का ।
हमें कई आशीषों को देने का ।
पवित्र आत्मा के द्वारा हमें प्रतिदिन मार्गदर्शन देने का ।
हमें अनन्त जीवन देने का (देखें *सुसमाचार सिद्धांत*, अध्याय २०) ।

- जब हम बपतिस्मा के द्वार से जाते हैं, हम कहां से प्रवेश कर रहे होते हैं ? (२ नफी ३१:१७–१८) । बपतिस्मा के पश्चात अनन्त जीवन को प्राप्त करने और स्वर्गीय पिता के साथ सदैव रहने में समर्थ होने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? (२ नफी ३१:१८–२०) ।

विश्वास के अनुच्छेद

विश्वास के अनुच्छेद का पोस्टर (६४३७०) दिखाएं । उसे याद करने में बच्चों की सहायता करें ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. चॉकबोर्ड या कागज के एक टुकड़े पर बपतिस्मा और उनके धर्मशास्त्र सन्दर्भों के बारे में निम्नलिखित प्रश्नों को लिखें: हमारा बपतिस्मा क्यों हुआ है ? (सि. और अनु. ४९:१३; २ नफी ३१:१८) । हमारा बपतिस्मा कैसे हुआ था ? (सि. और अनु. २०:७२–७४) । किसके द्वारा हमारा बपतिस्मा हुआ था ? (सि. और अनु. २०:७३) । हमारा बपतिस्मा कब हुआ था ? (सि. और अनु. ६८:२७) । बच्चों को धर्मशास्त्रों को देखने दें और उत्तरों पर चर्चा करें ।

२. निम्नलिखित वाक्यांशों में से प्रत्येक को एक अलग कागज के टुकड़े पर लिखें :

हमारे पापों की क्षमा के लिए
गिरजाघर का सदस्य होने के लिए
ताकि हम पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त कर सकें
आज्ञाकारी होने के लिए
सकेत और संकरे मार्ग पर जाने के लिए

उस द्वार से बच्चों को जाने दें जिसका उपयोग पाठ के आरंभ में किया गया था । जैसे-जैसे प्रत्येक बच्चा उसमें से जाता है, उसे कागजों में से एक को पकड़ाते जाएं । समझाएं कि यही वे कारण हैं कि हमें बपतिस्मा क्यों लेना चाहिए । बच्चों के साथ चर्चा करें कि हम अपने बपतिस्मे के अनुबंधों को कैसे रख सकते हैं ।

३. बपतिस्मा लेते हुए एक बच्चे के चित्र (६२०१८) और यूहन्ना बपतिस्मा वाला यीशु को बपतिस्मा देता हुआ, के चित्रों का उपयोग करते हुए, आप अपने स्वयं के बपतिस्मा के बारे में बताएं या एक बच्चे को उसके बपतिस्मा के बारे में बताने दें ।

४. बच्चों की २ नफी ३१:२० को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही — बपतिस्मा के महत्व की गवाही दें और यह कि बपतिस्मा ही वह द्वार है जो सकेत और संकरे मार्ग से होते हुए अनन्त जीवन के तरफ ले जाता है । कुछ बच्चे शायद उनके स्वयं के बपतिस्मे के बारे में अपनी गवाहियों को देना चाहें ।

प्रस्तावित घर पठन — सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती ३:१३–१७ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह शैतान के द्वारा लालच में पड़ता है

पाठ
७

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की सीखने में सहायता करना कि शैतान की लालचों का सामना कैसे किया जाए ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ४:१–११, मरकुस १:१२–१३, और लूका ४:१–१३ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठन : १ कुरिन्थियों १०:१३; २ नफी २:१८; २८:१९–२२; ३ नफी १८:१८; और सिद्धांत और अनुबंध १०:५, २७; ११:१२ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँ :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।
   ख. प्रत्येक बच्चे के लिए एक कागज और पेन्सिल ।
   ग. निम्नलिखित तीन शब्दपट्टियाँः
      निश्चय करें
      प्रार्थना करें
      पवित्र आत्मा को सुनें
   घ. चित्र ७-८, मंदिर का शिखर

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा दें । बच्चों से तीन चीजों को लिखने के लिए कहें जिसे वे सोचते हैं कि उनकी उम्र के बच्चे लालच में पड़ सकते हैं जोकि गलत है । बच्चों को बताने दें कि उन्होंने क्या लिखा है । आप उनके उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखने दें और उन समस्याओं पर चर्चा करें जिसका सामना वे आज करते हैं । उन्हें बताएं कि यह पाठ उनकी सीखने में सहायता करेगा कि इस तरह की लालचों का सामना कैसे करना चाहिए ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को यीशु के लालच में पड़ने की कहानी के बारे में बताएं जिसे खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध किए गए धर्मशास्त्रों में बताया गया है । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । सूचनाः जोसफ स्मिथ अनुवाद, बाइबिल के किंग जेम्स के व्याख्या में पाये जाने वाले विवरण को स्पष्ट करता है । बच्चों की समझने में सहायता करें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद स्पष्टिकरण देता है कि वीरान भूमि में परमेश्वर के साथ जाने के लिए यीशु आत्मा के द्वारा मार्गदर्शित हुआ था और न कि शैतान के द्वारा लालच में पड़ा था । समझाएं कि वैसी परिस्थिति में यीशु अपनी इच्छा से नहीं गया था जहां वह लालच में पड़ सके, और वह नहीं चाहता कि हम भी ऐसा करें । यह भी समझाएं कि जोसफ स्मिथ अनुवाद बताता है कि शिखर और उँचे पहाड़ पर यीशु आत्मा के द्वारा ले जाया गया था और न कि शैतान के द्वारा जैसा कि बाइबिल कहती है ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक

होगा और जिनके सिद्धांत उनकी जिन्दगियों में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु वीरान भूमि में क्यों गया था ? (मत्ती ४:१ का जोसफ स्मिथ अनुवाद बताता है कि वीरान भूमि में परमेश्वर के साथ जाने के लिए यीशु आत्मा के द्वारा मार्गदर्शित हुआ था और न कि शैतान के द्वारा लालच में पड़ा था ।
- मत्ती ४:२ में जोसफ स्मिथ अनुवाद कहता है कि जब यीशु वीरान भूमि में था तो वह परमेश्वर संबंधित था । आपके विचार से परमेश्वर से संबंधित होने का क्या मतलब है ? हम परमेश्वर से संबंधित कैसे हो सकते हैं ?
- आपके विचार से चालीस दिन उपवास करने और परमेश्वर से संबधित रहने के कारण यीशु लालचों का सामना करने के लिए अपने आपको कैसे तैयार कर सका था ?
- पहली बार शैतान ने यीशु को क्या लालच दिया ? (मत्ती ४:३) आपके विचार से इस लालच का सामना करना उसके लिए कठिन क्यों हो सकता था ? (मत्ती ४:२) । यीशु ने शैतान को कैसे उत्तर दिया ? यीशु का क्या मतलब था ? (मत्ती ४:४) ।
- दूसरे कौन से तरीके थे जिससे शैतान ने यीशु को लालच दिया था ? (मत्ती ४:५–६, ८–९) । यीशु ने इन लालचों का जवाब कैसे दिया था ? (मत्ती ४:७, १०) । क्या आप सोचते हैं कि केवल यही समय था जब यीशु को लालाच दिया गया था ? (लूका ४:१३ । "एक मौसम के लिए" इस बात के तरफ संकेत कर सकता है कि केवल यही समय नहीं था) ।
- धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने के कारण यीशु की इन लालचों का सामना करने में सहायता कैसे हुई थी ? (मत्ती ४:४, ६–७, १०) ।
- शैतान हममें से प्रत्येक के साथ क्या करने की कोशिश कर रहा है ? (२ नफी २:१८; २८:२०–२२; सि. और अनु. १०:२७) ।
- प्रलोभनों का सामना करने में स्वर्गीय पिता हमारी सहायता कैसे कर सकता है ? इस समय आप क्या कर सकते हैं जो भविष्य में आने वाली प्रलोभनों का सामना करने में आपकी सहायता करेगा ?
- हमारी लालचों के बारे में प्रभु ने हमसे क्या महान प्रतिज्ञा की है ? (१ कुरिन्थियों १०:१३) । इस धर्मशास्त्र को एक साथ पढ़ें ।

तीन चीजों पर चर्चा करें जिसे हम लालचों का सामना करने की सहायता में कर सकते हैं । जैसे-जैसे आप चर्चा करते हैं शब्दपट्टियों को दिखाएं ।

१. प्रलोभनों का सामना करने से पहले उससे निपटने का निश्चय कर लें ।

अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें और उनपर चर्चा करें :

"सही निर्णयों को करना तब आसान हो जाता है जब हम इस परिस्थिति में बहुत पहले होते हैं जहां हमें निश्चय करना होता है....

"जब मैं एक युवा था, मैंने अपना मन बना लिया था...कि मैं कभी भी चाय, कॉफी, तम्बाकू, या शराब का स्वाद नहीं चखूँगा...

"ईमानदारी पर निश्चय करने का समय तब होता है जब एक भण्डार का क्लर्क एक गलती करता या करती है और आपको उससे अधिक पैसा देता या देती है जितना उसने लिया था । एक मित्र जिसे आप पसंद करते हैं उसके समक्ष (नाजायज) माद्य पदार्थों के उपयोग के विरूद्ध निश्चय करने का समय ऐसा होता है जैसे कि वह आपको डराने के लिए या (धार्मिक होने के लिए) ताना मारता है । यही समय है निश्चय करने का कि (स्वर्गीय) पिता के साथ अनन्तता में रहने के अवसर को हम अभी पूरा करेंगे" ("Decisions: Why It's Important to Make Some Now," *New Era*, अप्रैल १९७१, पृ. ३) ।

२. प्रार्थना करें कि आप प्रलोभनों को दूर कर सकते हैं (मरकुस १४:३८) और कि यदि आप प्रलोभनों में पड़ जाते हैं तो आपके पास उसके सामना के लिए शक्ति और विश्वास होगा । समझाएं कि रोज की प्रार्थना, किसी भी तरह के प्रलोभनों के दूर रहने की कोशिश, और योग्य सेवा और गतिविधियों में लगे रहना हमारी सहायता करेगा ।

३. *पवित्र आत्मा को सुनें* । समझाएं कि हमारे बपतिस्मा के पश्चात, हमें पवित्र आत्मा का उपहार प्रदान किया जाता है, जो हमें प्रलोभनों से बाहर आने में हमारी सहायता कर सकता है (देखें सि. और अनु. ११:१२) ।

बच्चों से उन अनुभवों के बारे में बात करने के लिए कहें जब वे प्रलोभनों में पड़े थे । उन्हें बाँटने दें कि उन्होंने प्रलोभनों को दूर करने या उनका सामना करने के लिए क्या किया था ।

उन प्रलोभनों को सन्दर्भ करें जिसे पाठ के आरंभ में गतिविधि के दौरान चॉकबोर्ड पर लिखा गया था । इनमें से कई पर एक- एक करके चर्चा करें, और बच्चों को विचार करने दें कि कैसे एक युवा व्यक्ति प्रत्येक को दूर कर सकता है या उसका सामना कर सकता है । गुप्त रूप से बच्चों से एक प्रलोभन को चुनने के लिए कहें जिसकी सामना की वे तैयारी करना चाहते हैं और योजना बनाने के लिए कहें कि वे इस प्रलोभन को कैसे दूर कर सकते हैं या उसका सामना कर सकते हैं ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. "क्या होता यदि" का एक खेल खेलें । कागज के टुकड़ों पर "क्या होता यदि" के प्रश्नों को लिखें जोकि उन प्रलोभनों का वर्णन करता हो जिसका कक्षा के सदस्य शायद सामना करें, जैसे कि नीचे दिए गए नमूना प्रश्नों की तरह । एक बच्चे को एक बक्से या बोतल में रखे गए प्रश्नों में से एक लेने दें, उसे पढ़ने दें, और उसका उत्तर देने दें । तब उस बच्चे को किसी दूसरे बच्चे को बक्से से "क्या होता यदि" को प्रश्नों में से एक को लेने के लिए चुनने दें । इस बात पर बल दें कि पहले से निश्चय करना प्रलोभनका सामना करने में एक महत्वपूर्ण सहायक होता है ।

   क्या होता यदि आप को कोई चीज मिलती जो किसी और की होती ?
   क्या होता यदि आप अपने पिता से उनकी सहायता के लिए प्रतिज्ञा करते, परन्तु एक मित्र आ जाता और आपसे खेलने के लिए कहता ?
   क्या होता यदि आपके मित्र आपका मजाक उड़ाते उन सिगरेटों को न पीने के लिए जिसे उन्होंने पाया है (या शराब न पीने या माद्य पदार्थों का सेवन न करने के लिए) ?
   क्या होता यदि आप जानते कि आप परेशानी में पड़ जाएंगे यदि सच बोलेंगे ?

२. बच्चों को प्रलोभनों का सामना करने का मूकाभिनय करने दें या नाटक करने दें ।

३. कुछ "प्रलोभन कार्ड" तैयार करें । छोटे-छोटे कार्ड या कागज के टुकड़ों पर उन प्रलोभनों को लिखें जो बच्चों के पास हो सकते हैं, जैसे कि झूठ बोलना, धोखा देना, चोरी करना, अभद्र भाषा का उपयोग करना, इत्यादि । दूसरे कार्ड, "सहायक कार्ड", पर लिखें यीशु मसीह में विश्वास, माता-पिता, शिक्षक, अच्छे मित्र, प्रार्थना, उपवास, गिरजाघर के मार्गदर्शक, धर्मशास्त्र, पवित्र आत्मा, प्रलोभनों से दूर रहना, और अन्य चीजें जो लोगों की प्रलोभनों का सामना करने में सहायता करती हैं ।

   प्रलोभन कार्डों के सामने के हिस्सों को नीचे करके एक ढेर में रखें और सहायक कार्डों के सामने के हिस्सों की नीचे करके दूसरे ढेर में रखें । एक बच्चे को एक सहायक और प्रलोभन कार्ड को चुनने और उसपर क्या लिखा है उसे कक्षा के समक्ष बताने के लिए कहें । कक्षा को चर्चा करने दें कि सहायक कार्ड पर जो लिखा वह किस तरह से उससे दूर रहने या उसका सामना करना आसान बना सकता है जो प्रलोभन कार्ड पर लिखा गया है । प्रत्येक बच्चे को कार्डों को चुनने की बारी लेने दें ।

४. अध्यक्ष जोसफ फिल्डिंग स्मिथ द्वारा निम्नलिखित उद्धरण को बच्चों के साथ बाँटें: "आदतें आसानी से बन जाती हैं । जैसे अच्छी आदतें आसानी से बन जाती हैं बिल्कुल उसी तरह से बुरी आदतें भी आसानी से बन जाती हैं" (न्यू एरा, जुलाई १९७२, पृ. २३) । आप शायद इस उद्धरण को याद करने में बच्चों की सहायता करें ।

५. बच्चों से कुछ निर्णयों का नाम बताने के लिए कहें जिसे उन्होंने बनाया है जो भविष्य में प्रलोभनों को दूर करने में उनकी सहायता करेगा ।

६. बच्चों की मत्ती ४:४ को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि हमारे पास उन प्रलोभनों का सामना करने की शक्ति है जो हमारे पास आते हैं । शैतान की लालचों का सामना करने और उदाहरण के लिए यीशु के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करें ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर एक समीक्षा के रूप में करें मत्ती ४:१–११ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह मंदिर की सफाई करता है

पाठ
८

उद्देश्य

स्वर्गीय पिता, यीशु मसीह और पवित्र स्थानों के प्रति महान प्रेम और सम्मान को महसूस करने में प्रत्येक बच्चे की सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक यूहन्ना २:१३–१६, मत्ती २१:१२–१४, लूका १९:४५–४८, और निर्गमन २०:७ । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मरकुस ११:१५–१७ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम
   ख. निम्नलिखित शब्दपट्टियाँः
      हम स्वर्गीय पिता और यीशु के प्रति प्रेम और सम्मान को व्यक्त कर सकते हैंः
      प्राथमिक और प्रभुभोज सभा में श्रद्धापूर्वक रहने के द्वारा ।
      उस भाषा के उपयोग के द्वारा जिससे हम प्रार्थना करते हैं ।
      पहनावे के द्वारा ।
      अपने काम के द्वारा ।
      अपने बोलने के द्वारा ।
   ग. चित्र ७-९, यीशु मंदिर को साफ करता है (सुसमाचार कला चित्र किट २२४; ६२१६३) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

चॉकबोर्ड पर एक समतल रेखा बनाएं । उस रेखा के ऊपर लिखें *आदर* और नीचे लिखें *निरादर* । बच्चों से ऐसा दिखाने के लिए कहें जैसे कि एक मित्र उनके घर आ रहा हो । उन्हें बताएं कि आप चॉकबोर्ड पर एक "आदर रेखा" बनाने जा रही हैं । उन चीजों को लिखें जो मित्र करता है (नीचे देखें), और कक्षा को निर्णय लेने दें कि मित्र आपके और आपके घर के प्रति आदर व्यक्त कर रहा है या निरादर । चॉकबोर्ड पर समतल रेखा को काटती हुई एक लगातार रेखा बनाएं, आदर को दिखाते हुए ऊपर के तरफ और निरादर को दिखाते हुए नीचे के तरफ । निम्नलिखित परिस्थितियों का उपयोग करें :

मित्र :

शान्तिपूर्वक बाहर खड़ा रहता या रहती है जब तक कि अन्दर आमंत्रित न किया जाए ।
कीचड़ भरे पैरों के साथ अन्दर आ जाता या जाती है ।
आमंत्रित किए जाने के लिए धन्यवाद करता या करती है ।
आपके घर में चिल्लाता या चिल्लाती और चिखता या चिखती है ।
आपके माता-पिता का नम्रता से अभिवादन करता या करती है ।
खाने के लिए कुछ मांगता या मांगती है ।

आपकी संपत्तियों के साथ ध्यानपूर्वक बरताव करता या करती है ।
जब आपके माता-पिता उससे बात करते हैं तब वह उनकी उपेक्षा करता या करती है ।
आपको अपने घर आने के लिए आमंत्रित करता या करती है ।

आपकी "आदर रेखा" इस तरह से दिखाई दे सकती हैः

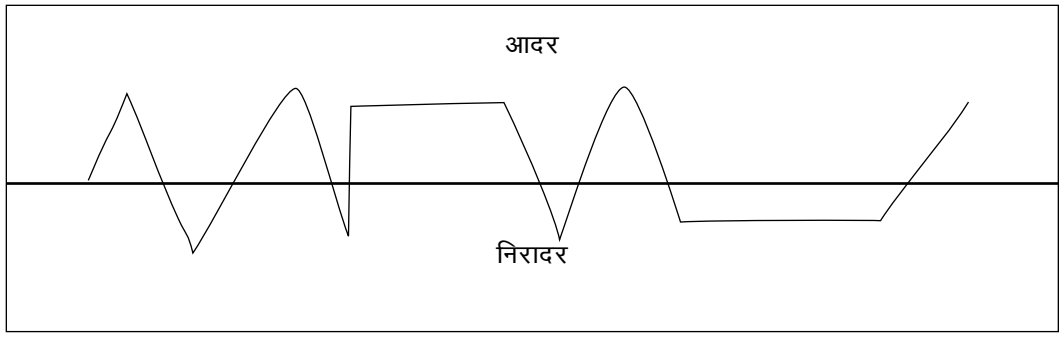

बच्चों को उनके स्वयं के लिए निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने दें :

- जब आप अपने एक मित्र के घर जाते या जाती हैं, आपकी "आदर रेखा" किस तरह की होती है ?
- जब आप प्राथमिक में आते या आती हैं, आपकी "आदर रेखा" किस तरह की होती है ?
- आपकी "आदर रेखा" किस तरह की होती है जब आप अपने घर में होते या होती हैं ?

धर्मशास्त्र विवरण

येरूशलेम में यीशु मंदिर की सफाई करता है, के विवरण की शिक्षा दें । पहली बार के सफाई का विवरण यूहन्ना २:१३–१६ में है । दूसरा विवरण, लगभग तीन वर्षों के पश्चात और उसके क्रूसारोहण से कूछ दिन पहले, जोकि मत्ती २१:१२–१४ और लूका १९:४५–४८ में है । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । जब आप इन विवरणों की शिक्षा दें, बच्चों को स्वयं से पूछने दें कि यीशु स्वर्गीय पिता और मंदिर के बारे में कैसा महसूस करता है । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यह मंदिर एक पवित्र स्थान था, बिल्कुल वैसे ही जैसा कि आज हमारे मंदिर और गिरजाघर के सभाघर हैं, और यीशु चाहता है कि हम इन पवित्र स्थानों का आदर करें ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु ने मंदिर में कुछ लोगों को क्या करते हुए पाया ? (यूहन्ना २:१४)
- यीशु ने बेचने वालों और चूंगी लेने वालों को मंदिर से बाहर क्यों निकाल दिया ? यीशु ने उनसे क्या कहा ? (यूहन्ना २:१६; मत्ती २१:१२; लूका १९:४५–४६) ।
- उन्हें मंदिर से बाहर निकालने के पश्चात यीशु ने क्या किया ? (मत्ती २१:१४; लूका १९:४७) ।
- आपके विचार से घर, मंदिर, और गिरजाघर इमारतों जैसे पवित्र स्थानों में श्रद्धापूर्वक रहना महत्वपूर्ण क्यों है ? हम किसके प्रति आदर व्यक्त करते हैं ?

उन स्थानों में श्रद्धापूर्वक रहने के महत्व पर चर्चा करें जिसे प्रभु के लिए समर्पित किया गया है । बच्चों की समझने में सहायता करें कि श्रद्धा सम्मान और प्रेम से भी गहरी है ।

- यीशु ने किसके प्रति प्रेम और आदर व्यक्त किया था जब उसने चुंगी लेने वालों को बाहर निकाला था ? (यूहन्ना २:१६) । उसने ऐसा क्यों किया था ?

- गिरजाघर में, घर पर, विद्यालय पर, खेल में हम स्वर्गीय पिता और यीशु के प्रति प्रेम और आदर कैसे व्यक्त कर सकते हैं ?

एक बार में एक शब्दपट्टी को दिखाएं । बच्चों के साथ उन तरीकों पर चर्चा करें जो स्वर्गीय पिता और यीशु के प्रति प्रेम और आदर दिखाता हो । निम्नलिखित विचारों को सम्मिलित करें :

प्रभुभोज के दौरान जब हम श्रद्धापूर्वक रहते हैं, हम यीशु और उन अनुबंधों के प्रति जिसे हमने स्वर्गीय पिता के साथ किया था, उसके लिए प्रेम और आदर दिखाते हैं ।

जब हम प्रभुभोज सभा में दिए गए वार्ताओं को सुनते हैं और प्राथमिक में श्रद्धापूर्वक रहते हैं, हम स्वर्गीय पिता और यीशु और उसके बारे में अधिक सीखते हैं जिसे वे चाहते हैं कि हम करें ।

जब हम अच्छी तरह से प्रार्थना करते हैं, हम स्वर्गीय पिता के प्रति आदर दिखाते हैं ।

जब हम सादगी वाला पहनावा पहनते हैं, हम दिखाते हैं कि हम अपने शरीरों का आदर करते हैं जोकि स्वर्गीय पिता की एक पवित्र सृष्टि है ।

जब हम वैसे ही काम करते हैं जैसा कि स्वर्गीय पिता और यीशु चाहते हैं कि हम करें, हम दिखाते हैं कि हम उनमें विश्वास करते हैं और यह कि हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है कि हम वही करें जिसे वे चाहते हैं कि हम करें ।

जब हम प्रभु के नाम का श्रद्धापूर्वक उपयोग करते हैं और उसका दुरूपयोग नहीं करते हैं, हम दूसरों को दिखाते हैं कि हम उसका आदर करते हैं और उससे प्रेम करते हैं ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों को निर्गमन २०:७ पढ़ने और याद करने दें । अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा बताई गई निम्नलिखित घटना को संबंधित बनाते हुए चर्चा करें, और इस महत्वपूर्ण आज्ञा को मानने की उनके जीवन में बच्चों की सहायता करें ।

"एक दिन हस्पताल में, मैं एक परिचर के द्वारा ऑपरेशन वाले कमरे से पहिये वाली कुर्सी पर बाहर लाया गया, जोकि लड़खड़ा गया, और तब उसके क्रोधित होठों से उद्धारकर्ता के नाम के संयोजन के साथ त्रुटिपूर्ण अपशब्द निकले । यहाँ तक कि आधी चेतना में, में पीछे हटा और याचना कियाः 'कृपया! कृपया! वह मेरा प्रभु है जिसके नाम की तुम निन्दा करते हो' । वहाँ मृत्युवत शान्ति थी, तब एक धीमी आवाज फुसफुसाईः 'मुझे क्षमा कीजिए' । कुछ क्षण के लिए वह भूल गया था कि प्रभु ने बलपूर्वक अपने सभी लोगों को आज्ञा दी थी, 'तू अपने यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा' (निर्गमन २०:७)" ("President Kimball Speaks Out on Profanity," *Ensign* , फरवरी १९८१, पृ. ३) ।

२. मंदिरों और गिरजाघर इमारतों के कई चित्र लाएं । कागज के अलग-अलग टुकड़ों पर मंदिरों और इमारतों के नाम लिखें, और बच्चों से नाम को चित्र के साथ मिलाने के लिए कहें । उन्हें दूसरी बार नाम और चित्रों को मिलाने दें जब आप समझाती हैं कि कैसे ये इमारतें पृथ्वी पर प्रभु के काम को आगे बढ़ाने में सहायता करती हैं ।

३. आप मंदिर में उपस्थिति के अपने अनुभवों का वर्णन करें, या अपनी वार्ड या शाखा के किसी को मंदिर के बारे में उसके अनुभवों को बाँटने के लिए आमंत्रित करें । बच्चों की जानने में सहायता करें कि मंदिर कितने पवित्र हैं और यह कि जो उसमें उपस्थित होते हैं वे वहाँ पर प्रभु के नजदीकी को महसूस कर सकते हैं । उस बात पर चर्चा करें कि मंदिर में प्रवेश के योग्य बनने के लिए बच्चे उनके जीवन में क्या कर सकते हैं ।

४. प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा और एक पेन्सिल दें । उन्हें विशिष्ट तरीकों को लिखने दें जिससे वे आने वाले सप्ताह के दौरान स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रति प्रेम, सम्मान, और आदर दिखा सकें । उनसे सूची को वहाँ रखने के लि कहें जहाँ से, वे उसे आसानी से देख सकें ।

५. चॉकबोर्ड पर दूसरी "आदर रेखा" बनाएं जब बच्चे कार्यों के उदाहरण देते हैं जो गिरजाघर इमारतों में आदर या निरादर दिखाते हैं ।

चुनौती — फिर से "आदर रेखा" को देखें और बच्चों को बताएं कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के साथ उनके संबंधों के लिए उन्हें एक "आदर रेखा" की आवश्यकता है । उन सभी में जिसे वे स्वर्गीय पिता और यीशु को प्रेम और आदर दिखाने के लिए करते हैं उसके द्वारा बच्चों को उनकी रेखा को ऊपर रखने की चुनौती दें ।

निष्कर्ष

गवाही — स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बारे में अपने श्रद्धा वाले अनुभवों को व्यक्त करें और अपने जीने के तरीके के द्वारा उनके प्रति अपने प्रेम, सम्मान, और आदर की इच्छा को व्यक्त करें ।

प्रस्तावित घर पठन — सुझाव दें कि बच्चे घर पर पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती २१:१२–१४ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह अपने प्रेरितों को बुलाता है

पाठ
९

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे को उन प्रेरितों के प्रति महान प्रेम और आदर देने में सहायता करना जिन्हें यीशु मसीह अपने लिए विशेष साक्षियों के रूप में बुलाता है ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ४:१८–२२, लूका ५:१–११, ६:१२–१६, मत्ती १६:१३–१९, मरकुस ३:१३–१९, १६:१५, प्रेरितों के काम १०:३९–४३, ३ नफी १२:१–२, और सिद्धांत और अनुबंध १०७:२३ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मत्ती १०:२–४, मरकुस १:१६–२०, और यूहन्ना १:३५–५१ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।
   ख. सिद्धांत और अनुबंध की कई कॉपियाँ ।
   ग. विश्वास के अनुच्छेद का पोस्टर (६४३७०) ।
   घ. चित्र ७-१०, यीशु और मछुआरे (सुसमाचार कला चित्र किट २०९; ६२४९६), और ७-११, मसीह प्रेरितों को नियुक्त करता हुआ (ससमाचार कला चित्र किट २११; ६२५५७), और वर्तमान प्रेरितों के चित्र भी (६४३२९–६४३७८ । यदि आपके सभाघर पुस्तकालय में चित्र नहीं हैं, एक वर्तमान सम्मेलन वाली गिरजाघर पत्रिका देखें) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

निम्नलिखित धर्मशास्त्र सन्दर्भों को चॉकबोर्ड पर लिखें :

1 कुरिन्थियों 12:28
इफिसियों 2:20
सिद्धांत और अनुबंध 107:23

एक महत्वपूर्ण शब्द को खोजने के लिए बच्चों को दिए हुए सन्दर्भों को देखने दें जोकि सभी में पाया जाता है । आप शायद चाहें कि बच्चे दो या तीन दलों में एक साथ काम करें । यदि उन्हें सहायता की आवश्यकता हो, आपकी भाषा के अनुसार उसे अनुकूल बनाएं ।

यह खोजने के लिए कि क्यों एक प्रेरित प्रभु का महत्वपूर्ण सेवक होता है, कक्षा के लिए एक बच्चे को सिद्धांत और अनुबंध १०७:२३ पढ़ने दें ।

धर्मशास्त्र विवरण

उपयुक्त समय पर चित्रों को दिखाते हुए, यीशु का उसके शिष्यों को बुलाने के विवरणों की शिक्षा दें (मत्ती ४:१८–२२; लूका ५:१–११) और बाद में बारह प्रेरितों की शिक्षा दें (मरकुस ३:१३–१९; लूका ६:१२–१६) । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii)।

जब आप इन विवरणों की शिक्षा देती हैं, सुनिश्चित करें कि बच्चे समझें कि यीशु के कई अनुयाई थे, जिन्हें शिष्य कहा जाता था । जब उसने पहली बार पतरस, अन्द्रियास, याकूब, और यूहन्ना को उनके मछली पकड़ने वाली नावों से बुलाया था, वह उन्हें शिष्य बनने के लिए बुला रहा था । अपने शिष्यों के बड़े दल से उसने बारह लोगों को अपना प्रेरित चुना था (देखें लूका ६:१३) । उसने उन्हें उसी तरीके से नियुक्त किया जैसे कि आज प्रेरितों को नियुक्त किया जाता है, हाथों को उनके ऊपर रखने के द्वारा, और उन्हें वही अधिकार दिए जोकि आज प्रेरितों के पास है (देखें मरकुस ३:१३–१५) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- जीने के लिए पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना क्या करते थे ? (मत्ती ४:१८–२२) । "मनुष्यों को पकड़नेवाले" का क्या मतलब है ? (मत्ती ४:१९) । किस तरह से आज प्रेरित "मनुष्यों को पकड़नेवाले मछुआरे" हैं ? (सि. और अनु. १८:२७–२९) ।

- जब यीशु ने पतरस, अन्द्रियास, याकूब, और यूहन्ना से अपने पीछे आने के लिए कहा तब उन्होंने क्या प्रक्रिया दिखाई ? (मत्ती ४:१९–२२) । उनकी प्रतिक्रिया कैसे दिखाती है कि उन्हें विश्वास था कि यीशु ही मसीह था ? (ध्यान दें कि मत्ती ४:१८ का जोसफ स्मिथ अनुवाद बताता है कि यीशु ने उसका अनुसरण करने के लिए बुलाने से पहले उन्हें बता दिया था कि वह कौन था) । हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण क्यों है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है ?

- यीशु ने शमौन से उसकी जाल के साथ क्या करने के लिए कहा ? (लूका ५:४) । (समझाएं कि शमौन, शमौन पतरस, और पतरस एक ही व्यक्ति का नाम है) । यीशु के कहने पर शमौन ने प्रश्न क्यों पूछा ? (लूका ५:५) । क्या हुआ था ? (लूका ५:६–७) । यीशु में महान विश्वास के लिए इस घटना ने शिष्यों की सहायता क्यों की थी ? (लूका ५:८–१०) । सिद्ध करने के लिए कि उन्हें यीशु में विश्वास है, पतरस, याकूब, और यूहन्ना ने क्या किया था ? (लूका ५:११) । हम किस तरह से दिखा सकते हैं कि हम यीशु मसीह का अनुसरण करते हैं ?

- प्रेरितों को बुलाने से पहले यीशु ने कितनी देर प्रार्थना की थी ? (लूका ६:१२) । आपके विचार से इस महत्वपूर्ण निर्णय को लेने से पहले यीशु ने क्यों प्रार्थना की थी ? आज प्रेरितों को कौन बुलाता है ? (स्वर्गीय पिता प्रेरणा द्वारा प्रथम अध्यक्षता को आदेश देता है) ।

- धर्मशास्त्र शिष्यों और प्रेरितों के बारे में बताते हैं । एक शिष्य और एक प्रेरित में क्या अन्तर है ? (लूका ६:१३) ।

समझाएं कि एक शिष्य यीशु मसीह का अनुयाई होता है । एक प्रेरित चुने हुए लोगों के दल में से एक होता है जो सारे संसार के लिए यीशु मसीह की एक विशेष साक्षी के रूप में नियुक्त किया जाता है । वह गवाही देता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और यह कि वह पुनरूत्थारित हुआ था । वह यह सुनिश्चित करता है कि संसार में सभी जगह सुसमाचार का प्रचार किया जाए । (देखें मरकुस १६:१५ और सि. और अनु. १०७:२३) ।

- आप एक शिष्य हैं या एक प्रेरित ?

- यीशु मसीह का एक विशेष साक्षी होने का क्या मतलब है ? (प्रेरितों के काम ४:३३; १०:३९–४३; सि. और अनु. १०७:२३) । पतरस ने कैसे साक्षी दी थी कि यीशु ही मसीह था ? (मत्ती १६:१३–१७) । पतरस की गवाही के कारण यीशु ने उससे क्या प्रतिज्ञा की थी ? (मत्ती १६:१८–१९) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि राज्य की कुंजियां प्रेरितों के लिए वह अधिकार है जिससे वे स्वर्गीय पिता और यीशु के कार्य को पृथ्वी पर करते हैं । पाठ १५ में, रूपान्तरण के पहाड़ पर पतरस, याकूब और यूहन्ना द्वारा प्राप्त इन कुंजियों के विवरण पर चर्चा की जाएगी ।

• आज प्रेरित किस तरह से साक्षी देते हैं कि यीशु ही मसीह है ?

एल्डर डेविड बी. हैट, प्रभु के एक प्रेरित, के निम्नलिखित विवरण को बताएं :

"उस शाम जब मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था, मैं जानता था कि मेरे साथ कुछ गंभीर हुआ है...मैं स्वर्गीय पिता से याचना कर रहा था कि उसके काम को करने के लिए अधिक समय देते हुए वह मेरे जीवन को थोड़ा बढ़ा दे, यदि उसकी इच्छा हो तो ।

"प्रार्थना करते समय ही, मैं चेतना खोता जा रहा था । आखिरी में जो चीज मुझे याद था वह पैरामेडिक ट्रक का भोंपू ही था जिसे मैंने बेहोश होने से पहले सुना था, जो अगले कई दिनों तक मेरे लिए अन्तिम था ।

"लोगों का भयानक दर्द और होहल्ला बन्द हो गया था । मैं आब शान्त, शान्तिपूर्वक स्थिति में था; सब कुछ शान्त और शान्त था...

"मुझे कोई भी आवाज नहीं सुनाई देती थी परन्तु एक पवित्र उपस्थिति और वातावरण में होने का अहसास होता था । उन घण्टों और दिनों के दौरान जो बीत गए थे, मेरे मन पर बार-बार अनन्त काम और मनुष्य के पुत्र के उत्कर्ष वाली स्थिति प्रभाव डालती थी । मैं आपको साक्षी देता हूं कि वह यीशु ही मसीह है, परमेश्वर का पुत्र, सभी का उद्धारकर्ता, सभी मनुष्यजाति का मुक्तिदाता, अनन्त प्रेम, दया, और क्षमा को प्रदान करने वाला, जगत का प्रकाश और जीवन । मैं इस सच्चाई को पहले से ही जानता था—मुझे कभी भी संदेह या आश्चर्य नहीं था । परन्तु अब मैं जानता हूं, मेरे हृदय और आत्मा पर पवित्र आत्मा के प्रभावों के कारण, ये ईश्वरीय सच्चाई अत्याधिक असाधारण तरीके में है ।

"मुझे उसके पार्थिव सेवकाई का एक पर्यावलोकन दिखाया गया थाः उसका बपतिस्मा, उसकी शिक्षाएं, बीमारों और लंगडों के प्रति उसकी चंगाई, उपहास वाली परीक्षा, उसका क्रूसारोहण, उसका पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण । उसके पश्चात उसकी पार्थिव सेवकाई के दृश्यों ने मेरे मन पर विस्तृत प्रभाव डाला, धर्मशास्त्र विवरणों के साक्षियों का पुष्टिकरण करते हुए । मुझे सीखाया जा रहा था, और परमेश्वर की पवित्र आत्मा के द्वारा मेरी समझ की आँखों को खोला जा रहा था ताकि मैं कई चीजों को देख सकूँ" (Conference Report, अक्टू. १९८९, पृ. ७३; या *Ensign*, नव. १९८९, पृष्ठ ५९–६० में) ।

• आज पृथ्वी पर प्रेरित कौन हैं ?

प्रथम अध्यक्षता और बारह प्रेरितों की परिषद के सदस्यों के नामों को पहचानें । वर्तमान प्रेरितों के बारे में कुछ बताएं जिन्हें आप जानती हैं, शायद आप उस एक प्रेरित पर प्रकाश डाल सकती हैं जिन्होंने हाल ही में आपके क्षेत्र का दौरा किया हो या शीघ्र ही करने वाले हों ।

• आपके जीवन कैसे आशीषित हुए हैं जब आपने प्रेरितों के सलाह को सुना है ? (३ नफी १२:१–२) ।

विश्वास के अनुच्छेद

बच्चों की छठवें विश्वास के अनुच्छेद को याद करने में सहायता करें ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. कक्षा के लिए प्रथम अध्यक्षता और बारह प्रेरितों के सदस्यों के अलग-अलग चित्र लाएं । कागज के विभिन्न टुकड़ों पर उनके नाम लिखें और बच्चों को उनके नाम को चित्रों के साथ मिलाने दें और फिर वरिष्ठता के आधार पर उन्हें क्रमानुसार व्यवस्थित करने दें । यदि अलग-अलग चित्र उपलब्ध न हों, बच्चों को नामों को वरिष्ठता के आधार पर व्यवस्थित करने दें । प्रत्येक बच्चे को बारी लेने दें ।

२. बारह प्रेरितों की सूची बनाएं और उनपर चर्चा करें जिन्हें यीशु ने बुलाया था (लूका ६:१२–१६) ।

३. गिरजाघर पत्रिकाओं के तत्काल सम्मेलन रिपोर्ट या सम्मेलन प्रतियों का उपयोग करते हुए, बच्चों को प्रेरितों द्वारा दिए गए वार्तालापों को खोजने दें । उनसे इन वार्ताओं में उन स्थानों को खोजने दें जहाँ पर प्रेरितों ने यीशु मसीह के लिए अपनी विशेष साक्षी को घोषित किया था (ये अक्सर भाषण के अन्त में होते हैं) ।

निष्कर्ष

गवाही	बच्चों के साथ प्रेरितों के प्रति आभार को बाँटें, और बताएं कि उनके सलाह के अनुसरण के द्वारा आपका जीवन कैसे आशीषित हुआ है । अपनी साक्षी दें कि यीशु प्रेरितों को बुलाता है, जीवित भविष्यवक्ताओं के द्वारा अपने नाम की साक्षी देने के लिए और सारे संसार में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए ।
प्रस्तावित घर पठन	सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती ४:१८–२२ को अध्ययन करें ।
	समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पहाड़ पर उपदेश

पाठ
१०

उद्देश्य

यीशु के द्वारा पहाड़ पर दिए गए उपदेश की शिक्षाओं के अनुसरण के उसकी तरह अधिक बनने की कोशिश में बच्चों की सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ५:१–६:४ और ७:१२ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः लूका ६:१७–३६, और ३ नफी १२ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।
   ख. परिस्थितियों के अनुसार जिसका सामना शायद बच्चों को करना पड़ सकता है, उसके लिए कागज के टुकड़े (देखें ध्यान गतिविधि) ।
   ग. चित्र ७-१२, पहाड़ पर उपदेश (सुसमाचार कला चित्र किट २१२; ६२१६६) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

एक-एक करके प्रत्येक बच्चे को कक्षा के सामने आने दें, और कागज के एक टुकड़े को लेने दें जिसपर आपने एक कठिन परिस्थिति लिख रखा है जिसका सामना शायद वह करे । निम्नलिखित उदाहरणों की तरह के परिस्थितियों का उपयोग करें :

आपके भाई या बहन आपकी आलोचना करते हैं ।
विद्यालय पर कोई आपके प्रति मतलबी रहा हो ।
सिगरेट पीने के मना करने के कारण अन्य बच्चे आपका मजाक उड़ाते हैं ।
गाली का उपयोग न करने के कारण दूसरे आपका मजाक उड़ाते हैं ।

प्रत्येक बच्चे को बताने दें कि इस परिस्थिति में उसकी प्रतिक्रिया कैसी हो सकती है । कक्षा के अन्य सदस्यों को उनके विचारों को शामिल करने दें । समझाएं कि वे यीशु के द्वारा पहाड़ पर दिए गए कुछ उपदेश की शिक्षाओं पर चर्चा करने जा रहे हैं जो उनकी यह जानने में सहायता करेगा कि ने इन परिस्थितियों में उन्हें क्या करना है । ये शिक्षाएं हमें यीशु की तरह अधिक बनने में सहायता करेंगी क्योंकि ये बताती हैं कि वह कैसे चाहता है कि हम जीएं ।

धर्मशास्त्र विवरण

पहाड़ पर उपदेश के चित्र को दिखाएं । खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध धर्मशास्त्रों का उपयोग करते हुए, यीशु द्वारा पहाड़ पर दिए गए उपदेश के बारे में बच्चों को शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । निम्नलिखित विषयों पर बल दें :

स्वर्गसुख
अपने शत्रुओं से प्रेम करना
संपूर्ण बनना
स्वर्ण नियम (दूसरों के प्रति वैसा ही करें जैसा कि आप उन्हें अपने प्रति करने देते हैं) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- समझाएं कि मत्ती ५:३–११ में दी गई शिक्षाओं को अक्सर स्वर्गसुख कहा जाता है । (इस बात के तरफ संकेत करें कि जब यीशु ने नफायटियों को स्वर्गसुख दिए थे, उसने वाक्यांश "जो मेरे पास आता है" को सम्मिलित किया था । मत्ती ५:३ की तुलना ३ नफी १२:३ के साथ करें) । यीशु की तरह अधिक बनने में स्वर्गसुख कैसे सहायता कर सकते हैं ?

- धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे होने का क्या मतलब है ? (मत्ती ५:६) । हम इसे कैसे कर सकते हैं ? जब हम इसे करते हैं तब किन आशीषों को प्राप्त करेंगे ?

- एक शुद्ध मन क्या होता है ? (मत्ती ५:८) । जो मन के शुद्ध हैं उनके लिए क्या प्रतिज्ञा की गई है ? शुद्ध मन को हम कैसे बढ़ा सकते हैं ?

- एक मेल करवाने वाला होना महत्वपूर्ण क्यों है ? (मत्ती ५:९) । हम कैसे एक मेल करवाने वाले बन सकते हैं ?

- "पृथ्वी का नमक" होने का क्या मतलब है ? (मत्ती ५:१३) । हम नमक की तरह कैसे बन सकते हैं ? (देखें समृद्धि गतिविधि २) । एक "जगत की ज्योति" का क्या मतलब है ? (मत्ती ५:१४–१६) । दूसरों के प्रति हम एक ज्योति कैसे बन सकते हैं ?

- हमें क्या करना चाहिए यदि हमारे और किसी और के बीच एक समस्या हो ? (मत्ती ५:२३–२४) । हमें अपने शत्रुओं के साथ या उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जो हमें पसंद नहीं करते हैं ? (मत्ती ५:४३–४७) ।

- हम संपूर्ण कैसे बन सकते हैं ? (मत्ती ५:४८) ।

एल्डर जोसफ फिल्डिंग स्मिथ के संपूर्णता के बारे में इस वक्तव्य पर चर्चा करें: सभी "संपूर्णता एक ही बार में नहीं आएगी, परन्तु पंक्ति दर पंक्ति और नियम दर नियम, उदाहरण दर उदाहरण, और यहां तक कि तब तक नहीं आएगी जब तक कि हम इस नश्वर जीवन में हैं...परन्तु यहां हम नींव रखते हैं...अपने आपको उस संपूर्णता की तैयारी के लिए । यह हमारा कर्तव्य है कि हम कल से अच्छा बनें, और आने वाले कल में इससे भी अच्छा बनें जो हम आज हैं" (*Doctrines of Salvation,* २:१८) ।

- हमें सेवकाई के कार्यों को किस तरह करना चाहिए ? (मत्ती ६:१–४) । सेवकाई के कौन से गुप्त कार्यों को हम दूसरों के प्रति कर सकते हैं ?

- मत्ती ७:१२ को अक्सर स्वर्ण नियम कहा जाता है । यीशु हमसे क्या करने के लिए कहता है ? हम इसे कैसे कर सकते हैं ?

बच्चों की समझने में सहायता करें कि यदि वे उन शिक्षाओं को जीने की कोशिश करते हैं जिसे यीशु ने पहाड़ पर दिए गए उपदेशों में सीखाया था, वे संपूर्णता के मार्ग पर होंगे । बल दें कि संपूर्णता एक क्रमिक चीज है जो इस जीवन में पूरी नहीं होगी । हमें अब जिस चीज को करने की आवश्यकता है वह यह है कि प्रत्येक दिन यीशु की तरह बनने की कोशिश करना ।

बच्चों को ध्यान गतिविधि से परिस्थितियों की समीक्षा करने दें । उन्हें वह बताने दें जो उन्होंने सीखा है कि किसी निश्चित परिस्थितियों में यीशु कैसे चाहता है कि हम प्रतिक्रिया दिखाएं । बच्चों से उसके बारे में सोचने के लिए कहें कि क्या हुआ होता यदि हम सभी उस समय जीये होते जब यीशु ने पहाड़ पर उपदेश दिए थे ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. कार्डो पर प्रत्येक स्वर्गसुख के पहले हिस्से पर लिखें , जैसे कि "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं जो मेरे पास आते हैं,", और अन्य कार्डो पर स्वर्गसुख के दूसरे हिस्से को लिखें , जैसे कि "क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है" । कार्डो को मिलाएं और उनके सामने का हिस्सा नीचे करके पंक्ति में मेज या फर्श पर रखें । एक बार में कक्षा के एक सदस्य को आने दें और दोनों कार्डो को घुमा फिरा कर एक जोड़ी बनाने दें । (अपनी सहायता के लिए बच्चे उनके धर्मशास्त्रों का उपयोग कर सकते हैं) । यदि कार्ड मिल जाते हैं, जोड़ी वाले कार्डो के सामने का हिस्सा ऊपर रहने दें । यदि कार्ड नहीं मिलते हें तो उनके सामने का हिस्सा नीचे करके फिर से रख दें । यदि सभी को पहली बार में ही पारी लेने का मौका नहीं मिलता है, कार्डो को मिलाएं, उन्हें पलटें, और बच्चों को उन्हें फिर से मिलाने दें ।

२. यदि यह पाठ उपवास रविवार पर न हो, उस तरह का एक भोजन तैयारी करें जिसमें नमक मिला हो, जैसे कि भूट्टे का लावा, चावल, इत्यादि । नमक डाले बिना प्रत्येक बच्चे को भोजन को चखने दें । (यदि किसी को एलर्जी हो तो उसके लिए माता-पिता से बात करें) । थोड़ी मात्रा में नमक डालें और फिर से बच्चों को चखने दें । इस बात के तरफ संकेत करें कि नमक की छोटी सी मात्रा भी एक बड़ी विभिन्नता ला सकती है । धार्मिक लोगों का एक छोटा सा दल भी एक बड़ी विभिन्नता ला सकता है । बच्चों का चर्चा करने दें कि वे धार्मिकता से जीने के द्वारा कैसे एक विभिन्नता ला सकते हैं । मत्ती ५:१३ को पढ़ें ।

३. विवाद की ये वर्तमान परिस्थितियाँ, जैसे कि दो बच्चे एक ही जगह पर बैठना चाहते हों, कुछ बच्चे एक दूसरे से क्रोधित होकर बात कर रहे हों, इत्यादि । इन परिस्थितियों का नाटकीकरण करें और एक बच्चे को मेल करवाने वाले का नाटक करने दें । बच्चों को उन परिस्थितियों को सोचने दें जब शायद उन्होंने अपमानित महसूस किया हो, जैसे किसी ने उनके प्रति कुछ बुरा कहा हो, किसी ने किसी की कोई चीज ले ली हो, एक मित्र उनसे क्रोधित हुआ हो, कोई उन्हें गिरजाघर का सदस्य होने के कारण उनकी आलोचना करता हो, इत्यादि । उनसे पूछें कि मत्ती ५:४४ के अनुसार इन परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रिया कैसी होनी चाहिए ।

४. एक बच्चे को एक सेवा का मूकाभिनय करने दें जिसे उसने किया है या करने वाला या वाली है । दूसरे बच्चों को अनुमान लगाने दें कि बच्चा या बच्ची क्या कर रहा या रही है । दूसरों की सेवा करने के महत्व पर चर्चा करें । बच्चों से बताने के लिए कहें कि वे कैसा महसूस करते हैं जब वे किसी की सहायता करते हैं, और उनसे उन सभी सकारात्मक परिणामों को सोचने के लिए कहें जो लोगों की सहायता से आते हैं ।

५. बच्चों की मत्ती ५:१६ या मत्ती ७:१२ के पहले भाग को याद करने में सहायता करें ।

६. घर ले जाने के लिए प्रत्येक बच्चे के लिए स्वर्गसुख की एक कॉपी बनाएं, या बच्चों को उनके स्वयं के धर्मशास्त्रों में चिन्ह लगाने दें ।

७. कागज के पर्चे तैयार करें या निम्नलिखित सन्दर्भो को चॉकबोर्ड पर लिखें :

मत्ती 5:3 और 3 नफी 12:3
मत्ती 5:6 और 3 नफी 12:6
मत्ती 5:10 और 3 नफी 12:10
मत्ती 5:48 और 3 नफी 12:48

बच्चों को दोनों सन्दर्भों को पढ़ने दें और चर्चा करने दें कि वे कैसे विभिन्न हैं । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु ने वही समान चीजें यहूदियों और नफायटियों को सीखाया था और यह कि वे मॉरमन की पुस्तक में अधिक स्पष्ट हैं ।

निष्कर्ष

गवाही	अपनी गवाही दें कि यदि हम यीशु द्वारा पहाड़ पर दी गई शिक्षाओं को जीते हैं, हम संपूर्णता के मार्ग पर होंगे ।
प्रस्तावित घर पठन	सुझाव दें कि बच्चे घर पर एक समीक्षा के रूप में मत्ती ५:३–११ का अध्ययन करें ।
	समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह प्रार्थना के बारे में शिक्षा देता है

पाठ
११

उद्देश्य

नियमित रूप से व्यक्तिगत प्रार्थना की इच्छा को प्राप्त करने में प्रत्येक बच्चे की सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ६:५–१३, ७:७–११, और अलमा ३४:१९–२७ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मत्ती ४:२, १४:२३; २६:३६–४६; लूका ९:२८–२९; ११:२–४, ९–१३; यूहन्ना १७; ३ नफी १४:७–१२; १७:१४–२१; १८:१६ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।
   ख. एक मॉरमन की पुस्तक ।
   ग. धर्मशास्त्रों पर चिन्ह लगाने के लिए पेन्सिल ।
   घ. चित्र ७-१२, पहाड़ पर उपदेश (सुसमाचार कला चित्र किट २१२; ६२१६६, और ७-१३, एक ग्यारह वर्षीय बच्चा घुटने टेककर प्रार्थना करता हुआ (६२२१८) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

कागज के अलग-अलग टुकड़ों पर कई परिस्थितियों को लिखें, जो सूची के निम्नलिखित के समान हो, जिसे बच्चे स्वयं ही खोज सकें (या आप उन्हें परिस्थितियों को बता सकें) । प्रत्येक बच्चे को आने दें और कागज के एक टुकड़े को चुनने के लिए कहें । उन्हें बताने दें कि वे इस परिस्थिति में कैसा अनुभव करते हैं और वे क्या करेंगे ।

आप मोटर साइकिल से गिर गए हैं और आपके पैर में चोट लगी है । आपके आस-पास कोई नहीं है और आपको नहीं पता कि आप घर जा सकते हैं या नहीं ।

आपको बुखार है और पेट भी ठीक नहीं है । आपके माता-पिता आपको अच्छा करने के लिए वह सब कर चुके हैं जो वे कर सकते थे, परन्तु आप तब भी बीमार हैं ।

आपके विद्यालय का एक काम बाकी है जिसे आपको कल दिखाना है । आपने उसपर कड़ी मेहनत की है, परन्तु वह इतना अच्छा नहीं हुआ जितना कि आप चाहते थे और आपको नहीं पता की उसे अच्छा किस सरह से बनाया जाए ।

आप घर से बाहर खेल रहे होते हैं और जब आप घर आते हैं तब वहां कोई नहीं होता है । आप डर जाते हैं क्योंकि आपको नहीं पता कि आपका परिवार कहां गया है ।

आपके दादा-दादी ने आपके जन्मदिन के लिए आपको कुछ पैसे दिए थे, और अब वे वहां नहीं हैं जहां आपको याद है कि आपने रखा था ।

अंधेरा होने के पश्चात आप बाहर बैठे हैं और आपने ध्यान दिया कि तारे कितने सुंदर दिखाई दे रहे हैं ।

एक बगीचा लगाने में आप अपने परिवार की सहायता कर रहे हैं, और आपने ध्यान दिया कि पौधे बड़े हो रहे हैं और सब्जियाँ और फल सड़ रहे हैं ।

समझाएं कि स्वर्गीय पिता से आप किसी भी उस समस्या के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जो आपको परेशान कर रही हो, अपने अहसासों को उनके साथ बाँटने के लिए, या अपने आभार को व्यक्त करने के लिए । स्वर्गीय पिता सदैव हमारी गंभीर प्रार्थनाओं को सुनेगा ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को सीखाएं कि यीशु ने अपने शिष्यों को पहाड़ के उपदेश में दिखाया कि प्रार्थना कैसे करना है (देखें मत्ती ६:९–१३) । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । आप शायद चाहें कि बच्चे इन आयतों को पढ़ने के लिए पारी लें । आप शायद उन्हें उनके स्वयं के धर्मशास्त्रों में किसी एक पर या सभी आयतों पर चिन्ह भी लगाने दे सकती हैं । प्रत्येक आयत की धारणाओं पर चर्चा करें और किसी भी कठिन शब्द को समझाएं । उपयुक्त समयों पर चित्रों का प्रदर्शन करें ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा था, "और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो" ? (मत्ती ६:५) । हम कैसे गंभीरता से प्रार्थना कर सकते हैं ताकि हम कपटियों की तरह न हों ? (एक कपटी वह जीवन होती है जो अच्छा नहीं होते हुए भी अच्छा दिखाने की कोशिश करता या करती है या जो अच्छा होता या होती है और तब भी अच्छा नहीं होने की कोशिश करता या करती है) ।

- यीशु ने कैसे कहा था कि जब हम व्यक्तिगत प्रार्थनाओं को करते हैं तब हमें कपटियों से विभिन्न होना चाहिए ? (मत्ती ६:६) ।

- यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा था, "प्रार्थना करते समय अन्य जातियों की नाई बक बक न करो" ? (मत्ती ६:७) । बक बक करने वाले वे लोग हैं जो कई परमेश्वरों की आराधना करते हैं या जो ईसाई नहीं हैं । बार-बार दोहराना तब होता है जब उन्हीं शब्दों या वाक्यांशों को बिना सोचे समझे और बिना गंभीरता से दोहराया जाए) । जब हम प्रार्थना करते हैं तब "व्यर्थ में दोहराने" से कैसे बच सकते हैं ?

- यीशु का क्या मतलब है जब वह हमसे पूछने के लिए कहता है, ढूंढो और खटखटाओ ? (मत्ती ७:७–११) । स्वर्गीय पिता की उनके प्रति क्या प्रतिज्ञा है जो मांगते, ढूंढते और खटखटाते हैं ? (मत्ती ७:७–८) । स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करने के कारण आपकी कैसे सहायता हुई है ?

- क्या स्वर्गीय पिता सदैव हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि यद्यपि हमें हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर तुरन्त नहीं मिल सकता है या वह उत्तर नहीं मिलता है जिसकी हम आशा करते हैं, स्वर्गीय पिता प्रत्येक गंभीर प्रार्थना का उत्तर अवश्य देता है । कभी-कभी उसका उत्तर "नहीं" या "अभी नहीं" होता है ।

- स्वर्गीय पिता एक प्रार्थना का उत्तर "नहीं" या "अभी नहीं" में क्यों दे सकता है ? यदि संभव हो, अपने स्वयं के अनुभव से एक उदाहरण दें । बच्चों की समझने में सहायता करें, क्योंकि स्वर्गीय पिता सभी चीजों को जानता है, वह जानता है कि हमारे लिए क्या अच्छा है ।

- कहां और अक्सर कितनी बार हमें व्यक्तिगत प्रार्थनाओं को करना चाहिए ? (अलमा ३४:१९–२७) । हमें किसके बारे में प्रार्थना करनी चाहिए ? स्वर्गीय पिता ने हमें क्या दिया है जिसके लिए हमें कृतज्ञ होना चाहिए ?

- आपके विचार से स्वर्गीय पिता क्यों चाहता है कि हम उससे प्रार्थना करें ?

- प्रत्येक सुबह और शाम को व्यक्तिगत प्रार्थना करना क्यों महत्वपूर्ण होता है ? (अलमा ३७:३७) ।

- जब आप एक विनम्र और गंभीर व्यक्तिगत प्रार्थना करते हैं तब आपको कैसा महसूस होता है ? प्रार्थना के द्वारा हम स्वर्गीय पिता के नजदीक कैसे हो सकते हैं ? हम अपने हृदय में सदैव एक प्रार्थना कैसे कर सकते हैं ? हमें इसे करने की कोशिश क्यों करनी चाहिए ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. कक्षा को छोटे-छोटे दलों में विभाजित करें और प्रत्येक दल को निम्नलिखित धर्मशास्त्रों में से एक को पढ़ने दें । तब दल को पूरी कक्षा को धर्मशास्त्र के बारे में बताने दें । प्रत्येक घटना में चर्चा करें कि यीशु प्रार्थना क्यों कर रहा था और निश्चय करें कि कैसे उसका उदाहरण हमारी प्रार्थनाओं में हमारी सहायता कर सकता है ।

मत्ती १४:२३
लूका ९:२८–२९
यूहन्ना १७
मत्ती २६:३६–४२
३ नफी १७:१४–२१, १८:१६

२. बच्चों को एक समय के बारे में बताएं जब आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिला था, या बच्चों से प्रार्थना से जुड़े उनके विशेष अनुभवों को बाँटने के लिए कहें । आप शायद निम्नलिखित कहानी भी बताना चाहें:

"एक असाधारण युवा प्रचारक मार्गदर्शक ने...एक प्रेरित करने वाले अनुभव को बताया था जब वह पेट्रोपोलिस (ब्राजील) में निराशाजनक रूप में खो गया था, निवासी भाषा को बोलने में असमर्थ और प्रार्थनालय या प्रचारकों के पता के बिना । एक उत्साही प्रार्थना के पश्चात जिसमें उसने प्रभु से याचना की थी कि उसे उसके मिशन को पूरा करने में सहायता करना होगा, उसने एक आवाज सुनी जिसने उससे दो बार कहा कि वह उस कोने में खड़े आदमी का अनुसरण करे । निर्देशानुसार आज्ञाकारी होते हुए उसने आदमी का अनुसरण किया और आगे बिना किसी कठिनाई के वह प्रार्थनालय पहुँच गया" (L. Brent Goates, *Harold B. Lee, Prophet and Seer,* पृ. २८२) ।

३. बच्चों को बताएं कि जब हम प्रार्थना करते हैं तब हमें उन शब्दों का उपयोग करना चाहिए जो हमारे स्वर्गीय पिता के प्रति आदर और प्रेम को व्यक्त करता हो । हमें शिष्टतापूर्वक बात करने को कोशिश करनी चाहिए जैसे कि हम उस व्यक्ति से बात करते हैं जो हमसे बड़ा होता है और जिसका हम आदर करते हैं और जिससे बहुत प्रेम करते हैं ।

४. एल्डर बोएड के. पैकर द्वारा दिए गए निम्नलिखित वक्तव्य की एक सारणी बनाएं या चॉकबोर्ड पर लिखें, कुछ शब्दों के लिए खाली स्थानों को छोड़ते हुए । उन शब्दों को लिखें जिन्हें शब्दपट्टियों पर छोड़ दिया गया था या चॉकबोर्ड पर पंक्ति में छोड़ दिया गया था । शब्दपट्टियों के शब्दों के आधार पर बच्चों को उन खाली स्थानों को भरने की कोशिश करने दें ।

"कुछ *(ख)* *(घ)* के पढ़ने से आएगा, कुछ *(ग)* के सुनने से, और अवसरानुसार, जब यह महत्वपूर्ण हो, कुछ अत्याधिक सीधे और *(च)* के द्वारा आएगा । फुसफुसाहटें *(क)* और सुस्पष्ट होंगी" (Conference Report, अक्टू. १९७९, पृ. ३०; या *Ensign,* नव, १९७९, प-२० में) ।

क. साफ
ख. उत्तर
ग. वक्ताओं
घ. धर्मशास्त्र
च. शक्तिशाली प्रेरणा

५. प्रार्थना के बारे में निम्नलिखित धर्मशास्त्रों मे से एक को याद करने में बच्चों की सहायता करें । मत्ती ७:७, याकूब १:५, ३ नफी १८:२०, या सिद्धांत और अनुबंध १९:३८ का पहला भाग ।

निष्कर्ष

गवाही	गवाही दें कि स्वर्गीय पिता हमारी व्यक्तिगत प्रार्थनाओं को सुनता और उनका उत्तर देता है । प्रत्येक सुबह और प्रत्येक रात की हमारी प्रार्थनाओं के महत्व की गवाही दें, और बच्चों को आने वाले सप्ताह के दौरान इसे करने की चुनौती दें ।
प्रस्तावित घर पठन	सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती ६:५–८ का अध्ययन करें ।
	समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

घर एक चट्टान पर बनाया जाता है

पाठ
१२

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की आज्ञाओं के पालन की इच्छा को मजबूत करना ताकि यीशु मसीह और उसका सुसमाचार उनके जीवन में सुनिश्चित नीव होंगे ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ७:२४–२७, लूका ६:४७–४९, और सिद्धांत और अनुबंध ११:२४ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः इलामन ५:१२ और ३ नफी १४:२४–२७ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. सिद्धांत और अनुबंध ११:२४ का एक पोस्टर बनाएं या उसे चॉकबोर्ड पर लिखने की योजना बनाएं ।

५. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. कुछ छोटे-छोट कार्ड या कुछ रेत या नमक (वैकल्पिक) ।
   ग. चित्र ७-१२, पहाड़ पर उपदेश (सुसमाचार कला चित्र किट २१२; ६२१६६) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

बच्चों से पूछें कि क्या पिछले सप्ताह के दौरान उन्होंने सुबह और शाम प्रार्थना करना याद रखा था । उन्हें बताने के लिए कहें कि उन्होंने कैसा महसूस किया था जब उन्होंने इसे किया था ।

ध्यान गतिविधि

यदि आपके पास तुफान का एक डरावना अनुभव हो तो उस अनुभव का वर्णन करें । समझाएं कि आप चिन्तित क्यों थे और जितना संभव हो सका उतना सुरक्षित होने के लिए आपने क्या किया था । बच्चों से पूछें कि क्या कभी भी वे एक तुफान में डरे हैं, और उन बच्चों को आमंत्रित करें जो कक्षा के साथ बाँटना चाहें कि उन्होंने कैसा अनुभव किया था ।

विकल्पी ध्यान गतिविधि

छोटे-छोटे कार्ड के बिल्कुल एक समान ढाँचे के दो सेटों को एक साथ चिपकाएं या टेप लगाएं, जैसे कि एक छोटा सा घर । (इसे विस्तृत करने की आवश्यकता नहीं है । चार कार्डो को मिलाकर एक डिब्बा बनाएं जो इस गतिविधि के लिए काम करेगा) । एक बच्चे को इस ढाँचे को मेज या फर्श पर रखने दें और दूसरे बच्चे को दूसरे ढाँचे को मेज पर रखे हुए रेत या नमक के ढेर पर रखने दें । तब मेज को हिलाएं ताकि रेत पर रखे हुए कार्ड गिर जाएं । उन्हें बताएं कि रेत पर बना हुआ घर हमेशा ही फिसलता और गिरता है क्योंकि रेत आसानी से चलती है ।

धर्मशास्त्र विवरण

मत्ती ७:२४–२७ और लूका ६:४७–४९ के उस विवरण की शिक्षा दें जिसमें यीशु शिष्यों को बताता है कि कैसे एक घर को रेत की बजाय चट्टान पर बनाना है । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । समझाएं कि यदि हम यीशु मसीह के सुसमाचार को जीते हैं तो वह हमारे जीवन में आए हुए प्रलोभन, परेशानी या समस्याओं का सामना करने में हमारी सहायता कर सकता है ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- बुद्धिमान व्यक्ति ने अपना घर कहां बनाया ? (मत्ती ७:२४; लूका ६:४७–४८) । आपके विचार से वह बुद्धिमान क्यों था ?
- मूर्ख व्यक्ति ने अपना घर कहां बनाया ? (मत्ती ७:२६; लूका ६:४९) । आपके विचार से वह मूर्ख क्यों था ? आपके विचार से कोई एक घर को एक रेत की नींव पर कैसे बना सकता है ? एक नींव को खोदना कहां आसान हो सकता है—रेत या कठोर जमीन में ?
- "यीशु की बात को सुनकर वैसा ही करने" का क्या मतलब है ?
- आपके विचार से यीशु ने क्यों किसी ऐसे व्यक्ति की तुलना जो उसकी शिक्षाओं को सुनता और उनपर अमल करता है, की उस व्यक्ति के साथ की है जो अपना घर एक चट्टान पर बनाता है ?
- आपके विचार से यीशु ने क्यों किसी ऐसे व्यक्ति की तुलना जो उसकी शिक्षाओं को सुनता तो है पर उनपर अमल नहीं करता है, की उस व्यक्ति के साथ की है जो अपना घर रेत पर बनाता है ?

उसे पढ़ें जिसे यीशु ने सिद्धांत और अनुबंध ११:२४ में कहा था, जोसफ स्मिथ द्वारा उसके भाई हाईरम को दिया हुआ एक प्रकटीकरण । एक कागज को दिखाएं जिसपर इस धर्मशास्त्र को लिखा गया हो या चॉकबोर्ड पर आयक को लिखें ।

- हमें अपने घरों को, या अन्य शब्दों में अपने जीवन को यीशु मसीह और उसके सुसमाचार के चट्टान पर क्यों बनाना चाहिए ? (इलामन ५:१२)

बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु और उसकी शिक्षाएं ही केवल हमारी निश्चित नींव है । यदि हम किसी और चीज पर अपने जीवन को बनाते हैं तो यह रेत पर घर बनाने की तरह होगा ।

- कुछ लोग कौन सी उस चीज पर अपना घर बनाते हैं जिसी तुलना रेत के साथ की जा सकती है ?

कुछ चीजों पर चर्चा करें जैसे कि पैसे, ख्याति, लोकप्रियता, खेल, शारीरिक सुन्दरता और इत्यादि । समझाएं कि जीवन के मुख्य उद्देश्य को पाने के ये सभी रेतीली नींव हैं ।

- जीवन में पैसे कमाना, खेल खेलना और व्यायाम करना, मित्र बनाना और उनके लिए अच्छे काम करना महत्वपूर्ण है ? क्यों ?

समझाएं कि हमें भोजन, कपड़े और इत्यादि खरीदने के लिए पैसों की आवश्यकता है । हमारे जीवन में मित्र और काम भी महत्वपूर्ण हैं । परन्तु ये चीजें जब उद्धारकर्ता और सुसमाचार जीने से अधिक महत्वपूर्ण बन जाती हैं तब हम अनन्त जीवन की आशीषों को खो सकते हैं ।

- स्वर्गीय पिता ने हमें पृथ्वी पर क्यों भेजा है ?
- कौन से कुछ विशेष तरीके हैं जिससे हम अपने जीवन का निर्माण यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं पर कर सकते हैं ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा दें जिसके ऊपर लिखा हो *यीशु मसीह मेरी पक्की नींव है क्योंकि* _____। बच्चों से अधिक से अधिक उन चीजों को लिखने के लिए कहें जो कागज पर

लिखे हुए वाक्य को पूरा कर सके । तब उन्हें उनके उत्तरों को बताने के लिए कहें । यदि उन्होंने निम्नलिखित विषयों को नहीं सोचा हो, आप उनके बारे में बताना सुनिश्चित करें:

वह मुझसे प्रेम करता है ।
उसने मुझे सीखाया है कि अच्छी तरह से कैसे जीना है ।
उसने मेरे लिए एक उदाहरण रखा है ।
उसने मेरे लिए अपना जीवन दे दिया है ।
उसने मेरे पापों के लिए सहा है ।
उसके कारण मैं पुनरूत्थारित होऊंगा ।
उसने स्वर्गीय पिता के पास वापस जाना संभव बनाया है ।

२. प्रत्येक बच्चे को वाक्य "मैं अपने जीवन का निर्माण _____ के द्वारा उद्धारकर्ता पर बनाऊँगा" । पारिवारिक घरेलू संध्या में भाग लेना, घर पर मदद करना, दसमांश देना, प्रार्थना करना, ज्ञान के शब्द का पालन करना, सच बोलना, दूसरों के प्रति उदार होना, धर्मशास्त्रों को पढ़ना, विनम्र होना, और इत्यादि उत्तर हो सकते हैं । जहां आवश्यकता हो वहां सुझावों को देते हुए प्रत्येक बच्चे को बारी लेने दें । आप तब तक जारी करना चाहें जब तक कि वे आज्ञाओं के नाम को सोच सकें । इस बात के तरफ संकेत करें कि हम अनन्त जीवन को केवल सुसमाचार के नियमों के प्रति आज्ञाकारी होने के द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं । आप कागज के अलग-अलग पर्चों पर उसे लिख सकती हैं जिसे प्रत्येक बच्चे ने कहा है कि वह करेगा या करेगी और प्रत्येक बच्चे को घर ले जाने के लिए उन कागजों को एक चट्टान से बाँध सकती हैं ।

३. बच्चों को यह देखने के लिए कि यीशु ने आज्ञाकारिता के बारे में क्या कहा था, निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को देखने दें । उन्हें याद दिलाएं कि यीशु की आज्ञाओं के पालन के द्वारा ही हम एक मजबूत नींव पर अपनी जीवन को बनाते हैं ।

मत्ती ७:२१ (पृष्ठ के नीचे की टिप्पणी च पर ध्यान दें)
लूका ११:२८
यूहन्ना १५:१०

४. बच्चों के साथ तीसरे विश्वास के अनुच्छेद की समीक्षा करें ।

५. बच्चों की सारणी या चॉकबोर्ड से सिद्धांत और अनुबंध ११:२४ को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

उद्धारकर्ता के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करें और गवाही दें कि प्रत्येक आज्ञा जिसे उसने हमें दिया है वह प्रसन्न रहने में हमारी सहायता करेगा और कि अवज्ञाकारिता हमें अप्रसन्नता के तरफ ले जाती है । आप एक अनुभव को बताना चाहें जो आपको तब हुआ था जब आप सुसमाचार को जीने के द्वारा आशीषित हुई थीं ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती ७:२४–२७ करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
१३

यीशु मसीह बीमारों को चंगा करता है

उद्देश्य

दूसरों के प्रति प्रेम और करूणा दिखाने की इच्छा के लिए प्रत्येक बच्चे की सहायता करना जैसा कि यीशु ने किया था जब उसने बीमारों को चंगा किया था ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ८:५–१०, १३; २५:३४–४०; मरकुस १:४०–४५; लूका ४:३८–४०; ७:११–१७; और यूहन्ना ४:४६–५४; १३:३४–३५ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियाँः प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

हीबर जे. ग्रान्ट के बारे में निम्नलिखित कहानी बताएं, जोकि बाद में गिरजाघर के सातवें अध्यक्ष बने ।

हीबर ने अपने पतले से कोट को पहना और ठंड में कांपते रहे । शीघ्र ही उनका जन्मदिन आने वाला था और वे केवल एक गर्म कोट चाहते थे । परन्तु वे एक कोट खरीदने के लिए गरीब थे । कभी-कभी वे जल्दी सोने चले जाते थे क्योंकि घर को गर्म रखने के लिए ईंधन नहीं होता था, और कभी-कभी वे भूखे रह जाते थे क्योंकि पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं होता था । पैसे कमाने के लिए, अक्सर हीबर की मां को देर रात तक जागकर दूसरों के कपड़े सिलने पड़ते थे ।

हीबर के जन्मदिन पर उनकी मां ने उन्हें बची हुई सामग्रियों से बना एक सुन्दर कोट दिया था । हीबर अपने आपको बाहर जाने और उसकी गर्माहट को महसूस करने से रोक नहीं पाए ।

कुछ सप्ताहों के पश्चात, हीबर ने अपनी ही उम्र के एक लड़के को रोत हुए देखा । उसने केवल एक स्वेटर पहन रखा था, और हीबर जानते थे कि उसे कितनी ठंड लग रही होगी । लालसा के साथ लड़के ने हीबर के कोट के तरफ देखा । हीबर रूके और लगभग बिना कुछ सोचे कोट को उतारा और इसे लड़के को दे दिया ।

उस दोपहर को हीबर की मां ने उन्हें उनके पुराने कोट को पहने देखा । उन्होंने पूछा, "तुमने अपने नये कोट के साथ क्या किया ?" हीबर को समझ नहीं आ रहा था कि कैसे बताएं । तब उन्होंने कहा, "मैंने एक लड़के को देखा जिसे उसकी आवश्यकता मुझसे अधिक थी, इसलिए इसे मैंने उसे दे दिया" ।

"क्या तुम उसे अपना पुराना कोट नहीं दे सकते थे?" उसने पूछा ।

हीबर ने अपनी मां के तरफ देखा, आशा करते हुए कि वह समझ जाएगी, और उसकी आँखों को आँसुओं से भरा हुआ देखा । उन्होंने अपनी बाँहों को उसके आस-पास फैला दिया दिया जब उसने अपने स्वयं के प्रश्न का उत्तर दिया, "अवश्य तुम नहीं दे सकते थे, हीबर, उसने कहा । "अवश्य तुम नहीं दे सकते थे" । (Adapted from "The Coat," retold by Lucile C. Reading, *Children's Friend,* नव. १९६६, पृ. ५) ।

बच्चों से कल्पना करने के लिए कहें कि हीबर ने कैसा महूसस किया था जब उन्होंने ठंड के कारण उस बच्चे को रोते हुए देखा था । समझाएं कि हीबर के पास उस बच्चे के प्रति प्रेम और करूणा थी । यीशु चाहता है कि हम दूसरों को उसी तरह प्रेम करें जैसा कि अध्यक्ष ग्रान्ट ने किया था । समझाएं कि यह पाठ दिखाता है कि कैसे बीमारों को चंगा करने के द्वारा यीशु ने प्रेम और करूणा के एक उदाहरण को रखा था ।

विकल्पी ध्यान गतिविधि

कागज के अलग-अलग टुकड़ों पर यूहन्ना १३:३४ के प्रत्येक शब्द को लिखें । कागजों को बिखराएं और बच्चों से उन्हें सही-सही क्रमानुसार व्यवस्थित करने के लिए कहें । यदि सहायता की आवश्कयता हो तो उन्हें उनके धर्मशास्त्रों का उपयोग करने दें ।

धर्मशास्त्र विवरण

यीशु के चंगाई वाले चमत्कारों के निम्नलिखित विवरणों की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु के पास बीमारों के लिए महान प्रेम और करूणा थी ।

१. सूबेदार के सेवक को चंगा करना (मत्ती ८:५–१०, १३) । समझाएं कि सूबेदार रोमन सेना का एक अधिकारी था जिसने कई सिपाहियों को आज्ञा दी थी । उसने यीशु के बारे में सुना था और उसमें विश्वास किया था ।

२. एक कोढ़ी को चंगा करना (मरकुस १:४०–४५) समझाएं कि कोढ़ी चमड़ी के एक भयानक रोग से ग्रसित होते हैं । क्योंकि कोढ़ एक बहुत ही छुआ छूत की बीमारी मानी जाती थी, इस बीमारी से ग्रसित लोगों को अक्सर नगरों में रहने की अनुमति नहीं दी जाती थी और उन्हें उनसे दूर कर दिया जाता था जिन्हें कोढ़ नहीं होता था ।

३. पतरस की सास और कई अन्य लोगों को चंगा करना (लूका ४:३८–४०) ।

४. विधवा के पुत्र को मृत्यु से जीवन दान देना (लूका ७:११–१७) ।

५. कुलीन पुरूष के पुत्र को चंगा करना (यूहन्ना ४:४६–५४) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- आपके विचार से यीशु ने इन चमत्कारों को क्यों किया था ? (मरकुस १:४१; लूका ७:१३; यूहन्ना ९:१–३) ।
- इन चंगाइयों के कारण उन लोगों के जीवन कैसे आशीषित हुए थे जो इसमें शामिल थे ? (लूका ७:२, १२; यूहन्ना ४:५२–५३)
- हमें अपने जीवन में किस तरह के गुणों को विकसित करने की आवश्यकता है यदि हम इन विवरणों में दिए गए उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करते हैं ? (यूहन्ना १३:३४–३५ । इन आयतों पर चिन्ह लगाने के लिए शायद आप बच्चों को समय देना चाहें) । हम उन लोगों के प्रति प्रेम, करूणा, और चिन्ता कैसे व्यक्त कर सकते हैं जिन्हें आवश्यकता है ? बच्चों को अनुभवों को बाँटने के लिए आमंत्रित करें कि उन्होंने कैसा महसूस किया था जब किसी ने उनकी सहायता की थी ।
- क्या यीशु उन सभी लोगों को जानता था जिसे उसने चंगा किया था ? (मत्ती ८:५–८) । यह किस बारे में बताता है कि हमें किसकी सहायता करनी चाहिए यदि हम देखते हैं कि किसी को आवश्यकता है ?
- यीशु द्वारा कोढ़ी को चंगा करने के पश्चात, उसने उससे क्या करने के लिए कहा ? (मरकुस १:४३–४४) । यह किस बारे में बताता है कि हमें दूसरों की सहायता कैसे करनी चाहिए ?
- उन लोगों की सहायता करने के द्वारा जिन्हें आवश्यकता हो, किस तरह से हमें स्वर्गीय पिता और यीशु के नजदीक ले आता है ? (मत्ती २५:४५) । आपको कैसा महसूस होता है जब आप किसी की सहायता करते हैं ? कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने के लिए आमंत्रित करें जब उन्होंने आवश्यकता में किसी की सहायता की हो या जब उन्होंने किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा सहायता प्राप्त की हो ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. एक बच्चे को यूहन्ना ३:१८ पढ़ने दें । समझाएं कि यह आयत हमें बताता है कि हमें लोगों को केवल बताना नहीं है कि हम उनसे प्रेम करते हैं, हमें अपने कार्यों के द्वारा अपने प्रेम को व्यक्त करना चाहिए । यही वह चीज है जिसे हम किसी के लिए करते हैं जो दिखाता है कि हम उनसे प्रेम करते हैं । बच्चों को उन तरीकों को करने दें जिससे वे अपने परिवारों और मित्रों के प्रति प्रेम को व्यक्त कर सकते हैं ।

२. एक बच्चे को अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा दिए गए उद्धरण को पढ़ने दें: "परमेश्वर हमपर ध्यान देता है, और वह हमें देखता है । परन्तु अक्सर वह दूसरे व्यक्ति के द्वारा हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है" । ("Small Acts of Service," *Ensign,* दिसंबर १९७४, पृ. ५) । प्रत्येक बच्चे से उस एक परिस्थिति के बारे में बताने के लिए कहें जब स्वर्गीय पिता ने बच्चे की आवश्यकता को दूसरे व्यक्ति के द्वारा पूरा किया हो । आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में भी बच्चों को बता सकती हैं जिसे आप जानती हैं कि उसने आवश्यकता में किसी दूसरे की सहायता की है । इस बात पर बल दें कि इस व्यक्ति ने दूसरों के प्रति प्रेम, करूणा, और चिन्ता को बढ़ाया है और सेवकाई के कामों के द्वारा प्रेम को व्यक्त किया है ।

३. बच्चों को दूसरों की सेवा के बारे में निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को पढ़ने दें: मत्ती २५:३४–४० और मुसायाह २:१७–१८, ४:१४–१५ । एक साथ उन चीजों की सूची बनाएं जिसे ये धर्मशास्त्र बताते हैं कि हमें दूसरों के प्रति करना चाहिए । बच्चों को सेवकाई के एक काम को चुनने दें जिसे वे आने वाले सप्ताह के दौरान कर सकते हैं ।

४. कक्षा को छोटे-छोटे दलों में विभाजित करें और प्रत्येक दल को निम्नलिखित में से एक या एक से अधिक परिस्थितियों को दें । आप अपने स्वयं की परिस्थितियाँ भी बना सकती हैं । बच्चों को काम के उन तरीकों को करने दें जिससे वे इन लोगों के लिए प्रेम और करूणा दिखा सकते हैं और उनकी सेवा कर सकते हैं ।

एक नया बच्चा प्राथमिक में आता है और किसी को भी नहीं जानता है ।
आपकी प्राथमिक कक्षा का एक बच्चा बीमार हो जाता है ।
आपका मित्र अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर का सदस्य नहीं है ।
आपकी वार्ड या शाखा में कोई अकेलापन महसूस करता है ।
आपके माता-पिता व्यस्त हैं और आपसे आपके छोटे भाई और बहन की देखभाल के लिए कहते हैं ।
कोई आपके किसी मित्र के प्रति कठोर बातें कहता है ।

निष्कर्ष

गवाही

उद्धारकर्ता के जीवन और उदाहरण के प्रति अपने आभार को व्यक्त करें । गवाही दें कि जब हम अपने आस-पास के लोगों के प्रति करूणा और प्रेम दिखाते हैं तब हम यीशु की शिक्षाओं का अनुसरण करते हैं । बच्चों को सुझाव दें कि सप्ताह के दौरान उन्हें अधिक प्रेम दिखाने की और उनके परिवारों और दूसरों के प्रति छोटे-छोटे काम करने की कोशिश करनी चाहिए ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मरकुस १:४०–४५ और लूका ७:११–१७ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह और सब्त का दिन

पाठ
१४

उद्देश्य

सब्त के दिन पर उन चीजों को करने की चाह में प्रत्येक बच्चे की सहायता करना जो यीशु मसीह और स्वर्गीय पिता के सम्मान और उनके स्मरण के लिए हो ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक यूहन्ना ५:२–१६, मत्ती १२:१–१३, लूका १३:११–१७, १४:१–६, उत्पत्ति २:१–३, निर्गमन २०:८–११, और सिद्धांत और अनुबंध ५९:९–१४ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मरकुस २:२३–२८, ३:१–६, और लूका ६:१–११ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः प्रत्येक बच्चे के एक बाइबिल और एक नया नियम ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

कक्षा को बताने के लिए बच्चों को आमंत्रित करें कि सप्ताह के दौरान कैसे उन्होंने दूसरों के प्रति प्रेम और सेवा दिखाई थी । उन्हें उनके अनुभवों के बारे में बात करने दें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों से उनके हाथों को ऊपर उठाने के लिए कहें जब वे सोचें कि निम्नलिखित पहेली का उत्तर उन्हें आता है :

धर्मशास्त्रों में कई बार इसका वर्णन किया गया है ।
स्वर्गीय पिता और यीशु कहते हैं कि यह बहुत महत्वपूर्ण है ।
यह पवित्र है ।
लोग जो इसे पवित्र रखते हैं वे स्वर्गीय पिता और यीशु के प्रति अपने प्रेम को दिखाते हैं ।
यह सात में से एक है ।
यह बाकी छः से विभिन्न है ।
इस पर हम स्वर्गीय पिता की आराधना करते हैं और अपने काम से आराम ।
यह सप्ताह का एक दिन है ।

उत्तरः सब्त

धर्मशास्त्र विवरण

खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध धर्मशास्त्रों से सब्त के दिन पर यीशु द्वारा चंगाई के विवरणों की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

जब आप इन विवरणों की शिक्षा देती हैं, बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु के समय के यहूदी लोग सब्त को उस तरह से नहीं जीते थे जैसे कि उन्हें आज्ञा दी गई थी । उन्होंने कठिन नियम बनाए थे जोकि स्वर्गीय पिता की आराधना में उनके लिए सहायक नहीं थी । उदाहरण के तौर पर, एक गाँठ जिसे एक हाथ के द्वारा खोला जा सकता था उसे सब्त पर बाँधना वैध माना जाता था, परन्तु यदि इसे खोलने के लिए दो हाथों की आवश्यकता होती तो यह वैध नहीं था । "सब्त के दिन आग जलाना या बुझाना (अवैध) था । एक टूटी हुई

हड्डी,... या एक अव्यवस्थित जोड़ को सही करना मना था.... सब्त पर जिसे खंडहर के नीचे दफना दिया जाता था, यदि जीवित होता तो उसे खोदा या बाहर निकाला जा सकता था, परन्तु यदि मर जाता, उसे तब तक के लिए वहीं छोड़ दिया जाता जहाँ वह था जब तक कि सब्त कत्म नहीं हो जाती" (James E. Talmage, *Jesus the Christ,* पृष्ठ २१५–१६) ।

यीशु ने यहूदियों को सीखाया कि ये नियम गलत थे । उसने उदाहरण के द्वारा दिखाया कि सब्त का दिन अच्छी और योग्य चीजों को करने के द्वारा उसके और उसके पिता के प्रति सम्मान के लिए था, जैसे कि लोगों की सहायता करना ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- सब्त के दिन पर हमें क्या करने की आज्ञा दी गई है ? (निर्गमन २०:८–११) । हमें इसे करने की आज्ञा क्यों दी गई है ? (उत्पत्ति २:१–३) ।

- सब्त के दिन पर असमर्थ मनुष्य को ठीक करने के लिए यीशु ने क्या किया था ? (यूहन्ना ५:६, ८); मनुष्य जिसका हाथ सुखा हुआ था उसे ठीक करने के लिए यीशु ने क्या किया था ? (मत्ती १२:१३); कुबड़ी स्त्री को ठीक करने के लिए यीशु ने क्या किया था ? (लूका १३:१३); मनुष्य जिसे जलन्धर का रोग था उसे ठीक करने के लिए यीशु ने क्या किया था ? (लूका १४:४ । समझाएं कि जलन्धर एक ऐसी बीमारी है जिससे शरीर में सुजन हो जाती है) । आज सब्त के दिन पर इस तरह की गतिविधियों को करना क्या स्वीकारा जाएगा ? क्यों ?

- सब्त पर शिष्यों ने बालों को क्यों तोड़ा था ? (मत्ती १२:१) । प्रत्येक दिन किन चीजों को करने की आवश्यकता है ? यहाँ तक कि सब्त पर भी ?

- सब्त को यीशु ने किस तरह से मनाया ? यहूदियों ने इसे कैसे मनाया ? (बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु सब्त का उपयोग लोगों की सहायता के लिए करता था और ऐसा करने में स्वर्गीय पिता का सम्मान किया था) ।

- कौन से दो कारण हैं जिससे यहूदी मार्गदर्शक यीशु से क्रोधित थे ? (यूहन्ना ५:१८) ।

- संसार के आरंभ से ही सब्त के दिन से संबंधित नियमों को किसने बनाया था ? (मत्ती १२:८; उत्पत्ति २:१–३ । बच्चों को याद दिलाएं कि यीशु मसीह ने स्वर्गीय पिता के निर्देशानुसार संसार की सृष्टि की थी) । आपके विचार से यीशु ने कैसा महसूस किया जब उसने देखा कि उसके स्थापित नियमों को यहूदियों ने बदल दिया था ?

- बेतहसदा के कुण्ड पर बैठा असमर्थ मनुष्य ने, अशक्त स्त्री ने, झोले के मारे हुए मनुष्य ने, और उस मुनष्य ने जिसे जलन्धर की बीमारी थी, ने कैसा महसूस किया जब वे चंगे हो गए थे ? (लूका १३:१३) । सब्त के दिन पर इन चीजों को करने के द्वारा यीशु ने उसके पिता का सम्मान कैसे किया था ?

- आपके विचार से यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा कि सब्त के दिन पर इन चीजों को करना वैध था ? (मत्ती १२:१२) । आपको कैसे पता है कि किन चीजों को सब्त के दिन पर करना अच्छा होता है ? (निर्गमन २०:८–११; सि. और अनु. ५९:९–१४) ।

- सब्त पर हमें किन चीजों को नहीं करना चाहिए ? प्रथम अध्यक्षता के इस वक्तव्य पर चर्चा करें : "सब्त पर हमें खरीददारी नहीं करना चाहिए और अन्य व्यापारिक और खेल-खूद वाली गतिविधियों में हिस्सा नहीं लेना चाहिए" । (*Ensign,* जनवरी १९९३, पृ. ८०) ।

अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा दिए गए इस उद्धरण पर चर्चा करें: "सब्त को मनाने का तरीका हमारे स्वर्गीय पिता के प्रति हमारे प्रेम के मापदंड का एक सूचक है" (*The Teachings of Spencer W. Kimball,*

पृ. २१८) । बच्चों को उन उपयुक्त तरीकों पर चर्चा करने दें जिससे वे सब्त पर स्वर्गीय पिता के प्रति उनके प्रेम को दिखा सकें, जैसे कि गिरजाघर मे उपस्थित होना, धर्मशास्त्रों को पढ़ना, उनकी दैनिकी में लिखना, रिश्तेदारों और बीमारों से भेंट करना, उन्नति वाले संगीत सुनना, आराधना करना, दूसरों की सेवा करना, और परिवार पर केन्द्रित गतिविधियों में हिस्सा लेना । यदि एक प्रश्न वाली गतिविधि का वर्णन हो, बच्चों को निश्चय करने के लिए कहें कि क्या यह गतिविधि एक अच्छा तरीका होगा स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त करने के लिए या इसे किसी और दिन पर करना अच्छा होगा ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों को सिद्धांत और अनुबंध ५९:९–२३ का अध्ययन करने दें और कुछ गतिविधियों की सूची बनाने दें जिसे प्रभु ने हमें सब्त के दिन पर करने की आज्ञा दी है और कुछ आशीषों की सूची बनाने दें जिसे उन आज्ञाओं के मानने के कारण उसने हमारे लिए प्रतिज्ञा की है ।

२. बच्चों को कई गतिविधियों के नाम बताने दें जिसे उन्होंने सब्त के दिन पर लोगों को करते हुए देखा है । निम्नलिखित प्रश्नों को पूछने के द्वारा निर्णय लें कि क्या ये गतिविधियाँ सब्त के लिए उपयुक्त होंगी :

क्या यह स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रति मेरे सम्मान में सहायता करेगा ?
क्या यह उन आज्ञाओं को मानना है जिसे स्वर्गीय पिता ने हमें सब्त के लिए दिया है ?
क्या यह आरामदायक है ?
क्या यह किसी के प्रति सेवा है ?

सब्त के दिन को पवित्र रखने की योजनाओं को बनाने के लिए बच्चों को चुनौती दें ।

३. प्रथम अध्यक्षता के इस वक्तव्य पर चर्चा करें: "हम सभी अन्तिम-दिनों के सन्तों से विनती करते हैं कि वे इस पवित्र दिन को संसार की गतिविधियों से दूर रखें और आराधना की एक आत्मा में प्रवेश करने, धन्यवाद देने, सेवा करने, और सब्त के लिए उपयुक्त परिवार से संबंधित गतिविधियों को करने के द्वारा अपने आपको पवित्र रखें । जब गिरजाघर के सदस्य अपनी सब्त की गतिविधियों को उद्देश्य और प्रभु की आत्मा की संगत के साथ मनाने का प्रयास करते हैं, उनके जीवन आनन्द और शान्ति से भर जाएंगे" (*Ensign*, जनवरी १९९३, पृ. ८०) ।

४. बच्चों को कागज के एक टुकड़े पर शब्द *मैं सब्त के दिन को पवित्र रखूँगा या रखूँगी* लिखने दें और उसे क्रेयोन या मार्कर से सजाने दें ।

निष्कर्ष

गवाही

सब्त के दिन पर अच्छी और योग्य चीजों को करने के द्वारा उसे पवित्र रखने के मूल्य और उसके परिणामस्वरूप प्राप्त करने वाली आशीषों की अपनी गवाही दें । बच्चों को सब्त के दिन उन चीजों को करने के लिए प्रोत्साहित करें जो स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह का सम्मान करती हों ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में यूहन्ना ५:२–१६ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
१५

यीशु मसीह ने अपने पौरोहित्य शक्ति का उपयोग दूसरों को आशीष देने के लिए किया था

उद्देश्य

बच्चों की पौराहित्य की शक्ति को अच्छी तरह से समझने में सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मरकुस ४:३५–४१, ६:३३–४४, लूका ९:३७–४३, मत्ती १४:२३–३३, प्रेरितों के काम १०:३८, और सिद्धांत और अनुबंध १३, २७:१२, १२४:१२३ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मत्ती ८:२३–२७; यूहन्ना ६:१–१४, १६–२१; और *सुसमाचार सिद्धांत,* अध्याय १३ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल और एक नया नियम ।
   ख. चित्र ७-१५, तुफान को शान्त करना (सुसमाचार कला चित्र किट २१४; ६२१३९); ७-१६, पाँच हजार लोगों को खिलाना (६२१४३); और ७-१७, यीशु पानी पर चलता हुआ ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

कमरे की बत्ती बंद कर दें, या टॉर्च जला दें । पूछें कि बत्ती को जलाए रखने के लिए किस चीज की आवश्यकता है । (शक्ति) । बच्चों को कुछ उन चीजों को बताने दें जिसका उपयोग हम बत्ती जलाने के लिए करते हैं । अन्य तरह की शक्तियाँ क्या है ? बच्चों को बताएं कि आज वे उस शक्ति के बारे में सीखने जा रहे हैं जो सारी शक्तियों से बड़ी है, यहाँ तक कि प्रकृति के प्रभावों से भी अधिक । यह परमेश्वर की शक्ति है । इसे हम पौरोहित्य कहते हैं ।

विकल्पी ध्यान गतिविधि

बच्चों को एक चुम्बक और धातु के कुछ टुकड़े दिखाएं । बच्चों को मेज पर रखे हुए धातु के टुकड़ों को खींचने के लिए चुम्बक का उपयोग करने दें । यदि आपके पास एक चुम्बक नही है तो एक गुब्बारा फुलाएं और उसे दीवार पर या एक बच्चे के ऊपर चिपकाने के लिए कपड़ों पर रगड़ें । आप एक बच्चे को एक कंघी उसके बालों में कई बार चलाने दें ताकि उसका उपयोग कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों को उससे उठाया जा सके।

- किस चीज के कारण चुम्बक धातु के तरफ आकर्षित होता है, गुब्बारा दीवार से या कपड़ों से चिपक जाता है, या कंघी कागज उठा लेती है ? (चुम्बक के पास शक्ति है जो धातु को उसके तरफ आकर्षित करती है । स्थिर विद्युत गुब्बारे को दीवार या कपड़ों पर चिपकाए रहता है और कंघी को कागज उठाने में समर्थ बनाता है) ।
- आपके विचार से और कौन-कौन सी शक्तियाँ हैं ? (बीजली, विद्युत, हवा, और इत्यादि) ।

बच्चों को समझाएं कि वे उस शक्ति के बारे में सीखने जा रहे हैं जो सारी शक्तियों से बड़ी है । यह परमेश्वर की शक्ति है, पौरोहित्य ।

धर्मशास्त्र विवरण और चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

उपयुक्त समय पर चित्रों का उपयोग करते हुए, यीशु द्वारा उसकी शक्तियों के उपयोग के बारे में दिए गए विवरण की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

१. तुफान को शान्त करना (मरकुस ४:३५–४१) ।

- तुफान के दौरान यीशु के शिष्यों ने कैसा महसूस किया ? (मरकुस ४:३८) । उन्होंने ऐसा क्यों सोचा कि यीशु उनकी चिन्ता नहीं करता है ? आप कैसे जानते हैं कि स्वर्गीय पिता हमारी चिन्ता करता है ?
- यीशु ने तुफान को कैसे शान्त किया ? (मरकुस ४:३९) ।
- तुफान को शान्त करने के लिए यीशु ने कौन सी शक्ति का उपयोग किया ? (उसकी शक्ति—परमेश्वर की शक्ति) । परमेश्वर की शक्ति और उसके अधिकार को हम क्या कहते हैं ? (सि. और अनु. १२४: १२३ । पौरोहित्य) ।
- तुफान को शान्त करने के पश्चात, यीशु ने शिष्यों से क्या पूछा ? (मरकुस ४:४०) ।
- तुफान को शान्त करने के पश्चात शिष्यों ने यीशु के बारे में कैसा महसूस किया ? (मत्ती ८:२७; मरकुस ४:४१) ।

२. पाँच हजार लोगों को खिलाना (मरकुस ६:३३–४४)

- आपके विचार से वीरान भूमि में लोगों ने यीशु का पीछा क्यों किया ? (मरकुस ६:३३) । पाँच हजार लोगों को खाना खिलाने के चमत्कार को करने से पहले यीशु ने क्या किया था ? (मत्ती १४:१४) । बीमारों को चंगा करने के लिए यीशु ने कौन सी शक्ति का उपयोग किया था ? (पौरोहित्य की शक्ति) । उस शक्ति का साधन कौन है जिससे हमारे जीवन आशीषित होते हैं ? (प्रेरितों के काम १०:३८) ।
- प्रत्येक के लिए पर्याप्त मात्रा में भोजन उपलब्ध कराने के लिए यीशु ने कौन सी शक्ति का उपयोग किया था ? बचे हुए भोजन की मात्रा के बारे में क्या चमत्कारिक था ? (मरकुस ६:४२–४४; यूहन्ना ६:१२–१३) ।

३. यीशु एक लड़के को चंगा करता है जिसे एक दुष्टात्मा ने पकड़ रखा था (लूका ९:३७–४३) ।

- मनुष्य के बेटे को क्या हुआ था ? (लूका ९:३८–४०) । मनुष्य ने यीशु से क्या करने के लिए कहा ?
- यीशु लड़के के लिए क्या करने में समर्थ था ? (लूका ९:४२) । जो लोग यीशु के साथ थे उन्होंने इस चमत्कार पर क्या प्रतिक्रिया दिखाई थी ? (लूका ९:४३) ।
- सहायता के लिए और कौन का आदमी गया था ? (लूका ९:४०) । आपके विचार से शिष्य आदमी और उसके बेटे की सहायता क्यों नहीं कर सके थे ? यीशु ने अपने शिष्यों को "अविश्वासी" क्यों कहा था ? (लूका ९:४१) । आपके विचार से काम के प्रति पौरोहित्य की शक्ति के लिए विश्वास क्यों आवश्यक है ?

४. पानी पर चलना (मत्ती १४:२२–३३) ।

- किस शक्ति के द्वारा यीशु पानी पर चलते हुए उस नाव तक गया था जहां उसके शिष्य थे ? शिष्यों ने क्या सोचा जब उन्होंने उसे पहली बार देखा ? (मत्ती १४:२६) । यीशु ने उनसे क्या कहा ? (मत्ती १४:२७) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्नों का सार

समझाएं कि यीशु ने इन चार चमत्कारों को उसकी शक्ति के द्वारा किया था । उसने पौरोहित्य की शक्त का उपयोग करते हुए कई और चमत्कार किए थे । यीशु ने इस शक्ति को आज उन लोगों के साथ बाँटा है जो इसके धारक हैं ।

रूपान्तरण के पहाड़ पर पतरस, याकूब, और यूहन्ना ने पौरोहित्य की कुंजियों को प्राप्त किया था (मत्ती १७:१–९) । पौरोहित्य की कुंजियों को पतरस, याकूब और यूहन्ना को दिया गया था ताकि यीशु के जाने के

पश्चात उनके पास पौरोहित्य की शक्ति रहे । यीशु के पुनरूत्थान के पश्चात पतरस को गिरजाघर का अध्यक्ष होना था, और गिरजाघर के काम को करने के लिए पौरोहित्य की कुंजियों की आवश्यकता थी ।

- मूसा और एलिय्याह ने पौरोहित्य की कौन सी कुंजियों को पतरस, याकूब, और यूहन्ना को प्रदान किया था ? (मूसा ने उन्हें इस्राएल को एकत्रित करने के लिए पौरोहित्य की कुंजियों को प्रदान किया था; एलिय्याह ने उन्हें मुहरबंद की शक्ति को करने के लिए कुंजियों को प्रदान किया था [देखें सि. और अनु. ११०:१२–१६]) ।
- आज हम एकत्रित करने की कुंजियों का उपयोग कैसे करते हैं ? (विश्वास के अनुच्छेद १:१० । प्रचारक कार्य) । इस समय आप प्रचारक कार्य में किस तरह से हिस्सा ले सकते हैं, और पूरे-समय के प्रचारक की सेवकाई की तैयारी आप कैसे कर सकते हैं ?
- आज हम मुहरबंदी की कुंजियों का उपयोग कहां करते हैं ? (मंदिर में) । आप मंदिर में जाने की तैयारी कैसे कर सकते हैं ?

समझाएं कि यीशु और शिष्यों की मृत्यु के पश्चात, पृथ्वी के लोगों से गिरजाघर की आशीषें और पौरोहित्य को वापस ले लिया गया था । पृथ्वी पर पौरोहित्य की पुनःस्थापना आवश्यक हो गई थी । यीशु ने उसके गिरजाघर और पौरोहित्य को जोसफ स्मिथ के द्वारा पुनःस्थापित किया था ताकि आज हम सभी अपने जीवन में पौरोहित्य की आशीषों को प्राप्त कर सकें ।

- आज गिरजाघर के पास पौरोहित्य को होने के लिए क्या आवश्यक है ? दो पौरोहित्य कौन से हैं ? हारूनी पौरोहित्य की पुनःस्थापना कैसे हुई थी ? (सि. और अनु. १३) । मलकिसिदक पौरोहित्य की पुनःस्थापना कैसे हुई थी ? (सि. और अनु. २७:१२) ।

बच्चों की समझने में सहायता करें कि योग्य लड़के जब बारह वर्ष के होते है तब उसी पौरोहित्य को प्राप्त कर सकते हैं जिसे यूहन्ना बपतिस्मा वाले ने जोसफ स्मिथ और ओलिवर काउड्री को दिया था । समझाएं कि जब लड़के हारूनी पौरोहित्य को प्राप्त करते हैं, उन्हें उनके वार्ड या शाखा के सदस्यों को आशीषित करने के लिए, परमेश्वर के नाम में काम करने के लिए शक्ति को दिया जाता है । (देखें समृद्धि गतिविधि ५) ।

- पौरोहित्य की शक्ति के द्वारा हम किन आशीषों को प्राप्त करते हैं ? (शिशुओं का नामकरण और आशीष, बपतिस्मा, पुष्टिकरण, प्रभुभोज, मंदिर की मुबरबंदियाँ, और इत्यादि) । पौरोहित्य के द्वारा हम कौन सी कुछ व्यक्तिगत आशीषों को प्राप्त करते हैं ? (बीमारी में आशीष प्राप्त करना, पिता की आशीषें, घर शिक्षक) ।
- पौरोहित्य ने आपके जीवन को कैसे आशीषित किया है ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. कागज के मुड़े हुए टुकड़ों पर लिखें । पर्चियों को एक बक्से में रखें या "पौरोहित्य *बपतिस्मा और पुष्टिकरण, बीमारों को आशीष देना, एक पिता का आशीर्वाद, मंदिर विवाह, और प्रभुभोज* धर्मविधियाँ और आशीषें" का लेबल लगे हुए एक लिफाफे में रखें । एक बच्चे के एक पर्ची को निकालने और उसे कक्षा के लिए पढ़ने को कहें । बच्चों से उन अनुभवों को बताने के लिए कहें जो उन्हें इन धर्मविधियों और आशीषों के द्वारा हुई हों ।

२. विश्वास के पाँचवे अनुच्छेद की समीक्षा करें और इसे याद करने में बच्चों की सहायता करें ।

३. समझाएं कि गिरजाघर में जब एक लड़का बारह वर्ष का हो जाता है, यदि योग्य है तो वह हारूनी पौरोहित्य को प्राप्त कर सकता है और एक डीकन के कार्यालय में नियुक्त हो सकता है । निम्नलिखित शब्दपट्टियों को तैयार करें:

प्रभुभोज को बाँटता है
उपवास की भेटों को एकत्रित करता है

धर्माध्यक्ष के संदेशवाहक के रूप में काम करता है
प्रभु की संपत्तियों की रक्षा करता है

बच्चों से एक डीकन के कर्तव्यों का नाम बताने के लिए कहें । जब बच्चे एक सही उत्तर को बताते हैं, उपयुक्त शब्दपटटी को दिखाएं । यदि आवश्यक हो तो सूत्रों को बताने के द्वारा सभी कर्तव्यों को पहचानने में उनकी सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

पौरोहित्य के उस शक्ति की अपनी गवाही दें जो यीशु के पास थी । यह भी गवाही दें कि आज गिरजाघर में योग्य पुरूषों और लड़कों के पास वही समान पौरोहित्य शक्ति है और यह कि कुछ निश्चित आशीषें केवल पौरोहित्य के द्वारा ही उपलब्ध होती हैं ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मरकुस ४:३५–४१ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
१६

यीशु मसीह ने चमत्कार किये थे

उद्देश्य

बच्चों की यीशु मसीह में उनके विश्वास को मजबूत करने में सहायता करना यह सीखने के द्वारा कि जब हमारे पास विश्वास होता है तब स्वर्गीय पिता की इच्छानुसार चमत्कार होते हैं ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मरकुस २:१–१२, ५:२१–४३, और १ नफी ७:१२ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मत्ती ९:१–८, १८–३१; १७:२०; लूका ८:४१–५६; एथर १२:६, १२, १६, १८; और *सुसमाचार सिद्धांत*, अध्याय १८ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. चित्र ७-१८, यीशु याईर की बेटी को आशीषित करता हुआ (सुसमाचार कला चित्र किट २१५; ६२२३१) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों से पूछें कि क्या वे कभी भी बहुत बीमार हुए हैं । उन्हें बताने दें कि वह कैसा था और समझाने दें कि उन्हें अच्छा महसूस करने में सहायता के लिए उनके परिवारों ने क्या किया था । जिन बच्चों ने पौरोहित्य आशीषों को प्राप्त किया है उन्हें दूसरे बच्चों को उनके अनुभवों के बारे में बताने दें । बच्चों की मानने में सहायता करें कि वे यीशु मसीह में उनके विश्वास को प्रार्थना और पौरोहित्य आशीषों को पूछने के द्वारा दिखाते हैं जब वे बीमार होते हैं या समस्याओं में होते हैं ।

बच्चों को समझाएं कि इस पाठ में दी गई कहानियाँ उन लोगों के बारे में है जिन्हें यीशु ने उनके महान विश्वास के कारण चंगा किया था ।

धर्मशास्त्र विवरण और चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध धर्मशास्त्रों में पाये जाने वाले यीशु का बीमारों को चंगा करने के विवरण की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

१. यीशु झोले के मारे हुए व्यक्ति को चंगा करता है (मरकुस २:१–१२) ।

- झोले के मारे हुए व्यक्ति से यीशु ने पहले क्या कहा (माँसपेशियों का हिलना जिसे रोका नहीं जा सकता) ? (मरकुस २:५) । यीशु की टिप्पणी पर शास्त्रियों ने क्या प्रतिक्रिया दिखाई थी ? (मरकुस २:७) । निन्दा क्या है ? (परमेश्वर के प्रति कम आदर व्यक्त करना या अपने आपको परमेश्वर की तरह मानना) । क्या यीशु निन्दक था ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु पापों को क्षमा कर सकता है क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु शास्त्रियों ने विश्वास नहीं किया था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है ।
- यीशु ने शास्त्रियों से क्या कहा ? (मरकुस २:८–९) झोले के मारे हुए व्यक्ति से उसने क्या कहा ? (मरकुस २:१०–११) ।

- लोगों की क्या प्रतिक्रिया हुई थी जब झोले का मारा हुआ व्यक्ति चंगा हो गया था ? (मरकुस २:१२) । आपके विचार से यह व्यक्ति चंगा क्यों हुआ था ?
- यीशु याईर की बेटी को मरे हुओं में से जीवित करता है (मरकुस ५:२१–२४, ३५–४३) ।

चित्र ७-१८ दिखाएं, यीशु याईर की बेटी को आशीषित करता हुआ ।

- याईर कौन था ? हम कैसे जानते हैं कि उसे यीशु में विश्वास था ? (मरकुस ५:२२–२३) । यीशु ने याईर के विश्वास को मजबूत करने में कैसे सहायता किया था ? (मरकुस ५:३५–३६) ।
- जब यीशु और याईर, याईर के घर आए तब कुछ लोग क्या कर रहे थे ? (मरकुस ५:३८ । समझाएं कि यह उस समय की प्रथा थी कि जब कोई मर जाता था जिसे लोग प्रेम करते थे तब वे शोक मनाने के लिए बहुत आवाज करते थे) । उन दोनों के बीच क्या अन्तर था जिसे शोक मनाने वाले कर रहे थे और जिसे याईर ने किया था ?
- आपके विचार से उस लड़की को चंगा करने के लिए कमरे में प्रवेश करने से पहले यीशु ने अविश्वासियों को बाहर क्यों भेज दिया ? (मरकुस ५:४०) ।

३. यीशु उस स्त्री को चंगा करता है जिसे १२ वर्ष से लहू बहने का रोग था (मरकुस ५:२५–३४) ।

- जिस स्त्री ने यीशु के वस्त्र के किनारे को छू लिया था वह कैसे दिखाती है कि उसे यीशु में विश्वास था ? (मरकुस ५:२७–२८) ।
- यीशु ने कैसे जाना कि स्त्री ने उसके वस्त्रों को छुआ है ? (मरकुस ५:३०) । किसी एक के तरफ ध्यान देना उसके लिए असाधारण क्यों हुआ होगा जिसने उसे छुआ था ? (मरकुस ५:३१) ।
- स्त्री क्यों चंगी हुई थी ? (मरकुस ५:३४) । समझाएं कि यीशु के वस्त्र के किनारे में कोई जादू नहीं था । स्त्री यीशु में उसके विश्वास के कारण और स्वर्गीय पिता की इच्छा के कारण चंगी हुई थी । कौन से कुछ चमत्कार हैं जो हमारे जीवन में साधारण और छोटे कामों के कारण हुए हैं ?

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्नों का सार

- आपके विचार से यीशु ने चमत्कार क्यों किए थे ? (मत्ती ९:२९–३०; मरकुस १:४१; २:५, १०; ५:३६ । सिद्ध करने के लिए कि वह परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र था, उनके विश्वासों को मजबूत करने के लिए जिन्हें उसमें विश्वास था, क्योंकि जिन्हें विश्वास था उनसे उसने प्रेम किया था और उनके प्रति उसे करूणा थी, और उनके विश्वासों के कारण जिन्होंने विश्वास किया था) ।
- आज हमारे जीवन में कौन से कुछ चमत्कार हैं ?

बच्चों की समझने में सहायता करें कि यदि हमें यीशु मसीह में विश्वास है और हम धार्मिकता से जीते हैं, परमेश्वर की इच्छानुसार हम चमत्कारों का अनुभव करेंगे (देखें १ नफी ७:१२) ।

- समझाएं कि जब प्रार्थना किया जाता है तब भी कभी-कभी कोई व्यक्ति अपनी बीमारी या अपंगता से चंगा नहीं होता है । क्या इसका मतलब है कि हममें विश्वास नहीं है ? क्यों ? परमेश्वर की इच्छा क्यों नही हो सकती कि यह व्यक्ति चंगा हो जाए ? (शायद परमेश्वर व्यक्ति के परिवार के विश्वास की परीक्षा लेना चाहता हो, वह व्यक्ति में धैर्य को बढ़ाना चाहता हो, और इत्यादि) ।

अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा निम्नलिखित उद्धरण को बताएं: "प्रभु हमेशा बीमारों को चंगा नही करता है और ना ही उन्हें बचाता है जो खतरनाक परिस्थितियों में होते हैं । हमेशा वह दुःख और परेशानियों से छुटकारा नहीं देता है, यहाँ तक कि इस तरह की प्रतियमानत अनिच्छुक स्थितियाँ एक उद्देश्यपूर्ण योजना का हिस्सा हो सकती हैं" (*Tragedy or Destiny,* पृ. ५) ।

- यीशु मसीह में विश्वास होने का क्या मतलब है ? (विश्वास करना कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और संसार का उद्धारकर्ता है, विश्वास करना कि यीशु के पास सारी शक्तियाँ हैं, भरोसा रखना कि स्वर्गीय पिता

और यीशु वही करेंगे जो हमारे लिए अच्छा होगा, परमेश्वर की इच्छा को स्वीकारना, परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन की इच्छा होना) ।

- यीशु मसीह में आप अपने विश्वास को कैसे बढ़ा सकते हैं ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. चौथे विश्वास के अनुच्छेद को दोहराएं, और बच्चों से पूछें कि वे क्यों सोचते हैं कि "प्रभु यीशु मसीह में विश्वास" सुसमाचार का पहला सिद्धांत है । उन्हें याद की हुई इस आयत को दोहराने दें या इसे याद करने में उनकी सहायता करें ।

२. बच्चों की १ नफी ७:१२ को याद करने में सहायता करें, वाक्यांश "प्रभु समर्थ है" से आरंभ करते हुए ।

३. बच्चों से समझाने के लिए कैसे हम जानते हैं कि आज यीशु मसीह जीवित है । आप इस तरह की शब्दपट्टियों को बना सकती हैं और अन्य उत्तरों की भी जिसे आप सोचती हैं । आप चॉकबोर्ड पर मुख्य शब्दों को भी लिख सकती हैं ।

भविष्यवक्ताओं के द्वारा लिखे गए धर्मशास्त्र हमें यीशु के बारे में बताते हैं ।
अन्यों ने उसकी गवाही दी है ।
हम उसके प्रेम को महसूस कर सकते हैं ।
जोसफ स्मिथ ने उसे देखा था और उसके गिरजाघर के पुनःस्थापना के लिए निर्देशित हुआ था ।
यदि हम प्रार्थना से भरे हुए हैं तो पवित्र आत्मा हमें साक्षी देगा कि यीशु जीवित है ।

४. बच्चों से मत्ती १७:२० पढ़ने के लिए कहें । समझाएं कि सरसो का एक बीज बहुत छोटा होता है, परन्तु वह एक झाड़ीदार पेड़ के पूर में बड़ा होता है । यदि हमारा विश्वास उस बीज की समर्थता के समान एक पेड़ के समान बढ़ने के लिए मजबूत है तो हम महान चीजों को प्राप्त कर सकते हैं ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि यदि हमें यीशु मसीह में विश्वास है, हम चमत्कारों को अनुभव कर सकते हैं जैसा कि मसीह के समय में लोगों ने किया था । आप अपने स्वयं के जीवन के एक चमत्कार को बता सकती हैं या कक्षा के सदस्यों को उनके जीवनों से एक बताने के लिए आमंत्रित कर सकती हैं ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मरकुस २:१–१२ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

बीज बोनेवाले और गेहूँ और जंगली बीज के दृष्टांत

पाठ
१७

उद्देश्य

आत्मिक संदेशों को समझने और लागू करने में प्रत्येक बच्चे की सहायता करना जिन्हें दो दृष्टांतों में यीशु ने बताया था ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती १३:१–९, १८–३०, ३७–४३; मरकुस ४:१४–२०; लूका ८:११–१५; और सिद्धांत और अनुबंध ८६:१–७ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मरकुस ४:१–९, लूका ८:४–८, और सिद्धांत और अनुबंध १०१:६५–६६ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः

क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।

ख. प्रत्येक बच्चे के लिए एक कागज जिसपर "छुपे हुए संदेश वाली पहेली" हो या कक्षा को एक साथ करने के लिए एक बड़ी पहेली ।

छुपे हुए संदेश वाली पहेली

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४		
५	६	ह	म	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	
६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९		
३	४	द	ष्ट	ं	तों	५	६	७	८	९	१	से	२	३
२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	
७	८	सी	ख	ते	९	१	२	३	४	हैं	५	६	७	
३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६		

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

उन कागजों को बच्चों को दें जिसे आपने तैयार किया है या बड़ी पहेली को दिखाएं और उनसे उस संदेश को खोजने के लिए कहें जो संख्याओं के बीच छुपा है ।

समझाएं कि जब यीशु लोगों को सीखाता था, कभी-कभी वह दृष्टांतों में सीखाता था, जोकि छोटी-छोटी कहानियाँ हैं जिसमें छुपे हुए आत्मिक संदेश होते हैं ।

धर्मशास्त्र विवरण और चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

बच्चों को बीज बोनवाले के दृष्टांत और गेहूँ और जंगली बीज के दृष्टांत की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । समझाएं कि जब यीशु दृष्टांतों में सीखाता था, वह लोगों के प्रति आत्मिक संदेश की शिक्षा के लिए उन चीजों का उपयोग करता था जिससे लोग परिचित होते थे । जब आप इन दृष्टांतों पर चर्चा करें, बच्चों को छुपे हुए आत्मिक संदेशों के लिए सुनने दें ।

१. बीज बोनेवाले का दृष्टांत (मत्ती १३:१–९, १८–२३; मरकुस ४:१४–२०; लूका ८:११–१५) ।

- बीज बोनेवाले के दृष्टांत में, यीशु किस चीज के बारे में बात करता है जिससे लोग परिचित हैं ? (मत्ती १३:३–८) ।
- कक्षा के साथ मत्ती १३:१८–२३, मरकुस ४:१४–२०, और लूका ८:११–१५ पढ़ें । आपके विचार से बीज क्या है ? वे पक्षियाँ किसका प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्होंने बीज को खा लिया था ? पथरीली भूमि क्या है ? झाड़ियाँ क्या हैं ? अच्छी भूमि क्या है ? जड़ क्या है ? संसार की चिन्ताएं क्या हैं ?
- राज्य के वचन को हम कैसे सीखते हैं ?
- राज्य के वचन को हमें किस तरह से प्राप्त करना चाहिए ? हमें किस तरह की "भूमि" होना चाहिए ?
- बीज बोनेवाले के दृष्टांत में कौन सा आत्मिक संदेश छुपा है ?

२. गेहूँ और जंगली बीज का दृष्टांत (मत्ती १३:२४–३०) ।

- गेहूँ और जंगली बीज के दृष्टांत में यीशु किन परिचित चीजों के बारे में बात करता है ?
- आपके विचार से दृष्टांत में बीज बोनेवाला कौन है ? गेहूँ किसका प्रतिनिधित्व करता है ? रात में कौन आता है और जंगली बीज बो जाता है ? जंगली बीज क्या हैं ? फसल किसका प्रतिनिधित्व करता है ? बच्चों के साथ मत्ती १३:३७–४३ और सिद्धांत और अनुबंध ८६:१–७ पढ़ें और फिर से इन प्रश्नों को पूछें ।
- आप क्या बनना चाहते हैं, गेहूँ या जंगली बीज ? क्यों ?
- इस दृष्टांत में कौन सा छुपा हुआ आत्मिक संदेश है ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. दोनों दृष्टांतों के अर्थों को समझने में बच्चों की सहायता के लिए निम्नलिखित की तरह एक सारणी बनाएं, या जब आप दृष्टांतों पर चर्चा करते हैं तब सूचनाओं को चॉकबोर्ड पर लिखें । एक बार जब आप सभी सूचनाओं को सूचीबद्ध कर लें, समीक्षा के तौर पर फिर से उसे देखें । आप बच्चों को इन सारणियों की उनकी स्वयं की कॉपी बनाने दे सकती हैं ।

बीज बोनेवाले का दृष्टांत

बीज	यीशु मसीह का सुसमाचार या राज्य का वचन
मिट्टी	उनके मन जो वचन को सुनते हैं
मार्ग के किनारे	नहीं समझते हैं
पथरीली भूमि पर	अपने में जड़ नहीं रखता है, आसानी से क्लेश या उपद्रव होता है
झाड़ियों में	संसार की चिन्ताएं और धन दबाती हैं
अच्छी भूमि पर	सुनते और समझते हैं
पक्षियों	शैतान
फल	अच्छे काम

गेहूँ और जंगली बीज का दृष्टांत

बीज बोनेवाला	यीशु मसीह और उसके चेले
अच्छे बीज (गेहूँ)	यीशु के अनुयाई
खेत	संसार
बैरी	शैतान
जंगली बीज (घास)	शैतान के अनुयाई
कटनी करने वाले	स्वर्गदूत
फसल	यीशु का दूसरा आगमन

२. किसी तरह का एक बीज लाएं (फल, सब्जी, चावल, गेहूँ, सेम) । चर्चा करें कि एक बीज को बढ़ने के लिए क्या चाहिए और कौस सा अच्छा फल लाता है । बच्चों से पूछें कि बीजों का क्या होगा यदि उन्हें मार्ग के किनारे, पथरीले स्थानों, या झाड़ियों के बीच बोया जाए । इसकी तुलना हमारे मनों में परमेश्वर के शब्द को बोने से करें । बच्चों को चर्चा करने दें कि हर तरह की मिट्टी किस प्रकार के मन का प्रतिनिधित्व करती है और सुसमाचार को बढ़ाने के लिए और हमारे जीवन में अच्छे फल लाने के लिए यह क्या लेती है ।

३. चॉकबोर्ड पर शब्द *कान, आँखें, और मन* लिखें ।

- आप अपने कान, आँख, और मन से क्या करते हैं ? बच्चों को मत्ती १३:१५ पढ़ने दें । यीशु ने क्या कहा है कि हमें हमारे शरीरों के इन अंगों से क्या करना चाहिए ? इस आयत को दृष्टांतों और सुसमाचार के लिए लागू करें । यदि हम वास्तव में परमेश्वर के शब्द को सुनते हैं, उसकी सच्चाई को देखते हैं, और वही करते हैं जो यीशु हमसे चाहता है कि हम करें, इन दृष्टांतों में हम किसकी तरह होंगे ?

४. बच्चों को छुपे हुए संदेश पहेलियों के या बड़ी पहेली के अक्षरों की नकल उतारने दें, उनमें रंग भरने दें, या उनके नीचे लाइन खींचने दें ताकि शब्दों पर ध्यान जाए । प्रत्येक बच्चे से एक चीज का नाम बताने के लिए कहें जिसे उन्होंने इन दो दृष्टांतों से सीखा है ।

५. मत्ती १३ में पाये जाने वाले कुछ दूसरे दृष्टांतों को बच्चों के साथ पढ़ें और उन्हें निश्चय करने दें कि इसका क्या अर्थ है । इन दृष्टांतों को समझने में सहायता के लिए, देखें James E. Talmage, *Jesus the Christ*, chapter १९ ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता है और यह कि यदि हम उसके शब्दों को सीखते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, हम स्वर्गीय पिता की तरह बन सकते हैं और फिर से उसके रहने में समर्थ हो सकते हैं ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती १३:१–९ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
१८

'जन्म से अंधे एक मनुष्य को यीशु मसीह चंगा करता है

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की समझने में सहायता करना कि यीशु मसीह के पास आने के द्वारा हम परेशानियों और चुनौतियों से बाहर आ सकते हैं ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक यूहन्ना ९ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) । सूचनाः इस पाठ की तैयारी करते समय और शिक्षा देते समय, अपनी कक्षा के किसी भी ऐसे बच्चे के प्रति संवेदनशील रहें जिसकी आँखें दुर्बल हों ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. आँखों पर पट्टटी बाँधने के लिए कपड़े का एक टुकड़ा ।
   ग. चित्र ७-१४, यीशु अन्धे को चंगा करता हुआ (सुसमाचार कला चित्र किट २१३; ६२१४५) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करना ।

ध्यान गतिविधि

एक बच्चे की आँखों पर पट्टी बांधें, और उससे चॉकबोर्ड पर एक वस्तु का चित्र बनाने के लिए कहें, जैसे कि मोटर गाड़ी का एक पुरजा । दूसरे बच्चे को आने दें, पट्टी बांधें, और उसी वस्तु के दूसरे पुरजे को बनाने दें । यह तब तक जारी रखें जब तक कि कई बच्चे वस्तु के पुरजे को न बना लें । बच्चों के साथ चर्चा करें कि यह एक कठिन काम क्यों था ।

- नहीं देखने के कारण चित्र बनाना कैसे कठिन होता है ?
- आपको कैसा महसूस होगा यदि आप कभी भी दुबारा नहीं देख सकेंगे ?

बच्चों को बताएं कि आप दो प्रकार के अन्धेपन के बारे में बात करने जा रही हैं । जब आप धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा देती हैं तब उन्हें विभिन्न प्रकार के अन्धेपन के लिए सुनने को कहें ।

धर्मशास्त्र विवरण

यीशु अन्धे को चंगा करता हुआ का चित्र दिखाएं । यूहन्ना ९ में दिए गए उस विवरण की शिक्षा दें जिसमें यीशु एक मनुष्य को चंगा करता है जोकि जन्म से ही अन्धा था । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । जब आप कहानी की शिक्षा देती हैं, बच्चों की समझने में सहायता करें कि फरीसी (यहूदियों के धार्मिक शासक) चिन्तित थे कि यदि लोगों ने यीशु मसीह में विश्वास किया तो वे अपनी लोकप्रियता को खो देंगे । इसलिए, अक्सर वे लोगों को यीशु और उसके द्वारा की गई और सीखायी गई चीजों के लिए संदेह में डालते रहते थे । उन्होंने सुसमाचार की उन सच्चाइयों को नहीं पहचाना था जिसे यीशु ने सीखाया था और इसलिए वे धार्मिक तौर पर अन्धे थे । समझाएं कि जब हम अपने स्वयं की स्वार्थी रूचियों को उद्धारकर्ता के अनुसरण के मार्ग में जाने देते हैं तब हम धार्मिक तौर पर अन्धे बन जाते हैं ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- चेलों ने यीशु से उस मनुष्य के बारे में क्या पूछा जो जन्म से अन्धा था ? (यूहन्ना ९:२) । कभी-कभी लोग ऐसा क्यों सोच सकते हैं कि बीमारी और परेशानी किसी के पापों के कारण आती है ? यीशु ने उस मनुष्य के अन्धेपन का क्या कारण बताया था ? (यूहन्ना ९:३) ।
- किस तरीके से फरीसी आत्मिक तौर पर अन्धे थे ? (यूहन्ना ९:१६) । उन्होंने यीशु पर क्या दोष लगाया था ? आपके विचार से उन्होंने यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में क्यों नहीं पहचाना था ?
- जब प्रथम बार फरीसियों ने उस मनुष्य से जोकि जन्म से ही अन्धा था, पूछा कि क्या हुआ था तब उसने यीशु के बारे में कैसे बताया था ? (यूहन्ना ९:११) । दूसरी बार उन्होंने उस मनुष्य से पूछा कि तू यीशु के विषय में क्या कहता है ? (यूहन्ना ९:१७) ।
- मनुष्य की आत्मिक और शारीरिक नजर का क्या हुआ था ? मनुष्य ने क्या कहा था जब उससे तीसरी बार यीशु के बारे में पूछा गया था ? (यूहन्ना ९:३०–३३) ।
- यीशु की गवाही देने के कारण मनुष्य का क्या हुआ था ?(यूहन्ना ९:२२, ३४) जब यीशु ने सुना कि उस मनुष्य को आराधनालय से निकाल दिया गया था (यहूदियों का एक धार्मिक सभाघर), उसने क्या किया था ? (यूहन्ना ९:३५) । आपके विचार से मनुष्य ने कैसा महसूस किया था जब यीशु उससे मिलने आया था ? मनुष्य की यीशु के बारे में अन्तिम गवाही क्या थी ? (यूहन्ना ९:३५–३८) । उसकी आत्मिक नजर का क्या हुआ था ?
- आपके विचार से स्वर्गीय पिता और यीशु हमारे जीवन में हमें परीक्षाओं और परेशानियों की अनुमति क्यों देते हैं ? किस तरह से ये परीक्षाएं और समस्याएं हमारे आत्मिक अन्धेपन को ठीक करने में सहायता कर सकती हैं ? किस तरह से स्वर्गीय पिता और यीशु हमें हमारी परिक्षाओं और समस्याओं में सहायता कर सकते हैं ? (देखें समृद्धि गतिविधि ४) ।
- परीक्षाओं में आप और आपके परिवार कैसे आशीषित हुए हैं ? इस प्रश्न पर चर्चा के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें, परन्तु इस बात पर ध्यान दें कि बच्चे उन व्यक्तिगत पारिवारिक मामलों पर बात न करें जो नीजि हो ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. कक्षा को दलों में विभाजित करें । प्रत्येक दल को निम्नलिखित धर्मशास्त्रों में से एक को पढ़ने के लिए दें । उन्हें उनके दल में बात करने दें और कक्षा को रिपोर्ट देने दें कि किस तरह से धर्मशास्त्र में पाये जाने वाले व्यक्ति या पाये जाने वाले लोगों ने उसकी या उनकी समस्याओं को सुलझाया था ।

   दानिय्येल ३:१७–१८, २३–२५, २८
   १ नफी १८:१६, २०–२२
   मुसायाह २४:१३–१६
   अलमा १४:८–११

२. बच्चों की उन लोगों के बारे में जानने के महत्व को समझने में सहायता करें जो अपंग हैं । आप एक ऐसे युवा को जो शारीरिक तौर पर अपंग हो (या एक अपंग बच्चे के माता-पिता), को कक्षा में आने और उन तरीकों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित कर सकती हैं जो उन लोगों के प्रति उदार होने के लिए हो जो अपंग हैं । बल दें कि हम अपंग लोगों का मजाक नहीं उड़ाते हैं; हम उन्हें परेशान नही करते हैं । हम उनकी सहायता कर सकते हैं यदि उन्हें सहायता की आवश्यकता हो; हम उन्हें अपने साथ खेलने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं; हम

उनके मित्र हो सकते हैं । हम अपनी गतिविधियों में अपने साथ उन्हें सम्मिलित होने के लिए हमारे साथ उन्हें हिस्सा लेने की अनुमति दे सकते हैं ।

३. अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा दिए गए इस वक्तव्य को पढ़ें और इसपर चर्चा करें:

"क्या सभी प्रार्थनाओं का उत्तर तुरन्त मिलना चाहिए...थोड़ी बहुत या बिल्कुल भी तकलीफ, दुःख, निराशा, या यहाँ तक कि मृत्यु नहीं होगी, और यदि ये चीजें नहीं होंगी तो न तो आनन्द, सफलता, पुनरूत्थान होगा और न ही अनन्त जीवन और ईश्वरत्व होगा" (*Faith Precedes the Miracle* , पृ. ९७) ।

निष्कर्ष

गवाही	अपनी गवाही दें कि प्रभु हमें आशीष देगा और हमारी समस्याओं और परेशानियों में हमारी सहायता करेगा यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, और उसकी तरह अधिक बनने का प्रयास करते हैं ।
प्रस्तावित घर पठन	सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में यूहन्ना ९:१–३८ का अध्ययन करें । समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

खोई हुई भेड़, खोया हुआ सिक्का, और उड़ाऊ पुत्र

पाठ
१९

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की उन लोगों के प्रति सहायता की इच्छा को होने में सहायता करना जो यीशु मसीह के गिरजाघर की गतिविधि में कम सक्रिय होते हैं ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक लूका १५, मत्ती १८:१२–१४, और सिद्धांत और अनुबंध १८:१०–११ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियाँः
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. चित्र ७-१९, अच्छा चरवाहा, और ७-२०, उड़ाऊ पुत्र (६२१५५) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

एक समय के बारे में बच्चों को बताएं जब आप से या किसी से जिसे आप जानते हों, कोई मूल्यवान चीज खो गई हो और फिर से मिल गई हो । बच्चों के लिए उस चीज के मूल्य का वर्णन करें, उसके खोने पर आपने कैसा महसूस किया था, उसे खोजने के लिए आपने क्या किया था, और जब वह मिल गई थी तब आपने कैसा महसूस किया था । यति उपयुक्त हो, आप कक्षा को दिखाने के लिए वस्तु ला सकती हैं । बच्चों से उनके जीवन में घटी किसी भी घटना को बताने के लिए कहें जब उन्होंने किसी मूल्यवान वस्तु को खो दिया था और फिर से उसे पा लिया था ।

धर्मशास्त्र विवरण

उपयुक्त समय पर चित्रों का उपयोग करते हुए, खोई हुई भेड़, खोया हुआ सिक्का, और उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांतों की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों को समझाएं कि ये दृष्टांत भी बिल्कुल उसी तरह एक महत्वपूर्ण सुसमाचार सिद्धांत की शिक्षा देते हैं जैसे कि बीज बोनेवाले, गेहूँ और जंगली बीज के दृष्टांतों ने दी थी ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

१. खोई हुई भेड़ और खोया हुआ सिक्का ।

- चरवाहा सौ में से किसी एक भेड़ के लिए इतना चिन्तित क्यों था या स्त्री दस में से एक सिक्के के लिए इतनी चिन्तित क्यों थी ? (लूका १५:४, ८) । समझाएं कि साधारणतः ये लोग गरीब थे और इनके लिए एक भेड़ या एक सिक्का मूल्यवान था । इसी तरह, स्वर्गीय पिता के सभी बच्चे उसके लिए मूल्यवान हैं । आपके विचार से स्वर्गीय पिता के लिए हममें से प्रत्येक मूल्यवान क्यों है ?

- आपके विचार से भेड़ क्यों खो गई थी ? आपके विचार से सिक्का कैसे खो गया था ? किस तरह से हम या जिसे हम जानते हैं वह खो सकते हैं ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि खो जाना उन लोगों से भी संदर्भ रखता है जो आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं और उन चीजों को करते हैं जो उन्हें स्वर्गीय पिता के पास वापस जाने में अयोग्य बनाती हैं ।

- चरवाहे ने उस भेड़ के साथ क्या किया जब उसने उसे पा लिया ? (लूका १५:५) । उसकी क्रियाएं कैसे दिखाती हैं कि वह भेड़ से प्रेम करता था ? चरवाहा किसका प्रतिनिधित्व करता है ? भेड़ किसका प्रतिनिधित्व करती है ?

- स्त्री ने खोए हुए सिक्के को खोजने के लिए क्या किया ? (लूका १५:८) । यीशु मसीह ने उन लोगों की सहायता के लिए क्या किया है जो खो गए हैं या जो आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं ? (सि. और अनु. १८:१०–११) ।

- दोनों, चरवाहा और स्त्री ने क्या किया जब उन्होंने भेड़ और सिक्के को पा लिया ? (लूका १५:६, ९) । आप कैसा महसूस करते यदि आपने किसी की पश्चाताप करने और वापस यीशु मसीह के पास आने में सहायता की होती ?

- आपके विचार से स्वर्ग और स्वर्गदूत आनंदित क्यों होते हैं जब कोई पश्चाताप करता है ? (लूका १५:७, १०) ।

२. उड़ाऊ पुत्र

- उड़ाऊ का क्या मतलब है ?

- उड़ाऊ पुत्र ने अपनी संपत्तियों के साथ क्या किया ? (लूका १५:१२–१३) । आपके विचार से "कुकर्म" का क्या मतलब है ? आपके विचार से क्यों कुछ लोग इस से जीने का निर्णय लेते हैं ? आपके विचार से पिता ने कैसा महसूस किया जब उसका पुत्र चला गया ? आपने कैसा महसूस किया होता यदि आपके परिवार में से किसी ने उड़ाऊ पुत्र के समान किया होता ? (उन बच्चों के प्रति संवेदनशील रहें जिनके परिवार के सदस्य शायद आज्ञाओं को न मानते हों) ।

- जब उसका धन खत्म हो गया तब उड़ाऊ पुत्र ने भोजन पाने के लिए क्या किया ? (लूका १५:१४–१६) ।

- "जब वह अपने आप में आया" का क्या मतलब है ? (लूका १५:१७) । आपके विचार से कैसा पुत्र के दुःख और तकलीफों ने उसकी पश्चाताप करने में सहायता की थी ?

- आपके विचार से पुत्र ने पिता के पास वापस आने का निर्णय क्यों लिया ? (लूका १५:१७–१९) । उसका पिता किस तरह का स्वामी था ? (लूका १५:१७) ।

- पिता ने कैसा महसूस किया जब उसका पुत्र घर आया ? (लूका १५:२०) । उसने अपने पुत्र के लिए क्या किया ? (लूका १५:२२–२४) ।

- बड़े भाई ने कैसा महसूस किया जब उसने जाना कि उसका छोटा भाई वापस घर आ गया है ? (लूका १५:२८–३०) । परिवार के उन सदस्यों के प्रति भी प्रेम को जारी रखना महत्वपूर्ण क्यों होता है जो आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं ?

- पिता ने बड़े भाई से क्या प्रतिज्ञा की ? (लूका १५:३१) । पिता ने उन लोगों के प्रति किस तरह का उदाहरण रखा है जो पाप तो करते हैं पर बाद में पश्चाताप भी करते हैं ? (लूका १५:३२) । आप कैसा महसूस करते हैं जब आप किसी को पश्चाताप करते हुए और गलत से सही के तरफ आते हुए देखते हैं । हमें उन लोगों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए जिन्होंने आज्ञाओं को नहीं माना है परन्तु वे गंभीर रूप से पछताते हैं ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों को उन तरीकों को सोचने दें जिससे वे एक कम-सक्रिय बच्चे की सहायता कर सकेंगे । (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है मित्रता पूर्वक रहना, एक अच्छा उदाहरण बनना, उन्हें गिरजाघर गतिविधियों के लिए आमंत्रित करना, चीजों को एक साथ करना, इत्यादि) ।

२. निम्नलिखित कहानी बताएं:

दस वर्षीय जोशुआ डेनीस अपने पिता और अन्यों के साथ एक परित्यक्त खदान की खोज के लिए गया । खदान में वह ध्यानपूर्वक था परन्तु वह अन्य लड़कों से अलग हो गया और बिना पानी और भोजन के अन्धेरे में खो गया । जब दूसरों को पता चला कि वह खो गया है, उन्होंने तुरन्त उसे खोजना आरंभ किया । कुछ क्षण के पश्चात सैकड़ों लोग जोशुआ को खोजने के लिए आए । हजारों ने उपवास रखा और प्रार्थना किया कि वह सुरक्षित मिल जाए । खोज करने वालों ने पाँच दिन खोजा, परन्तु वे उसे नहीं खोज सके । एक विशेषज्ञ जो खदान को अच्छी तरह से जानता था उसने खोज के बारे में सुना और सहायता के लिए चल पड़ा । वह खदान को इतनी अच्छी तरह से जानता था कि उसने जोशुआ को उस स्थान पर खोज निकाला जिसे कोई भी नहीं जानता था कि ऐसा कोई स्थान हो सकता है । जब उसने जोशुआ को खोज लिया वह उस आनन्द के बारे में वर्णन नहीं कर सका जिसे उसने महसूस किया था । खान के सभी लोग और हजारों अन्य लोग आराम और खुशी के साथ रो पड़े जब उन्होंने सुना कि जोशुआ जीवित और सुरक्षित था (देखें "Making Friends: Joshua Dennis—A Treasure of Faith," *Friend*, नव. १९९०, पृष्ठ २०–२२) ।

शारीरिक तौर पर खोने और आत्मिक तौर पर खोने के बीच के अन्तर पर चर्चा करें । समझाएं कि जितनी मेहनत हम उन्हें बचाने के लिए करते हैं जो शारीरिक तौर पर खो गए हैं उतनी ही मेहनत उन्हें बचाने के लिए करनी चाहिए जो आत्मिक तौर पर खो गए हैं

३. खोजने और पाने का खेल खेलें । एक बच्चे से उस स्थान के बारे में सोचने के लिए कहें जहां वह खो सकता या सकती है और उसे कागज के एक टुकड़े पर लिखने के लिए कहें या शिक्षिका के कान में फुसफुसाने के लिए कहें । यह निर्धारित करने के लिए कि बच्चा किस स्थान पर है, दूसरे बच्चे से "हां" या "ना" वाले प्रश्न पूछें (क्या यह भीड़-भाड़ वाले स्थान में है ? क्या यह पर्वतों में है ? क्या यह किसी चीज के नीचे है ?) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यदि कोई खो गया है तो उसे खोजने में समय लगता है और मेहनत लगती है, खासकर किसी ऐसे के लिए जो आत्मिक तौर पर खो गया है ।

४. बच्चों की सिद्धांत और अनुबंध १८:१० को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

अपने विश्वास के बारे में बच्चों को बताएं कि स्वर्गीय पिता अपने बच्चों में से प्रत्येक को प्रेम करता है और यह कि हम सभी उसके लिए महत्वपूर्ण हैं । इस बात पर बल दें कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह चाहते हैं कि हम उनकी सहायता करें जो खो गए थे और अब वापस आ गए हैं ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में लूका १५:११–३२ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
२०

अच्छे सामरी का दृष्टांत

उद्देश्य

सभी लोगों के प्रति प्रेम व्यक्त करने की एक इच्छा के लिए प्रत्येक बच्चे की सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक लूका १०:२५–३७ और मत्ती २२:३४–४० का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः यूहन्ना १४:१५, २१; १ यूहन्ना ४:२०–२१ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. चित्र ७-२१, अच्छा सामरी (सुसमाचार कला चित्र किट २१८;६२१५६), और ७-२२, पवित्र भूमि का मानचित्र ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

एक बच्चे को बुलाएं और पूछें "(नाम), आपका पड़ोसी कौन है ?" कई बच्चों से यही प्रश्न पूछें । समझाएं कि अक्सर हम किसी ऐसे को हमारे पड़ोसी के रूप में सोचते हैं जो हमारे नजदीक रहता हो । यह पाठ हमारी उस शिक्षा को समझने में सहायता करता है जिसे यीशु ने सीखाया है कि कौन हमारे पड़ोसी हैं और हमें उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ।

एक बच्चे को मत्ती २२:३४–४० पढ़ने दें । दूसरों के प्रति प्रेम के महत्व पर चर्चा करें ।

धर्मशास्त्र विवरण

अच्छा सामरी और पवित्र भूमि का मानचित्र, के चित्रों को दिखाएं । लूका १०:२५–३७ में पाये जाने वाले अच्छे सामरी के दृष्टांत की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों को मानचित्र पर सामरिया और यहूदिया को दिखाएं, और यहूदियों और सामरियों के बीच की परिस्थिति को समझाएं । यहूदी महसूस करते थे कि वे सामरियों से अच्छे हैं । वे सामरियों को इतना नापसंद करते थे कि जब यहूदियों को यरूशलेम से गलील को जाना होता था तो वे सामरिया से होकर जाने की बजाय यर्दन खाड़ी को पार करने हुए लम्बे रास्ते से जाते थे । आप शायद चाहें कि बच्चे इस धर्मशास्त्र विवरण का नाटकीकरण करें ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु क्या कहता है कि हमें अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी होने के लिए क्या करने की आवश्यकता है ? (लूका १०:२७–२८) । आपके विचार से ये आज्ञाएं इतनी महत्वपूर्ण क्यों हैं ? (मत्ती २२:३७–३९) ।

- स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रति हम हमारे प्रेम को कैसे व्यक्त कर सकते हैं ? (यूहन्ना १३:३४–३५; १४:१५, २१)।
- आपका पड़ोसी कौन है ? क्या आप सोचते हैं कि यीशु के अनुसार केवल वही लोग हैं जो हमारे नजदीक रहते हैं ?
- किस प्रश्न का उत्तर यीशु दे रहा था जब उसने अच्छे सामरी के दृष्टांत को सुनाया था ? (लूका १०:२५, २९)।
- आपके विचार से यहूदी याजक और लेवी ने घायल हुए यहूदी मनुष्य की सहायता क्यों नहीं की थी ? (लूका १०:३१–३२)।
- सामरी ने घायल यहूदी मनुष्य के लिए क्या किया था ? (लूका १०:३३–२५)।
- यह महत्वपूर्ण क्यों था कि वह एक सामरी था जिसने यहूदी मनुष्य की सहायता की थी ? सामरी में एक अच्छे पड़ोसी की क्या विशिष्टताएं हैं ? कैसे यह कहानी हमारी समझने में सहायता करती है कि कौन हमारा पड़ोसी है ? हम अच्छे पड़ोसी कैसे बन सकते हैं ?
- आपके विचार से प्रभु ने सबसे अधिक किससे प्रेम किया था—याजक, लेवी, या सामरी से ? क्यों ?
- हम यीशु की शिक्षाओं का अनुसरण कैसे कर सकते हैं और दूसरे लोगों के प्रति प्रेम को कैसे व्यक्त कर सकते हैं ? हमें किसी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जिसे हमारी सहायता की आवश्यकता हो ? कौन है जो हमसे विभिन्न है ? कौन है जो शायद हमारे प्रति निष्ठुर हो सकता है ?

बच्चों से उन अनुभवों को बताने के लिए कहें जब उन्होंने किसी जरूरतमंद की सेवा की हो या जब वे या उनके परिवार ने दूसरों से सहायता प्राप्त की हो। ध्यान दें कि बच्चे कहानी न बताएं ताकि वार्ड का कोई सदस्य परेशान हो जाए।

- जब आप सहायता और सेवा के द्वारा दूसरों के प्रति प्रेम व्यक्त करते हैं, आपको कैसा महसूस होता है ? क्या इससे आप स्वर्गीय पिता और यीशु की नजदीकी को महसूस करते हैं ? कौन से महान आशीष के हम उत्तराधिकारी होंगे यदि वास्तव में हम स्वर्गीय पिता और अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं ? (लूका १०:२५–२८)।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं।

१. कागज के अलग-अलग टुकड़ों पर निम्नलिखित गतिविधियों को लिखें। उसी कागज के टुकड़े पर भाग क और भाग ख लिखें, और प्रत्येक बच्चे को एक दे दें। बच्चों से ऐसा दिखावा करने के लिए कहें जैसे एक नया बच्चा उनके पड़ोस में रहने आया है। उनके कागज का भाग क कुछ ऐसी चीज के बारे में बताता है जिसे वे एक पड़ोसी होने के नाते कर सकते हैं और इस नये बच्चे के प्रति प्रेम दिखा सकते हैं। भाग ख स्वर्गीय पिता के प्रति प्रेम व्यक्त करने के समान तरीके के बारे में बताता है। संख्या १ वाले बच्चे से उसकी गतिविधि को पढ़ने के लिए कहें, तब संख्या २ वाले बच्चे से, और इत्यादि।

(१) क. उसके घर का दौरा करें।
ख. प्राथमिक और अन्य गिरजाघर सभाओं में उपस्थित रहें।

(२) क. उसे अपने घर पर आमंत्रित करें।
ख. अपने घर को वह स्थान बनाएं जहाँ स्वर्गीय पिता की आत्मा रह सके।

(३) क. बच्चे के बारे में कुछ जानें।
ख. धर्मशास्त्रों को पढ़ें।

(४) क. उससे बात करें।
ख. प्रार्थना करें।

(५) क. बच्चे के लिए कुछ करें ।
ख. आज्ञाओं का पालन करें ।

(६) क. उसके और उसके परिवार के लिए कुछ करें ।
ख. दूसरों की सेवा करें ।

(७) क. अपनी गतिविधियों से जुड़ने के लिए बच्चे को आमंत्रित करें ।
ख. स्वर्गीय पिता की आत्मा आपके साथ हो इसलिए प्रार्थना करें ।

२. दस आज्ञाओं को पढ़ें (निर्गमन २०:८–१७) । इनकी तुलना मत्ती २२ में यीशु द्वारा दी गई दो आज्ञाओं से करें । चॉकबोर्ड के एक तरफ के हिस्से पर लिखें *स्वर्गीय पिता से प्रेम करें* और दूसरी तरफ के हिस्से पर लिखें *दूसरों से प्रेम करें* । बच्चों से आपको यह बताने के लिए कहें कि दस आज्ञाओं में से कौन सी आज्ञा किस पंक्ति के नीचे आएगी । यूहन्ना १४:१५, २१ को पढ़ें और बच्चों की समझने में सहायता करें कि किसी भी आज्ञा को मानना स्वर्गीय पिता के प्रति हमारे प्रेम को व्यक्त करने में हमारी सहायता करता है ।

३. बच्चों को मत्ती २२:३७–३९ को याद करने दें ।

निष्कर्ष

गवाही — स्वर्गीय पिता और यीशु के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करें और सुसमाचार के प्रति अपने आभार को । दूसरों को प्रेम करने के द्वारा यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें ।

प्रस्तावित घर पठन — सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में लूका १०:२५–३७ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह दस कोढ़ियों को चंगा करता है

पाठ
२१

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की उन आशीषों के लिए जो उसे प्राप्त हुई हैं, स्वर्गीय पिता के प्रति कृतज्ञ होने के लिए प्रात्साहित करें ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक लूका १७:१२–१९ और सिद्धांत और अनुबंध ५९:७ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. पाठ के दौरान उपयोग के लिए, प्रत्येक बच्चे के प्रति एक छोटा सा धन्यवाद का नोट लिखें, किसी चीज के लिए अपने आभार को व्यक्त करते हुए जिसे बच्चे ने किया हो या किसी विशिष्टता के लिए जो उसमें हो ।

४. प्रत्येक बच्चे के लिए एक कार्ड पर शब्द *स्वर्गीय पिता को धन्यवाद करना याद रखें* लिखें ।

५. आवश्यक सामग्रियां:
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. सिद्धांत और अनुबंध की एक या उससे अधिक कॉपियाँ ।
   ग. चित्र ७-२३, दस कोढ़ी (सुसमाचार कला चित्र किट २२१;६२१५०) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

उस धन्यवाद नोट को प्रत्येक बच्चे को दें जिसे आपने लिखा है । उनके द्वारा नोट को पढ़ने के पश्चात, उनके साथ चर्चा करें कि हम कैसा महसूस करते हैं जब लोग हमारे प्रति आभार व्यक्त करते हैं । आप शायद एक अनुभव बताना चाहें जब किसी ने आपको धन्यवाद देने के लिए विशेष प्रयास किया हो और वर्णन करें कि आपको उससे कैसा लगा था । बच्चों को किसी अनुभव को बताने के लिए आमंत्रित करें जो उन्हें हुआ हो ।

धर्मशास्त्र विवरण

दस कोढ़ियों के चित्र को दिखाएं, लूका १७:१२–१९ में पाई जाने वाली उस कहानी की शिक्षा दें जिसमें यीशु दस कोढ़ियों को चंगा करता है । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों को याद दिलाएं कि कोढ़ एक भयानक चमड़ी का रोग है । उस समय के लोग सोचते थे कि यह अत्याधिक छुआ छूत की बीमारी है । यीशु के समय में कोढ़ियों को नगरों में आने की अनुमति नहीं थी और वे दूसरे लोगों के पास नहीं जा सकते थे ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- कोढ़ियों ने क्या किया जब उन्होंने यीशु को देखा ? (लूका १७:१३) । क्या आप सोचते हैं कि वे यीशु को जानते थे और उसमें विश्वास किया था ?

- यीशु ने कोढ़ियों से चंगा होने के लिए क्या करने को कहा ? (लूका १७:१४) ।
- यीशु को धन्यवाद देने के लिए कितने कोढ़ी वापस आए थे ? (लूका १७:१५–१६) ।? यीशु कोढ़ियों के बारे में क्या कहता है ? (लूका १७:१७–१९) ।
- आपके विचार से नौ कोढ़ी यीशु को धन्यवाद देने के लिए क्यों नहीं आए आए ?
- आपको कैसा महसूस होगा यदि आपने दस लोगों की सहायता की हो और केवल एक आपको धन्यवाद देने के लिए वापस आएगा ?
- किन चीजों के लिए हमें स्वर्गीय पिता का धन्यवाद करना चाहिए ? सिद्धांत और अनुबंध ५९:७ को पढ़ें या एक बच्चे को पढ़ने दें । कुछ विशेष आशीषों को जिसे हम प्राप्त करते हैं उसके लिए स्वर्गीय पिता का धन्यवाद करना क्यों महत्वपूर्ण है ?
- स्वर्गीय पिता के प्रति हम अपने आभार को कैसे व्यक्त कर सकते हैं ?

प्रत्येक बच्चे को उन कार्डों में से एक दें जिसे आपने तैयार किया है । बच्चों को कुछ चीजों को बताने के लिए आमंत्रित करें जिसके लिए वे स्वर्गीय पिता को धन्यवाद दे सकते हैं । आप शायद चॉकबोर्ड पर उनके उत्तरों का सार लिखना चाहें ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों की सिद्धांत और अनुबंध ५९:७ को याद करने में सहायता करें । उन्हें इस धर्मशास्त्र को उनके उस कार्ड के पीछें लिखने दें जिसपर "स्वर्गीय पिता को धन्यवाद करना याद रखें" लिखा हो, और उन्हें इस कार्ड को ऐसी जगह रखने के लिए प्रोत्साहित करें जहाँ वे इसे आसानी से देख सकें ।

२. चॉकबोर्ड पर आभार लिखें । इस शब्द के प्रत्येक अक्षर से आरंभ करते हुए बच्चों को उन चीजों का नाम बताने दें जिसके लिए वे कृतज्ञ हैं । उनकी जानने में सहायता करें कि हम उस हर एक चीज के लिए जो हमारे पास है और उसके लिए जो हम हैं, प्रभु पर आधारित हैं ।

३. चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित के समान एक नक्शा बनाएं ।

आभार

बताएं	***व्यक्त***
माता-पिता	आज्ञाओं को मानना
मित्र	दूसरों की सेवा करना
भोजन	प्रार्थना करना
कपड़े	

बच्चों को उन विशेष चीजों का नाम बताने दें जिसके लिए वे स्वर्गीय पिता को "धन्यवाद" कह सकते हैं । *बताएं* के तहत इन्हें सूचीबद्ध करें । तब उन्हें उन तरीकों का निर्णय लेने दें जिससे वे इन आशीषों के लिए उसके प्रति अपने आभार को व्यक्त कर सकें । *व्यक्त करें* के तहत इन्हें सूचीबद्ध करें । दोनों बताना और आभार को व्यक्त करने के महत्व पर जोर दें ।

४. सुंदर दृश्य और जंगली जन जीवन के चित्रों को दिखाएं । सृष्टि की समीक्षा करें और बच्चों की समझने में सहायता करें कि हमें उन सभी चीजों के लिए स्वर्गीय पिता और यीशु के प्रति कितना कृतज्ञ होना चाहिए जिसे उन्होंने हमारे लिए बनाया है ।

५. प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा और एक पेन्सिल दें और उन्हें किसी के प्रति एक धन्यवाद नोट लिखने दें, जैसे कि एक माता-पिता के प्रति, एक मित्र के प्रति, एक पड़ोसी के प्रति, एक शिक्षक या शिक्षिका के प्रति, धर्माध्यक्ष के प्रति, इत्यादि । बच्चों को उस नोट को देने के लिए या यदि आवश्यक हो तो उन्हें देने में सहायताके लिए प्रोत्साहित करें ।

६. मुसायाह २:१९–२४ पढ़ें और उसपर चर्चा करें जिसे राजा बिन्यामिन ने कहा था । बच्चों की समझने में सहायता करें कि हम स्वर्गीय पिता को उन सभी चीजों के लिए जिसे उसने हमारे लिए किया है, कभी भी भूगतान नही कर सकते हैं; वह उन सभी आभारों का पात्र है जिसे हम कभी भी उसे दे सकें ।

निष्कर्ष

गवाही

उस आभार को स्वर्गीय पिता और यीशु के प्रति व्यक्त करें जिसे आप महसूस करती हैं । बच्चों की शिक्षिका होने के सुअवसर के लिए और उन्हें यीशु मसीह के सुसमाचार की सीखाने में सहायता के लिए उनके प्रति भी अपने आभार को व्यक्त करें ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में लूका १७:१२–१९ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
२२

निर्दयी सेवक

उद्देश्य

अधिक क्षमा करनेवाला बनने की चाह के लिए प्रत्येक बच्चे की सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती १८:२१–३५; ६:१२, १४–१५; और सिद्धांत और अनुबंध ५८:४२ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः इफिसियों ४:३२, सिद्धांत और अनुबंध ६४:८–१० ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को ७० को ७ से गुणा करने के लिए कहें । (आप सवाल को चॉकबोर्ड पर भी लिख सकती हैं) ।

- क्या उत्तर एक बड़ी संख्या है ? इतनी बड़ी संख्या को गिनने के लिए आपको कितना समय लग सकता है ?

एक बच्चे से मत्ती १८:२१–२२ पढ़ने के लिए पूछें ।

समझाएं कि यह संख्या हमें क्षमादान के बारे में एक महत्वपूर्ण पाठ की शिक्षा देती है । यीशु हमें शिक्षा दे रहा था कि हमें हमेशा किसी को क्षमा करने का इच्छुक होना चाहिए । (समृद्धि गतिविधि ४ को भी देखें) ।

धर्मशास्त्र विवरण

मत्ती १८:२१–३५ में पाये जाने वाले निर्दयी सेवक के विवरण की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । नाटकीकरण के लिए यह एक अच्छा विवरण हो सकता है । आप इन आयतों को पढ़ सकती हैं या कोई बच्चा इन्हें पढ़ सकता है जब बच्चे राजा का, निर्दयी सेवक का, उसके साथी सेवकों का, और अन्य सेवकों की भूमिका अदा करें ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- राजा ने पहले उस सेवक के साथ क्या करने का इरादा किया था जिसने उससे १,००० तोड़े उधार लिए थे ? (मत्ती १८:२५) । समझाएं कि एक तोड़ा पैसों की एक बड़ी रकम होती थी ।

- राजा ने अपना मन क्यों बदल दिया था ? (मत्ती १८:२६) । उसने अपने सेवक के प्रति कैसा महसूस किया था ? (मत्ती १८:२७) । आपके विचार से तरस खाने का क्या मतलब है ?

- जब राजा ने सेवक के उधार को क्षमा कर दिया तब उसने क्या किया ? (मत्ती १८:२८) । उस सेवक ने जिसने सौ दीनार (एक छोटी सी रकम) उधार ली थी उस सेवक से जिसने १,००० तोड़े उधार लिए थे, से

क्या पूछा ? (मत्ती १८:२९) । अपने संगी सेवक की याचना पर सेवक ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई ? (मत्ती १८:३०) । राजा ने क्या किया जब उसे पता चला कि क्या हुआ था ? (मत्ती १८:३१–३४) ।

- कभी-कभी हम किस तरह से निर्दयी सेवक की तरह होते हैं ? कभी-कभी हम किस तरह से राजा की तरह होते हैं ? आपको कैसा महसूस होता है जब आप किसी को क्षमा करते हैं ? कब आप क्षमा नहीं करते हैं ?
- दोनों सेवकों द्वारा लिए गए उधार से हम कौन सी बड़ी विभिन्नता को सीखते हैं ?
- यीशु लोगों को क्या सीखाने की कोशिश कर रहा था जब उसने निर्दयी सेवक के दृष्टांत को बताया था ? यीशु हमसे क्या कहता है कि क्षमादान प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना होगा ? (मत्ती १८:३५) ।

बच्चों से पूछें कि क्या उन्हें क्षमादान के बारे में पहाड़ पर दिए गए दृष्टांतों में यीशु के प्रार्थना से वाक्यांश याद है । उन्हें उनके बाइबिल से मत्ती ६:१२ को खोलने दें और एक साथ इस आयत को दोहराएं । आयत १४ और १५ को भी पढ़ें ।

- बच्चों से एक समय के बारे में सोचने के लिए कहें जब किसी ने किसी के प्रति निष्ठुर काम किया हो । उस निष्ठुरता के कारण उन्होंने कैसा महसूस किया ? उन्होंने क्या किया ? यीशु मसीह ने इस तरह की परिस्थितियों में क्या करने की शिक्षा दी थी ? क्या क्षमा करना आसान था ? हम अधिक क्षमा करने वाले किस तरह से बन सकते हैं ? समझाएं कि किसी को भी दूसरों को तकलीफ नहीं देनी चाहिए और यह कि यदि कोई बच्चों को तकलीफ देता है तो उन्हें उनके माता-पिता को बताना चाहिए, किसी दूसरे वयस्क को बताना चाहिए जिसपर वे भरोसा करते हों, या धर्माध्यक्ष को बताना चाहिए ।
- आप कैसा महसूस करेंगे यदि आप एक मित्र के प्रति या अपने परिवार के एक सदस्य के साथ गलत किया हो, और यहाँ तक कि जब आपने क्षमा मांगा हो, तब भी वह व्यक्ति क्षमा नहीं करता है ।
- जब हम कोई गलत काम करते हैं और पश्चाताप करते हैं और प्रभु से अपने लिए क्षमा मांगते हैं, उसने हमसे क्या कहा है कि वह करेगा ? (सि. और अनु. ५८:४२) ।
- यीशु ने क्या कहा जब पतरस ने उससे पूछा कि किसी को कितनी बार क्षमा करना चाहिए जिसने उसके प्रति पाप किया हो ? (मत्ती १८:२१–२२) । आपके विचार से यीशु पतरस को क्या सीखाने का प्रयास कर रहा था ? (इसकी कोई सीमा नहीं है कि हमें दूसरों को कितनी बार क्षमा करना चाहिए) ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. प्रत्येक बच्चे को एक कागज और पेन्सिल दें । कागज के एक तरफ के नीचे उन्हें *क, ख, ग, घ, च, छ,* और *ज* लिखने दें और क्षमादान के बारे में निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने दें । सभी प्रश्नों का उत्तर हाँ या ना हो सकता है ।

क. क्या आप क्षमा करते हैं जब आप कहते हैं, "मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ, परन्तु मैं उसे कभी नहीं भूलूंगा जिसे तुमने किया है" ?
ख. क्या आप क्षमा करते हैं जब आप उस अनहोनी से खुश होते हैं जो किसी ऐसे के साथ घटी हो जो आपके प्रति निर्दयी रहा हो ?
ग. क्या आप क्षमा करते हैं जब आपके भाई या बहन आपको मारते हैं और आपको गुस्सा नहीं आता है ?
घ. क्या आप क्षमा करते हैं जब आप किसी ऐसे के पास जाना चाहते हैं जो आपके प्रति निर्दयी रहा हो ?
च. क्या आप क्षमा करते हैं जब आप किसी से बात करना बन्द करते हैं जो आपके प्रति निर्दया रहा हो ?
छ. क्या आप क्षमा करते हैं जब आप किसी के लिए खड़े होते हैं जो आपके प्रति निर्दयी रहा हो ?
ज. क्या आप क्षमा करते हैं जब आप उस व्यक्ति के बारे में निष्ठुर बातें बोलते हैं जो आपके विचार से आपके प्रति निर्दयी रहा हो ?

आप क्षमादान के अर्थ और इसके महत्व पर चर्चा करें जब आप इस प्रश्नोत्तरी के उत्तरों पर चर्चा करती हैं ।

२. एक बच्चे को सिद्धांत और अनुबंध ६४:८–१० पढ़ने दें । इन आयतों को वाक्यांशों में विभाजित करें और प्रत्येक बच्चे को कक्षा को एक वाक्यांश समझाने दें । आप कक्षा को भी दलों में विभाजित कर सकती हैं और प्रत्येक दल को इस धर्मशास्त्र के अर्थ पर चर्चा करने दें । उन्हें उनके विचारों को बताने दें, और उनकी समझने में सहायता करें कि हमें हर एक को क्षमा करने की आज्ञा दी गई है ।

३. बच्चों को सिद्धांत और अनुबंध ६४:१० या मत्ती ६:१४–१५ को याद करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

४. बच्चों को कागज और पेन्सिल या मार्कर दें । उन्हें उनके कागजों पर सात वर्ग बनाने के लिए कहें । तब उन्हें सात वर्गों के और छः सेट बनाने के लिए कहें । बच्चों को बताएं कि उन्होंने अपने कागजों पर वर्गों की संख्या को दस बार बनाया है और ये संख्याएं उतनी ही बार हैं जितनी बार यीशु ने हमें किसी को क्षमा करने के लिए कहा है । वह लोगों को सीखा रहा था कि उन्हें दूसरों को हमेशा क्षमा करना चाहिए ।

निष्कर्ष

गवाही — क्षमा करने वाले बनने के महत्व की अपनी गवाही दें जैसा कि यीशु ने सीखाया था । बच्चों की जानने में सहायता करें कि जब वे क्षमा करते हैं, वे हमारे स्वर्गीय पिता के द्वारा क्षमादान पाने के योग्य होते हैं ।

प्रस्तावित घर पठन — सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती १८:२१–३५ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

अच्छा चरवाहा

पाठ
२३

उद्देश्य

बच्चों की यीशु में विश्वास करने की शिक्षा देना क्योंकि वह एक अच्छा चरवाहा है ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक यूहन्ना १०:१–१८, मरकुस १०:१३–१६, और ३ नफी ११:३७–३८ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मत्ती १९:१३–१५ और लूका १८:१५–१७ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. प्रत्येक बच्चे के लिए मॉरमन की एक पुस्तक ।
   ग. चित्र ७-१९, अच्छा चरवाहा, और ७-२४, मसीह और बच्चे (सुसमाचार कला चित्र किट २१६;६२४६७) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को समझाएं कि आप उन्हें कुछ उन निश्चित जिम्मेदारियों के बारे में बताने जा रही हैं जो एक व्यक्ति के पास होती हैं । उन्हें बताएं कि आप एक बार में एक सूत्र देंगी उस काम के बारे में जो वह व्यक्ति करता है । जब बच्चे जान जाएं कि वे उस काम के बारे में सोच चुके हैं जिसे वह व्यक्ति करता है तब उन्हें कक्षा के सामने आकर आपको उत्तर बताना चाहिए । यदि वे सही हैं, उन्हें खड़ा रहना चाहिए । यदि वे गलत हैं, उन्हें बैठ जाना चाहिए । निम्नलिखित के समान सूत्रों का उपयोग करें :

मैं बाहर काम करता हूं ।
मैं उनके बारे बहुत चिन्तित रहता हूं जो मेरे अंतर्गत हैं ।
कभी-कभी मुझे जंगली जानवरों या चोरों से लड़ना पड़ता है ।
मुझे चौकस रहना होगा ।
मुझे छोटों की सुरक्षा करनी होगी ।
मुझे उन्हें खोजना होगा जो खो गए हैं ।
जिनकी मैं देखभाल करता हूं वे मेरी आवाज पहचानते हैं और मेरा अनुसरण करते हैं ।
जो मेरे अंतर्गत हैं उनके लिए मैं अच्छा चारागाह और साफ पानी खोजता हूं ।
स्वर्गदूतों ने कुछ लोगों को यीशु मसीह के जन्म की घोषणा की जिनके पास ये जिम्मेदारियां हैं ।
मैं भेड़ों की देखभाल करता हूँ ।

जब सभी बच्चे जान जाएं कि यह व्यक्ति एक चरवाहा है तो उन्हें उनकी जगह पर जाने दें । समझाएं कि पाठ के दौरान वे अच्छे चरवाहे के बारे में सीखने जा रहे हैं जोकि यीशु मसीह है ।

धर्मशास्त्र विवरण

अच्छे चरवाहे के चित्र को दिखाएं । समझाएं कि चरवाहा यीशु का उसके अनुयाइयों के साथ संबंधों को चिन्हित करता है क्योंकि अच्छे चरवाहे अपनी भेड़ों के प्रति समर्पित होते हैं । बाइबिल के समय में, जब रात को झुंडों को भेड़शाला में ले जाया जाता था (भेड़ियों के अन्दर कूदने से रक्षा के लिए कांटों से बनी हुी उँची दीवार), खुले हुए रास्ते पर सोने के द्वारा प्रत्येक चरवाहा बारी बारी से भेड़ों की देखभाल करते थे, वास्तव में फाटक या द्वार बनते हुए (यूहन्ना १०:७, ९) । यदि किसी भी तरह से एक जंगली जानवर दीवारों के अन्दर आ भी जाता, चरवाहा अपनी जान भी दे देता यदि भेड़ की रक्षा के लिए आवश्यक होता । जब चरवाहे सुबह में अपनी झुंडों को बुलाते थे, प्रत्येक भेड़ अपने मालिक को पहचान जाती थी । एक भेड़ को सुरक्षित रखने के लिए, उसे अपने मालिक का अनुसरण उसकी नजदीकी में करना होता था जब वह उसे एक अच्छे चारागाह के तरफ ले जाता था ।

बच्चों को यूहन्ना १०:१–६ से अच्छे चरवाहे के दृष्टांत की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- भेड़ें अपने चरवाहे का अनुसरण क्यों करती हैं ? (यूहन्ना १०:४) । आपके विचार से "उसके शब्द को पहचानती हैं" का क्या अर्थ है ? हमें किसकी आवाज को पहचानने की आवश्यकता है ? हम उद्धारकर्ता की आवाज को कैसे पहचान सकते हैं ?

- आज आत्मिक तौर पर चोर और डाकू कौन हैं ? (यूहन्ना १०:१) (बच्चों की कुछ ऐसे लोगों और चीजों के बारे में सोचने में सहायता करें जो शायद उन्हें उनके चरवाहे से दूर ले जाए जोकि यीशु है) । "चोरों और डाकुओं" के द्वारा भेड़ें क्यों नहीं भटक सकीं ? (यूहन्ना १०:८) । हम अपने स्वयं की सुरक्षा बुरे प्रभावों से कैसे कर सकते हैं ? इन प्रभावों से सुरक्षा में हमारी और कौन सहायता कर सकते है ? (पवित्र आत्मा, भविष्यवक्ता, माता-पिता, अच्छे मित्र, शिक्षक या शिक्षिकाएं, धर्माध्यक्ष) ।

- यीशु एक अच्छा चरवाहा कैसे है ? (यूहन्ना १०:९–११) । यदि यीशु एक अच्छा चरवाहा है तो हम क्या हैं ? यह जानना कि यीशु एक अच्छा चरवाहा है उसके अनुसरण में हमारी कैसा सहायता करता है ?

- अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के प्रति अपने प्रेम को कैसे दिखाता है ? (यूहन्ना १०:११) । अपने जीवन को देने और फिर से उसे वापस लेने की शक्ति यीशु किससे प्राप्त करता है ? (यूहन्ना १०:१७–१८ वह मरने में समर्थ था क्योंकि उसकी माता नश्वर थी । वह अपना जीवन फिर से प्राप्त कर सकता था क्योंकि उसका पिता, स्वर्गीय पिता, अमर था) । हमारे लिए इसका क्या अर्थ है कि "अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए प्राण देता है" ? (यूहन्ना १०:११) । यीशु के बलिदान ने हमारे लिए उसके और स्वर्गीय पिता के साथ दुबारा रहने के लिए कैसे संभव बनाया ?

बच्चों की समझने में सहायता करें कि जिस एक तरीके से यीशु मसीह एक अच्छा चरवाहा है, वह यह है कि उसने हमारे पापों के लिए सहना और हमारे लिए अपने प्राण को देना स्वीकार किया था । इसलिए, हम सभी पुनरूत्थारित होंगे और हम सभी पश्चाताप कर सकते हैं, हमारा बपतिस्मा हो सकता है, और अपने पापों से क्षमा प्राप्त कर सकते हैं ।

समझाएं कि आप एक दूसरी कहानी बताने जा रही हैं जो उस तरीके को बताता है जिससे अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों की देखभाल करता है । मसीह और बच्चों का चित्र दिखाएं । यीशु बच्चों को आशीष देता हुआ, के कहानी की शिक्षा दें (देखें मरकुस १०:१३–१६) ।

- यीशु के चेले बच्चों को दूर हटाने का प्रयास क्यों करते हैं ? (जोसफ स्मिथ अनुवाद मत्ती १९:१३) । यीशु क्या कहता है जब उसके चेले बच्चों को दूर हटाने का प्रयास करते हैं ? (मरकुस १०:१४) । उसने बच्चों के लिए

क्या किया ? (मरकुस १०:१६) । आपके विचार से आपने कैसा महसूस किया होता यदि आप उन बच्चों में से एक होते ? कैसे यह जानना कि यीशु हमसे प्रेम करता है, उसके अनुसरण को आसान बनाता है ?

- यीशु ने कहा कि हमें "एक छोटे बच्चे की तरह बनने" की आवश्यकता है यदि हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं (मरकुस १०:१५; मुसायाह ३:१९; ३ नफी ११: ३७–३८) । आपके विचार से "एक छोटे बच्चे की तरह बनने" का क्या अर्थ है ? आपके विचार से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए हमें किसकी तरह होने की आवश्यकता है ? यीशु क्यों चाहता है कि हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करें ?

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. प्रत्येक बच्चे को कम से कम बारह इंच लम्बी रस्सी का एक टुकड़ा दें । बच्चों को रस्सी के टुकड़ों को उनके सामने एक मेज या फर्श पर सीधा रखने के लिए कहें और रस्सी को उनसे दूर ढकेलने का प्रयास करने के लिए कहें । तब बच्चों से रस्सी के उन टुकड़ों को उनके तरफ खींचने के लिए कहें । इस अनुभव की तुलना चरवाहे अपनी भेड़ों का मार्गदर्शन कैसे करते हैं , के साथ करें (यूहन्ना १०:४) । समझाएं कि इस्राएल में चरवाहे अपनी भेड़ों का मार्गदर्शन उनके आगे चलने के द्वारा करते थे । कुछ अन्य देशों में चरवाहे भेड़ों को हांकते हैं । यीशु, हमारे अच्छे चरवाहे के रूप में, रास्ते का मार्गदर्शन करता है और उसका अनुसरण करने के लिए कहता है ।

२. बच्चों के साथ भजन संहिता २३ पढ़ें और इसपर चर्चा करें ।

३. कक्षा को छोटे-छोटे दलों में विभाजित करें । उन्हें उन तरीकों को खोजने दें जिससे यीशु ने हमारे प्रति अपने प्रेम को दिखाया है और दिखाना जारी रखा है (कुछ सुझाव हो सकते हैं, आदम के उल्लंघन का भूगतान करना, हमारे पापों के लिए सहना, धर्मशास्त्रों के द्वारा हमें सुसमाचार की शिक्षा देना, एक उदाहरण बनना, हमारी सहायता करना जब हमें आवश्यकता हो, और इत्यादि) । चर्चा करें कि ये चीजें कैसे हमारी जानने में सहायता करती हैं कि यीशु हमसे प्रेम करता है ।

४. यीशु नफायटी बच्चों को आशीष देता हुआ के विवरण को पढ़ें और उसपर चर्चा करें (३ नफी १७:१२–१३, २१–२४) ।

५. बच्चों के साथ पहले तीन विश्वास के अनुच्छेद में से एक या सभी की समीक्षा करें ।

६. बच्चों की यूहन्ना १०:११ को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि यीशु हममें से प्रत्येक से प्रेम करता है और चाहता है कि हम उसका अनुसरण करें । अपने जीवन से एक अनुभव बताएं जब आपने यीशु के प्रेम को महसूस किया हो या जब आपने उसका अनुरण किया हो और आशीषित हुई हों ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में यूहन्ना १०:१–१८ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
२४

विधवा की दमड़ी

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे को ईमानदारी से दसमांश और अन्य भेटों को देने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मरकुस १२:४१–४४, ३ नफी २४:१०, और सिद्धांत और अनुबंध ११९:४ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः लूका २१:१–४ और सिद्धांत और अनुबंध ६४:२३ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियाँः
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. दस सिक्के (या सिक्कों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चॉकबोर्ड पर दस गोले बनाएं) ।
ग. प्रत्येक बच्चे के लिए कागज और पेन्सिल ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

कक्षा को दस सिक्के दिखाएं ।

- कौन इन सिक्कों को लेना चाहेगा ?
- यदि मैं सभी सिक्के आप लोगों को दे देती हूं तो क्या इनमें से एक आप मुझे देना पसंद करेंगे ? क्यों ? क्या आप मुझे एक या दो या शायद सभी सिक्के देना पसंद करेंगे ?

समझाएं कि स्वर्गीय पिता ने हमें दसमांश देने की आज्ञा दी है, जोकि उसमें से दसवां हिस्सा देना है जो हमारी आमदनी है । उसने हमें अन्य दानों को भी देने के लिए कहा है, जैसे कि उपवास भेंटे और प्रचारक फंड के लिए योगदान, पृथ्वी पर उसके काम को आगे बढ़ाने में सहायता के लिए ।

बच्चों को याद दिलाएं कि पृथ्वी की प्रत्येक चीज स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के द्वारा बनाई गई है । स्वर्गीय पिता ने हमें हमारे शरीर और बुद्धि के साथ आशीषित किया है ताकि हम काम कर सकें और सोच सकें । पृथ्वी पर जो हम कमाते हैं या प्राप्त करते हैं वह उसकी तरफ से एक उपहार है । स्वर्गीय पिता चाहता है कि हम अपने आभार, विश्वास और आज्ञाकारिता को गिरजाघर के लिए दसमांश देने और अन्य भेंटों को देने के द्वारा दिखा सकते हैं ।

धर्मशास्त्र विवरण

विधवा की दमड़ी की कहानी की शिक्षा दें (मरकुस १२:४१–४४) । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । समझाएं कि स्वर्गीय पिता और यीशु ने हमेशा लोगों को दसमांश देने की आज्ञा दी थी और गिरजाघर की आवश्यक चीजों में सहायता के लिए उन्हें अन्य दानों को देने के लिए कहा था ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- धनवान लोगों ने मन्दिर के भण्डार में क्या डाला ? (मरकुस १२:४१) । विधवा ने भण्डार में क्या डाला ? (मरकुस १२:४२ । समझाएं कि एक दमड़ी पैसे का एक छोटा सा हिस्सा होता है) । धनवान लोगों के भेंट की बजाय विधवा की भेंट से यीशु क्यों प्रसन्ना हुआ था ? (मरकुस १२:४३–४४) ।

- स्वर्गीय पिता ने हमें कितना दसमांश देने की आज्ञा दी है ? (सि. और अनु. ११९:४ । समझाएं कि "लाभ" का अर्थ पूरी जीविका है । कागज और पेन्सिल का उपयोग करते हुए, बच्चों को दिखाएं कि दसमांश की रकम कैसे निकाली जाए) । एक ईमानदार दसमांश देने का क्या अर्थ है ?

- स्वर्गीय पिता ने उपवास की भेंटों में हमें कितना देने के लिए कहा है ? उसने हमें प्रचारक फंड में कितना देने के लिए कहा है ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि दसमांश के रकम की तरह नहीं जिसे हमें देने की आज्ञा दी गई है, बल्कि जो हमारे पास है उसके आधार पर और हमारी आवश्यकता के आधार पर हम निश्चय करते हैं कि हमें उपवास की भेंटों में और प्रचारक फंड में कितना योगदान करना है ।

- स्वर्गीय पिता के काम को आगे बढ़ाने में हम किन अन्य तरीकों से सहायता कर सकते हैं ? (निर्गमन २५:१–८; सि. और अनु. १२४:२६–२७) । समझाएं कि सभी अवस्था के सदस्यों को मन्दिर बनाने के योगदान के लिए कहा गया है । आज पूरे संसार में मन्दिरों का निर्माण हो रहा है, और हम योगदान करने के द्वारा महान आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं यदि हम एक जिला में है जहां एक नये मन्दिर का निर्माण होना है ।

- प्रभु ने हमें दसमांश देने के लिए क्यों कहा है ? किन आशीषों को हम प्राप्त करते हैं जब हम एक पूरा दसमांश देते हैं ? (३ नफी २४:१०) । हमारे लिए आकाश की खिड़कियों को खोलने का क्या अर्थ है ? किन आशीषों को हम प्राप्त करते हैं जब हम अन्य भेंटों को देते हैं ?

अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल, गिरजाघर के बारहवें अध्यक्ष के द्वारा दिए गए निम्नलिखित वक्तव्य पर चर्चा करें:

"प्रभु ने प्रतिज्ञा की है कि वह आकाश के झरोखों को खोल देगा जब हम उसके नियम के प्रति आज्ञाकारी होते हैं । वह हमें अच्छे वेतन दे सकता है, वह हमारे पैसों को खर्च करने में हमें अच्छा न्यायी बना सकता है । वह हमें अच्छे स्वास्थ्य दे सकता है, वह हमें महान समझदारी दे सकता है ताकि हम अच्छी स्थान प्राप्त कर सकें । वह हमारी सहायता कर सकता है ताकि हम वही चीजें कर सकें जिसे हम करना चाहते हैं" (*The Teachings of Spencer W. Kimball*, पृ. २१२) ।

इस बात पर बल दें कि जिन महान आशीषों को हम दसमांश और अन्य भेंटों को देने के द्वारा प्राप्त करते हैं वह आत्मिक हैं । प्रत्येक बार जब हम दसमांश की आज्ञा का पालन करना चुनते हैं और उपवास की भेंटों और प्रचारक फंड के प्रति हमारी योगदानों में उदार होते हैं तब हमारा विश्वास मजबूती से बढ़ता है ।

- किस तरह से आप या कोई और जिसे आप जानती हैं दसमांश या अन्य भेंटों को देने के द्वारा आशीषित हुई हैं या हुए हैं ? अपने स्वयं के अनुभव से एक उदाहरण बच्चों को बताएं और बच्चों को उनके अनुभवों को बताने के लिए आमंत्रित करें जब वे उनकी भेटों के कारण आशीषित हुए हों ।

- हमें अपने दसमांश को कब देना चाहिए ? (हम वर्ष के दौरान किसी भी समय दसमांश दे सकते हैं, परन्तु जब हम अपनी आमदनी को प्राप्त करते हैं तो उसे शीघ्र से शीघ्र दे देना उत्तम होता है) । हम दसमांश और अन्य भेंटों को किसे देते हैं ? (धर्माध्यक्ष या उसके सलाहकारों को । धर्माध्यक्ष दसमांश के पैसे को गिरजाघर मुख्यालय भेजता है, जहां गिरजाघर के मार्गदर्शक निर्धारित करते हैं कि प्रभु के काम को आगे बढ़ाने के लिए यह कैसे उत्तम है । उपवास की भेंटों और प्रचारक फंड का उपयोग स्थानीय तौर पर होता है; बाकी के फंड को गिरजाघर मुख्यालय भेज दिया जाता है)।

- हमारे दसमांश पैसों का उपयोग कैसे होता है ? (देखें समृद्धि गतिविधि २) । उपवास की भेंटों का उपयोग कैसे होता है ? (उपवास की भेंट गिरजाघर के कल्याण कार्यक्रम में सहायता करता है) ।
- दसमांश व्यवस्था क्या है ? (एक सभा जो प्रत्येक वर्ष धर्माध्यक्ष के साथ होती है । हम उन दसमांश और अन्य योगदानों के अभिलेखों की समीक्षा करते हैं जिसे हमने दिया है और उन्हें बताते हैं कि हम पूरा दसमांश देने वालों में से हैं । हम घोषित कर सकते हैं कि हम पूरा दसमांश देने वालों में से हैं यदि हमने प्रभु को अपनी सभी आमदनी का दसवां हिस्सा दिया हो) ।
- आपके विचार से यह महत्वपूर्ण क्यों है कि हम इच्छापूर्वक दसमांश दें ? (मरोनी ७:६–८) । यदि हमारी आमदनी छोटी है, क्या तब भी हमसे दसमांश देने की प्रत्याशा की जाती है ? क्यों ?

अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा दिए गए निम्नलिखित वक्तव्य पर चर्चा करें : "कई लोग हैं जो कहता हैं कि वे दसमांश नहीं दे सकते हैं क्योंकि उनकी आमदनी छोटी है.... कोई भी इतना गरीब नहीं हो सकता कि वह दसमांश न दे सके" (*The Teachings of Spencer W. Kimball*, पृ. २१२) ।

- अन्य भेंटों को देना महत्वपूर्ण क्यों होता है ? विधवा के योगदान का उपयोग हम किस तरह से गिरजाघर के प्रति दान देने के एक उदाहरण से कर सकते हैं ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि भविष्य में हमें गिरजाघर को वह सब देने के लिए कहा जा सकता है जो हमारे पास है । परन्तु इस समय हमसे केवल वही देने के लिए कहा गया है जिसका योगदान करने में हम समर्थ हैं और वह भी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करते हुए ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. नकल किए हुए पैसे का उपयोग करते हुए (आप अपने स्वयं का बना सकती हैं), बच्चों को एक परिवार होने का दिखावा करने दें और उस पैसे की रकम का एक बजट बनाएं जिसे आपने उन्हें दिया है । उन्हें भोजन, किराया, उपयोगिता, कपड़ें, और मनोरंजन के लिए बजट बनाने दें । तब उन्हें दसमांश और अन्य भेंटों को बजट की सूची में सबसे पहले रखने के द्वारा जोड़ें । बच्चों को समझाएं कि हमें अपने दसमांश को सबसे पहले देना चाहिए क्योंकि वह प्रभु का दसवां हिस्सा है ।

२. कमरे के चारों तरफ जाएं और प्रत्येक बच्चे से उस तरीके का एक विशेष नाम बताने के लिए कहें जिससे उसके दसमांश पैसे का उपयोग किया जा सके । यदि आवश्यकता हो तो निम्नलिखित सूची से सुझाव दें ।

   सभाघरों, मन्दिरों, धर्म के प्रशिक्षालय और संस्थान, प्रचार प्रशिक्षालय केन्द्रों, और पारिवारिक इतिहास केन्द्रों का निर्माण करना ।

   वार्ड और स्टेक गतिविधियों और शिक्षण पुस्तिकाएं और आपूर्तियों के लिए भूगतान करना ।

   सभाघर की देखरेख और उपयोगिता के लिए भूगतान करना ।

   यात्रा के व्यय और प्रचारकों के प्रति आपूर्तियों का भूगतान करना ।

   जनरल अधिकारियों के यात्रा और अन्य व्यय का भूगतान करना ।

   मन्दिर में और पारिवारिक इतिहास के काम में उपयोग के लिए कंप्यूटर प्रदान करना ।

   गिरजाघर पत्रिकाओं के प्रकाशन में सहायता करना ।

   गिरजाघर सेटेलाइट प्रसारण के लिए भूगतान करना ।

   धर्मशास्त्रों के अनुवाद और प्रकाशन के लिए भूगतान करना ।

३. प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा और एक पेन्सिल दें और उन्हें खिड़की या किसी ऐसे स्थान पर जाने दें जहां से वे बाहर देख सकें । उन्हें चुपचाप कुछ मिनटों में अधिक से अधिक उन चीजों को लिखने के लिए कहें जिसे वे देख सकते हैं । बच्चों के उनके सीटों पर पहुँचने के पश्चात, उनसे उन चीजों को पूछें जिसे उन्होंने देखा हो । समझाएं कि स्वर्गीय पिता ने हमें उस प्रत्येक चीज को दिया है जो हमारी है, और दसमांश और भेंटों को देना एक वह तरीका है जिससे हम उसके प्रति अपने प्रेम और आभार को व्यक्त कर सकते हैं ।

४. अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन द्वारा निम्नलिखित कहानी बताएं, और उस विश्वास पर चर्चा करें जिसकी आवश्यकता दसमांश देने के लिए है और उन आशीषों पर चर्चा करें जो नियम के प्रति आज्ञाकारी होने के कारण आती हैं ।

"एक अवसर पर जब मैं एक किशोर था, मैंने अपने माता-पिता को अगले दिन होने वाली दसमांश व्यवस्था की तैयारी में उनके पैसों के बारे में बात करते सुना । पिता ने [उधार लिया था] बैंक से पच्चीस डॉलर लिए थे, जिसे सप्ताह के दौरान देना था । उनके दसमांश के हिसाब में, उन्होंने और पच्चीस डॉलर उधार लिए । उनके पास एक सूखी घास का डेरिक था [एक वह चीज जिसका उपयोग सूखी घास के अंबार से घास उठाने के में होता है] जिसे उन्होंने बनाया था । वह...उसे बेचने का प्रयास कर रहे थे, परन्तु उन्हें कोई सफलता नही मिली ।

"उन्हें क्या करना था—[भूगतान करें] बैंक को दें, बाद में उनके दसमांश का भूगतान करें, या उनके दसमांश का भूगतान करें और आशा करें कि वे कुछ ही दिनों में [बैंक को भूगतान करेंगे] दे सकेंगे ? मामले पर चर्चा करने, और मैं निश्चित हूं कि उठने के पहले एक साथ प्रार्थना करने के पश्चात, पिता ने अगले दिन दसमांश व्यवस्था पर जाने और पच्चीस डॉलर का भूगतान करने का निर्णय लिया, जोकि उन्हें एक पूरा दसमांश देने वाला बनाएगा । जब वे घुड़सवारी के द्वारा घर पहुँचे, पड़ोसियों में से एक ने उन्हें रोका और पूछा, 'जोर्ज, मुझे पता चला है कि आपके पास बेचने के लिए एक डेरिक है । आप उसकी कितनी किमत मांग रहे हैं ?'

"पिता ने कहा, 'पच्ची डॉलर' । पड़ोसी ने कहा, 'मैंने उसे देखा नहीं है, परन्तु यह जानते हुए कि आप उसे किस तरीके से बनाते हैं, मैं निश्चित हूं कि वह पच्चीस डॉलर के मूल्य का होगा । थोड़ी ही देर में मैं घर जाऊँगा और उसके लिए एक चेक बनाऊँगा । मुझे उसकी आवश्यकता है' ।यह एक पाठ है जिसे मैं नहीं भूला हूं" (*The Teachings of Ezra Taft Benson*,पृष्ठ ४७१–७२) ।

५. निम्नलिखित कहानी बताएं:

"जब मैं लगभग पाँच या छः वर्ष का था, मैं अपने बड़े परिवार के साथ खाने की मेज पर बैठा था और दूसरों को दसमांश के बारे में चर्चा करते हुए सुन रहा था । उन्होंने मुझसे कहा कि दसमांश हमारी आमदनी का दसवां हिस्सा है और यह उनके द्वारा प्रभु को दिया जाता है जो उससे प्रेम करते हैं ।

"रात्री-भोजन के पश्चात मैं पैसे की वह छोटी रकम ले आया जिसे मैंने बचाया था और उसका हिसाब लगाने लगा जिसे मैंने दसमांश के रूप में प्रभु से उधार लिया था । मैं उस इकलौते कमरे में गया जिसमें ताला लगा होता था—गुसलखाना—और स्नान के टब के पास घुटने टेक दिए । अपने ऊपर उठे हुए हाथों में तीन या चार सिक्कों को पकड़ते हुए, मैंने प्रभु से उन्हें स्वीकारने के लिए कहा—निश्चित होते हुए कि वह इसे स्वीकार करेगा । कुछ समय तक मैंने प्रभु से याचना किया, परन्तु पैसे मेरे हाथ में ही रहा । किसी भी छोटे बच्चे ने इतना अस्वीकार किये जाना महसूस नहीं किया होगा जितना कि मैंने किया । प्रभु ने दसमांश को मेरे माता-पिता और मेरे सभी बड़े भाइयों से लेना स्वीकार किया था । मुझसे क्यों नहीं ? जब मैं अपने घुटनों से उठा तब मैंने इतना अयोग्य महसूस किया कि मैं किसी को नहीं बता सका कि क्या हुआ था । केवल प्रभु जानता था ।

"कुछ दिनों के पश्चात प्राथमिक में शिक्षिका ने कहा कि उसने किसी चीज के बारे में बात करने के प्रभाव को महसूस किया है जोकि पाठ में नहीं था । मैं आश्चर्यचकित होते हुए बैठा रहा जब वह सीखा रही थी कि हमें दसमांश कैसे देना चाहिए । परन्तु मैंने जो चीज सीखी थी वह दसमांश कैसे देना है से भी अत्याधिक महत्वपूर्ण थी । मैंने सीखा कि प्रभु ने मेरी प्रार्थना को सुना और उसका उत्तर दिया था, कि वह मुझसे प्रेम करता है, और यह कि मैं उसके लिए महत्वपूर्ण हूं" (Ariel Ricks, "Coins for the Lord," *Ensign*, दिसंबर १९९०, पृ. ४७) ।

निष्कर्ष

गवाही और चुनौती

दसमांश देने के महत्व के बारे में गवाही दें । अपने दसमांश को देने के द्वारा, हमारे स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रति अपने आभार व्यक्त करने के एक तरीके के रूप में जो अवसर हमारे पास है उसके बारे में अपने अहसासों को बताएं । आप किसी ऐसे अनुभव को बताएं जब आपका विश्वास स्वर्गीय पिता और यीशु में तब बढ़ा था जब आपने अपने दसमांश को दिया था या कक्षा के किसी दूसरे सदस्य को किसी अनुभव को बताने के लिए आमंत्रित करें

प्रत्येक बच्चे को एक दान की रसीद और लिफाफा दें और उन्हें एक ईमानदार दसमांश देने की चुनौती दें जब वे किसी आमदनी को प्राप्त करते हैं ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मरकुस १२:४१–४४ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें।

दस कुंवारियों का दृष्टांत

पाठ
२५

उद्देश्य

यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए प्रत्येक बच्चे को आत्मिक तौर पर तैयार होने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती २५:१–१३ और सिद्धांत और अनुबंध ४५:५६–५७, ६३:५३–५४ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियाँ:

क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।

ख. निम्नलिखित शब्दपट्टियाँ:

दस कुंवारियाँ = गिरजाघर के सदस्य

तेल = आत्मिक तैयारी

दूल्हा = यीशु मसीह

विवाह = यीशु का दूसरा आगमन

ग. चित्र ७-२५, दूसरा आगमन (सुसमाचार कला चित्र किच २३८;६२५६२) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों से ऐसा दिखावा करने के लिए कहें जैसे कि वे एक यात्रा पर जा रहे हैं ।

- यात्रा की तैयारी के लिए हमें क्या करने की आवश्यकता है ?
- हमें अपने साथ क्या लेकर जाना चाहिए ?

एक चीज का नाम बताते हुए कहें, "हम एक यात्रा पर जा रहे हैं और हम _____ लेंगे" । एक बच्चे को यही वाक्य कहने दें, उस चीज को शामिल करते हुए जिसे आपने कहा है और दूसरी चीजों को जोड़ते हुए । कमरे में यह जारी रखें, प्रत्येक बच्चे के द्वारा सभी पहले की चीजों का नाम लेते हुए और एक और चीज को नाम जोड़ते हुए । प्रत्येक बच्चे को एक या अधिक पारी दें, अपनी कक्षा के आकार के आधार पर । आवश्यकतानुसार चीजों के नाम बताने में सहायता करें ।

संकेत करें कि तैयारी हमारे जीवन की कई चीजों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है ।

- यात्रा पर जाने के अलावा हम कौन सी कुछ चीजों की तैयारी कर सकते हैं ?

विद्यालय, एक भोजन, पारिवारिक घरेलू संध्या, और इत्यादि की तैयारी पर संक्षिप्त चर्चा करें । बच्चों को बताएं कि इस पाठ में वे सीखने जा रहे हैं कि वे आत्मिक तौर पर एक अदभूत घटना के लिए तैयारी कैसे कर सकते हैं जो भविष्य में घटेगी ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को दस कुंवारियों के दृष्टांत की शिक्षा दें (मत्ती २५:१–१३) । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों को बताएं कि अक्सर यीशु दृष्टांतों में सीखाता था, एक छुपे हुए आत्मिक सच की शिक्षा के लिए परिचित वस्तुओं और परिस्थितियों का उपयोग करते हुए । वह दृष्टांतों का उपयोग इसलिए करता था ताकि केवल वही लोग सच को समझ सकेंगे जो दृष्टांतों का अध्ययन करने के इच्छुक होते थे (देखें मत्ती १३:१०–१७) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि इस दृष्टांत को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के रूप में समझा जा सकता है, विवाह को वह समझा जा सकता है जब उद्धारकर्ता हजार वर्ष के दौरान पृथ्वी पर राज्य करने आएगा ।

बताएं कि दस कुंवारियों का दृष्टांत एक प्राचीन यहूदी वैवाहिक प्रथा पर आधारित है । दूल्हे और उसके मित्र दूल्हन को उसके घर से लेकर दूल्हे के घर जाते हैं । रास्ते में दूल्हन की सहेलियां उनके साथ जाना चाहती हैं । जब तक वे दूल्हे के घर पहुंचती हैं, वे सभी विवाह के लिए अन्दर चले जाते हैं । ये विवाह अक्सर शाम को होते थे, इसलिए जो दूल्हन और दूल्हे का इंतजार करते थे वे मशाल लिए रहते थे ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा । उपयुक्त समय पर शब्दपट्टियों और चित्रों को दिखाएं ।

- दस कुंवारियां किसका प्रतिनिधित्व करती हैं ? (मत्ती २५:१) । दूल्हा किसका प्रतिनिधित्व करता है ? (यीशु मसीह) ।
- हम कैसे जानते हैं कि सभी दस कुंवारियां यीशु मसीह में विश्वास करती थीं ? (मत्ती २५:६–७) वे दूल्हे से "मिलने गईं" और उसका इंतजार किया) । हम कैसे दिखा सकते हैं कि हम यीशु में विश्वास करते हैं ?
- पाँच कुंवारियों को मूर्ख के रूप में क्यों बताया गया है ? (मत्ती २५:३) । पाँच को समझदार के रूप में क्यों बताया गया है ? (मत्ती २५:४)
- क्या हुआ था जब दूल्हा आया था ? (मत्ती २५:६–८) । आपके विचार से पाँच मूर्ख कुंवारियां तैयार क्यों नहीं थीं ? आपके विचार से जब यीशु दुबारा आता है तब हम कैसे तैयार हो सकते हैं ?
- आपके विचार से पाँच बुद्धिमान कुंवारियों ने अपने तेल को क्यों नहीं दिया था ? (मत्ती २५:९) । वे अपने तेल में से थोड़ा तेल दूसरों को क्यों नहीं दे सकी थीं ? समझाएं कि यहूदियों के मशाल का आकार, बाहर के निकले हुए किनारे अन्दर के तरफ होते थे जिससे किसी के भी द्धारा अपने तेल को दूसरो के मशाल में डालना असंभव था (पाठ के अन्त में उदाहरण को देखें) । दृष्टांत में, बुद्धिमान कुंवारियों के मशालों का तेल उनके धार्मिक रहन-सहन और उनकी आज्ञाकारिता का प्रतिनिधित्व है । हममें से प्रत्येक अपने स्वयं के मशाल में तेल भरता है, जोकि हमारे स्वयं के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, हमारी आज्ञाकारिता और धार्मिकता के साथ । हमारी धार्मिक प्रक्रियाओं के कारण जो आशीषें स्वर्गीय पिता हमें देता है उसे किसी अवज्ञाकारी को नहीं दिया जा सकता है ।
- उन पाँचों का क्या हुआ था जो तैयार नहीं थीं ? (मत्ती २५:१०–१२) । उन पाँचों का क्या हुआ था जो तैयार थीं ? यह महत्वपूर्ण क्यों है कि हमें दूसरे आगमन के लिए अभी से तैयारी करनी चाहिए ? हम अपनी मशालों में तेल कैसे भर सकते हैं ?

एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की द्वारा दिए गए इस उद्धरण को पढ़ें: "व्यक्तिगत तौर पर, हम अपने परमेश्वर के साथ मिलने की तैयारी उसकी आज्ञाओं को मानने और उसके नियमों को जीने के द्वारा करते हैं...सुसमाचार उसकी अनन्त परिपूर्णता में, पुनःस्थापित की गई थी जैसा कि इन अन्तिम दिनों में है, यहां पर मनुष्य के पुत्र के दूसरे आगमन के लिए लोगों को तैयार करने के लिए है" (*The Millennial Messiah*, पृ. ५७२) ।

बच्चों को मत्ती २४:३६ और २५:१३ पढ़ने दें । समझाएं कि बिल्कुल उसी तरह जैसे कि दस कुंवारियों को सही समय नहीं पता था कि दूल्हा कब आएगा, हमें भी वह सही समय नहीं पता है कि कब यीशु फिर से आएगा ।

- यीशु मसीह का वापस आना किस तरह का होगा ? (सि. और अनु. ४५:५६–५७; ६३:५३–५४) । उनके लिए क्या आशीषें हैं जो आत्मिक तौर पर तैयार होते हैं ? (सि. और अनु. ३८:३०) ।

आप समृद्धि गतिविधि २ का उपयोग इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में और लागू होने के रूप कर सकती हैं ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन से परिचित कराने के लिए निम्नलिखित सूचनाओं पर संक्षिप्त में चर्चा करें :

जब यीशु ने यरूशलेम में अपने प्रेरितों को छोड़ा था, स्वर्गदूतों ने उन्हें बताया था कि वह दूसरी बार आएगा । (प्रेरितों के काम १:९–११) ।

हमारा स्वर्गीय पिता जानता है कि दूसरा आगमन कब होगा (मत्ती २४:३६) ।

यीशु सामर्थ और महिमा में आएगा और पृथ्वी पर हजार वर्षों के लिए राज्य करेगा । (सि. और अनु. २९:११) ।

मसीह के दूसरे आगमन के लिए हमें अपने आपको तैयार करने की आवश्यकता है (सि. और अनु. ३३:१७–१८) ।

वे धार्मिक लोग जो यीशु के दूसरे आगमन के लिए तैयार हैं वे उस महान दिन पर उसके साथ होंगे और हमेशा के लिए स्वर्गीय पिता और यीशु की उपस्थिति में रहेंगे (सि. और अनु. ७६:६२–६३) ।

२. प्रत्येक बच्चे को पाठ के अन्त में दिए गए मशाल की कॉपी दें, या चॉकबोर्ड पर एक मशाल बनाएं । बच्चों को उनकी मशालों पर कुछ लिखने दें, या उन चीजों का नाम बताने दें जिसे आप चॉकबोर्ड पर लिख सकें, जो उनके आत्मिक मशालों को तेल से भरेगा (कुछ विचार गवाही देना, सुसमाचार को जानना, दूसरों की सेवा करना, दसमांश देना, पवित्र आत्मा की मित्रता में योग्य रीति से जीना, प्रार्थना करना, गिरजाघर बुलाहटों को पूरा करना, इत्यादि हो सकते हैं) । उनकी जानने में सहायता करें कि यही वे चीजें हैं जिसे उनकी मशालों में तेल होने के लिए उन्हें स्वयं ही करना होगा, जैसा कि पाँच बुद्धिमान कुंवारियों ने किया था ।

जिन चीजों को बच्चों ने अपनी मशालों पर लिखा है उसकी तुलना अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल के विचारों के साथ करें: "हमारे जीवनों में तैयारी का तेल धार्मिक रीति से जीने के द्वारा बूंद-बूंद करके इकट्ठा होता है । प्रभुभोज सभाओं में उपस्थित होना हमारी मशालों में तेल डालता है, वर्षों के दौरान बूंद-बूंद करके । उपवास, पारिवारिक प्रार्थना, घर शिक्षा, शारीरिक इच्छाओं पर प्रतिबंध, सुसमाचार का प्रचार, धर्मशास्त्रों का अध्ययन—समर्पणता और आज्ञाकारिता की प्रत्येक प्रक्रिया तेल की एक बूंद है जो हमारे भण्डार में जुड़ जाती है । उदारता के काम, भेंटों और दसमांश का भूगतान, शुद्ध विचार और काम, अनन्तता के लिए अनुबंध में विवाह—ये भी, महत्वपूर्ण तेल के योगदान हैं जिसके द्वारा हम मध्यरात्रि में भी हमारे मशालों के खत्म हुए तेल को फिर से भर सकते हैं" (*Faith Precedes the Miracle*, पृ. २५६) ।

अपनी मशालों में तेल जोड़ने के उन तरीकों पर चर्चा करें जिसका वर्णन बच्चों ने पहले ही किया है, और यदि उनकी इच्छा हो तो उन्हें उनकी सूचियों में कुछ और शामिल करने दें । ऊनकी समझने में सहायता करें कि ये चीजें तब तक खत्म नहीं होंगी जब तक कि उद्धारकर्ता आता है ।

३. अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें: "दस कुंवारियाँ राज्य की निवासी थीं और आशीषों को प्राप्त करने का उनके पास पूरा अधिकार था—सिवाय उन पांचों के जो साहसी नहीं थीं

और तैयार नहीं थीं जब वह महान दिन आया था । वे सभी आज्ञाओं को नहीं जीने के द्वारा तैयार नहीं थीं । विवाह में नहीं पहुँच पाने के कारण वे अत्याधिक निराश हुई थीं—उन्हीं की तरह उनके आधुनिक प्रतिरूप [वे सदस्य जो आज तैयार नही हैं] होंगे" (*The Miracle of Forgiveness*, पृ. ८) ।

निष्कर्ष

गवाही

धार्मिकता से जीने के द्वारा यीशु मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी के महत्व की गवाही दें । बच्चों को बताएं कि आपके लिए योग्य होना कितना महत्वपूर्ण है ताकि आप उस महान घटना में हिस्सा ले सकें ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती २५:१–१३ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

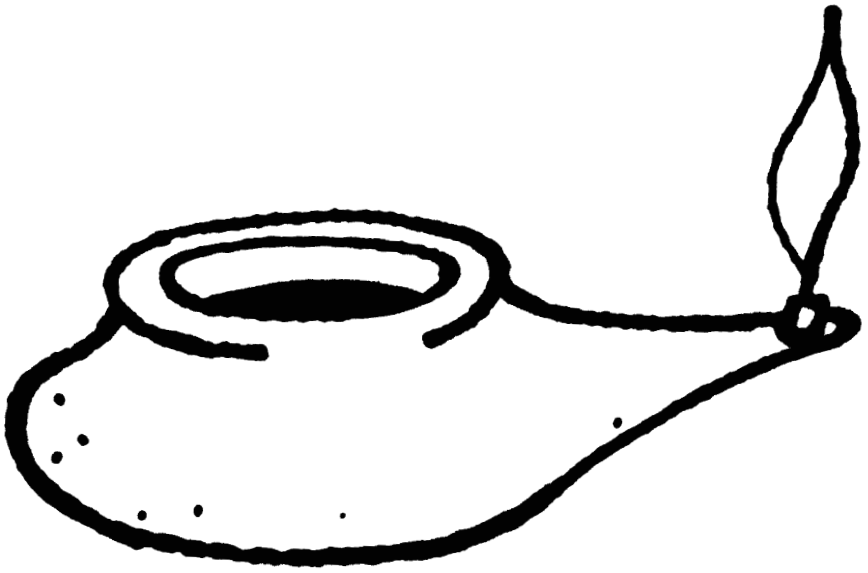

तोड़ों का दृष्टांत

पाठ
२६

उद्देश्य

बच्चों की उनकी प्रतिभाओं का दूसरों के प्रति और स्वयं के प्रति उपयोग करने की इच्छा में सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती २५:१४–३० और सिद्धांत और अनुबंध ६०:२–३, ८२:३ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियां:

क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।

ख. कागज की पर्चियां, प्रत्येक पर एक प्रतिभा लिखी हुई, जैसे कि, "आपके पास एक अच्छे वायलिन वादक बनने की प्रतिभा है", "आपके पास मित्र बनाने की प्रतिभा है", "आपके पास एक अच्छा वक्ता बनने की प्रतिभा है", "आपके पास एक अच्छा फुटबाल खिलाड़ी बनने की प्रतिभा है", "आपके पास एक मेल करवानेवाला बनने की प्रतिभा है", "आपके पास एक अच्छा नेता बनने की प्रतिभा है", "आपके पास एक अच्छा प्रचारक बनने की प्रतिभा है", "आपके पास दूसरों को खुश करने की प्रतिभा है", इत्यादि । बच्चों के कक्षालय में आने से पहले, कागज की पर्चियों को मोड़ें और उन्हें कमरे के उन स्थानों पर चिपकाएं जहां बच्चे उन्हें आसानी से खोज सकें । प्रतिभाओं को किसी एक विशेष बच्चे के लिए न पहचानें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को बताएं कि कमरे के आस-पास उनके लिए एक विशेष संदेश है । एक बच्चे से संदेश को खोजने और उसे जोर से पढ़ने के लिए कहें । तब उस बच्चे से बताने के लिए कहें कि इस प्रतिभा को उभारने के लिए वह क्या कर सकता या सकती है । प्रत्येक बच्चे को एक पारी दें, और कक्षा के बाकी लोगों को प्रत्येक प्रतिभा को बढ़ाने के तरीकों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करें । समझाएं कि यह पाठ प्रतिभाओं को उभारने के महत्व के बारे में उन्हें शिक्षा देगा ।

धर्मशास्त्र विवरण

पाठ २५ से एक दृष्टांत की परिभाषा की समीक्षा करें । बच्चों को मत्ती २५:१४–३० में पाये जाने वाले तोड़ों के दृष्टांत की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । दृष्टांत में, तोड़ों का अर्थ है पैसों का कुछ हिस्सा । हमारे लिए तोड़ों का अर्थ है क्षमताएं जिसे हम दूसरों को आशीष देने के लिए और दूसरों की सहायता के लिए उभार सकते हैं ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- स्वामी ने प्रत्येक सेवक को तोड़ों की विभिन्न रकम क्यों दी थी ? (मत्ती २५:१५) । आपकी प्रतिभाएं आपके मित्र की प्रतिभाओं से विभिन्न कैसे है ? आपके पारिवारिक सदस्यों की प्रतिभाओं से विभिन्न कैसे है ? स्वर्गीय पिता हममें से

प्रत्येक को विभिन्न उपहार क्यों देता है ? (सि. और अनु. ४६:१२) । स्वर्गीय पिता के प्रति हम अपने आभार को कैसे व्यक्त कर सकते हैं उन विशेष उपहारों के लिए जिसे उसने हमें दिया है ? (सि. और अनु. ४६:११) ।

- उन सेवकों ने जिन्हें पाँच और दो तोड़े दिए गए थे उन्होंने उनके पैसों से क्या किया था ? (मत्ती २५:१६–१७) । आपके विचार से वे अपने पैसों को दुगुना करने में कैसे समर्थ हुए थे ? कड़ी मेहनत कैसे हमारे लिए एक आशीष हो सकती है ?
- उस सेवक ने जिसे एक तोड़ा दिया गया था उसने अपने पैसे से क्या किया ? (मत्ती २५:१८) । आपके विचार से उसने ऐसा क्यों किया ? (मत्ती २५:२४–२५) । आपके विचार से क्यों कुछ लोग अपनी प्रतिभाओं को नहीं उभारते हैं ? लोगों की प्रतिभाओं के साथ क्या होता है यदि वे उनके साथ कुछ नहीं करते हैं ?
- जब स्वामी वापस आया और अपने सेवकों से रिपोर्ट देने के लिए, उसने उस सेवक से क्या कहा जिसे पाँच तोड़े दिए गए थे ? (मत्ती २५:२१) । उसने उस सेवक से क्या कहा जिसे दो तोड़े दिए गए थे ? (मत्ती २५: २३) । प्रतिभाओं को उभारने में की गई कड़ी मेहनत हमें कैसे आशीषित करता है ? किसी और की प्रतिभाओं या क्षमताओं के द्वारा आप कैसे आशीषित हुए हैं ?
- स्वामी ने उन सेवकों को वही इनाम क्यों किया जिन्होंने पाँच तोड़े और दो तोड़े कमाया था ? (मत्ती २५:२१, २३) ।
- स्वामी ने उस सेवक से क्या कहा जिसे एक तोड़ा दिया गया था ? (मत्ती २५:२६–२७) । स्वामी इस सेवक से क्रोधित क्यों था ? तोड़े को छुपाने के बदले में उसने उसे क्या दण्ड दिया ? (मत्ती २५:२८, ३०) । यह क्यों अधिक महत्वपूर्ण है कि हम अपनी क्षमताओं या प्रतिभाओं का उपयोग कैसे करते हैं बजाय उसके कि हमारे पास कितनी प्रतिभाएं हैं और वे क्या हैं ?
- आपके विचार से स्वामी ने उस सेवक को एक तोड़ा क्यों दिया जिसके पास दस थे ? क्या यह सही था ? क्यों ? समझाएं कि हम अपनी प्रतिभाओं का जितना अधिक उपयोग करते हैं, और प्रतिभाओं को हम उभारते हैं । यदि हम अपनी प्रतिभाओं के साथ कुछ नहीं करते हैं तो हम उन्हें खो देंगे । (देखें मत्ती २५:२९; सि. और अनु. ६०:२–३) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि वे लोग जो कम प्रतिभाओं वाले प्रतीत होते हैं वे प्रत्येक आशीष को प्राप्त करेंगे यदि ने उनकी प्रतिभाओं का पूरी तरह से उपयोग करते हैं ।
- आपके विचार से तोड़ों के दृष्टांत को बताने के द्वारा यीशु हमें क्या सीखाने का प्रयास कर रहा है ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि प्रभु ने हमें प्रतिभाएं, क्षमताएं, और अवसर दिए हैं (जैसे कि उसके गिरजाघर का होना) । वह हमसे आशा करता है कि हम इन सभी चीजों का उपयोग अपने जीवन को अच्छा बनाने और दूसरों की सेवा के लिए करें । वह यह भी चाहता है कि हम अपनी प्रतिभाओं को उभारने के द्वारा अपने आभार को व्यक्त करें ।
- उसके गिरजाघर के सदस्य होने के कारण प्रभु हमसे और किन चीजों की आशा करता है ? (सि. और अनु. ८२:३) ।
- गिरजाघर में लोग अपनी प्रतिभाओं को कैसे बांटते हैं ? किस तरह से गिरजाघर की जिम्मेदारियों और नियुक्तियों को स्वीकार करना हमारी प्रतिभाओं को बढ़ाने में हमारी सहायता करता है ? (देखें समृद्धि गतिविधि ५) ।
- कब और किसे हम रिपोर्ट करेंगे कि हमने उन उपहारों और प्रतिभाओं का क्या किया जिसे हमें दिया गया था ? रिपोर्ट देने में समर्थ होने के लिए आप क्या चाहते हैं ? आपको कैसा महसूस होगा यदि प्रभु आपसे कहेगा, "धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास" (मत्ती २५:२१) ?

समृद्धि गतिविधियां: आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों से अधिक से अधिक प्रतभिाओं को सोचने और उनका नाम बताने के लिए कहें; जब प्रतिभाओं का वर्णन किया जाए तब उन्हें चॉकबोर्ड पर सूचीबद्ध करें । बच्चों को विशेष व्यवहारों को सम्मिलित करने के लिए प्रोत्साहित करें जैसे कि एक अच्छा सुनने वाला होना, दूसरों को प्रेम करने वाला होना, खुश रहने वाला होना, इत्यादि ।

२. प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा और एक पेन्सिल दें और उन्हें उनकी स्वयं की प्रतिभाओं की सूची बनाने के लिए कहें । उनसे कहें कि कक्षा के दूसरे लोग उनकी सूची को न देखने पाएं । तब कक्षा के प्रत्येक सदस्य से कक्षा के अन्य प्रत्येक बच्चे के लिए एक प्रतिभा का नाम बताने के लिए कहें । जब प्रत्येक बच्चे की प्रतिभाओं का वर्णन हो जाए, बच्चे को सुझाव दें कि वह अपनी सूची में अन्य बच्चों के द्वारा पहचानी गई किसी भी प्रतिभा को शामिल करे जो सूची में पहले से न हो । तब निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें :

- यदि कक्षा के सदस्य आपके बारे में किसी चीज को बताते हैं जो कागज पर न हो, आप उस प्रतिभा को कैसे उभार सकती हैं ?
- यदि कक्षा के सदस्य उस चीज का नाम न लें जिसे आपने लिखा हो, आप उस प्रतिभा को कैसे उभार सकती हैं ?

प्रत्येक बच्चे को उसकी एक प्रतिभा को चुनने की चुनौती दें और निश्चय करने की चुनौती दें कि इसे आगे कैसे उभारा जाए या आने वाले सप्ताह के दौरान इसका उपयोग कैसे किया जाए ।

३. अध्यक्ष हीबर जे. ग्रान्ट के बारे में निम्नलिखित कहानी बताएं :

"जब मैं एक बेजबॉल क्लब में शामिल हुआ, मेरी उम्र के लड़कों ने या मुझसे थोड़े बड़ों ने पहले नौ में खेला था [खिलाड़ियों का उत्तम दल]; जो मुझसे छोटे थे उन्होंने दूसरे में खेला था, और जो उनसे भी छोटे थे तीसरे में खेला था और मैंने भी उन्हीं के साथ खेला था । इसका एक कारण यह था कि मैं गेंद को एक बेज से दूसरे बेज में नहीं फेंक सकता था । दूसरा कारण यह था कि मुझमें शारीरिक बल की कमी थी और मैं गेंद को अच्छी तरह से नहीं फेंक सकता था । जब मैं एक गेंद उठाता तब लड़के साधारणतः ही चिल्ला उठते थेः 'यहां फेंको सीसी!' (सीसी शब्द चिढ़ाने के लिए कहते थे जैसे कि एक लड़का नहीं बल्कि एक लड़की खेल रही हो) ।

"मेरी युवावस्था में मेरे साथी मुझे चीढ़ा कर बहुत खुश होते थे क्योंकि मैं अच्छी तरह से गेंद नहीं फेंक सकता था और मैंने अपने स्वयं से प्रतिज्ञा की कि मैं पहले नौ में बेजबॉल खेलूंगा जोकि यूटाह के क्षेत्र का चेंपीयमशीप जीतेगा ।

"...मैं एक डॉलर बचाया था जिसे मैंने एक बेसबॉल पर खर्च किया । बॉल को फेंकने में मैंने धर्माध्यक्ष एडवीन, डी. वूली के बाड़े में घण्टों बीताया था...अक्सर मेरा हाथ इतना दर्द करने लगता था कि मैं रात को बहुत कम सो पाता था । परन्तु मैंने अभ्यास करना जारी रखा और अंततः हमारे क्लब के दूसरे नौ में जाने में सफल हो गया । इसके साथ ही मैं एक अच्छे क्लब से जुड़ गया, और आखिरकार नौ में खेला जिसे क्षेत्र की चेंपीयनशीप को जीता था" (*Gospel Standards*, पृष्ठ ३४२–४३) ।

४. निम्नलिखित उद्धरण अध्यक्ष हीबर जे. ग्रान्ट के पसंदीदा कथनों में से एक था । बच्चों के साथ इसके अर्थ पर चर्चा करें, और उन्हें इसे याद करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

"जिस चीज को करने के लिए हम डटे रहते हैं उसे करना हमारे लिए आसान हो जाता है; ऐसा नही होता कि उस चीज का व्यवहार बदल जाता है, परन्तु इसे करने की हमारी शक्ति बढ़ जाती है" (*Gospel Standards*, पृ. ३५५) ।

५. बच्चों से कुछ उन जिम्मेदारियों को सोचने के लिए कहें जिसे गिरजाघर में लोगों को दिया जाता है । उन्हें कागज की पर्चियां और पेन्सिल दें और उन्हें एक जिम्मेदारी या नियुक्ति लिखने दें (प्रत्येक बच्चा एक से अधिक का योगदान दे सकता है) । उन्हें कागज की पर्चियों को एक बक्से या जार में डालने दें । फिर बच्चों से कागज की एक पर्ची को बक्से या जार से निकालने की पारी लेने के लिए कहें और बताने के लिए कहें कि इस

नियुक्ति या जिम्मेदारी को करने के द्वारा वे किन प्रतिभाओं को उभार सकते हैं । जिन प्रतिभाओं का वर्णन किया गया हो उन्हें चॉकबोर्ड पर सूचीबद्ध करें यह देखने के लिए कि बच्चे कितनी विभिन्न प्रतिभाओं को पहचान सकते हैं ।

निष्कर्ष

गवाही

उस आनन्द की गवाही दें जो तब आता है जह हम उन प्रतिभाओं का उपयोग अपने और दूसरों के फायदे के लिए करते हैं जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है । बच्चों को बताएं कि आप स्वर्गीय पिता के पास वापस जाने के आनन्द को कितना महसूस करना चाहती हैं जब किसी एक ने आपकी प्रतिभाओं का उपयोग अच्छी तरह से किया हो हो ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती २५:१४–३० का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

सूचनाः पाठ २७ के लिए एक समृद्धि गतिविधि में सहायता संस्था अध्यक्षता की एक सदस्या या धर्माध्यक्षता के एक सदस्य को आने और कक्षा में बच्चों को बताने की आवश्यकता है कि कैसे सहायता संस्था करूणामयी सेवा को देती है । यदि आप इस गतिविधि का उपयोग करना चाहती हैं, व्यक्ति से पहले ही पूछ लें और समझाएं कि आप किस बारे में चाहती हैं कि वे बात करें ।

भेड़ और बकरी का दृष्टांत

पाठ
२७

उद्देश्य

बच्चों को शिक्षा देना कि दूसरों की सेवा करना हमारी उस समय की तैयारी में सहायता करता है जब यीशु मसीह हमारा न्याय करेगा ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती २५:३१–४६ को पढ़ें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः याकूब २:१७–१९; मुसायाह ४:१६, २६; और सिद्धांत और अनुबंध १०४:१७–१८ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियांः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. चित्र ७-२६, अन्तिम न्याय (वॉशिंगटन मंदिर का भित्ति-चित्र), और ७-२५, दूसरा आगमन (सुसमाचार कला चित्र किट २३८;६२५६२) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

बच्चों को कक्षा को कुछ उन चीजों को बताने के लिए आमंत्रित करें जिसे उन्होंने पिछले सप्ताह के दौरान एक प्रतिभा को उभारने या बांटने के लिए किया हो ।

ध्यान गतिविधि

निम्नलिखित या उसी के समान परिस्थितियों को बच्चों के लिए पढ़ें (उन परिस्थितियों का ही उपयोग करें जिसे बच्चे अनुभव कर सकते हैं) । उनसे पूछें कि उनके विचार से उन्हें क्या करना चाहिए यदि :

वे एक छोटे बच्चे को देखते हैं जोकि प्यासा है परन्तु पानी तक नहीं पहुँच सकता है ।

वे एक बच्चे को जानते हैं जो कई सप्ताह से गिरजाघर नहीं आया है ।

वे किसी को जानते हैं जिसके पास पर्याप्त मात्रा में भोजन नही है ।

वे किसी को देखते हैं जिसके पास गरम कोट नहीं है, और बहुत ठंड है ।

वे किसी को जानते हैं जोकि एक बीमारी या असमर्थता के कारण काफी समय से घर पर रह रहा है ।

- यीशु क्या चाहता है कि आप करें ? आपके विचार से इस तरह की परिस्थितियों में आपको दूसरों की सहायता क्यों करनी चाहिए ?

बच्चों को याद दिलाएं कि पिछले दो पाठों में आपने उन दो दृष्टांतों के बारे में सीखा है जिसमें यीशु लोगों को उसके दूसरे आगमन की शिक्षा दी है । यह पाठ मत्ती २५ के तीसरे दृष्टांत की शिक्षा देता है, और एक साथ मिलकर ये तीनों दृष्टांत हमें सीखाते हैं कि हम किस तरह से यीशु के आगमन और उस समय की तैयारी कर सकते हैं जब वह हमारा न्याय करेगा । अपने आपको तैयार करने के उत्तम तरीकों में से एक है दूसरों की सेवा करना ।

धर्मशास्त्र विवरण

जब आप मत्ती २५:३१–४६ में पाये जाने वाले भेड़ और बकरी के दृष्टांत की शिक्षा बच्चों को देती हैं तब उपयुक्त समयों पर अन्तिम न्याय और दूसरे आगमन के चित्रों को दिखाएं । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- आपके विचार से यह कैसा होगा जब यीशु फिर से आएगा ?
- यीशु शिक्षा देता है कि अपने आगमन पर वह राज्यों को अलग कर देगा जैसे कि एक चरवाहा भेड़ों और बकरियों को अलग करता है (मत्ती २५:३२) । इस दृष्टांत में भेड़ किसका प्रतिनिधित्व करती है ? (मत्ती २५:३३–३६) । बकरी किसका प्रतिनिधित्व करती है ? (मत्ती २५:३३, ४१–४३) । यीशु भेड़ और बकरियों को अलग क्यों केरगा ? भेड़ और बकरियों के बीच मुख्य अन्तर क्या है ?
- यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा कि जो उसके दाहिने तरफ हैं उन्होंने उसे खिलाया, कपड़े पहनाये, इत्यादि ? (मत्ती २५:३७–४०) । छोटे से छोटे भाई कौन हैं ?
- धार्मिक लोग किस प्रकार की सेवा करते हैं ? (मत्ती २५:३५–३७) । प्रभु की भेड़ों में गिने जाने के लिए हमें क्या करने की आवश्यकता है ? बच्चों की उन तरीकों को सोचने में सहायता करें जिससे वे इस तरह के सेवा कार्य कर सकते हैं । सेवा के उन उदाहरणों को बताएं जिसे आपने देखा हो, और बच्चों को उन उदाहरणों को बताने के लिए आमंत्रित करें जिसे उन्होंने देखा हो ।
- हमारा इनाम क्या होगा यदि हम दूसरों का सहायता करते हैं ? (मत्ती २५:३४, ४६) । उनका क्या होगा जो दूसरों की सेवा नहीं करते हैं ? (मत्ती २५:४१, ४६) ।
- हमें किसकी सेवा करनी चाहिए ? हम किसे जानते हैं जिसकी हमारी सेवा के द्वारा सहायता हो सकती है ? (मत्ती २५:४०; मुसायाह ४:१६ को भी देखें) (देखें समृद्धि गतिविधि १) ।
- यीशु ने दूसरों की सहायता कैसे की ? (कुछ धर्मशास्त्र विवरणों की समीक्षा करें जैसे कि यीशु बीमारों को चंगा करता हुआ, बच्चों को आशीष देता हुआ, ५,००० लोगों को खिलाता हुआ, इत्यादि । उस प्रेम पर बल दें जिसे यीशु ने लोगों के लिए दिखाया जब उसने इन चीजों का किया) । दूसरों के प्रति सेवा का उसका उदाहरण आपकी सहायता कैसे कर सकता है ?
- हम अपनी सेवाओं के द्वारा दूसरों को कैसे आशीषित करते हैं ? दूसरे व्यक्ति की सेवा करने से आप कैसे आशीषित हुए हैं ? दूसरों की सेवा करने से आपको कैसा महसूस होता है ? आप उनके बारे में कैसा महसूस करते हैं जिसकी आपने सेवा की है ?

बच्चों के जीवन में इस पाठ को लागू में प्रोत्साहन के लिए आप समृद्धि गतिविधि ४ का उपयोग कर सकती हैं ।

समृद्धि गतिविधियाँ

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. निम्नलिखित कहानी बच्चों को बताएं और उसपर चर्चा करें :

"मुझे मेरे लड़कपन का कई बातें याद हैं । रविवार रात्रि-भोज की प्रत्याशा करना उनमें से एक है । जैसे ही हम बच्चे भूख से तड़पते हुए मेज पर उत्सुकता से इंतजार करते, कमरे में भूने हुए गोमांस की खुशबु के साथ । मां मुझसे कहती, 'टॉमी, हमारे खाना खाने से पहले, जल्दी से इस थाली को जिसे मैंने बनाया है, उस बुढ़े बॉब के लिए ले जाओ जो सड़के के नीचे रहता है' ...'मैं बॉब के घर के तरफ दौड़ जाता और उत्सुकता से इंतजार

करता जब उसके बुढ़े पैर अंततः दरवाजे पर आते । तब मैं उसे भोजन की थाली थमा देता । वह मेरे सामने इससे पहले वाले रविवार को दिए गए भोजन वाली साफ-सुथरी थाली को प्रस्तुत कर देता और मुझे मेरी सेवा के भूगतान के रूप में एक डाइम का प्रस्ताव देता । मेरा उत्तर हमेशा वही होताः 'मैं इस पैसे को स्वीकार नहीं कर सकता । मेरी मां मुझे थप्पड़ मारेगी । तब वह कहता, 'मेरे बच्चे, तुम्हारे पास एक बहुत ही अच्छी मां है । उससे धन्यवाद कहना' । मुझे यह भी याद है कि मुझे मेरे उद्देश्य से वापस आने के पश्चात, रविवार का रात्रि-भोज हमेशा ही कुछ अधिक स्वादिष्ट होता" । (Thomas S. Monson, "The Long Line of the Lonely," *Ensign*, फरवरी १९९२, पृ. ४) ।

२. कक्षा में आने और समझाने के लिए सहायता संस्था अध्यक्षता से एक सदस्या या धर्माध्यक्षता से एक सदस्य की व्यवस्था करें कि कैसे सहायता संस्था करूणामयी सेवा को प्रदान करती है । आई हुई सदस्या या आए हुए सदस्य को सममझाने दें कि कैसे गिरजाघर उनकी सहायता करता है जिन्हें आवश्यकता होती है, इस बात को सम्मिलित करते हुए कि कैसे उपवास की भेंटों का उपयोग होता है ।

३. प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा और पेन्सिल दें, और उन्हें उन तरीकों को सूचीबद्ध करने दें जिससे वे घर पर या पड़ोस में दूसरों की सेवा कर सकते हैं । इस सप्ताह सेवा के कम से कम एक काम को करने की चुनौती बच्चों को दें ।

४. निम्नलिखित उद्धरण पर चर्चा करें:

"सभी मुनष्यों के न्याय के लिए परमेश्वर आएगा...दुष्ट लोग कुछ समय के लिए फल-फूल सकते हैं, विरोधी उनके उल्लंघनों के द्वारा लाभान्वित होते प्रतीत हो सकते हैं, परन्तु समय आएगा जब सभी मनुष्यों के कामों के अनुसार उनका न्याय किया जाएगा' (प्रकाशितवाक्य २०:१३) । उनके किसी भी काम के प्रति परिणामों को नहीं बक्शा जाएगा । उस दिन कोई भी उनके कार्यों के हरजाने से नहीं बच पाएगा, कोई भी उन आशीषों को प्राप्त करने में असफल नहीं होगा जिसे उसने कमाया है । फिर से भेड़ और बकरी का दृष्टांत आश्वासन देता है कि पूरी तरह से न्याय होगा" (Spencer W. Kimball, *The Miracle of Forgiveness*, पृष्ठ ३०४–५) ।

५. दो बक्से या डिब्बे बनाएं । एक बक्से पर "भेड़" और दूसरे बक्से पर "बकरी" का लेबल लगाएं । "भेड़" वाले बक्से को अपनी दाहिनी तरफ और "बकरी" वाले बक्से को "बांयी" तरफ रखें । कागज के अलग- अलग टुकड़ों पर अच्छी और बुरी क्रियाओं को लिखें (कुछ उन क्रियाओं को सम्मिलित करें जिसमें वर्ग सुस्पष्ट न हो) । प्रत्येक बच्चे को एक वर्ग को पढ़ने दें और निर्णय लेने दें कि यह "भेड़" वाली क्रिया है या "बकरी" वाली और कागज के टुकड़े को उपयुक्त बक्से में डालने दें ।

नीचे सूचीबद्ध की गई क्रियाओं का उपयोग करें या अपने स्वयं का बनाएं :

अपने माता-पिता को सच बताना ।
आपने कुछ गलत किया है और तब भी उसे न मानना ।
अपने भाई या बहन के साथ झगड़ना ।
"मुझे क्षमा करो" कहना जब आपने किसी के अहसासों को चोट पहुँचाया हो ।
सच का केवल कुछ ही हिस्सा बताना ।

६. बच्चों की मत्ती २५:४० को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही — अपनी गवाही दें कि यीशु चाहता है कि हम दूसरों की सेवा करें और यह कि हम आशीषित होते हैं जब हम ऐसा करता हैं । सेवकाई के अपने अवसरों के बारे में आपने जो महसूस किया था उसे को बच्चों को बताएं

प्रस्तावित घर पठन — सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती २५:३५–४० का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
२८

यीशु मसीह लाजर को मृत्यु से जीवित करता है

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की समझने में सहायता करना कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है इसलिए उसके पास मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति है ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक यूहन्ना ११:१–४६ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. लूका ७:११–१७, ८:४१–४२, ४९–५६ की समीक्षा करें ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियां:
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. एक नया कटा हुआ तना या पत्ता और एक पुराना कटा हुआ तना या पत्ता (या इनमें से प्रत्येक का एक चित्र) ।
   ग. चित्र ७-२७, यीशु लाजर को मृत्यु से जीवित करता हुआ (सुसमाचार कला चित्र किट २२२;६२१४८), और ७-१८, यीशु याईर की बेटी को आशीषित करता हुआ (सुसमाचार कला चित्र किट २१५; ६२२३१) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को नया कटा हुआ तना या पत्ता और एक पुराना कटा हुआ तना या पत्ता दिखाएं । बच्चों से दोनों के बीच की विभिन्नता के बारे में बात करने के लिए कहें ।

- क्या हम कुछ ऐसा कर सकते हैं जिससे एक पुराना कटा हुआ तना एक नये कटे हुए तने के समान दिखाई देने लगे ?
- अब यह कि नये कटे हुए तने को पौधे से काट दिया गया है, इसका क्या होगा ?
- किसके पास वह शक्ति है जो उसमें जीवन डालता है जिसकी मृत्यु हो चुकी है ?

समझाएं कि यीशु के पास मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति है । उसने कई लोगों को जीवन दान दिया जो बहुत समय पहले मर चुके थे ।

धर्मशास्त्र विवरण

संक्षिप्त में उन विवरणों की समीक्षा करें जिसमें यीशु नाईन नामक एक नगर में रहने वाली विधवा के पुत्र को (लूका ७:११–१७) और याईर की बेटी को जीवित करता है (लूका ८:४१–४२, ४९–५६) । तब बच्चों को यूहन्ना ११:१–४६ में पाये जाने वाले उस विवरण की शिक्षा दें जिसमें यीशु लाजर को मृत्यु से जीवित करता है । उपयुक्त समय पर चित्रों को दिखाएं । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । समझाएं कि जब यीशु लोगों को मृत्यु से जीवित करता था, उसने चमत्कारों को किया था जिसने गवाही दी थी कि वह परमेश्वर का पुत्र था और उसके पास मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति थी । बच्चों को समझाएं कि यहूदी प्रथा में एक मृत्यु के पश्चात कई दिनों तक पड़ोसी और मित्र दुःख मनाते थे और इसीलिए लाजर की मृत्यु के पश्चात मरथा और मरियम के साथ कई लोग थे और उन्होंने इस महान चमत्कार की साक्षी दी थी जिसे यीशु ने किया था ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- जब यीशु को पता चला कि लाजर बीमार था, बैतनिय्याह से जाने में उसने कितने दिन और लगाये थे ? (यूहन्ना ११:६) । जब यीशु पहुँचा तब लाजर का शरीर कब्र में कबसे पड़ा हुआ था ? (यूहन्ना ११:१७) । आपके विचार से यीशु ने जाने में इतना समय क्यों लगाया था ? (ताकि बिना किसी सवाल के सभी लोग जान जाएं कि लाजर मर चुका है, और उसको जीवित करना यीशु की ईश्वरीय शक्ति और मिशन का एक मजबूत साक्षी होगा [यूहन्ना ११:४, १५]) ।
- जब यीशु पहुँचा तब मरथा और मरियम ने उससे क्या कहा ? (यूहन्ना ११:२१–२२, ३२) । मरथा ने क्या सोचा जब यीशु ने उससे कहा कि लाजर फिर से जी उठेगा ? (यूहन्ना ११:२३–२४) । यहां तक कि जब मरथा ने अपने भाई को मृत्यु से जीवित होते हुए नहीं देखा था तब भी उसकी गवाही क्या थी ? (यूहन्ना ११:२७) ।
- लाजर को जीवित करने से पहले यीशु ने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना क्यों किया था ? (यूहन्ना ११:४१–४२) । यीशु क्या चाहता था कि लोग समझें ? (कि उसे स्वर्गीय पिता के द्वारा भेजा गया है) ।
- यीशु ने लाजर से क्या कहा ? (यूहन्ना ११:४३) । क्या हुआ था ? लाजर ने क्या पहना हुआ था ? (यूहन्ना ११:४४) ।
- आपके विचार से मरथा, मरियम और अन्य लोगों ने कैसा महसूस किया था जब उन्होंने इस चमत्कार की साक्षी दी थी ? आपके विचार से आपने कैसा महसूस किया होता यदि आप वहां होते ? चमत्कार को देखने के पश्चात लोगों ने क्या किया ? (यूहन्ना ११:४५–४६) । लाजर को कब्र से बाहर आता हुआ देखकर यीशु में आपका विश्वास किस तरह से प्रभावित हुआ होता ?
- यीशु लाजर को मृत्यु से जीवित क्यों कर सका था ? यह जानकर आपको कैसा महसूस होता है कि यीशु के पास किसी भी मरे हुए को जीवित करने की शक्ति है ? यह चमत्कार हमारी जानने में किस तरह से सहायता करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है ? (यूहन्ना ११:४) ।
- यीशु ने बाद में क्या किया जिससे मृत्यु के ऊपर उसकी शक्ति सिद्ध होती है ? (वह पुनरूत्थारित हुआ था । बच्चों की समझने में सहायता करें कि जब लाजर मृत्यु से वापस आया था, तब भी वह नश्वर था और फिर से मरेगा । जो लोग पुनरूत्थारित होते हैं, वे दुबारा कभी भी नहीं मरेंगे । वे हमेशा के लिए जीवित रहेंगे) ।
- यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा कि वह ही "पुनरूत्थान और जीवन है" ? (यूहन्ना ११:२५) । हमारे लिए इसका क्या अर्थ है ?

समझाएं कि यीशु के पास ही केवल वही शक्ति नहीं है जिससे नश्वर जीवन वापस लाया जाए, जैसा कि उसने लाजर के साथ किया था, उसके पास प्रत्येक को मृत्यु से अमरत्व में जीवित करने के लिए अधिक महत्वपूर्ण है । प्रत्येक व्यक्ति जिसने पृथ्वी पर जन्म लिया है वह पुनरूत्थारित होगा । यीशु के प्रायश्चित के द्वारा उसके पास उन लोगों को अनन्त जीवन देने की भी शक्ति है जो उसकी आज्ञाओं का पालन और उसका अनुसरण करते हैं । हममें से प्रत्येक के लिए वह पुनरूत्थान और अनन्त जीवन का साधन है ।

चुनौती

बच्चों को आने वाले सप्ताह के दौरान किसी और को यीशु लाजर को जीवित करता हुआ की कहानी को बताने की चुनौती दें ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों से कहें कि वे ऐसा दिखावा करें कि वे मरथा, मरियम, लाजर, और वे यहूदी हैं जो उस वक्त उपस्थित थे जब यीशु ने लाजर को मृत्यु से जीवित किया था । दूसरे बच्चे से यह पता करने के लिए लोगों को साक्षात्कार लेने के लिए कहें कि क्या हुआ था, उन्होंने क्या सीक्षी दी थी, उन्होंने कैसा महसूस किया था जब उन्होंने लाजर को गुफा से बाहर आते देखा था, और उन्होंने यीशु के बारे में क्या महसूस किया था ।

२. कागज की पर्चियां बनाएं जो घटनाओं को सन्दर्भ करती हों, जैसे कि निम्नलिखित, जब किसी ने साक्षी दी थी कि यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है । कागजों के दूसरे सेट तैयार करें जिसपर धर्मशास्त्र लिखे हों जो घटनाओं का वर्णन करते हों :

घटनाः यीशु का जन्म हुआ था

धर्मशास्त्र : स्वर्गदूत ने कहा, "कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है" (लूका २:११) ।

घटनाः यीशु का बपतिस्मा हुआ था

धर्मशास्त्र : एक आकाशवाणी हुई थी, "तू मेरा प्रिय पुत्र है"; परमेश्वर की आत्मा कबूतर की नाई ऊपर उतरी (मरकुस १:९–११) ।

घटनाः यीशु पानी पर चला था ।

धर्मशास्त्र : नाव पर यीशु के चेलों ने कहा, "सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है" (मत्ती १४:२५–२७, ३२–३३) ।

घटनाः यीशु ने जन्म से अंधे एक मनुष्य को चंगा किया था ।

धर्मशास्त्र : "और मनुष्य ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं कि तू परमेश्वर का पुत्र है । और उसने दंडवत किया" (यूहन्ना ९:३२, ३५–३८) ।

घटनाः पतरस ने यीशु की गवाही दी थी ।

धर्मशास्त्र : जब यीशु ने अपने चेलों से पूछा कि वे क्या सोचते हैं कि वह कौन है, पतरस ने कहा, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती १६:१३–१६) ।

घटनाः जोसफ स्मिथ ने अपने पहले दिव्यदर्शन को प्राप्त किया था ।

धर्मशास्त्र : स्वर्गीय पिता ने कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है । इसकी सुनो!" (जोसफ स्मिथ—इतिहास १:१७) ।

किसी भी उल्टे-सीधे क्रम में कागजों के सामने का हिस्सा नीचे करते हुए उन्हें फर्श या मेज पर रखें । एक बच्चे को आने दें और दो कागजों को पलटने दें और उपयुक्त धर्मशास्त्र विवरण को घटना के साथ मिलाने दें । यदि दो कागज एक साथ नहीं मिलते हैं, कागज को फिर से पलट दें और दूसरे बच्चे को एक बारी लेने की अनुमति दें । प्रत्येक बच्चे की एक पारी से पहले ही यदि कागज मेल खाते हैं जो खेल फिर से खेलें ।

३. बच्चों को यूहन्ना ११:२५ को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

अपनी गवाही दें कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और उसके पास मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति है । उद्धारकर्ता के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करें और उसके प्रायश्चित के प्रति उसके आभार को व्यक्त करें, जिसने हमारे लिए पुनरूत्थारित होना और अनन्त जीवन को प्राप्त करना संभव बनाया था ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में यूहन्ना ११:३९–४६ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह का विजय प्रवेश और आखिरी भोज

पाठ
२९

उद्देश्य

यीशु मसीह को हमेशा याद रखने के स्मरणपत्र के रूप में प्रत्येक बच्चे की प्रत्येक सप्ताह प्रभुभोज को लेने के महत्व को समझने में सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती २१:१–११; मरकुस १४:१२–२६; लूका १९:२९–३८; २२:१५–२०; और सिद्धांत और अनुबंध २०:७७, ७९ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः सिद्धांत और अनुबंध २७ का शीर्षक, सिद्धांत और अनुबंध २७:२, और *सुसमाचार सिद्धांत*, अध्याय २३ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियांः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. सिद्धांत और अनुबंध की कई कॉपियां ।
   ग. प्रत्येक बच्चे के लिए पेन्सिल और कागज (वैकल्पिक) ।
   घ. चित्र ७-२८, विजय प्रवेश (सुसमाचार कला चित्र किट २२३;६२१७३), और ७-२९, आखिरी भोज (सुसमाचार कला चित्र किट २२५;६२१७४) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

कक्षा को दलों में विभाजित करें और बच्चों से उन चीजों को सोचने के लिए कहें जिसे वे अपने घरों में कर सकते हैं यदि उनके परिवारों में कोई विशेष मेहमान उनसे मिलने आ रहे हों, जैसे कि घर की सफाई करना, विशेष भोजन पकाना, इत्यादि । प्रत्येक दल को उसका नाटकीकरण करने दें जिसे वे करेंगे, और बाकी की कक्षा को अनुमान लगाने दें कि वे क्या कर रहे हैं ।

- यदि उद्धारकर्ता आपके घर आ रहा हो, तैयारी के लिए आप क्या करेंगे ? बच्चों को बताएं कि यब पाठ उन्हें उस एक समय के बारे में शिक्षा देगा जब लोगों ने उद्धारकर्ता के स्वागत के लिए विशेष तैयारी की थी यह दिखाने के लिए कि उन्होंने उसका कितना सम्मान और आदर किया था ।

धर्मशास्त्र विवरण और चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

विजय प्रवेश के चित्र को दिखाएं । बच्चों को यरूशलेम में यीशु के विजय प्रवेश के विवरण की शिक्षा दें (मत्ती २१:१–११; लूका १९:२९–३८) । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

- लोगों ने क्या किया था जब उन्होंने सुना कि यीशु मसीह उनके नगर में आ रहा है ? (मत्ती २१:८–९) । आपके विचार से उन्होंने यीशु के बारे में क्या महसूस किया था ? आपके विचार से आपने कैसा महसूस किया होता यदि आप वहां होते ?
- लोगों ने "होसन्ना" क्यों चिल्लाया जब वे यीशु के साथ यरूशलेम में चल रहे थे ? (बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु के प्रति बड़ाई और आराधना करने का यह उनका तरीका था और यह व्यक्त करने का

तरीका था कि उन्हें विश्वास था कि वह परमेश्वर का पुत्र था) । आज हम स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह की आराधना कैसे करते हैं ? (जब हम प्रभुभोज सभा में भाग लेते हैं, धर्मशास्त्रों को पढ़ते हैं, गीत गाते हैं, प्रार्थना करते हैं, और प्रभुभोज को लेते हैं) ।

बच्चों को मरकुस १४:१२–२६ और लूका २२:१५–२० में पाये जाने वाले आखिरी भोज के विवरण की शिक्षा दें । आखिरी भोज के चित्र को दिखाएं । समझाएं कि फसह एक भोजन वाली धर्मविधि थी जिसे लोग प्रत्येक वर्ष एक समय के स्मरण के रूप में खाते थे जब विनाशी दूत उनके मिस्र के पूर्वजों के घरों के ऊपर से चले गये थे और उनके पहिलौठे पुत्रों को नही मारा था (देखें निर्गमन १२:२१–३०) ।

- इस फसह भोज को हम आखिरी भोज क्यों कहते हैं ? (लूका २२:१५–१८) । इस भोज पर यीशु ने क्या किया था ? (मरकुस १४:२२–२४) । उसने इसे क्यों किया था ? (उसके प्रायश्चित के महत्व की शिक्षा देने के लिए । उसने प्रभुभोज की स्थापना हमें हमेशा उसे और उसके प्रायश्चित को याद करने के लिए किया था) ।
- यीशु ने क्या कहा कि रोटी किसका प्रतिनिधित्व करती है ? (मरकुस १४:२२) । यीशु ने क्या कहा कि दाखरस किसा प्रतिनिधित्व करता है ? (मरकुस १४:२३–२४ । समझाएं कि आज हम दाखरस के स्थान पर पानी का उपयोग करते हैं)। बच्चों की समझने में सहायता करें कि रोटी और पानी यीशु के शरीर और लहू का चिन्ह है या याद रखने के लिए है ।
- आखिरी भोज हमारे आज के प्रभुभोज सेवा के समान क्यों था ? बच्चों को याद दिलाएं कि जिस तरह यीशु ने रोटी को तोड़ी थी और आशीषित किया था और रोटी और दाखरस को बांटा था, बिल्कुल उसी तरह पौरोहित्य धारक आज काम करते हैं । आप इस अवसर को अपनी कक्षा के लड़कों को समझने में सहायता के लिए उपयोग कर सकती हैं कि जब वे हारूनी पौरोहित्य को प्राप्त करते हैं, वे प्रभुभोज सभा में मसीह का प्रतिनिधित्व करने के अधिकार को प्राप्त करेंगे ।

यदि कोई बच्चा पूछता है कि हम प्रभुभोज के लिए दाखरस के स्थान पर पानी का उपयोग क्यों करते हैं, उन्हें सिद्धांत और अनुबंध २७:१–२ को पढ़ने के लिए कहें ।

- बच्चों को सिद्धांत और अनुबंध २०:७७, ७९ पढ़ने दें । ये दो धर्मशास्त्र क्या हैं ? समझाएं कि यीशु ने प्रभुभोज प्रार्थनाओं के लिए शब्दों का प्रकटीकरण दिया था और यह कि उन्हें याजकों को दोहराने का निर्देश दिया था जैसा कि सिद्धांत और अनुबंध में लिखा गया है ।
- जब हम प्रभुभोजा प्रार्थनाओं में "आमीन" कहते हैं और प्रभुभोज को लेते हैं, हम क्या करने की प्रतिज्ञा करते हैं ? उसके बदले में प्रभु हमसे क्या प्रतिज्ञा करता है ? हमारे लिए यीशु को सदैव याद रखना क्यों महत्वपूर्ण है ? उद्धारकर्ता को सदैव याद रखने के लिए आप क्या कर सकते हैं ? (देखें समृद्धि गतिविधि ३) ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. पाठ ६ से बपतिस्मा के अनुबंधों की समीक्षा करें । समझाएं कि प्रभुभोज प्रार्थनाओं में की गई प्रतिज्ञाएं वही प्रतिज्ञाएं हैं जो बपतिस्मा के अनुबंधों में हैं । जब हम प्रभुभोज लेते हैं, हम अपने बपतिस्मा के अनुबंधों को नवीनीकरण करते हैं । आप निम्नलिखित शब्दपट्टियों को दिखा सकता हैं :

मैं प्रतिज्ञा करता हूं
अपने ऊपर मसीह के नाम को लेने के लिए ।
उसे सदैव याद करने के लिए ।
उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए ।

प्रभु मुझसे प्रतिज्ञा करता है कि
मेरे पास उसकी आत्मा सदैव के लिए रहेगी ।

२. बच्चों से पूछें कि क्या उनके नामों को उन्हें किसी विशेष कारण के लिए दिया गया है । उन बच्चों से जिन्हें दूसरों के लिए नाम दिया गया है, इस पर बात करने के लिए कहें कि उस व्यक्ति का नाम लेना किस की तरह हो सकता है । उन बच्चों से जिनके पास विशेष पारिवारिक नाम है यह बताने के लिए पूछें कि उनके प्रति इस नाम का क्या मतलब है । तब बच्चों से उस बारे में बात करें कि यीशु मसीह का नाम अपने ऊपर लेने का क्या मतलब है जब हम यीशु मसीह के अन्तिम दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर का सदस्य बनते हैं । बच्चों की समझने में सहायता करें कि गिरजाघर के सदस्य होने के नाते हमारे काम किसी उस व्यक्ति के प्रति उपयुक्त होने चाहिए जो यीशु मसीह का एक अनुयाई हो ।

३. कक्षा को उन तरीकों को सूची बनाने दें जिससे हम यीशु को दोनों प्रभुभोज के दौरान और अपने नियमित जीवन में याद कर सकते हैं । प्रस्तावों में सम्मिलित हो सकते हैं :

प्रभुभोज के दौरान :

सोचने के लिए कि कैसे उसने हमारे लिए दुःख उठाया और वह मर गया ।
एक प्रभुभोज के गीत के शब्दों को सोचने के लिए ।
यीशु के जीवन से कहानियों को सोचने के लिए (बच्चों को विशेष कहानियों का सुझाव दें) ।
यीशु की शिक्षाओं में से एक को सोचने के लिए जिसे आप जीना आरंभ करना चाहते हैं या जिसे अच्छी तरह से जीना चाहते हैं ।
अपने बपतिस्मा के अनुबंधों को सोचने के लिए ।

अपने नियमित जीवन में:

प्रत्येक दिन यीशु मसीह के नाम में स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करने के लिए ।
आपने माता-पिता का पालन करने के लिए ।
पारिवारिक सदस्यों के प्रति उदार होने के लिए ।
धर्मशास्त्रों को पढ़ने के लिए ।
आज्ञाओं का पालन करने के लिए ।
पवित्र स्थानों में श्रद्धापूर्वक रहने के लिए ।
आवश्यकता में दूसरों की सहायता के लिए ।
अपनी गिरजाघर सभाओं में उपस्थित होने के लिए ।

आप प्रत्येक बच्चे को उन प्रस्तावों को कागज के एक टुकड़े पर लिखने और सप्ताह के दौरान उसे एक स्मरण-पत्र के रूप में रखने के लिए कह सकती हैं ।

४. निम्नलिखित प्रश्नों को पूछने के द्वारा बच्चों के साथ प्रभुभोज के गीतों के उद्देश्यों पर चर्चा करें :

- प्रभुभोज को आशीषित करने के तुरन्त पहले हम एक गीत क्यों गाते हैं ?
- प्रभुभोज का गीत हमें किसके बारे में बताता है ?

बच्चों को प्रत्येक सप्ताह प्रभुभोज की गीतों के शब्दों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करें । आप प्रभुभोज के किसी एक गीत को कक्षा के साथ गा सकती हैं या संगीत का एक टेप सुना सकती हैं जब हर कोई यीशु के बारे में सुनता और सोचता है ।

निष्कर्ष

गवाही

यीशु मसीह और हममें से प्रत्येक के प्रति उसके प्रेम की अपनी गवाही दें । इस बात पर बल दें कि उसको याद रखना हमें सही चुनावों को करने में हमारी सहायता करेगा ताकि हम उसके साथ एक बार फिर से रह सकेंगे । बच्चों को उद्धारकर्ता के बारे में सोचने के लिए कहें जब वे प्रत्येक सप्ताह प्रभुभोज को लेते हैं और उन्हें उस तरह से जीने के लिए प्रोत्साहित करें जैसा कि उन्हें जीना चाहिए ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मरकुस १४:१२–२६ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
३०

गतसमनी में यीशु मसीह

उद्देश्य

बच्चों की उनके मुक्तिदाता, यीशु मसीह के दुःख और उनके पापों के लिए प्रायश्चित के कारण उसके प्रति उनके प्रेम को महसूस करने में सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती २६:३६–४६, लूका २२:४०–४६, यूहन्ना ३:१६, १५:१२–१३, मुसायाह ३:७, और सिद्धांत और अनुबंध १९:१५–१८ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः २ नफी ९:२१–२२, अलमा ३४:९; सिद्धांत और अनुबंध ७६:४१–४२ और *सुसमाचार सिद्धांत,* अध्याय १२ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियांः

क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।

ख. निम्नलिखित शब्दपट्टियांः

प्रायश्चित क्या है ?
हमें प्रायश्चित की आवश्यकता क्यों है ?
हम सब मरेंगे ।
हम सब पाप करेंगे ।
यीसु मसीह हमारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है ।
वह पापरहित है ।
उसके पास मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति है ।

ग. चित्र ७-१, यीशु मसीह है (सुसमाचार कला चित्र किट २४०; ६२५७२), और ७-३०, यीशु गतसमनी में प्रार्थना करता हुआ (सुसमाचार कला चित्र किट २२७;६२१७५) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

बच्चो से पूछें कि क्या उनमें से कोई कक्षा को बताना चाहेगा कि किस तरह से पिछले सप्ताह के पाठ ने प्रभुभोज के दौरान उनकी आराधना को बढ़ाने में सहायता की थी ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों से निम्नलिखित के समान ही एक परिस्थिति की कल्पना करने के लिए कहें (परिस्थिति को जितना संभव हो सके उतना वास्तव बनाते हुए वर्णात्मक बनें) :

दिखावा करें कि आपका परिवार एक रिश्तेदार से मिलने गया है । आप अपने माता-पिता की अवज्ञा करते हैं और उस कमरे में चले जाते हैं जहां जाने से मना किया गया था । संयोग से आपसे एक बहुत मूल्यवान वस्तु टूट जाती है ।

- आप कैसा महसूस करेंगे ?

- आप मालिक से क्या कहेंगे ?
- टूटी हुई चीज के स्थान पर दूसरी वस्तु के लिए आपक क्या करेंगे ?
- आप क्या करेंगे यदि आपके पास उसी के समान दूसरी वस्तु खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे न हों ? आप उसका भूगतान कैसे करेंगे ?

समझाएं कि आपके पिता आपकी सहायता करेंगे क्योंकि वह आपसे प्रेम करते हैं । वह आपको बताते हैं कि यदि आप सच में गलती मानते हैं, आज्ञाकारी हैं, और जितना हो सके उतना भूगतान करते हैं, बाकी की रकम देने के द्वारा वह आपकी सहायता करेंगे ?

- आपको कैसा महसूस होगा ? क्या आप स्वयं ही कीमत को अदा कर सकते थे ? आपके पिता आपकी सहायता करते हैं उसके बारे में आप कैसा महसूस करेंगे ?

समझाएं कि पृथ्वी पर जन्म लेने को चुनने के द्वारा, हममें से प्रत्येक को स्वर्गीय पिता के वापस जाने में समर्थ होने के लिए सहायता की आवश्यकता है ।

बच्चों की समझमें में सहायता करें कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह हमसे प्रेम करते हैं, इसलिए उनके पास हमारी सहायता के लिए एक योजना है जिससे हम अपने स्वयं के लिए कुछ कर सकते हैं । यह पाठ उस योजना के हिस्से के बारे में है; यह उस महान बलिदान के बारे में है जिसे यीशु मसीह ने हमारे पापों के भूगतान के लिए और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए दिया था । यह बलिदान प्रायश्चित कहलाता है । यीशु ही मसीह है का चित्र दिखाएं ।

संक्षिप्त समीक्षा

बच्चों को तीसरे विश्वास के अनुच्छेद को दोहराने दें । तब उनसे हमारे पार्थिव जीवन के उद्देश्य पर और हमारे उद्धार के लिए प्रायश्चित क्यों आवश्यक है, पर समीक्षा करने के लिए कहें । इस समीक्षा की सहायता के लिए, खण्ड "तैयारी" में सूचीबद्ध शब्दपट्टियों का उपयोग करें ।

"प्रायश्चित क्या है ?" (प्रायश्चित यीशु मसीह का स्वीकारा हुआ दुःख का वह काम है जिसे उसने हमारे पापों के लिए सहा था और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए क्रूस पर अपना जीवन दे दिया था) ।

"हमें प्रायश्चित की आवश्यकता क्यों है ?" (बच्चों को स्वर्गीय पिता की योजना को याद दिलाएं । हमने पृथ्वी पर आना और नश्वरता में रहना चुना था । हमारा शारीरिक शरीर किसी न किसी दिन मर जाएगा) ।

"हम सभी मरेंगे" । (हमें अपने आपको शारीरिक मृत्यु से बचाने और पुनरूत्थान को संभव बनाने के लिए एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है) ।

"हम सभी पाप करेंगे" । (पाप करना हमें स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में वापस जाने के अयोग्य बनाता है । जब हम पश्चाताप करते हैं तब हमारे पापों की क्षमा के लिए हमें एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है) ।

"यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है" । (इस बात पर बल दें कि यीशु मसीह ने हमारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता होना स्वीकार किया था; वह हमारे लिए अपने जीवन को देने का इच्छुक था) ।

"वह पापरहित है" । (क्योंकि यीशु मसीह परिपूर्ण था, वही एकमात्र व्यक्ति है जो हमारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता हो सकता था) ।

"उसके पास मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति है" । (क्योंकि यीशु मसीह पापरहित था और परमेश्वर का इकलौता प्रिय पुत्र था, उसके पास मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति थी) ।

कक्षा के साथ यूहन्ना ३:१६ पढ़ें । बच्चों को बताने के लिए आमंत्रित करें कि वे स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बारे में कैसा महसूस करते हैं कि उन्होंने हमें इस अदभूत योजना को प्रदान किया । स्वर्गीय पिता और यीशु के प्रति प्रेम के अपने अहसासों को बताएं और बताएं कि किसी दिन उनके साथ रहने के लिए वापस जाना आप कितना पसंद करती हैं ।

धर्मशास्त्र विवरण

यीशु गतसमनी में प्रार्थना करता हुआ के चित्र को दिखाएं । बच्चों को मत्ती २६:३६–४६, लूका २२:४०–४६, और सिद्धांत और अनुबंध १९:१६–१८ में पाये जाने वाले विवरण यीशु गतसमनी में, की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । समझाएं कि यीशु अपने मिशन को समझ गया था और जानता था कि वह समय आ गया है जब संसार के पाप के प्रति प्रायश्चित के लिए उसे महान व्यथा और दर्द को सहना होगा ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु ने क्या कहा था जब उसने गतसमनी के बगीचे में स्वर्गीय पिता से प्रार्थना किया था ? (मत्ती २६: ३९, ४२, ४४) । यहां तक कि अत्याधिक भयानक दुःख को सहन करना पड़ सकता था फिर भी यीशु स्वर्गीय पिता की योजना के आज्ञापालन के लिए इच्छुक क्यों था ? (उसने अपने पिता से प्रेम किया था और उसमें विश्वास किया था, और उसने हमसे प्रेम किया था) ।

- यीशु के साथ क्या हुआ था जब उसने गतसमनी के बगीचे में प्रार्थना किया था ? (लूका २२:४४; मुसायाह ३:७) । यीशु को साहस देने के लिए कौन दिखाई दिया था ? (लूका २२:४३) ।

- गतसमनी के बगीचे में यीशु ने किसके लिए दुःख सहन किया था ? (सि. और अनु. १९:१६) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु ने क्रूस पर भी सहा था, परन्तु उसका महानतम दुःख गतसमनी के बगीचे में था, जब उसके प्रत्येक रोम से लहू बहा था ।

एल्डर मेरियन जी. रोमनी द्वारा निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें : "उद्धारकर्ता ने.... मेरे व्यक्तिगत पापों के लिए कर्ज अदा किया था । उसने आपके व्यक्तिगत पापों के लिए और प्रत्येक उस जीवित आत्मा के व्यक्तिगत पापों के लिए कर्ज अदा किया था जो कभी भी पृथ्वी पर रहा हो या जो पृथ्वी पर नश्वरता में कभी भी रहेगा" (*Improvement Era*, दिसंबर १९५३, पृष्ठ ९४२–४३) ।

- यीशु का दुःख सहन करना कितना महान था ? (सि. और अनु. १९:१८) ।

- यीशु इन चीजों के लिए दुःख सहने का इच्छुक क्यों था ? (यूहन्ना १५:१२–१३) । यह जानकर आपको कैसा महसूस होता है कि यीशु ने आपके पापों के लिए दुःख उठाया था और प्रायश्चित किया था ? हम यीशु को कैसे दिखा सकते हैं कि हम प्रायश्चित के लिए कृतज्ञ हैं ?

- हमें क्या करना होगा ताकि हमारे पापों की क्षमा मसीह के दुःख के कारण हो ? (पश्चाताप करना, बपतिस्मा लेना, और अपने बपतिस्मा के अनुबंधों को मानना) । यीशु का प्रायश्चित हमें स्वर्गीय पिता के पास वापस जाने में किस तरह से अनुमति देता है ? क्या होगा यदि हम पश्चाताप नहीं करते हैं ? (सि. और अनु. १९:१५–१७) ।

बच्चों की समझने में सहायता करें कि हम मसीह के प्रायश्चित को अपने पापों के पश्चाताप के द्वारा, बपतिस्मा लेने और पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के द्वारा, और यीशु की आज्ञाओं को मानने के द्वारा स्वीकार करते हैं । जब हम इन चीजों को करते हैं, हम क्षमा किए जा सकते हैं और पाप से मुक्ति पा सकते हैं ताकि हम स्वर्गीय पिता के साथ अनन्तता के लिए रह सकते हैं ।

विश्वास के अनुच्छेद

तीसरे विश्वास के अनुच्छेद की समीक्षा करें, उसपर चर्चा करें और उसे याद करने में बच्चों की सहायता करें ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. निम्नलिखित के समान धर्मशास्त्रों की एक सूची तैयार करें (या आप उन्हें चॉकबोर्ड पर लिख सकती हैं) और एक अलग स्तंभ में प्रत्येक धर्मशास्त्र संदेश की एक सूची बनाएं । सन्दर्भों को मिलाएं ताकि वे अनुकूल संदेश के

विरूद्ध में न रहें । एक बच्चे को एक धर्मशास्त्र के तरफ देखने दें, निश्चय करने दें कि उसमें कौन सा संदेश पाया जाता है, और धर्मशास्त्र से उसके उपयुक्त संदेश तक एक पंक्ति खीचें । प्रत्येक बच्चे को ऐसा करने के लिए एक बारी दें ।

मत्ती १६:२१ (यीशु का बलिदान आवश्यक था) ।

यूहन्ना ३:१६ (यीशु पृथ्वी पर आया क्योंकि वह और स्वर्गीय पिता हमसे प्रेम करते हैं) ।

यूहन्ना १०:१७–१८ (यीशु के उसके जीवन को देने और उसे वापस लेने की शक्ति है) ।

१ पतरस १:१९–२० (यीशु को स्वर्ग में हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए चुन लिया गया था) ।

१ यूहन्ना १:७ (यीशु मसीह का प्रायश्चित हमारे पापों को धोता है यदि हम पश्चाताप करते हैं) ।

सिद्धांत और अनुबंध २०:२९ (हम परमेश्वर के राज्य में केवल तभी बचाये जा सकते हैं जब हम अपने पापों का पश्चाताप करते हैं, यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, और बपतिस्मा लेते हैं) ।

२. इच्छानुसार नक्शे का उपयोग करते हुए, बच्चों को निम्नलिखित कहानी सुनाएं:

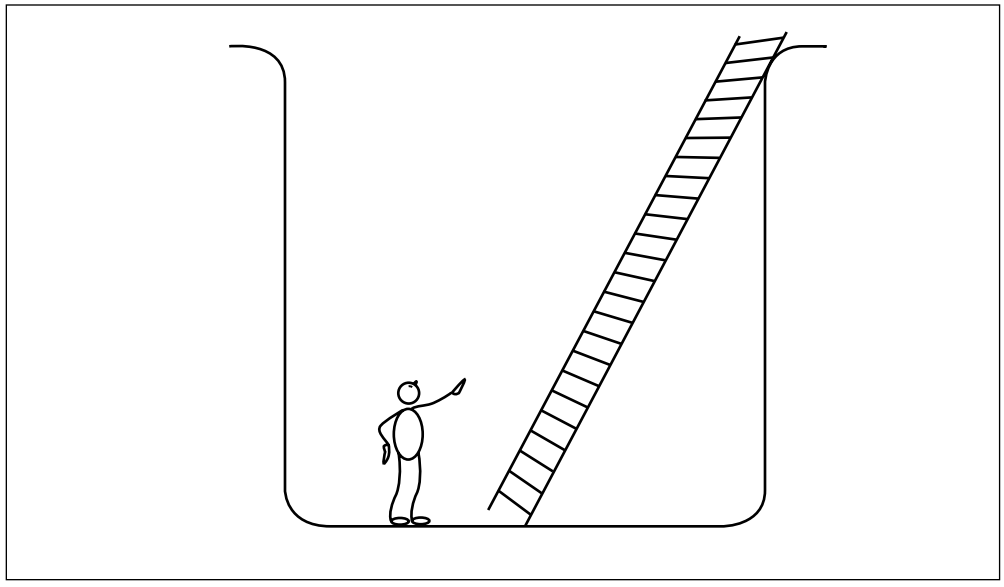

सड़क पर चलता हुआ एक मनुष्य एक इतने गहरे गड्ढे में गिर जाता है कि वह बाहर नहीं आ सकता है । इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसने क्या किया था, वह अपने स्वयं की सहायता से बाहर नहीं आ सकता है । मनुष्य ने सहायता के लिए बुलाया और खुशी मनाई जब एक दयालु राहगीर ने उसे सुना और गड्ढे में नीचे तक एक सीढ़ी को डाला । इससे उसे गड्ढे के बाहर आने और उसकी आजादी को फिर से प्राप्त करने की अनुमति मिली ।

हम गड्ढे में गिरे उस मनुष्य के समान हैं । पाप करना गड्ढे में गिरने के समान है, और हम उससे बाहर अपने आप नहीं आ सकते हैं । जैसे कि दयालु राहगीर ने सहायता के लिए उस मनुष्य की पुकार को सुना था, बिल्कुल उसी तरह स्वर्गीय पिता ने बचने के साधनों को प्रदान करने के लिए अपने इकलौते प्रिय पुत्र को भेजा था । यीशु मसीह के प्रायश्चित की तुलना गड्ढे में सीढ़ी को डालने के साथ किया जा सकता है; यह हमें बाहर आने के साधन को देता है । जैसे कि गड्ढे में गिरा हुआ मनुष्य सीढ़ी पर चढ़कर बाहर आ गया था, बिल्कुल वैसे ही हमें अपने पापों का पश्चाताप करना होगा और अपने गड्ढे से बाहर आने के लिए सुसमाचार सिद्धांतों और धर्मविधियों का पालन करना होगा और अपने जीवन में प्रायश्चित को लागू करना होगा । इसलिए, जिसे हम कर सकते हैं उन सभी को करने के पश्चात, प्रायश्चित हमें स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में वापस जाने के लिए योग्य बनाना संभव करता है ।

३. मुसायाह १४:३–५ और अलमा ७:११–१२ पढ़ें । चर्चा करें कि कैसे प्रायश्चित के द्वारा यीशु मसीह ने केवल हमारे पापों के लिए दुःख सहन ही नहीं किया परन्तु हमारे दर्द, बीमारी, और तकलीफों को भी सहन किया। उसने पूरी तरह से उन चीजों को समझा जिसे पृथ्वी पर हम अनुभव और सहन करते हैं । उसके प्रेम और करूणा के द्वारा, हमारी समस्याओं और चुनौतियों में वह हमारी सहायता करेगा ।

४. बच्चों की यूहन्ना ३:१६ को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

अपनी गवाही दें कि यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है । यीशु और स्वर्गीय पिता के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करें और अपने आभार को व्यक्त करें कि उन्होंने हमें पाप और मृत्यु से बचने और उनके साथ फिर से रहने के लिए एक रास्ता प्रदान किया है ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती २६:३६–४६ और सिद्धांत और अनुबंध १९:१६–१८ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

यीशु मसीह का विश्वासघात, बन्दीगृह और परीक्षा

पाठ
३१

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की यीशु मसीह की उसकी गवाही में साहसी बनने की समर्पणता को मजबूत करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती २६:१४–१६, ४७–२७:३१ और लूका २२:४७–२३:२५ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. निम्नलिखित शब्दों या वाक्यांशों को अलग-अलग कार्ड पर लिखें : *परमेश्वर का पुत्र, उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता, ईश्वरीय, परिपूर्ण, सर्वशक्तिशाली, प्रेमी, सृष्टिकर्ता, शिक्षक, चंगा करनेवाला, ऊपर थूकना, विश्वासघात, झूठा दोष, मारना, प्रहार करना, कोड़ा मारना, बांधना, उपहास, कांटों का ताज, मृत्युदण्ड देना ।*

४. आवश्यक सामग्रियां :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. टेप या कार्ड के प्रदर्शन के लिए कुछ साधन ।
   ग. चित्र ७-३१, यीशु का विश्वासघात (सुसमाचार कला चित्र किट २२८; ६२४६८), और ७-३२, पतरस की अस्वीकृति (सुसमाचार कला चित्र किट २२९; ६२१७७) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

कार्ड को मिलाएं जिसे आपने तैयार किया है और उनके सामने का हिस्सा नीचे करते हुए उन्हें एक मेज या फर्श पर रखें । बच्चों को समझाएं कि इनमें से कुछ कार्ड यीशु का वर्णन करते हैं और अन्य उसका वर्णन करते हैं जो उसके साथ उसके जीवन के आखिरी दिनों में किया गया था । बच्चों को एक कार्ड चुनने, उसे पढ़ने, और उसे एक या दो ढेर में रखने के लिए बारी लेने दें । पहले ढेर में उन्हें उन शब्दों को रखना होगा जो यीशु को वर्णन करते हों, और दूसरे ढेर में उन्हें उन शब्दों को रखना होगा जो बताते हैं कि उसके जीवन के आखिरी दिनों में उसके साथ क्या किया गया था ।

उन घटनाओं की संक्षिप्त में समीक्षा करें जो गतसमनी के बगीचे में घटी थीं और बच्चों को बताएं कि इस पाठ में वे उन घटनाओं के बारे में जानेंगे जो गतसमनी में यीशु की प्रार्थना के पूरा होने के शीघ्र पश्चात घटी थीं ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को यीशु के साथ हुए विश्वासघात, बंदीगृह, और परीक्षा के विवरण की शिक्षा दें (मत्ती २६:१४–१६, ४७–२७:३१ और लूका २२:४७–२३:२५) । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों से उन शब्दों को सुनने के लिए कहें जो वर्णन करते हैं कि यीशु के साथ क्या हुआ था । उनकी समझने में सहायता करें कि इस प्रताड़ना से अपनी सुरक्षा के लिए यीशु अपनी शक्ति का उपयोग कर सकता ता, परन्तु वह जानता था कि यह उस दुःख का हिस्सा था जिसे उसके पार्थिव मिशन को पूरा करने के लिए और प्रायश्चित को पूरा करने के लिए उसे अंत तक सहना था (देखें मुसायाह १५:५) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु के साथ विश्वासघात किसने किया था ? (मत्ती २६:१४–१६) । यहूदा ने उसका विश्वासघात कैसे किया था ? (मत्ती २६:४८) । यहूदा का क्या हुआ था ? (मत्ती २७:३–५) ।
- यीशु ने अपने प्रेरितों को उसे बचाने से क्यों रोका ? (मत्ती २६:५१–५४; लूका २२:४९–५१) । आपके विचार से उसके चेलों ने क्या पाठ सीखा जब यीशु ने घायल मनुष्य के कान को चंगा किया ? आपके विचार से प्रेरित क्यों भाग गए और यीशु को अकेला छोड़ दिया ? (मत्ती २६:५६) । आपके विचार से आपने क्या किया होता यदि आप वहां होते ?
- अपनी परीक्षा के दौरान यीशु ने उसपर दोष लगाने वालों को उत्तर क्यों नहीं दिया ? (मत्ती २६:६२–६३; २७:१२–१४; लूका २३:९) । (देखें समृद्धि गतिविधि ३) । समझाएं कि जब यीशु से पूछा गया कि क्या वह ही मसीह, परमेश्वर का पुत्र, या यहूदियों का राजा है, उसने उत्तर दिया (देखें मत्ती २६:६३–६४; २७:११) । संकेत करें कि यीशु ने न तो अपनी पहचान को अस्वीकारा था और ना ही अपने अपाको बचाने की कोशिश की थी । यीशु जानता था कि पृथ्वी पर उसके काम को पूरा करने के लिए उसे क्रूस पर लटकाया जाना था ।
- ध्यान गतिविधि में सूचीबद्ध उन शब्दों को फिर से देखें जो वर्णन करते हैं कि लोगों ने यीशु के साथ क्या किया था । जब आप इन शब्दों को पढ़ते हैं तब आप क्या सोचते हैं ? आप उन भयानक चीजों के बारे में कैसा सोचते हैं जिसे लोगों ने यीशु के साथ किया था ? आपके यीशु मसीह में विश्वास करने के कारण या गिरजाघर जाने के कारण क्या कभी भी कोई आपके प्रति निष्ठुर रहा है ? आपने क्या किया था ?
- पतरस ने कितनी बार यीशु को पहचानने से इन्कार किया था ? (लूका २२:५४–६०) । आपके विचार से पतरस ने ऐसा क्यों किया था ? पतरस ने कैसा महसूस किया था जब उसने जाना कि उसने क्या किया था ? (लूका २२:६१–६२) । बच्चों सी समझने में सहायता करें कि तब तक पतरस ने पवित्र आत्मा का उपहार नहीं प्राप्त किया था । पतरस एक महान पुरूष था और बाद में गिरजाघर का अध्यक्ष बना था और अपनी गवाही के लिए अपनी जीवन दे दिया था । किसी भी प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हुए यीशु मसीह की अपनी गवाही में हम कैसे साहसी हो सकते हैं ? (देखें समृद्धि गतिविधि ५) ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. प्रत्येक बच्चे को यीशु के एक गुण या विशेषता का नाम बताने दें जिसकी वे विशेष रूप से प्रशंसा करते हैं ।

२. पहले और तीसरे विश्वास के अनुच्छेद की समीक्षा करें । बच्चों की समझने में सहायता करें कि ये विश्वास के अनुच्छेद हमें यीशु मसीह के ईश्वरत्व और उसके काम के महत्व को याद दिलाते हैं ।

३. निम्नलिखित शब्दों या चिन्हों को रखें : *काइफा, पीलातुस, और हेरोदेस* । इन चिन्हों को तीन बच्चों को दें और समझाएं कि इनमें से प्रत्येक शासक के पास देश के प्रति विभिन्न जिम्मेदारी थी । "शासकों" को कक्षा में विभिन्न स्थानों पर खड़ा कर दें और बाकी की कक्षा को ुनसे मिलने जाने दें जब तीन बच्चे निम्नलिखित भाषणों को पढ़ते हैं । या उन तीन बच्चों को कक्षा के सामने खड़े होकर उनके भाग को पढ़ने दें :

काइफा : मेरा नाम काइफा है । मैं यहूदी महायाजक हूं, जिसका मतलब है कि मैं यहूदियों का धार्मिक नेता हूं । मैं यीशु को मृत्युदण्ड देना चाहता था, परन्तु मुझे रोम के नेता से स्वीकृति लेनी थी, इसलिए मैंने उसे पीलातुस के पास भेज दिया ।

पीलातुस : मेरा नाम पिन्तुस पीलातुस है । मैं रोम का राज्यपाल हूं, जिसका मतलब है कि मैं यहूदिया का राजनीतिक नेता हूं । यहूदी चाहते थे कि मैं यीशु को मृत्यु दूं, परन्तु मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया । मैंने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया ।

हेरोदेस : मेरा नाम हेरोदेस है । मैं एक यहूदी हूं और रोम में रहने वालों ने मुझे गलील का एक राजा बनाया है । पीलातुस ने यीशु को मेरे पास भेजा क्योंकि मैं उस क्षेत्र का राजा हूम जहां यीशु बड़ा हुआ था । मैं यीशु नामक इस मनुष्य को देखने के लिए उत्साहित हूं । मैंने उसके बारे में सुना था और उसे एक चमत्कार करता हुआ देखना चाहता था, परन्तु उसने मुझसे बात करने से या मेरे प्रश्नों का उत्तर देने से मना कर दिया । मैंने उसे वापस पीलातुस के पास भेज दिया ।

पीलातुस : मैं अब भी इस मनुष्य में मृत्युदण्ड के लिए कोई कारण नहीं खोज सका, परन्तु लोगों ने आग्रह किया । अंततः मैंने उसे लोगों को दे दिया यह बताते हुए कि मुझे इसमें कोई दोष नहीं मिला और लोगों को उसे क्रूसारोहण के लिए ले जाने दिया ।

तीनों बच्चों के उनके स्थान पर वापस चले जाने के पश्चात, चर्चा करें कि यीशु के लिए इन तीनों में से प्रत्येक के समक्ष जाना और उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना कैसा रहा होगा ।

४. कुछ परिस्थितियों को कागज की पर्चियों पर लिखें, जैसे कि निम्नलिखित, जिनका सामना करना बच्चों के लिए कठिन हो सकता है (उन परिस्थितियों का उपयोग करें जो आपकी कक्षा के लिए उपयुक्त होगा) :

गिरजाघर जाने के कारण कोई आप पर हंसा है ।

कोई आपको कुछ मादक पदोर्थों को देने या एक सीगरेट पीने के लिए बात करने की कोशिश करता है ।

आप विद्यालय के एक साथी को किसी दूसरे बच्चे के प्रति मतलबी होते हुए देखते हैं ।

आपके असदस्य मित्र आपको आपके विश्वासों को समझाने के लिए कहते हैं ।

विद्यालय का एक साथी अपने आपको मुसीबत से दूर रखने के लिए आपसे एक झूठ बोलने के लिए कहता है ।

बच्चों को एक पर्ची लेने और उसे पढ़ने के लिए एक पारी लेने दें । कक्षा को प्रत्येक परिस्थिति पर चर्चा करने दें और निश्चय करने दें कि किसे करना सही होगा । इस बात पर बल दें कि कभी-कभी यीशु मसीह की हमारी गवाही के प्रति साहसी होना कठिन होता है, परन्तु जब हम ऐसा करते हैं तब महानता से आशीषित होंगे ।

५. प्रत्येक बच्चे को एक या दो कार्ड दें जो यीशु का वर्णन करता हो (आप अन्य शब्दों या वक्यांशों का भी उपयोग कर सकती हैं जो यीशु का वर्णन करते हों) । बच्चों से अपको बताने के लिए कहें कि जब उन्होंने उनके कार्ड पर लिखे शब्दों को पढ़ा तब उन्होंने क्या सोचा था । उन्हें उनके मन में निश्चय करने के लिए कहें कि क्या वे वास्तव में जानते हैं कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र, उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता, इत्यादि है । बच्चों को विस्तार में बताने के लिए आमंत्रित करें कि किस तरह से यीशु मसीह की गवाही के इस ज्ञान ने उन्हें आशीषित किया है ।

निष्कर्ष

गवाही

यीशु मसीह के ईश्वरत्व की अपनी गवाही दें, और बच्चों को बताएं कि यह गवाही आपके लिए कितनी महत्वपूर्ण है । यीशु के इच्छुक दुःख और मृत्यु के प्रति अपने आभार को व्यक्त करें ताकि हम पुनरूत्थारित हो सकें और अनन्त जीवन पा सकें ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती २६:४७–५४ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
३२

यीशु मसीह का क्रूसारोहण और उनके जीवन

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की गवाही को मजबूत करना कि यीशु के मरने के कारण हम सब फिर से जिएंगे ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती २७:३२–६६, लूका २३:२६–५६, और यूहन्ना १०:१७–१८, १९:१३–४२ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मरकुस १५:२०–४७ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियांः
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. मॉरमन की पुस्तक की एक प्रति ।
   ग. चित्र ७-३३, क्रूसारोहण (सुसमाचार कला चित्र किट २३०; ६२५०५); ७-३४, यीशु की दफन-क्रिया (सुसमाचार कला चित्र किट २३१; ६२१८०); और ७-३५, यीशु की कब्र (सुसमाचार कला चित्र किट २३२; ६२१११) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

निम्नलिखित कहानी बच्चों को बताएं :

सर्दी के मौसम में एक ठंडे दिन पर एक हवाई जहाज वॉशिंगटन डी.सी. में एक पुल से टकरा गई और बर्फीले पोटोमैक नदी में डूब गई । कई लोगों की मृत्यु हो गई थी, परन्तु छः लोग जहाज की पूंछ पर लटक रहे थे जब हेलीकॉप्टर के लोगों ने एक जीवन रक्षक फेंका था । पानी बहुत ठंडा था, और जहाज पर लटके रहना बहुत कठिन था । इन लोगों को डर था कि जब तक जीवन रक्षक में जाने और वहां से सुरक्षित निकले की उनकी बारी आएगी तब तक शायद वे मर जाएं ।

हर बार जब बचाने वाले जीवन रक्षक को एक मनुष्य के पास नीचे करते थे, वह उसे किसी और के तरफ कर देता था ताकि दूसरे व्यक्ति को पहले बचाया जा सके । उसने यह तब तक किया जब तक कि सभी को बचा न लिया गया, परन्तु वह तब तक और नहीं पकड़ सका । जब हेलीकॉप्टर उसे लेने के लिए वापस आया, वह नीचे पानी में गिर चुका था । वह मर चुका था इससे पहले कि कोई उसे बचाता ।

- आपके विचार से यह मनुष्य जीवन रक्षक को अन्यों के तरफ क्यों देता रहा था ? आपने कैसा महसूस किया होता यदि आप उन लोगों में से एक होते जिन्हें इस मनुष्य ने बचाया था ?

उस साहस और प्रेम के बारे में अपने अहसासों को व्यक्त करें जो दूसरों के प्रति अपने जीवन को देने में समर्थ होने के लिए है जैसा कि इस मनुष्य ने किया था ।

बच्चों को समझाएं कि इस पाठ में वे क्रूस पर यीशु की तकलीफ और दुःखों के बारे में जानेंगे । उसने इच्छानुसार अपने जीवन को दे दिया था ताकि प्रत्येक व्यक्ति जो कभी भी जीवित रहा हो, या कभी भी जीएगा, हमारे प्रति उसके महान प्रेम के कारण वे फिर से जीवित होंगे ।

संक्षिप्त समीक्षा

बच्चों को उस परिस्थिति को याद दिलाएं जिसमें आदम और हव्वा और उनकी पीढ़ियों को रखा गया था जब उन्होंने अदन बाटिका में मना किए हुए फल को खाया था । आदम और हव्वा के उल्लंघन के कारण, उनके शरीर नश्वर बन गए थे । इसका मतलब यह था कि किसी दिन उनके शरीरों की मृत्यु होगी । आदम और हव्वा की पीढ़ी के रूप में, हम सभी की मृत्यु होगी जैसे कि उनकी हुई थी ।

गवाही दें कि शारीरिक मृत्यु स्वर्गीय पिता की योजना का हिस्सा है और यह कि स्वर्गीय पिता, अपनी महान करूणा में, अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा । मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा, हम सभी को शारीरिक मृत्यु से बचा लिया गया है । हम मरेंगे, परन्तु हमारा पुनरूत्थान होगा (देखें यूहन्ना ३:१६–१७; इलामन १४:१५) ।

पहले के पाठों से यीशु के दुःख सहन करने, उसके साथ किए गए विश्वासघात, उसका बंदीगृह, और उसकी परीक्षा की घटनाओं पर संक्षिप्त में समीक्षा करें ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को मत्ती २७:३२–६६ में पाये जाने वाले यीशु के क्रूसारोहण और दफनाये जाने के विवरण की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । लूका २३:३४, ३९–४३ और यूहन्ना १९:१९–२२, २५–२७, ३४. ३९ को भी देखें । उपयुक्त समय पर चित्रों का उपयोग करें ।

इस पाठ के विषयों की शिक्षा में सहायता के लिए आप निम्नलिखित सूची को भी देख सकती हैं ।

१. शमौन, एक कुरेनी मनुष्य ने यीशु के क्रूस को उठाया था (मत्ती २७:३२) ।

२. यीशु को दो डाकुओं के बीच क्रूस पर लटकाया गया था (मत्ती २७:३३–३८; लूका २३:३२–३३) ।

३. पीलातुस ने एक शीर्षक लिखा और उसे क्रूस पर लगा दिया (यूहन्ना १९:१९–२२) ।

४. यीशु का उपहास किया गया था (मत्ती २७:३९–४४) ।

५. यीशु ने डाकुओं से बात किया था (लूका २३:३९–४३) ।

६. यीशु ने यूहन्ना से उसकी मां की देखभाल करने के लिए कहा था (यूहन्ना १९:२५–२७) ।

७. अंधकार ने पृथ्वी को ढंक लिया था (मत्ती २७:४५–४६) ।

८. यीशु मसीह मर गया था (मत्ती २७:५०–५६) । रोम के सिपाहियों ने उसके पंजर को छेदा था (यूहन्ना १९:३४) ।

९. यीशु के शरीर को एक कब्र में रखा गया था (मत्ती २७:५७–६१; यूहन्ना १९:३८–४२) ।

१०. पहरेदारों को कब्र की रखवाली के लिए भेजा गया था (मत्ती २७:६२–६६) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यीशु की परीक्षा के पश्चात, पीलातुस ने क्या किया था ? (मत्ती २७:२६) । कोड़े मारने (चाबुक मारना) का क्या मतलब है ? क्रूस पर चढ़ाने का क्या मतलब है ? (क्रूस पर हाथों और पैरों को कील से ठोंकने या उन्हें बांधने के द्वारा मृत्यु देना) । समझाएं कि क्रूसारोहण एक धीमी और दर्दभरी मृत्यु है जिसे अक्सर बंधकों को और निम्न स्तर के अपराधियों को दिया जाता था ।

- जिस स्थान पर यीशु का क्रुसारोहण हुआ था उसके कौन से दो नाम थे ? (मत्ती २७:३३; लूका २२:३३) ।

- किसे साथ यीशु का क्रूसारोहण हुआ था ? (मत्ती २७:३८; लूका २३:३३) ।

- सिपाहियों ने यीशु को पीने के लिए क्या दिया ? (मत्ती २७:३४) । समझाएं कि दाखरस और पित्त को एक दवाई के रूप में मरने वाले को दिया जाता था ताकि वह मदहोशी में रहते हुए दर्द को सह सकें । बच्चों की

समझने में सहायता करें कि यीशु ने इस मिश्रण को पीने से मना कर दिया था क्योंकि वह पूरी तरह से सचेत रहना चाहता था और जानना चाहता था कि उसने प्रायश्चित के काम को पूरा कर दिया था ।

- स्वर्गीय पिता ने यीशु से किसे क्षमा करने के लिए कहा था ? (लूका २३:३४, इस आयत का जोसफ स्मिथ अनुवाद संकेत करता है कि यीशु उन सिपाहियों को सन्दर्भ कर रहा था जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था) । आपके विचार से यह महत्वपूर्ण क्यों था कि यीशु सिपाहियों को क्षमा करे ? यह महत्वपूर्ण क्यों है कि हम क्षमा करने वाले बनें ? जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं तब हम कैसे आशीषित होते हैं ?

- जब यीशु को क्रूस पर लटकाया गया था तब वे कुछ लोग कौन थे जिन्होंने उसका उपहास और अपमान किया था ? (मत्ती २७:३९–४४) । उन्होंने कौन सी कुछ चीजें उसे कही थीं ? यीशु ने कैसे उत्तर दिया था ? (१ नफी १९:९) । हमें किस तरह उत्तर देना चाहिए जब कोई हमें कुछ बुरी बातें कहता है ?

- यीशु के प्रति दो डाकुओं ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई थी ? (लूका २३:३९–४३) । दूसरे डाकू ने ऐसा क्या कहा था जिससे उसका पश्चाताप करना प्रतीत होता था ? (लूका २३:४०–४२) । यीशु ने क्या जवाब दिया था ? (लूका २३:४३) ।

- क्रूस पर दुःख सहते समय यीशु ने अपनी माता के प्रति प्रेम कैसे व्यक्त किया था ? (यूहन्ना १९:२५–२७) । यह हमें यीशु के बारे में क्या सीखाता है ?

- पृथ्वी पर अंधेरा कब तक छाया रहा ? (मत्ती २७:४५) । यीशु ने क्या पुकारा ? (मत्ती २७:४६) । क्या परमेश्वर ने वास्तव में अपने पुत्र को क्षमा किया था ? समझाएं कि स्वर्गीय पिता ने कुछ समय के लिए अपनी आत्मा को हटा लिया था ताकि यीशु पाप और मृत्यु पर स्वयं ही अपनी विजय को पूरा कर सके ।

- इसका क्या मतलब है कि यीशु ने "प्राण छोड़ दिया" ? (केवल एक ही तरीके से यीशु मर सकता था और वह था उसकी आत्मा को शरीर से अलग करना । धर्मशास्त्र पुष्टि करता है कि उसने अपनी जीवन अपनी इच्छानुसार दे दिया था; इसे उससे लिया नहीं गया था) । बच्चों को यूहन्ना १०:१७–१८ पढ़ने दें । आपके विचार से यीशु अपने जीवन को देने का इच्छुक क्यों था ?

- यीशु की मृत्यु के समय कौन सी चमत्कारी घटनाएं घटी थीं ? (मत्ती २७:५१–५३) । "फटकर दो टुकड़े होना" का क्या मतलब है ? (आधे से फटना) । सूबेदार (रोमियों की सेना का एक अधिकारी) ने क्या गवाही दी जब उसने देखा कि क्या हुआ था ? (मत्ती २७:५४) ।

- अरिमतियाह का यूसुफ कौन था ? (मत्ती २७:५७) । उसके क्या किया था ? (मत्ती २७:५८–६०) ।

- फरीसियों ने पीलातुस से क्या करने के लिए कहा ? (मत्ती २७:६२–६६) । वे क्यों चाहते थे कि कब्र की पहरेदारी की जाए ? उनके प्रयासों से कुछ क्यों नहीं हुआ था ? यह हमें मनुष्य की शक्ति और प्रभु की शक्ति के बारे में क्या सीखाता है ?

सार चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

आदम और हव्वा के उल्लंघन और एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता के बीच के संबंध को समझने में बच्चों की सहायता के लिए आप निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग कर सकती हैं ?

- अदन बाटिका में आदम और हव्वा ने स्वर्गीय पिता की आज्ञाओं मे से एक का उल्लंघन कैसे किया था ? (उन्होंने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाया था) । इस उल्लंघन का क्या परिणाम हुआ था ? (उन्हें बाटिका छोड़ना पड़ा था । वे नश्वर हो गए थे और बच्चे पैदा कर सकते थे । उन्हें और उनकी सभी पीढ़ियों को मरना था । यह स्वर्गीय पिता की योजना का हिस्सा था) ।

- हमारे शरीरों और आत्माओं का क्या होता है जब हम मर जाते हैं ? (आत्मा शरीर को छोड़कर आत्मा के संसार में चली जाती है; शरीर जोकि बिना आत्मा के जीवनरहित हो जाता है, अक्सर पृथ्वी में दफना दिया जाता है) । हम अपने शरीरों को आत्माओं से मिलाने के लिए क्या कर सकते हैं ? (कुछ नहीं; क्योंकि हम नश्वर हैं, हमारे पास स्वयं ही शरीरों और आत्माओं को मिलाने की शक्ति नहीं होती है) ।

- इस आशारहित परिस्थिति से बाहर आने के लिए किसने इसे हमारे लिए संभव बनाया था ? यीशु ही वह एकमात्र मनुष्य क्यों था जो हमें बचा सकता था ? (वह पापरहित था; वही मांस के शरीर में स्वर्गीय पिता का इकलौता पुत्र था और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति केवल उसी के पास थी) । यह जानकर आपको कैसा महसूस होता है कि कोई तो है जो आपकी और आपके परिवार की पुनरूत्थारित होने में सहायता कर सकता है ?

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. एक सारणी या चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को सूचीबद्ध करें । बच्चों को बताएं कि प्रत्येक धर्मशास्त्र में एक अभिलेखित वक्तव्य पाया जाता है जिसे यीशु ने कहा था जब उसे क्रूस पर लटकाया जा रहा था । बच्चों को वक्तव्यों को पढ़ने दें और बताने दें कि कौन सी शक्ति या विशेष व्यवहार थी जिसकी सहायता से यीशु ने ऐसा कहा था या किया था ।

लूका २३:३४ (वह दयालु और क्षमा करनेवाला था) ।
लूका २३:४३ (उसके पास भविष्य बताने की शक्ति थी कि क्या होगा) ।
यूहन्ना १९:२६–२७ (वह अपनी माता से प्रेम करता था और उसे उसकी चिन्ता थी) ।
मत्ती २७:४६ (उसने अपने पिता पर अपनी निर्भरता को व्यक्त किया था) ।
लूका २३:४६ (वह स्वर्गीय पिता की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी था) ।
यूहन्ना १९: ३० (उसने स्वर्गीय पिता की योजना को पूरा किया था) ।

२. इन लोगों के नाम को या लोगों के दलों के नाम को चॉकबोर्ड पर सूचीबद्ध करें जिनके बारे में यीशु की मृत्यु और दफानाने के धर्मशास्त्र विवरण में बताया गया है । बच्चों से पूछें कि उन्हें प्रत्येक व्यक्ति या दल के बारे में क्या याद है । बच्चों की उसे भाग को पहचानने में सहायता करें जिसे इनमें से प्रत्येक ने निभाया था ।

यीशु मसीह
पीलातुस
कुरेनी का शमौन
सिपाही
उपहास करने वाले
दो डाकू
मरियम, यीशु की माता
प्रिय यूहन्ना
सूबेदार
अरिमतियाह का यूसुफ

३. दूसरे विश्वास के अनुच्छेद पर चर्चा करें और उसे याद करने में बच्चों की सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

क्रूस पर यीशु हमारे लिए मर गया था, उस महान बलिदान के लिए अपने आभार को व्यक्त करें । गवाही दें कि हमारे प्रति उसके महान प्रेम के कारण हम पुनरूत्थारित होंगे और फिर से जीएंगे ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती २७:३४–५० का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
३३

यीशु मसीह का पुनरूत्थान

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की समझने में सहायता करना कि यीशु मसीह मृत्यु से पुनरूत्थारित हुआ था और यह कि हम सभी पुनरूत्थारित होंगे ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती २७:५२–५३; २८:१–१५; लूका २४; यूहन्ना २०; प्रेरितों के काम १:३, ९–११; और १ कुरिन्थियों १५:५–६, २२ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मरकुस १६ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियां :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. प्रत्येक पर निम्नलिखित शब्द या वाक्यांश लिखे हुए कागज के टुकड़े : उज्जवल चादर, सुगन्धित वस्तुएं, बगीचा, सिपाही, चट्टान ।
   ग. चित्र ७-३५, यीशु की कब्र (६२१११); ७-३६, मरियम और पुनरूत्थारित प्रभु (सुसमाचार कला चित्र किट २३९; ६२१८७) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

सूचीबद्ध कागज के टुकड़ों को "तैयारी" खण्ड में एक बर्तन में रखें, और बच्चों को कागज का एक टुकड़ा चुनने की बारी लेने दें । जो सूचीबद्ध है उसका वर्णन करने के लिए उनसे कहें, और फिर उनसे पूछें कि क्या वे बता सकते हैं कि वह शब्द या वाक्यांश किस तरह से यीशु के दफनाने से संबंधित है । पर्याप्त मात्रा में शब्दों या वाक्यांशों का उपयोग करें ताकि प्रत्येक बच्चे को एक बारी मिल सके ।

बच्चों से यीशु के क्रूसारोहण और दफन-क्रिया के बाद वाली रविवार की सुबह की कल्पना करने के लिए कहें । उन्हें कल्पना करने दें कि वे वह चेले हैं जो यीशु की मृत्यु का दुःख मना रहे हैं । उन्होंने आशा किया था यीशु उन्हें रोम के शासन से बचाएगा और शक्ति और महिमा में पृथ्वी पर उसके राज्य को स्थापित करेगा । परन्तु अब वह मर चुका है । बच्चों को बताएं कि आप उसपर चर्चा करने जा रही हैं जो यरूशलेम में उस रविवार की सुबह हुआ था ।

धर्मशास्त्र विवरण

उपयुक्त समय पर चित्रों का उपयोग करते हुए, बच्चों को मत्ती २७:५२–५३, २८:१–१५, लूका २४, और यूहन्ना २० में पाये जाने वाले यीशु के पुनरूत्थान के विवरण की शिक्षा दें (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । समझाएं कि यद्यपि यीशु ने कई बार अपने चेलों से कहा था कि अपनी मृत्यु के पश्चात वह फिर सी जविति होगा, उसके अनुयाई वास्तव में समझ नही सके थे कि उसका क्या मतलब था । इससे पहले कभी भी कोई पुनरूत्थारित नहीं हुआ था, और वे नहीं समझ सकें थे कि यीशु कैसे वापस जीएगा । यहां तक कि जब उसके चेलों ने दूतों से सुना कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है और जीवित प्रभु को देखा भी, तब भी जो हुआ था उसे समझना उनके लिए कठिन था ।

चर्चा और लागू हाने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- रविवार की सुबह मरियम मगदलीनी और अन्य स्त्रियां कब्र पर क्यों आई थीं ? (मरकुस १६:१) । स्त्रियों ने किसे देखा जब वे कब्र पर पहुंचीं ? (लूका २४:४) । दूतों ने स्त्रियों से क्या कहा ? (लूका २४:५–६) । पुनरूत्थारित होने का क्या मतलब है ? (एक आत्मा का शरीर उसके मांस और हड्डी वाले शरीर से दुबारा मिलता है, कभी भी फिर से अलग न होने के लिए) ।

- खाली कब्र देखने के पश्चात स्त्रियों ने क्या किया ? (लूका २४:८–१२) । चेलों ने स्त्रियों के उस विवरण पर विश्वास क्यों नहीं किया जिसमें उन्होंने बताया था कि दूतों ने क्या कहा था ? (लूका २४:११; यूहन्ना २०:९) । आपके विचार से आपने क्या सोचा होता यदि आप चेलों में से एक होते और इस समाचार को सुना होता ?

- पतरस और दूसरे चेले ने क्या देखा जब वे कब्र पर पहुंचे ? (यूहन्ना २०:३–७ । समझाएं कि "दूसरा चेला" शायद यूहन्ना था) । उन्होंने क्यों विश्वास किया कि यीशु मसीह पुनरूत्थारित हो चुका था ? (यूहन्ना २०:८) ।

- मरियम तब भी दु:खी क्यों थी जब दूतों ने उसे बताया कि यीशु जी उठा है ? (यूहन्ना २०:११–१३) । किस चीज से मरियम को जानने में सहायता हुई कि यीशु पुनरूत्थारित हुआ था ? (यूहन्ना २०:१४–१६) । यीशु ने उससे उसे छुने से मना क्यों किया ? (यूहन्ना २०:१७) ।

- जिस दिन यीशु पुनरूत्थारित हुआ था उस दिन और कौन पुनरूत्थारित हुआ था ? (मत्ती २७:५२–५३) । आपके परिवार में कौन पुनरूत्थारित होंगे ? और कौन पुनरूत्थारित होंगे ? (१ कुरिन्थियों १५:२२) ।

- कब्र खाली थी इस बात को समझाने के लिए महायाजकों ने कौन सी कहानी गढ़ी थी ? (मत्ती २८:११–१५) । सिपाही इस कहानी को बताने के लिए क्यों मान गए थे जबकि उन्होंने दूतों को देखा था ? (मत्ती २८: १२, १५) ।

- उस दिन चेलों के साथ इम्माऊस के नगर पर कौन चला था जिस दिन यीशु का पुनरूत्थान हुआ था ? (लूका २४:१३–१६) । चलते समय उन तीन लोगों ने किसके बारे में बात किया था ? (लूका २४:१७–२७) । इन चेलों ने अपने हृदयों में कैसा महसूस किया जब उन्होंने यीशु से बात किया ? (लूका २४:३२) । उनके हृदयों मे किसके कारण उत्तेजना हुई ? (पवित्र आत्मा) । आप या आपके पारिवारिक सदस्यों ने आत्मा द्वारा प्रेरणा कैसे प्राप्त किया है ?

- उस दिन की शाम को यीशु ने क्या किया जिस दिन वह पुनरूत्थारित हुआ था ? (लूका २४:३६–४८) । चेलों को जब यीशु दिखाई दिया तब उन्होंने दरवाजा क्यों बंद कर दिया था ? (यूहन्ना २०:१९) । चेलों ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई जब उन्होंने यीशु को देखा ? (लूका २४:३७) । सिद्ध करने के लिए कि वह पुनरूत्थारित हो चुका है, यीशु ने उसके चेलों के साथ क्या किया ? चेलों ने एक पुनरूत्थारित शरीर के बारे में क्या जाना ? (लूका २४:३९–४३) ।

- थोमा ने क्यों नही विश्वास किया कि यीशु पुनरूत्थारित हो चुका है ? (यूहन्ना २०:२४–२५) । कितने दिन बीत चुके थे जब थोमा ने यीशु को देखा था ? (यूहन्ना २०:२६) । यीशु ने थोमा से क्या कहा जब वह उसे दिखाई दिया था ? (यूहन्ना २०:२९) । आपकी गवाही को कौन मजबूत करता है कि यीशु मसीह पुनरूत्थारित हो चुका था ?

- अपने पुनरूत्थान के पश्चात यीशु और किसे दिखाई दिया था ? (मत्ती २८:९; १ कुरिन्थियों १५:६) । (पुनरूत्थान के पश्चात यीशु को किस किसने देखा था, उसकी समीक्षा के लिए आप समृद्धि गतिविधि १ का उपयोग कर सकती हैं) ।

- पुनरूत्थान के पश्चात यीशु अपने चेलों के साथ कितने समय तक रहा ? (प्रेरितों के काम १:३) ।

- यीशु स्वर्ग में कैसे उठा लिया गया ? (प्रेरितों के काम १:९–११) । लोगों को समझाने के लिए कौन आया था कि क्या हुआ था ? यह विवरण हमें यीशु के दूसरे आगमन के बारे में क्या सीखाता है ?

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. प्रत्येक बच्चे को निम्नलिखित सूत्रों में से एक दें और उसे इसे कक्षा के लिए पढ़ने को कहें । कक्षा के सदस्यों को प्रत्येक सूत्र से उत्तर का अनुमान लगाने दें । यदि उन्हें उत्तर नहीं पता है, प्रश्न पूछ रहे बच्चे से सन्दर्भ बताने के लिए कहें ताकि बच्चे धर्मशास्त्रों में उत्तर खोज सकें ।

मैं वह पहली व्यक्ति हूं जिसे यीशु पुनरूत्थान के पश्चात दिखाई दिया था । मैं कौन हूं ? (मरियम मगदलीनी । यूहन्ना २०:१, १६) ।

यीशु हमें दिखाई दिया था, और हमने उसके पैरों को छुआ था । हम कौन हैं ? (अन्य स्त्रियां । मत्ती २८:५, ९) ।

मैं पहला प्रेरित था जिसने खाली कब्र में प्रवेश किया था । मैं कौन हूं ? (पतरस । यूहन्ना २०:६) ।

मैं एक प्रेरित हूं जो पतरस के साथ खाली कब्र के तरफ दौड़ पड़ा था । जब मैंने देखा था, मैंने विश्वास किया था कि यीशु पुनरूत्थारित हो चुका था । मैं कौन हूं ? (यूहन्ना । यूहन्ना २०:८) ।

मैं और मेरा मित्र यीशु के साथ इम्माऊस के पूरे नगर में चले थे, तब भी मैंने उसे नहीं पहचाना था । मैं कौन हूं ? (क्लियुपास । लूका २४:१८) ।

यीशु हमें दिखाई दिया था जब एक बंद दरवाजे वाले कमरे में हम एक साथ मिले थे । हम कौन हैं ? (चेले । यूहन्ना २०:१९) ।

मैं अन्य प्रेरितों के साथ नहीं था जब यीशु उन्हें पहले दिखाई दिया था । मैंने तब तक विश्वास नहीं किया कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है जब तक कि मैंने उसे अपने स्वयं की आंखों से उसे नहीं देखा और जब तक कि उसके हाथों और पैरों के निशानों को महसूस नहीं किया । मैं कौन हूं ? (थोमा । यूहन्ना २०:२४) ।

हम वहां उपस्थित थे जब दूतों ने दरवाजे से चट्टान को हटाया था । उच्च याजकों ने हमें उसके बारे में झूठ बोलने के लिए घूस दिया था जिसे हमने देखा था । हम कौन हैं ? (रोम के सिपाही । मत्ती २८:१२) ।

२. चॉकबोर्ड पर एक स्तम्भ में उन शब्दों को लिखें जो बताते हैं कि उस दिन चेलों ने कैसा महसूस किया होगा जिस दिन यीशु की मृत्यु हुई थी...जैसे कि *शोक, दुःख, उदासी, और निराशा* । बच्चों को इन शब्दों के विलोम शब्दों को बताने का सुझाव दें...जैसे कि *प्रसन्नता, आनन्द, आशा, और विश्वास*...और उन्हें दूसरे स्तम्भ में लिखें । समझाएं कि ये वे अहसास हैं जिसे शायद चेलों ने महसूस किया होगा जब उन्होंने जाना कि यीशु पुनरूत्थारित हो चुका था । चर्चा करें कि पुनरूत्थारित होने की आशा का हममें से प्रत्येक के लिए क्या मतलब है ।

३. प्राथमिक अध्यक्षता की अनुमति के साथ, प्रार्थनापूर्वक गिरजाघर के उस सदस्य को चुनें और बच्चों को बताने के लिए आमंत्रित करें जिसके किसी प्रिय की मौत हो चुकी हो कि उसके लिए पुनरूत्थान का क्या मतलब है ।

निष्कर्ष

गवाही

उद्धारकर्ता के पुनरूत्थान और आपके लिए इसके महत्व के बारे में अपने अहसासों को व्यक्त करें । गवाही दें कि बगीचे में यीशु का दुःख, उसकी मृत्यु, और उसका पुनरूत्थान उन सभी चीजों में से अत्याधिक महत्वपूण चीजें हैं जो कभी भी पृथ्वी पर हुई हों ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में लूका २४ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

मेरी भेड़ों की रखवाली करो

पाठ
३४

उद्देश्य

दूसरों को सुसमाचार समझाने और उसे जीने में सहायता करने के द्वारा यीशु मसीह के प्रति प्रेम व्यक्त करना सीखने में बच्चों की सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक यूहन्ना २१:१–१७ और मरकुस १६:१५ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आपकी कक्षा के प्रत्येक बच्चे के लिए एक भेड़ के छोटे से चित्र का कतरन लाएं (नमूने के लिए पाठ के अन्त को देखें), और कतरन पर प्रत्येक बच्चे का नाम लिखें । (या कागज के अलग-अलग टुकड़ों पर बच्चों के नाम लिखें) । कक्षा के समक्ष कतरनों को कमरे के आस-पास रखें ताकि बच्चे उन्हें देख सकें ।

४. आवश्यक सामग्रियां :
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. चित्र ७-३८, यीशु और मछुआरे (सुसमाचार कला चित्र किट २१०; ६२१३८) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों से कक्षा के आस-पास देखने के लिए और आपको बताने के लिए कहें कि उन्होंने क्या विभिन्नता देखी है । उन्हें बताएं कि जिन भेड़ों को वो देख रहे हैं वह तितर-बितर हो गई हैं और प्रत्येक बच्चा अपने नाम वाली भेड़ को खोजकर आपके पास लाने में सहायता कर सकता है । यदि भेड़ों की कोई भी कतरन बाकी रह गई हो, समझाएं कि आप इन अन्य भेड़ों का वर्णन पाठ में बाद में करेंगी ।

एक बच्चे को आपके साथ एक भूमिका अदा करने के लिए आमंत्रित करें । बच्चे को उसके पूरे नाम के साथ बुलाते हुए कहें, "(नाम), क्या तुम हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह से प्रेम करते हो" ? उत्तर के पश्चात कहें, "उसके मेमनों को चराओ" । बच्चे के नाम और इस प्रश्न को दो बार और दोहराएं, और प्रत्येक उत्तर के पश्चात कहें, "उसके मेमनों को चराओ" । बच्चे से पूछें कि उसने कैसा महसूस किया जब आपने उससे उसी प्रशन को कई बार पूछा । समझाएं कि यीशु के पुनरूत्थान के पश्चात पतरस को यीशु के साथ इसी तरह का अनुभव हुआ ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को यूहन्ना २१:१–१७ में पाये जाने वाले उस विवरण की शिक्षा दें जिसमें यीशु तिबिरियास के झील (या गलील) के किनारे चेलों को दिखाई दिया था । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । उपयुक्त समय पर चित्र का उपयोग करें ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- तिबिरियास के झील पर पतरस और अन्य चेले क्या कर रहे थे ? (यूहन्ना २१:३) । जब वे एक भी मछली नहीं पकड़ सके तब यीशु ने प्रेरितों से क्या करने के लिए कहा ? (यूहन्ना २१:५–६) । आपके विचार से जब जाल मछलियों से भर गई तब यूहन्ना ने क्यों जान लिया कि वह यीशु था ? (यूहन्ना २१:६–७) । पतरस ने क्या किया ? (यूहन्ना २१:७) । आपके विचार से पतरस ने ऐसा क्यों किया ? (जब वह जान गया कि यह यीशु था, वह उसके पास नही जा सकता था) ।

- यीशु ने पतरस से क्या प्रश्न पूछा ? (यूहन्ना २१:१५) । आपके विचार से यीशु ने इस प्रश्न को पतरस से तीन बार क्यों पूछा ? पतरस ने कैसा महसूस किया जब यीशु ने उससे उसी प्रश्न को तीन बार पूछा ? (यूहन्ना २१:१७) । अब पतरस की क्या जिम्मेदारी है कि जब यीशु मर गया और पुनरूत्थारित हुआ ?

- यीशु का क्या मतलब था उसने कहा कि, "मेरी भेड़ों को चरा" ? उसकी भेड़ें कौन हैं ? (स्वर्गीय पिता के सभी बच्चे) । यीशु क्या चाहता है कि उसकी भेड़ों को खिलाया जाए ? (सुसमाचार की सच्चाइयां) । यीशु ने अपने प्रेरितों को क्या करने की बुलाहट दी ? (मरकुस १६:१५) ।

इस चर्चा से बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु ने अपने प्रेरितों को सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा दी थी, और वह चाहता था कि वे उस काम को जारी रखें और मछली पकड़ने वापस न जाएं । अब पतरस गिरजाघर का अध्यक्ष था, और यह उसकी जिम्मेदारी थी कि गिरजाघर का मार्गदर्शन करे और यीशु के सुसमाचार को फैलाने के प्रयासों का निर्देशन करे ।

- क्या आज हमारे पास चरवाहे हैं जो यीशु के भेड़ों की रखवाली करते हैं ? वे कौन हैं ? (देखें समृद्धि गतिविधि २) ।

यदि कमरे के आस-पास अभी भी भेड़ों की कतरन हो, एक बच्चे से उन्हें इकट्ठा करने और कक्षा के सामने लाने के लिए कहें । समझाएं कि इनमें से कुछ बच्चे जिनके नाम भेड़ पर है, उन्हें सुसमाचार सीखाने के लिए एक चरवाहे की आवश्यकता हो सकती है ।

- हम किस तरह से चरवाहे बन सकते हैं और यीशु की भेड़ों की रखवाली कर सकते हैं ? (अच्छे उदाहरण रखने के द्वारा, उनसे भेंट करके जो अक्सर कक्षा में उपस्थित नहीं होते हैं और विद्यालय में उनके साथ मित्रतापूर्वक रहने के द्वारा, सुसमाचार और गिरजाघर के लिए खड़े होने के द्वारा, जिन्हें आवश्यकता है उनकी सेवा करने के द्वारा, इत्यादि) । किस तरह से पारिवारकि सदस्यों और मित्रों को सुसमाचार सिद्धांतों को अच्छी तरह से समझने में हम सहायता कर सकते हैं ? जब हम दूसरों की सहायता करते हैं तब हम यीशु के प्रति अपने प्रेम को क्यों व्यक्त करते हैं ?

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. एक बड़ी सारणी के ऊपर (या चॉकबोर्ड का उपयोग करें) लिखें *मेरी भेड़ों की रखवाली करो* । उन तरीकों पर बच्चों के साथ चर्चा करें जिससे वे उसकी भेड़ों की रखवाली करने के द्वारा यीशु के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त कर सकते हैं । सारणी या चॉकबोर्ड पर उनके सुझावों को लिखें । यदि आवश्यकता हो, निम्नलिखित विचारों का उपयोग करें :

गिरजाघर में उपस्थित होने, स्वच्छ भाषा का उपयोग करने, आज्ञाओं को मानने, ईमानदार होने, प्रार्थना करने, धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने, जो सीखा है उसे जीने, और अपने माता-पिता और देश के कानून का पालन करने के द्वारा एक अच्छा उदाहरण बनें ।

सदस्यों और असदस्यों के साथ अपनी गवाही बांटें ।

दूसरों की सही को चुनने में सहायता करें जब वे प्रलोभन में पड़ते हैं ।

उन लोगों के साथ सुसमाचार के बारे में बात करें जो इसके बारे में नहीं जानते हैं ।

प्रभु के नजदीक जाने के लिए प्रार्थना करें और धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें ।

प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा और एक पेन्सिल दें और उनसे यह लिखने के लिए कहें, "मैं _____ के द्वारा एक अच्छा चरवाहा बनूंगा । बच्चों से इस वाक्य को वह लिखने के द्वारा पूरा करने के लिए कहें जिससे उन्होंने एक अच्छा चरवाहा बनने की योजना बनाई है ।

२. चॉकबोर्ड पर गिरजाघर की कुछ बुलाहटों को सूचीबद्ध करें, जैसे कि धर्माध्यक्ष, शिक्षक, स्टेक अध्यक्ष, घर-शिक्षक, भेंट करने वाली शिक्षिका, प्रचारक, भविष्यवक्ता, प्रेरित, प्राथमिक अध्यक्ष और इत्यादि । प्रत्येक बच्चे से एक बुलाहट को चुनने के लिए कहें और बताने के लिए कहें कि वह व्यक्ति कैसे उद्धारकर्ता की भेड़ों की रखवाली करता है । बच्चों से उन अनुभवों को बताने के लिए कहें जब शिक्षकों, मित्रों या पारिवारिक सदस्यों ने सुसमाचार के बारे में अधिक जानने में उनकी सहायता की हो । आप उस अनुभव को बता सकती हैं जो आपको हुआ हो ।

३. कागज की पर्चियों पर निम्नलिखित या इसके समान परिस्थितियों को लिखें जिसमें बच्चे दूसरों की सहायता गिरजाघर का मजबूत सदस्य होने के लिए कर सकते हैं । एक बच्चे से कागज की पर्चियों में से एक को चुनने, उसे गुप्त रूप से पढ़ने, और उस परिस्थिति का नाटक करने के लिए कहें । दूसरे बच्चों को अनुमान लगाने दें कि कौन सी परिस्थिति है और चर्चा करने दें कि इस तरह की परिस्थिति में वे किस तरह से यीशु की भेड़ों की रखवाली कर सकते हैं । प्रत्येक बच्चे को बारी दें ।

आपकी कक्षा के कुछ बच्चे पाठ के दौरान दूसरों को परेशान करते हैं ।

आपके कुछ मित्र एक गन्दी फिल्म देखना चाहते हैं ।

आपके मित्रों में से एक आपको दुकान से बिना पैसे दिए कुछ टॉफियों को लेने का अनुरोध करता है ।

आपका एक दल चाहता है कि बाकी के लोग कुछ बियर पिएं या किसी अन्य तरीके से ज्ञान के शब्द का पालन न करें ।

४. समझाएं कि किसी को सुसमाचार से परिचित कराने या उसमें बढ़ाने में सहायता का एक अच्छा अवसर अक्सर तभी आता है जब आप उसके मित्र होते हैं । बच्चों से उस बारे में बात करें जिसे बच्चे एक मित्र में होना पसंद करते हैं और बात करें कि कैसे वे इन विशेषताओं को बढ़ा सकता हैं ।

ध्यानपूर्वक सोच-विचार और तैयारी के पश्चात, थोड़े में प्रत्येक बच्चे की कुछ विशिष्टताओं को बताएं जो उनमें है जिसकी आप प्रशंसा करती हैं । उन कारणों के तरफ संकेत करें जिससे आप उनकी मित्र बनना पसंद करती हैं ।

५. बच्चों को समझाने दें कि कैसे निम्नलिखित धर्मशास्त्र आज हमपर लागू होते हैं :

मत्ती २४:१४
मत्ती २८:१९–२०
सिद्धांत और अनुबंध ४:१–४
सिद्धांत और अनुबंध १५:६
सिद्धांत और अनुबंध ३१:३–५

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि गिरजाघर के सदस्य होने के नाते, हममें से प्रत्येक के पास सुसमाचार के बारे में जानने और यीशु मसीह के नजदीक लाने में दूसरों की सहायता की जिम्मेदारी है । बच्चों को उनके साथ सुसमाचार बांटने में समर्थ होने के बारे में अपने अहसासों को बताएं ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में यूहन्ना २१:१–१७ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

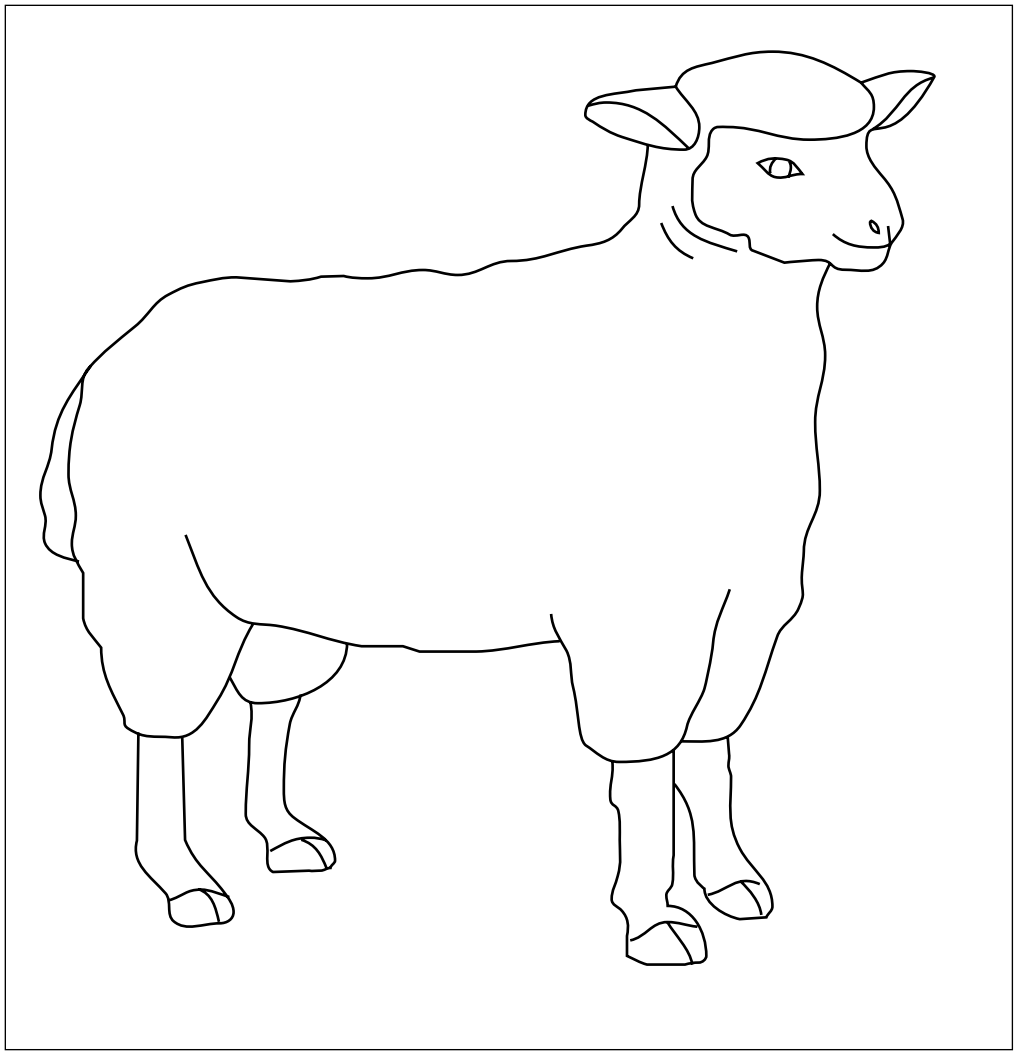

मेरी भेड़ों की रखवाली करो

यीशु मसीह का प्रचार कार्य

पाठ
३५

उद्देश्य

बच्चों की यीशु मसीह के प्रचार कार्य को समझने में सहायता करना ।

शिक्षिका के लिए सूचनाः यह पाठ यीशु के नश्वरता के पहले के जीवन, नश्वर जीवन, और नश्वरता के बाद के जीवन का अवलोकन है । इसका अभिप्राय बच्चों की यीशु के प्रचार कार्य को पूरी तरह से समझने में सहायता करना है । क्योंकि पाठ एक अवलोकन है, प्रश्न स्पष्ट होने चाहिए । जब आप उनपर चर्चा करें, उद्धारकर्ता के प्रचार कार्य के प्रत्येक हिस्से की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालना उत्तम होगा बजाय अत्याधिक विशेष विवरण या वर्णन में जाने की कोशिश के ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मूसा १:३३, ३९; ४:२; लूका २४:२७; यूहन्ना ३:१६; १५:९–१३; १ कुरिन्थियों १०:४; मुसायाह १३:३३; ३ नफी ११:७–१०; एथर ३:१४; सिद्धांत और अनुबंध १३८:३०; और जोसफ स्मिथ—इतिहास १:१७ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें “अपने पाठों की तैयारी करना” p. vi पृ., और “धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना”, p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः *सुसमाचार सिद्धांत,* अध्याय ३, ११ और ४३ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियां :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया निमय ।
   ख. शब्दपट्टियां (निम्नलिखित सारणी को देखें) ।
   ग. चित्र ७-१, यीशु ही मसीह है (सुसमाचार कला चित्र किट २४०; ६२५७२) ।

सूचनाः पाठ के दौरान आप निम्नलिखित के समान एक सारणी को पूरा कर सकती हैं (या सामग्रियों को चॉकबोर्ड पर लिख सकती हैं) । “यीशु मसीह का प्राचर कार्य” का प्रदर्शन करें और फिर उस शीर्षक के नीचे तीन मुख्य शीर्षक समतल तौर पर दिखाएं । एक बच्चे को उपयुक्त शीर्षक के नीचे एक शब्दपट्टी रखने दें जब आप यीशु के प्रचार कार्य के उस पहलू पर चर्चा करती हैं ।

यीशु मसीह का प्रचार कार्य

यीशु के नश्वरता के पहले की जीवन	यीशु का नश्वर जीवन	यीशु का मृत्युपरान्त जीवन
हमारा उद्धारकर्ता होना स्वीकार किया	सुसमाचार की शिक्षा दी	आत्मा के संसार का दौरा किया
पृथ्वी की सृष्टि की	बीमारों को चंगा किया	पुनरूत्थारित हुआ
क्या यहोवा पुराने नियम का है	अपने गिरजाघर को संगठित किया	नफायटियों से भेंट किया
भविष्यवक्ताओं को प्रकटीकरण दिया	हमारे पापों के लिए प्रायश्चित किया	भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ के द्वारा हमारे लिए अपने गिरजाघर को संगठित किया
	हमारे लिए मर गया	आज गिरजाघर के मार्गदर्शकों को प्रकटीकरण देता है
		हमसे प्रेम करता है और हमारी सहायता करता है
		फिर से आएगा

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को अधिक से अधिक उन शब्दों का नाम बताने के लिए कहें जो वर्णन करता हो कि वे कौन हैं, जैसे कि पुत्र, पुत्री, पोता या पोती, विद्यार्थी, फुटबॉल खिलाड़ी, इत्यादि । इन्हें चॉकबोर्ड पर सूचीबद्ध करें । चॉकबोर्ड पर दूसरे स्तम्भ (या शब्दपट्टियों का उपयोग करें) में कुछ उन नामों को सूचीबद्ध करें जो यीशु पर लागू होते हों, उस एक से आरंभ करते हुए जिससे बच्चे शायद परिचित न हों, जैसे कि उदाहरण, न्यायी, चटान, मध्यस्थ, और उन शब्दों के तरफ जाते हुए जिसे वे जानना चाहते हैं, जैसे कि उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता, सृष्टिकर्ता, इत्यादि । बच्चों को उनके हाथों को उठाने दें जब वे जानते हों किये नाम किसके बारे में बताते हैं ।

धर्मशास्त्र विवरण

यीशु ही मसीह है का चित्र दिखाएं । समझाएं कि यीशु ने हमारे लिए कई अदभूत चीजों को किया था, केवल तभी ही नहीं जब वह पृथ्वी पर था, परन्तु अपने जन्म से पहले और अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के पश्चात भी । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु ने इन चीजों को हमारे प्रति स्वर्गीय पिता की उद्धार की योजना को पूरा करने के लिए किया था । हम इसे उद्धार की योजना कहते हैं क्योंकि इसके और यीशु के सहायता के द्वारा हम स्वर्गीय पिता और यीशु के पास वापस हमेशा रहने के लिए जाने में समर्थ होंगे (देखें मूसा १:३९) । बच्चों को जोर से यूहन्ना ३:१६ पढ़ने दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

चर्चा और लागू होने वाल प्रश्नः

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- कौन सी कुछ चीजें हैं जिसे यीशु ने पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले किया था ?
- किसने हमारा उद्धारकर्ता होना स्वीकार किया था ? उसने कब स्वीकार किया था ? (एथर ३:१४; मूसा ४:२) । किसने यीशु को हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए चुना था ? (यूहन्ना ३:१६; इब्राहिम ३:२७) ।
- पृथ्वी की सृष्टि किसने की ? यीशु ने पृथ्वी की सृष्टि कब की ? (उत्पत्ति १:१; मूसा १:३३:

- पुराने नियम का यहोवा या प्रभु कौन है ? किसने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को प्रकटीकरण दिया था, जैसे कि मूसा और इब्राहिम ? (यीशु मसीह) । मूसा और सभी भविष्यवक्ताओं ने किसकी गवाही दी थी ? (लूका २४:२७; मुसायाह १३:३३) ।
- यीशु ने क्या किया था जब वह पृथ्वी पर था ? बच्चों को अधिक से अधिक उन चीजों की सूची बनाने दें जिसे वे याद कर सकते हैं कि यीशु ने पार्थिव सेवकाई के दौरान किया था । यीशु ने हमारे लिए इन चीजों को क्यों किया था ? (यूहन्ना १५:९, ११) ।
- अपनी मृत्यु के पश्चात यीशु ने क्या किया था ? (१ पतरस ३:१८–२०; सि. और अनु. १३८:३०; उसने कैद में रह रही आत्माओं से भेंट किया था) । अपने पुनरूत्थान के पश्चात यीशु ने क्या किया था ? (३ नफी ११:७–१०, २७:८: अमेरिका में रह रहे नफायटियों से मिला था और उन्हें अपने शरीर को दिखाया था; जोसफ स्मिथ...इतिहास १:१७: सच्चाई की पुनःस्थापना के लिए जोसफ स्मिथ से मिला था; सि. और अनु. ११५:४: हमारे लिए अपने गिरजाघर को संगठित किया था) ।
- आज यीशु हममें से प्रत्येक की सहायता कैसे करता है ? (आमोस ३:७; मत्ती २८:२० ।) (देखें समृद्धि गतिविधि २) ।
- हम सब किस महान घटना का इन्तजार कर रहे हैं ? यीशु ने अपने दूसरे आगमन के बारे में किन भविष्यवाणियों और प्रतिज्ञाओं को प्रकट किया था ? (मत्ती २४:३०–३१; सि. और अनु. २९:११) ।
- हम यीशु को कैसे दिखा सकते हैं कि जो कुछ उसने हमारे लिए किया है हम उसके प्रति आभारी हैं ? (यूहन्ना १५:१०, १२) । बच्चों की उन आज्ञाओं को सोचने में सहायता करें जिनका पालन वे यीशु को यह दिखाने के लिए कर सकते हैं कि वे आभारी हैं ?

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. यीशु मसीह के कई शीर्षक और भूमिकाएं थीं । चर्चा के लिए इन शीर्षकों में से कुछ को चुनें ।

२. बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु हमसे प्रेम करता है और आज गिरजाघर का मार्गदर्शन करता है । अध्यक्ष लोरेंजो स्नो, गिरजाघर के पांचवें अध्यक्ष, ने सॉल्ट लेक मन्दिर में यीशु को देखते हुए निम्नलिखित कहानी बताई थी, उसे बताएं :

एक शाम को अध्यक्ष स्नो की पोती उनके साथ सॉल्ट लेक मन्दिर का दौरा कर रही थी । जब वह जा रही थी, अध्यक्ष स्नो गलियारे में उसके पीछे थे । अचानक उन्होंने कहा, "एक क्षण के लिए रूको, एली, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं । बिल्कुल यहीं पर अध्यक्ष वुडरफ की मृत्यु के समय पर मुझे प्रभु यीशु मसीह दिखाई दिया था" । वह एक कदम आगे बढ़े, उसके बाएं हाथ को पकड़ा और जारी रहे, "वह बिल्कुल यहीं खड़ा था, फर्श से लगभग तीन फीट के ऊपर । ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह ठोस सोने की थाली पर खड़ा था" । तब अध्यक्ष स्नो ने उद्धारकर्ता के प्रतिति और उसके सुन्दर सफेद कपड़ों का वर्णन किया । (देखें LeRoi C. Snow, "An Experience of My Father's," *Improvement Era,* सितंबर १९३३, पृ. ६७७) ।

३. बच्चों को उन चीजों की समीक्षा के लिए निम्नलिखित या इनके समान धर्मशास्त्रों को खोजन के लिए कहें जिसे यीशु ने अपने नश्वरता के प्रचार कार्य के दौरान किया था :

मत्ती ५:२ (सुसमाचार की शिक्षा दी)
मत्ती १४:१४ (बीमारों को चंगा किया)
मरकुस ३:१४ (अपने गिरजाघर को संगठित किया)
२ नफी २:६–७ (हमारे पापों के लिए प्रायश्चित किया और हमारे लिए मर गया)
मत्ती २८:६–७ (पुनरूत्थारित हुआ)

निष्कर्ष

गवाही	यीशु के प्रति अपने आभार की गवाही दें और उन चीजों के लिए गवाही दें जिसे उसने हमारे लिए किया है और करना जारी रखा है । बच्चों को बताएं कि पृथ्वी पर यीशु के समय के बारे में अधिक अध्ययन के अवसर के लिए आप कितनी आभारी हैं ।
प्रस्तावित घर पठन	सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में यूहन्ना १५:९–१३ का अध्ययन करें ।
	समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पिन्तेकुस्त का दिन

पाठ
३६

उद्देश्य

बच्चों की पवित्र आत्मा के उपहार को जानने और समझने में सहायता करना कि कैसे पवित्र आत्मा की फुसफुसाहटों को पहचाना जाए ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक प्रेरितों के काम २:१–२४, ३२–३३, ३६–४७ और यूहन्ना १४:२५–२७ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः *सुसमाचार सिद्धांत,* अध्याय ७ और २१ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियां :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. चॉक और चॉकबोर्ड ।
   ग. चित्र ७-३९, पिन्तेकुस्त का दिन ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को सीखाएं कि जब यीशु अपने प्रेरितों के साथ था तब उसने उन्हें कई चीजों को सीखाया था । वह जानता था कि हमेशा वह उनके साथ नहीं होगा, इसलिए उसने उनके लिए एक विशेष उपहार भेजने की प्रतिज्ञा की ।

निम्नलिखित सूत्रों को पढ़ें । बच्चों को खड़ा होने दें जब वे सोचें कि वे जानते हैं कि उपहार क्या है और फुसफुसाहट वह उत्तर है जो आपके कान में सुनाई देती है । यदि वे सही तरीके से पवित्र आत्मा को पहचान लेते हैं, उन्हें खड़े ही रहने दें ।

मैं सच्चाई की शिक्षा देता हूं ।
मैं एक निर्देशक हूं ।
मैं आराम देता हूं ।
मैं यीशु मसीह की गवाही देता हूं ।
अक्सर मैं तुम्हारे मन या हृदय में बात करता हूं ।
मैं ईश्वरत्व का सदस्य हूं ।
मैं एक आत्मा के रूप में व्यक्ति हूं परन्तु एक शारीरिक शरीर नहीं है ।

चॉकबोर्ड पर *पवित्र आत्मा* लिखें । बच्चों के साथ यूहन्ना १४:२५–२७ पढ़ें । बच्चों की समझने में सहायता के लिए सूत्रों की सूची की समीक्षा करें कि पवित्र आत्मा हमारे लिए क्या करता है ।

चॉकबोर्ड पर *पिन्तेकुस्त* लिखे । समझाएं कि पिन्तेकुस्त एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है पचासवां । पिन्तेकुस्त एक यहूदी समारोह था जिसे प्रत्येक वर्ष फसह के पश्चात पचासवें दिना मनाया जाता था । यीशु ने आखिरी भोज पर अपने प्रेरितों को प्रभुभोज दिया था, जोकि फसह के समय पर हुआ था । आखिरी भोज के पश्चात वह

पचासवां दिन था जब उसके चेलों ने पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त किया था । चॉकबोर्ड पर *पवित्र आत्मा का उपहार* लिखें ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को पिन्तेकुस्त के दिन के विवरण की शिक्षा दें (प्रेरितों के काम २:१–२४, ३२–३३, ३६–४७) । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । एक उपयुक्त समय पर पिन्तेकुस्त के दिन के चित्र को दिखाएं ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- पिन्तेकुस्त के दिन पर, किस तरह से पवित्र आत्मा यीशु के प्रेरितों पर आया था ? (प्रेरितों के काम २:१–४) ।
- कौन सी चीज चेलों को भाषा को बोलने और उसे समझने की समर्थता देता है जो लोगों के द्वारा अन्य भाषाएं बोली जाती हैं ? (प्रेरितों के काम २:४) । किस तरह से पवित्र आत्मा का यह आत्मिक उपहार आज गिरजाघर के प्रचारकों के प्रयासों में उनकी साहयता करता है ? (कई प्रचारकों को विदेशी भाषाओं को सीखने में सहायता के द्वारा । भाषा के उपहार सम्पर्क में रहने वालों की सुसमाचार संदेश को समझने में तब भी सहायता कर सकते हैं जब एक प्रचारक भाषा को अच्छी तरह से नहीं बोलता हो ।
- पतरस के यीशु के क्रूसारोहण और पुनरूत्थान की गवाही देने के पश्चात किस कारण लोगों के हृदय छिद गए थे ? प्रेरितों के काम २:३३, ३६–३७ । पवित्र आत्मा) । हृदय के छिद जाने का क्या अर्थ है ? (पछतावा और दुःख का एक गहरा अहसास) । किस तरह से पवित्र हमें उन चीजों के प्रति दुःख महसूस करने में सहायता करता है जिसे हमने किया है ?
- क्या करना है उसे जानने में पवित्र आत्मा हमारी कैसे सहायता करता है ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि लोग अपने जीवन में विभिन्न तरीकों में पवित्र आत्मा की सहायता को महसूस करते हैं, जैसे कि शान्ति के एक अहसास या एक प्रभाव को कि कुछ सही है, धर्मशास्त्रों और अन्य विषयों के एक स्वच्छ समझ को, गिरजाघर में एक वार्ता या एक पाठ को सुनना जो आपकी सहायता करता है, इत्यादि । यदि आपको लगता है कि यह उपयुक्त है, आप एक अनुभव बता सकती हैं जब आपने अपने जीवन में पवित्र आत्मा को महसूस किया हो ।
- पतरस ने लोगों से क्या कहा कि उन्हें पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त करने के लिए क्या करने की आवश्यकता है ? (प्रेरितों के काम २:३८) । हमें पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त करने के लिए क्या करने की आवश्यकता है ?
- आप में से कितने लोगों को पवित्र आत्मा का उपहार दिया गया है ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि बपतिस्मा से पहले पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट को सुनना संभव है; फिर भी, हम पवित्र आत्मा के उपहार को तब प्राप्त करते हैं जब अपने बपतिस्मा के पश्चात हमारा अन्तिम-दिनों के सन्तों के यीशु मसीह का गिरजाघर के सदस्य के रूप में पुष्टिकरण होता है । यदि हम धार्मिक हैं, पवित्र आत्मा का उपहार हमें लगातार हमारे साथी के रूप में पवित्र आत्मा का अधिकारी बनाता है (देखें सि. और अनु. १२१:४५–४६) ।
- ३,००० आत्माओं के बपतिस्मा के पश्चात, वे क्या कुछ चीजें हैं जिसे उन्होंने किया था ताकि पवित्र आत्मा उनका मार्गदर्शन करना जारी रखे ? (प्रेरितों के काम २:४२–४७) । (आप बच्चों को धर्मशास्त्रों में उत्तरों को खोजने और उन्हें चॉकबोर्ड पर सूचीबद्ध करने के लिए कह सकती हैं) ।

- हमारे पास पवित्र आत्मा रहे उसके लिए हमें क्या करने की आवश्यकता है ? (पश्चाताप करना, बपतिस्मा लेना, पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त करना, धार्मिकता से जीना, पवित्र आत्मा के निर्देश के लिए प्रार्थना करना, शान्त रहना और सुनना, और उन फुसफुसाहटों को सुनना जो आती हैं) ।

बच्चों को निम्नलिखित उद्धरण बताएं :

"स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करने कि वह आपको हमेशा के लिए अपनी आत्मा से आशीषित करे...पवित्र आत्मा...स्वर्गीय पिता के तरफ से एक उपहार है...वह शान्ति से और धीमी आवाज से सही करने के लिए फुसफुसाता है । जब आप अच्छा करते हैं, आप अच्छा महसूस करते हैं, और वही पवित्र आत्मा है जो आपसे बात करती है । पवित्र आत्मा एक अदभूत साथी है । वह हमेशा आपकी सहायता के लिए तैयार रहता है" (Ezra Taft Benson, Conference Report, अप्रेल १९८९, पृ. १०३; या *Ensign,* मई १९८९, पृ. ८७२ में) ।

बच्चों को एक अनुभव बताने के लिए आमंत्रित करें जब उन्होंने या उनके परिवार के एक सदस्य ने पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट को महसूस किया हो । बच्चों को पवित्र आत्मा की फुसफुसाहटों को सुनने और उन फुसफुसाहटों के अनुसरण के प्रयास के लिए प्रोत्साहित करें । (देखें समृद्धि गतिविधि ६) ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. अध्यक्ष हेरोल्ड बी. ली, गिरजाघर के ग्यारहवें अध्यक्ष के बारे में निम्नलिखित कहानी बताएं :

"मैं लगभग आठ वर्ष का था, या उससे भी छोटा, मेरे पिता मुझे एक खेत पर ले गए जो कुछ ही दूरी पर था । जब वह कामकर रहे थे तब मैंने अपने आपको उन कामों को करने के द्वारा व्यस्त रखा जिन्हें एक छोटा लड़का कर सकता है । वह दिन गर्म और धूलभरा था और मैं तब तक खेलता रहा जब तक कि थक न गया । बाड़े के ऊपर एक टुटा हुआ छप्पर था जो मुझे बहुत ही रूचीकर दिखाई देता था । मेरे मन में इस टुटे हुए छप्पर को मैंने एक गढ़ के रूप में सोचा जिसकी मैं खोज करना चाहता था, इसलिए मैं बाड़े के पास गया और उस छप्पर के ऊपर चढ़ने के लिए कूदना आरंभ किया । तभी मुझे एक आवाज सुनाई दी जिसने मुझसे इस महत्वपूर्ण चीज को कहा, 'हेरोल्ड, उसके ऊपर मत जाओ' । मैं देखने लगा कि किसने मेरा पुकारा । मेरे पिता खेत के दूसरी तरफ थे । वे नहीं देख सकते थे कि में क्या कर रहा था । मुझसे बात करने वाला कोई दिखाई नहीं दिया । तब मैंने जाना कि जो मुझे ऊपर न जाने की चेतावनी दे रहा था उसे मैं नहीं देख सकता था । उसके ऊपर क्या था, मैं कभी नहीं जानूंगा, परन्तु मैंने यह सीखा कि कोई तो है जो हमारी नजरों से आगे है और हमसे बात कर सकता है" (Conference Report, Mexico Area Conference १९७२, पृष्ठ ४८–४९ में) ।

२. कागज के अलग-अलग टुकड़ों पर निम्नलिखित सन्दर्भों में से प्रत्येक को लिखें । आप बच्चों को बर्तनों में से कागजों को निकालने दें । कागज पर सूचीबद्ध किए गए सन्दर्भों को एक बच्चे को देखने दें और बताने दें कि यह आयत पवित्र आत्मा के बारे में क्या कहती है ।

यूहन्ना १४:२६ (पवित्र आत्मा को सहायक कहा जाता है; वह सब बातें सीखाएगा और उन्हें स्मरण रखने में हमारी सहायता करेगा) ।

यूहन्ना १५:२६ (पवित्र आत्मा सच की आत्मा है; वह मसीह की गवाही देगा) ।

यूहन्ना १६:१३ (पवित्र आत्मा हमें सच का मार्ग दिखाएगा और भविष्य की चीजें हमें दिखाएगा) ।

प्रेरितों का काम ४:३१ (पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के वचन को निर्भीकता से बोलने में सहायता करता है) ।

प्रेरितों के काम ५:३२ (परमेश्वर पवित्र आत्मा को उन्हें देता है जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं) ।

गलतियों ५:२२ (प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, नम्रता, भलाई, और विश्वास आत्मा के द्वारा आती है) ।

३. निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें । आप प्रत्येक बच्चे के लिए एक प्रति बनाना चाहें ।

"बपतिस्मा के पश्चात, एक व्यक्ति का अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर का एक सदस्य के रूप में पुष्टिकरण होता है और उस संक्षिप्त धर्मविधि में पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त करता है । उसके पश्चात, पूरे जीवन के दौरान, पुरूषों को, स्त्रियों को, यहां तक कि छोटे बच्चों को भी उनके जीवन में उनके प्रति सहायता के लिए प्रेरित मार्गदर्शन का अधिकार है...व्यक्तिगत प्रकटीकरण!" (Boyd K. Packer, "Personal Revelation—Available to All," *Friend*, जुन, १९९०, आगे के आवरण के अन्दर) ।

४. प्रत्येक बच्चे के लिए निम्नलिखित वक्तव्य के एक पर्चे को बनाएं :

यदि मैं धार्मिकता से जीता या जीती हूं, पवित्र आत्मा का उपहार मुझे शिक्षा देने के द्वारा, मेरी सहायता करने के द्वारा, मुझे आराम देने के द्वारा, मेरी रक्षा करने के द्वारा, खतरों से मुझे चेतावनी देने के द्वारा, सच्चाई की मुझे गवाही देने के द्वारा मेरी सहायता कर सकता है ।

५. बच्चों से पवित्र आत्मा के अधिक से अधिक नामों को पहचानने के लिए कहें जितना वे सोच सकते हैं । निम्नलिखित नामों का वर्णन करें यदि बच्चे इनके बारे में न सोच सकें : *पवित्र आत्मा, परमेश्वर की आत्मा, प्रभु की आत्मा, सांत्वना देने वाला, और आत्मा* ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि यीशु हममें से प्रत्येक से प्रेम करता है, और इसलिए उसने हमारे लिए पवित्र आत्मा को एक सहायक, एक शिक्षक, एक आरामदायक, और एक निर्देशक के रूप में प्राप्त करने के लिए संभव बनाया ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में प्रेरितों के काम २:१–८, ३६–४१ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

प्रेरित पतरस

पाठ
३७

उद्देश्य

बच्चों की समझने में सहायता करना कि वे भी पतरस की तरह यीशु मसीह की एक मजबूत गवाही को बढ़ा सकते हैं ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ४:१८–१९; १४:२२–३३; १६:१३–१७; १७:१–९; लूका २२:३१–३४, ५४–६२; प्रेरितों के काम ३:१–९; ४:६–२०; ५:१२–४२; और अलमा ३२:२१ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियां : प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों से सुनने के लिए कहें जब आप उन्हें निम्नलिखित कहानी बताएं ।

कहानी १: जब यीशु ने समझाया कि उसे शीघ्र ही मार दिया जाएगा, एक मनुष्य ने कहा, "हे प्रभु मैं तेरे साथ बंदीगृह जाने, वरन मरने को भी तैयारी हूं" (लूका २२:३३) । यही मनुष्य भीड़ में भी था जब यीशु को पकड़ा गया और एक परीक्षा के लिए ले जाया गया । एक स्त्री आई और कहा कि यह मनुष्य यीशु के साथ था, परन्तु मनुष्य ने यह कहते हुए अस्वीकार किया कि, "मैं उसे नहीं जानता" । इसके शीघ्र पश्चात दूसरे व्यक्ति ने कहा, "तू भी तो उन्हीं में से एक है" । फिर से मनुष्य ने यीशु को जानने से अस्वीकार किया । तीसरी बार किसी ने उसके तरफ संकेत किया कि वह यीशु के अनुयाइयों में से एक था, परन्तु मनुष्य ने एक बार फिर से कहा, "मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है" । (देखें लूका २२:५४–६२) ।

कहानी २: एक दिन एक मनुष्य और उसका मित्र उस एक मनुष्य के द्वारा रोके गए जो कि लंगड़ा पैदा हुआ था । मनुष्य ने लंगड़े आदमी से कहा, "यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर" । उसने लंगड़े आदमी का हाथ पकड़कर उसे खड़ा किया । लंगड़ा आदमी तुरन्त चंगा हो गया था और चलता, कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ मन्दिर चला गया । जब मुख्य याजकों ने इसके बारे में सुना, उन्होंने पूछा कि किस शक्ति के द्वारा वह लंगड़ा आदमी चंगा हुआ था । जिस मनुष्य ने लंगड़े आदमी को चंगा किया था उसने कहा कि यह यीशु मसीह की शक्ति थी, यद्यपि वह जानता था कि ऐसा कहने से उसे जेल में डाला या मारा जा सकता है । याजकों ने उस मनुष्य को फिर से यीशु मसीह के नाम से शिक्षा न देने की आज्ञा दी । परन्तु उसने जवाब दिया कि झूठे यहूदी याजकों की आज्ञाओं का पालने करने की बजाय परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना अधिक महत्वपूर्ण है और उसने मसीह के नाम में सीखाना जारी रखा । (देखें प्रेरितों के काम ३:१–९; ४:६–२०) ।

समझाएं कि दोनों कहानियों का वह मनुष्य पतरस था । क्रूसारोहण के शीघ्र पहले जब पतरस ने यीशु को जानने से इन्कार किया था, वह तब भी सीख रहा था या उन्नति कर रहा था । यीशु पकड़ा जा चुका था, और पतरस डर गया था । उस समय तक जब पतरस ने लंगड़े आदमी को चंगा किया था, उसने पवित्र आत्मा को प्राप्त कर लिया था और उसके पास यीशु मसीह की एक मजबूत गवाही थी । इस चीज ने उसे शक्ति दी कि किसी भी परिस्थिति में चाहे कुछ भी हो जाए उसे सही ही करना था ।

- एक गवाही क्या है ? (यीशु मसीह और उसके गिरजाघर की सच्चाइयों के बारे में व्यक्तिगत ज्ञान) । समझाएं कि यह पाठ यीशु मसीह के बारे में बच्चों की गवाहियों को मजबूत कर सकता है ।

धर्मशास्त्र विवरण और चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

१. पतरस ने यीशु का अनुसरण किया (मत्ती ४:१८–१९) ।

- आपके विचार से यीशु के बताने के पश्चात कि वह कौन था, पतरस ने यीशु मसीह का अनुसरण क्यों किया था ? यीशु का अनुसरण करने के लिए पतरस को क्या बलिदान करना था ? हमें यीशु का अनुसरण करने केलिए क्या बलिदान करना है ? उद्धारकर्ता का अनुसरण करने के कारण आप कैसे आशीषित हुए हैं ?

२. यीशु और पतरस पानी पर चले थे (मत्ती १४:२२–३३) ।

- आपके विचार से यीशु समुद्र में चलने में समर्थ क्यों हुआ था ? (मत्ती १४:२५) । यीशु से मिलने के लिए पतरस चलने में समर्थ क्यों था ? (मत्ती १४:२८–२९) ।

- पतरस के कुछ कदम चलने के पश्चात क्या हुआ था ? (मत्ती १४:३०–३१) । आपके विचार से पतरस का विश्वास क्यों डगमगाया था ? यीशु ने पतरस की कैसे सहायता की जब उसका विश्वास डगमगाया था ? (मत्ती १४:३१) । कभी-कभी हमारा विश्वास क्यों कमजोर हो जाता है ? यीशु मसीह हमारे विश्वास को मजबूत करने में हमारी सहायता कैसे करता है ? (पवित्र आत्मा, हमारे माता-पिता, गिरजाघर के मार्गदर्शकों, अच्छे मित्रों, धर्मशास्त्रों, इत्यादि के द्वारा) ।

बच्चों की समझने में सहायता करें कि हर बार जब हम उन चीजों को करते हैं जिसे करने की आज्ञा स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह ने हमें दी है, हम विश्वास से काम करते हैं, और हर बार जब हम विश्वास से काम करते हैं, हमारा विश्वास थोड़ा मजबूत होगा । हमें, पतरस की तरह, यीशु की शिक्षाओं का अनुसरण करने के लिए हमारे विश्वास का उपयोग करना होगा, और तब हमारा विश्वास हमारी गवाहियों को मजबूत करने में सहायता करेगा ।

३. पतरस ने गवाही दी कि यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती १६:१३–१७) ।

- पतरस ने किसे कहा कि वह यीशु मसीह था ? (मत्ती १६:१६) । पतरस इसे कैसे जानता था ? (मत्ती १६:१७ । आत्मा के द्वारा) । हम किस तरह से, पतरस की तरह यीशु मसीह की अपनी गवाहियों को व्यक्त कर सकते हैं ?

४. रूपान्तरण के पहाड़ पर पतरस यीशु मसीह के साथ था (मत्ती १७:१–९; पाठ १५ में देखें "सार चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न" पृ. ५१ ।

- रूपान्तरण के पहाड़ पर यीशु मसीह के साथ क्या हुआ था ? (मत्ती १७:२) । यीशु और पतरस, याकूब और यूहन्ना को कौन दिखाई दिए थे ? (मत्ती १७:३) । चेलों ने किसकी आवाज सुनी थी ? (मत्ती १७:५) । आपके विचार से इस अनुभव ने पतरस की यीशु मसीह की गवाही को क्यों मजबूत किया था ?

५. पतरस और यूहन्ना ने एक लंगड़े मनुष्य को चंगा किया था और उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया गया था (प्रेरितों के काम ३:१–९; ४:६–२०; ५:१२–४२) ।

एक बच्चे को पतरस और यूहन्ना द्वारा एक लंगड़े मनुष्य को चंगा करने की कहानी की समीक्षा करने दें । बाकी की कहानी प्रेरितों के काम ५:१२–४२ से सुनाएं ।

- पतरस और यूहन्ना बन्दीगृह से बाहर कैसे आए थे ? (प्रेरितों के काम ५:१९) । स्वर्गदूत ने उन्हें क्या करने के लिए कहा था ? (प्रेरितों के काम ५:२०) । ऐसा करने से बन्दीगृह में डाले जाने के पश्चात, दुबारा से

प्रचार कार्य पर जाने के बारे में आप कैसा महसूस करेंगे ? आपके विचार से पतरस और यूहन्ना ने सही काम को करने के लिए बल कैसे प्राप्त किया था ?

बच्चों की समझने में सहायता करें कि यीशु मसीह के बारे में सीखाने के कारण शायद हमें कभी भी बन्दीगृह में न डाला जाए परन्तु हमें अन्य तरीकों में परखा जाएगा । यीशु मसीह की अपनी गवाही के कारण आप अपने जीवन में किस तरह से परखे जा सकता हैं ? (देखें समृद्धि गतिविधि ४) ।

- पतरस की यीशु मसीह की गवाही किस तरह से बढ़ी थी ? हमें यीशु मसीह की एक मजबूत गवाही की आवश्यकता क्यों है ? इस गवाही को हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? हम अपनी गवाहियों को बढ़ाने में कैसे सहायता कर सकते हैं ? (धर्मशास्त्रों को पढ़ें, उसके बारे में अधिक जाने, आज्ञाओं का पालन करें, प्रार्थना करें, पवित्र आत्मा को सुनें, गिरजाघर में उपस्थित हो, इत्यादि) ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों की समझने में सहायता करें कि एक गवाही में निम्नलिखित को जानना सम्मिलित होता है :

स्वर्गीय पिता जीवित है और हमारी आत्माओं का पिता है ।
यीशु मसीह स्वर्गीय पिता का पुत्र और हमारा उद्धारकर्ता है ।
जोसफ स्मिथ वह भविष्यवक्ता है जिसके द्वारा अन्तिम दिनों में प्रभु ने सुसमाचार को पुनःस्थापित किया था ।
मॉरमन की पुस्तक परमेश्वर का शब्द है और उसने सुसमाचार की परिपूर्णता पायी जाती है ।
अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर ही एकमात्र सच्चा गिरजाघर है।
आज हम भविष्यवक्ता और प्रेरतिों के द्वारा मार्गदर्शित किये जाते हैं ।

उन तरीकों पर चर्चा करें जिससे हम इन सच्चाइयों की एक गवाही प्राप्त कर सकते हैं ।

२. समझाएं और बच्चों की नौवें विश्वास के अनुच्छेद को याद करने में सहायता करें ।

३. बच्चों को उन अनुभवों को सोचने दें जिसे पतरस ने यीशु के बारे में अनुभव किया था जिसने यीशु मसीह की उसकी गवाही को बढ़ाया था । (५,००० लोगों को खिलाना, बीमारों को चंगा करना, मृत्यु से याईर की बेटी को जीवित करना, और इत्यादि) । हम अपने लिए कैसे जान सकते हैं कि यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है ? (धर्मशास्त्रों को पढ़ने, प्रार्थना करने, आज्ञाओं का पालन करने, और इत्यादि के द्वारा) ।

४. बच्चों को कुछ उन तरीकों के नाम बताने दें जिससे दूसरे लोग कोशिश कर सकें कि वे गिरजाघर को अस्वीकार करें या कुछ गलत करें । तब चर्चा करें कि वे इन प्रलोभनों का सामना करने के लिए पर्याप्त मात्रा में मजबूत कैसे हो सकते हैं । यदि आवश्यकता हो, निम्नलिखित उदाहरणों का उपयोग करें :

कोई कोशिश करता है कि वे गिरजाघर सभाओं में उपस्थित न रहें ।
कोई कोशिश करता है कि वे ज्ञान के शब्द का पालन न करें ।
कोई कोशिश करता है कि वे झूठ बोलें ।
कोई कोशिश करता है कि वे अपने दसमांश रकम को खर्च करें ।

इस बात पर बल दें कि हमें पतरस की तरह मजबूत होने के लिए यीशु मसीह की एक व्यक्तिगत गवाही को प्राप्त करना होगा ।

५. निम्नलिखित कहानी बताएं कि अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ, गिरजाघर के छठवें अध्यक्ष के साथ क्या हुआ था, जब वे एक युवा पुरूष थे और मिशन से अपने घर वापस आ रहे थे :

"एक दिन जब जोसफ स्मिथ और उनके साथियों ने थोड़ी दूरी की यात्रा की थी और एक शीविर को बनाया था, उसके पश्चात, घुड़सवारी करते हुए, श्राप देते हुए, और उनके रास्ते में आने वाले किसी भी मॉरमन को

मारने की कसम खाते हुए शराबियों का एक दल शीविर में आया । जोसफ के कुछ साथियों ने जब इनके आने के बारे में सुना तब वे उनकी नजरों से छुपने के लिए खाड़ी के नीचे चले गए । वे वहां इन लोगों के दल के जाने का इन्तजार करने लगे । जब ये लोग आए तब जोसफ एफ. स्मिथ जलाने के लिए लकड़ियों को इकट्ठा करते हुए शाविर से कुछ ही दूरी पर थे, जब उन्होंने इन लोगों को देखा, उनके मन में सबसे पहले विचार आया कि इनसे छुपने के लिए एक स्थान को खोजें । तब उनके मन में विचार आया, 'मुझे इन लोगों से क्यों भागना चाहिए ?' मन में किसी विचार के कारण निर्भीक होते हुए वे अपने हाथों में लकड़ियों को भरते हुए शीविर के तरफ चल दिए । लोगों में से एक ने युवा एल्डर के तरफ बन्दूक तानते हुए एक जोरदार, क्रोधित आवाज में आज्ञा दी, 'क्या तुम एक मॉरमन हो' ?

'रंगे हुए ऊन की तरह जिसका रंग कभी भी नहीं उतरेगा, पूरी तरह से निष्ठावान होते हुए और पूरे जोश के साथ उन्होंने कहा हां, श्रीमान ।

"बिना किसी डर के उन्होंने उत्तर दिया और पूरी तरह से उस आदमी को चकित कर दिया । उस आदमी ने जोसफ एफ. स्मिथ को हाथों के द्वारा दबोचा और कहा, 'देखो, तुम एक मनोहर किस्म के पुरूष हो जिससे मैं मिला हूं ! हाथ मिलाओ, युवक, मैं एक ऐसे आदमी को देखकर खुश हूं जो यह कहने से नहीं डरता कि वह कौन है और किसमें विश्वास करता है' " (Joseph Fielding Smith, *The Life of Joseph F. Smith*, पृष्ठ १८८-१८९) ।

६. बच्चों की प्रेरितों के काम ५:२९ को याद करने में सहायता करें ।

निष्कर्ष

गवाही

यीशु मसीह की अपनी गवाही दें, और गवाही दें कि जैसे-जैसे हम यीशु के बारे में अधिक सीखते हैं और पवित्र आत्मा की साक्षी को सुनते हैं, यीशु के बारे में हमारी गवाही हमारे पूरे जीवन में बढ़ना जारी रहेगी । समझाएं कि हमें संदेह और प्रश्न हो सकते हैं, परन्तु जब हम धर्मशास्त्रों के अध्ययन को, और आज्ञाओं के पालन को जारी रखते हैं, हमारी गवाहियां मजबूत होंगी ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती १६:१३–१७ और प्रेरितों के काम ५:२९–३२ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

बरनबास, हनन्याह, और सफीरा

पाठ
३८

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे को विचार, शब्द, और काम में ईमानदार होना चुनने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक प्रेरितों के काम ४:३२–५:१० का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii) पृ. ।

२. अतिरिक्त पठन : *सुसमाचार सिद्धांत,* अध्याय ३१ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियां : प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को निम्नलिखित कहानी बताएं और उन्हें निर्णय लेने के लिए कहें कि उन्होंने क्या किया होता यदि वे चार्ली होते :

"एक युवा लड़का अपने मित्रों के साथ बेज बॉल खेल रहा था तभी उसकी मां की स्वच्छ आवाज उसको बुलाते बुए सुनाई दी, 'चार्ली, चार्ली!' उसने तुरन्त अपने बल्ले को नीचे फेंका, अपने जैकेट और टोपी को उठाया और घर के तरफ चल दिया ।

"तुम्हें समझ नहीं आ रहा; खेल खत्म करो! ' दूसरे खिलाड़ी चिल्लाए ।

" 'मुझे तुरन्त जाना होगा । मैंने अपनी मां से कहा था कि जब वह बुलायेगी तब मैं आ जाउंगा', चार्ली का उत्तर था ।

" 'ऐसे दिखाओ जैसे कि तुमने सुनी ही न हो', लड़कों ने कहा ।

" 'परन्तु मैंने सुना था', चार्ली ने कहा ।

" 'उसे पता नहीं चलेगा कि तुमने सुना था' ।

" 'परन्तु मैंने सुना था और मुझे जाना होगा' ।

"अंततः लड़कों में से एक ने कहा, 'ओ, उसे जाने दो । तुम उसका मन नहीं बदल सकते । वह अपनी मां के पल्लु से बंधा हुआ है । यह एक ऐसा बच्चा है जो उसके बुलाते ही दौड़ पड़ता है' " (N. Eldon Tanner, Conference Report, अक्टू. १९७७, पृ. ६५; या *Ensign,* नव. १९७७, पृष्ठ ४३–४४) ।

- आपने क्या किया होता ?

समझाएं कि हर दिन हम सब उन परिस्थियों का सामना करते हैं जिसमें हमें ईमानदार होने और बेईमान होने के बीच चुनाव करने की आवश्यकता होती है । बच्चों से उन परिणामों के बारे में सोचने के लिए कहें जो बरनबास, हनन्याह और सफीरा के चुनावों के द्वारा हुआ था ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को प्रेरितों के काम ४:३२–५:१० में पाये जाने वाले बरनबास, हनन्याह और सफीरा के विवरण की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । संकेत करें कि एक वह तरीका जिससे हम यीशु की तरह बन सकते हैं वह है सच बोलना सीखना और जो हम करते हैं उन सभी में ईमानदार रहना ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- गिरजाघर के मार्गदर्शक गिरजाघर के सदस्यों से क्या करने के लिए कहते हैं ताकि सभी के पास वे वह हो जिसकी आवश्यकता उन्हें हो सकती है ? (प्रेरितों के काम ४:३४–३५) । आप उन सभी के बांटने के बारे में कैसा महसूस करेंगे जो आपके पास है ?

- बरनबास उसमें किस तरह से ईमानदार था जिसे उसने किया था ? (प्रेरितों के काम ४:३६–३७) । आपके विचार से ईमानदार होने का क्या अर्थ है ? (सच बोलना, चोरी न करना या धोखा न देना, किसी भी तरीके में न ठगना, और इत्यादि) । आप कैसा महसूस करते हैं जब आप पूरी तरह से ईमानदार होते हैं ?

- हनन्याह और सफीरा किस तरह से बेईमान थे ? (प्रेरितों के काम ५:१–२) । सफीरा अपने पति के झूठ के साथ क्यों थी ? (प्रेरितों के काम ५:१–२, ७–८) । क्या हुआ होता यदि वह ईमानदार होती ?

- हमें किस तरह से चोट पहुंचती है जब एक व्यक्ति बईमान होता है ? समझाएं कि हम अपनी बेईमानी के परिणामों को तुरन्त नहीं देखते हैं, जैसे कि हनन्याह और सफीरा ने किया था, तब भी हम अपने आपको चोट पहुंचाते हैं । अपनी बेईमानी के कारण हम दूसरों को भी चोट पहुंचा सकते हैं ।

- क्या परिणाम होते हैं यदि आप बेईमान होते हैं ? क्या परिणाम होते हैं यदि आप ईमानदार होते हैं ? ईमानदारी या बेईमानी के परिणामों के बारे में एक व्यक्तिगत उदाहरण बताएं । बच्चों की समझने की सहायता करें कि हमेशा ईमानदार होना आसान नहीं होता है, परन्तु हमें ईमानदार होना चाहिए चाहे कोई भी परिस्थिति क्यों न हो । बच्चों को उनकी ईमानदारी के अनुभवों को बताने के लिए आमंत्रित करें ।

- जब आप सच बोलते हैं तब हमेशा कौन जानता है ? ईमानदार होना किस तरह से हमें स्वर्गीय पिता के नजदीक लाता है ?

- दूसरों को ईमानदार होने में आप क्या सहायता कर सकते हैं ?

- अपने माता-पिता के साथ ईमानदार होना क्यों महत्वपूर्ण है ? (ताकि वे आप पर भरोसा करेंगे) । आप क्यों चाहते हैं कि आपके माता-पिता आप पर भरोसा करें ? आप अपने माता-पिता से भरोसा कैसे कमा सकते हैं ? कभी-कभी सच बोलने के लिए साहस की आवश्यकता क्यों होती है ? (देखें समृद्धि गतिविधि ६) ।

- यदि हर कोई ईमानदार होता तो संसार किस तरह से अलग होता ?

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन, गिराजघर के तेरहवें अध्यक्ष के द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें ।

"ईमानदार हो । न तो झूठ बोलो और न ही चोरी करो । धोखा मत दो...

"प्रिय बच्चों, इस समय स्वर्गीय पिता आपको पृथ्वी पर भेजता है क्योंकि आप उसके अत्याधिक साहसी बच्चों में से कुछ हैं । वह जानता था कि आज संसार में बहुत दुष्टता होगी, और वह जानता था कि आप विश्वासी और आज्ञाकारी हो सकते हैं" (Conference Report, अप्रैल १९८९, पृ. १०३; या *Ensign*, मई १९८९, पृष्ठ ८२–८३ में) ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. तेरहवें विश्वास के अनुच्छेद की समीक्षा करें और उसे समझने और याद करने में बच्चों की सहायता करें ।

२. चॉकबोर्ड पर शब्द *घर, विद्यालय, और पड़ोस* लिखें । बच्चों को उन तरीकों के बारे में सोचने दें जिससे वे इन प्रत्येक स्थान की परिस्थितियों के बरताव में ईमानदार हो सकते हैं । जिन विचारों को बच्चों ने सोचा है उनपर चर्चा करें ।

३. चॉकबोर्ड पर शब्द *ईमानदार और बेईमानी* लिखें । एल्डर मारवीन जे. एस्टन द्वारा निम्नलिखित वक्तव्य को बताएं : "एक झूठ, धोखे के इरादे से दूसरों को दिया गया किसी भी तरह का बातचीत है'...बिना किसी शब्दों का उपयोग किए बगैर भी एक झूठ को प्रभावपूर्ण तरीके से बोला जा सकता है । कभी-कभी सिर हिलाना या चुप्पी भी धोखा दे सकती है" (Conference Report, अप्रैल १९८२, पृ. १०; या *Ensign* मई १९८२, पृ. ९ में) । निम्नलिखित परिस्थितियों में से प्रत्येक पर चर्चा करें और बच्चों को निर्धारित करने दें कि इसके अंतर्गत कौन सा शीर्षक उत्तम है और क्यों है :

सच बोलना
अपने स्वयं का काम करना
पूरी सच्चाई न बताने के द्वारा दूसरों को गुमराह करना
अपनी गलती मानना जब आपने कुछ गलत किया हो
धोखा देना
झूठ बोला
चोरी करना
आधा सच बताना
उधार ली हुई या खोई हुई चीजों को वापस करना
प्रतिज्ञाओं को मानना

४. प्रत्येक बच्चे को एक चिन्ह बनाने दें, एक शील्ड के आकार में , जो कहता हो, "मैं सच्चाई और ईमानदारी पर टिका रहूंगा" । सच के एक उद्देश्य को बनाने के लिए और जो वे करते हैं उनमें ईमानदार बने रहने के लिए बच्चों को आमंत्रित करें । उनके चिन्हों के नीचे उनके नामों का हस्ताक्षर करने दें ।

५. चॉकबोर्ड पर या कागज के एक टुकड़े पर एक सीढ़ी बनाएं और उसपर लिखें *ईमानदार सीढ़ी* । कागज से एक साधारण सी आकृति बनाएं या सीढ़ी के नीचे एक आकृति बनाएं । निम्नलिखित के समान परिस्थितियों का उपयोग करते हुए, बच्चों को उन सभी संभावित चुनावों का नाम बताने दें जिसे वे प्रत्येक परिस्थिति में कर सकते हैं । तब उनसे निर्णय लेने के लिए कहें कि कौन सा चुनाव उत्तम है । एक बच्चे से कहें कि वह सीढ़ी पर एक कदम ऊपर की तरफ जाती हुई आकृति को घुमाये (या आकृति से एक पंक्ति बनाये) यदि उत्तम चुनाव ईमानदार होना हो तो । संकेत करें कि उत्तम चुनाव सदैव ईमानदार चुनाव होता है । पंक्ति को सीढ़ी के ऊपर तक ले जाने के लिए पर्याप्त परिस्थितियों का उपयोग करें ।

क. आप अपने मित्र के खोए हुए खिलौने को पाते हैं ।
ख. आप एक बटुआ पाते हैं जिसमें पैसा हो ।
ग. मेज पर टॉफियों का एक थैला है जो किसी और का है, और उस कमरे में कोई भी नहीं है ।
घ. आप एक गतिविधि में उपस्थित होने जा रहे हैं जिसमें पैसा लगता है । अंदर जाने के दरवाजे पर चिन्ह लगा है "आठ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए मुफ्त" ।
च. एक भण्डार का क्लर्क आपको बहुत सा छुट्टा देता है ।
छ. पीरक्षा में एक मित्र आपसे नकल करवाने के लिए कहता है ।
ज. कोई किसी और के बारे में आपसे निष्ठुर बातें कहता है ।

झ. आप अपने माता-पिता से प्रतिज्ञा करते हैं कि आप एर निश्चित समय पर घर आ जाएंगे, परन्तु आपके मित्र चाहते हैं कि आप देर तक रूकें ।

६. बच्चों के नाटकीकरण के लिए निम्नलिखित के समान कई परिस्थितियां बनाएं । जिन परिस्थितियों को आप बनाती हैं उन्हें उस तरह की होनी चाहिए जिसमें बच्चे उनके माता-पिता के साथ ईमानदार होना या बेईमान होना चुन सकें ।

क. आपकी मां चाहती है कि आप अपने छोटे भाई की देखभाल करें । आप उसकी बजाय पढ़ना चाहते हैं । आप जानते हैं कि यदि आप उससे कहेंगे कि आपको घर-काम करना है तो वह उसकी देखभाल की आशा आप से नहीं करेगी ।

ख. जब आपकी मां घर पर नहीं होती है तब आप से गलती से उसका पसंदीदा कटोरा टुट जाता है ।

ग. आपने अपने पिता से प्रतिज्ञा की थी कि शनिवार को उनके साथ के एक काम में आप उनकी सहायता करेंगे, परन्तु आपके मित्रों ने एक गतिविधि की योजना बनाई है जिसमें आप उपस्थित होना चाहते हैं ।

७. चौथे विश्वास के अनुच्छेद की समीक्षा करें ।

निष्कर्ष

गवाही — ईमानदार होने के महत्व की अपनी गवाही बांटें। समझाएं कि जब हम उन सभी में ईमानदार होते हैं जिसे हम करते हैं, पवित्र आत्मा हमें शान्ति का एक अहसास देगा ।

प्रस्तावित घर पठन — सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में प्रेरितों के काम ४:३२–५:१० का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

शहीद स्तिफनुस

पाठ
३९

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की ईश्वरत्व की एक महान समझ को प्राप्त करने में सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक प्रेरितों के काम ६, ७:५४–६०, और सिद्धांत और अनुबंध १३०:२२–२३ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठन : प्रेरितों के काम ७:१–५३ और जोसफ स्मिथ—इतिहास १:१७ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियां :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. सिद्धांत और अनुबंध की एक प्रति ।
   ग. चित्र ७-४०, पहला दिव्यदर्शन (सुसमाचार कला चित्र किट ४०३; ६२४७०) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

चॉकबोर्ड पर लिखें *शहीद* । एक बच्चे से कक्षा के सामने आने के लिए कहें ।

- (बच्चे का नाम), क्या तुम एक शहीद बनना चाहोगे ?
- क्या तुममें से कोई जानता है कि एक शहीद कौन होता है ?

समझाएं कि शहीद एक वह व्यक्ति होता है जो किसी चीज में बहुत विश्वास करता है कि एक साक्षी के रूप में वह अपने जीवन का बलिदान देता या देती है ।

यह पाठ एक मनुष्य के बारे में है जिसके पास स्वर्गीय पिता, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा की एक मजबूत गवाही थी और इस गवाही के कारण उसे शहादत प्राप्त हुई थी ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को प्रेरितों के काम ६ या ७ में पाये जाने वाले स्तिफनुस के विवरण की शिक्षा दें (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- प्रेरितों ने सहायता के लिए सात पुरूषों को क्यों बुलाया था ? (प्रेरितों के काम ६:१–४) । इन सात पुरूषों को कैसे बुलाया गया था ? (प्रेरितों के काम ६:३, ५–६) । प्रेरितों ने उन पुरूषों पर "अपने हाथों" को क्यों रखा ? (कुछ निश्चित कार्यों को करने के लिए प्रेरितों ने उन्हें पौरोहित्य अधिकार दिया था, जिसे उन्होंने यीशु मसीह से प्राप्त किया था; वे सभी जो पौरोहित्य को प्राप्त करते हैं उनकी नियुक्ति हाथों को रखने के द्वारा ही होती है) ।

- स्तिफनुस के पास कौन से गुण थे जिसने प्रेरितों की मदद करने में और लोगों की सेवा करने में उसकी सहायता की थी ? (प्रेरितों के काम ६:५,८) । किस तरह से उसने लोगों के जीवनों को आशीषित किया था ?

- यहूदी मार्गदर्शक स्तिफनुस को एक सभा के समक्ष क्यों लाए थे ? (प्रेरितों के काम ६:९–१२) । आराधानलय के मार्गदर्शकों ने क्या करने का झूठा दोष स्तिफनुस पर लगाया था ? (प्रेरितों के काम ६:१३–१४ । समझाएं कि *विरोध* का अर्थ है परमेश्वर और पवित्र स्थानों के बारे में मजाक उड़ाने वाली और बेकार की बातें कहना) । उन्होंने ऐसा क्यों सोचा कि स्तिफनुस विरोध में बोल रहा था ?

- स्तिफनुस के मुखड़े को क्या हुआ था जब वह सभा के सदस्यों से बात कर रहा था ? (प्रेरितों के काम ६:१५) ।

संक्षिप्त में उन चीजों का फिर से वर्णन करें जिसे स्तिफनुस ने सभा में बोला था (देखें प्रेरितों के काम ७:१–५३) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि स्तिफनुस इस्राएल के लोगों के प्रति परमेश्वर की आशीषों को समझा रहा था और गवाही दे रहा था । उसने यह भी कहा कि लोगों ने परमेश्वर की अवज्ञा की थी, अत्याचार किया था और भविष्यवक्ताओं को मारा था, और मसीहा को अस्वीकार किया था और मारा था ।

- स्तिफनुस ने किसे देखा जब उसने स्वर्ग के तरफ देखा ? (प्रेरितों के काम ७:५५) । स्तिफनुस के साथ कौन था जब उसने स्वर्गीय पिता और यीशु की गवाही दी थी ? (पवित्र आत्मा) ।

- क्या स्तिफनुस के आस-पास के लोगों ने उस दिव्यदर्शन को देखा था जिसे उसने देखा था ? उन्होंने क्या किया था ? (प्रेरितों के काम ७:५७–५९) । स्तिफनुस ने क्या कहा जब उन्होंने उसपर पत्थरवाह किया ? (प्रेरितों के काम ७:५९–६०) । आपके विचार से स्तिफनुश उन लोगों को क्षमा क्यों कर सका था जिन्होंने उसे मारा था ?

पहले दिव्यदर्शन के चित्र को दिखाएं ।

- और किस ने स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के उसी के समान दिव्यदर्शन को देखा था ? (जोसफ स्मिथ—इतिहास १:१७) ।

- हम स्तिफनुस और जोसफ स्मिथ के दिव्यदर्शनों से स्वर्गीय पिता, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के बारे में क्या सीख सकते हैं ? (बच्चों की ईश्वरत्व के बारे में सीखने में सहायता के लिए आप समृद्धि गतिविधियां ४ और ५ का उपयोग कर सकती हैं) ।

- हम कैसे जान सकते हैं कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह का अस्तित्व है ? पवित्र आत्मा के साथ के योग्य बनने के लिए हमें क्या करना होगा ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि जब हम आज्ञाओं का पालन करते हैं, हम पवित्र आत्मा के द्वारा स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह की गवाही को प्राप्त कर सकते हैं ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. यूहन्ना १७:२०–२१ पढ़ें और चर्चा करें कि उद्देश्य में स्वर्गीय पिता, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा किस तरह से "एक" हैं । आप एक पिता, एक माता, और बच्चों को उदाहरण के तौर पर संदर्भ कर सकती हैं जो एक ही उद्देश्य के लिए एक साथ काम कर रहे हैं ।

आप अपनी प्रार्थनाओं में ईश्वरत्व के प्रत्येक सदस्य की भूमिका को भी समझा सकती हैं : हम स्वर्गीय पिता से प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं, और उत्तर पवित्र आत्मा के द्वारा आते हैं ।

२. समझाएं कि स्तिफनुस के अलावा और भी साहसी और विश्वासी लोग हैं जो स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रति अपनी गवाही और विश्वास के कारण शहीद हो चुके हैं । धर्मशास्त्रों से निम्नलिखित के समान उदाहरणों का उपयोग करें :

जोसफ स्मिथ पर अत्याचार किया गया था जब उन्होंने अपने दिव्यदर्शन के बारे में बताया था, और बाद में जोसफ स्मिथ और उनके भाई हाईरम शहादत को प्राप्त हुए थे ।

आरंभ में गिरजाघर के कई चेलों और प्रेरितों पर अत्याचर किया गया था और कुछ शहीद हुए थे । याकूब शहीद हुआ था (प्रेरितों के काम १२:२), उसी तरह पौलुस भी, और परम्परागत तौर पर स्वीकार किया गया था कि पतरस, मरकुस, और मत्ती भी शहीद हुए थे ।

बच्चों को आपको बताने दें कि वे इन विश्वासी लोगों के उदाहरण से क्या सीख सकते हैं :

३. पांचवे विश्वास के अनुच्छेद की समीक्षा करें । चर्चा करें कि कैसे आज गिरजाघर के मार्गदर्शक गिरजाघर की बुलाहटों पर बुलाए जाते हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे कि स्तिफनुस को आरंभ के प्रेरितों की सहायता के लिए बुलाया गया था । समझाएं कि जब एक व्यक्ति एक बुलाहट को प्राप्त करता है, उनपर हाथों को रखने के द्वारा उसकी नियुक्ति होती है और विशेष जिम्मेदारियों को करने के लिए अधिकार दिये जाते हैं । बच्चों की समझने में सहायता करें कि जब युवा स्त्री और पुरूष पौरोहित्य परिषद्‌ों और युवा स्त्री कक्षाओं में सेवा करते हैं, उनकी बुलाहट होती है और उसी तरीके से उन्हें नियुक्त किया जाता है ।

४. सिद्धांत और अनुबंध १३०:२२–२३ को पढ़ें और उसपर चर्चा करें । बच्चों की समझने में सहायता करें कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के पास महिमायुक्त मांस और हड्डी का शरीर है । हमारे शारीरिक शरीर स्वर्गीय पिता और यीशु की समानता में हैं । पवित्र आत्मा, आत्मा का एक श्रेष्ठ व्यक्ति है, जिसके पास मांस और हड्‌डी का शरीर नहीं है ।

५. निम्नलिखित शब्दपट्टियों को दिखाएं या चॉकबोर्ड पर शब्दों को लिखें ।

ईश्वरत्व
स्वर्गीय पिता :
यीशु मसीह :
पवित्र आत्मा :

कागज के विभिन्न टुकड़ों पर ईश्वरत्व के सदस्यों के बारे में वर्णन करते हुए निम्नलिखित वक्तव्यों को लिखें । ध्यान दें कि दो कागजों की आवश्यकता है जिसपर लिखा हो "एक महिमायुक्त मांस और हड्‌डी का शरीर है" ।

स्वर्गीय पिता :
हमारी आत्माओं का पिता
यीशु के नश्वर शरीर का पिता
एक महिमायुक्त मांस और हड्‌डी का शरीर है
हम उससे प्रार्थना करते हैं

यीशु मसीह :
हमार उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता
एक महिमायुक्त मांस और हड्‌डी का शरीर हो
संसार की सृष्टि की
एक नश्वर माता थी

पवित्र आत्मा :
आत्मा का एक श्रेष्ठ व्यक्ति
स्वर्गीय पिता और यीशु की साक्षी देता है
सभी चीजों की सच्चाई प्रकट करता है (मरोनी १०:५)
हमार निरन्तर साथी हो सकता है

बच्चों को कागज के उन टुकड़ों को चुनने की अनुमति देने के द्वारा जिसे आपने तैयार किया है, ईश्वरत्व के प्रत्येक सदस्य की भूमिका पर समीक्षा करने दें । प्रत्येक बच्चे को वक्तव्य को जोर से पढ़ने दें, सुनिश्चित करें कि कौन सा सन्दर्भ ईश्वरत्व के किस सदस्य पर लागू होता है, और उपयुक्त शीर्षक के नीचे वक्तव्य को रखें ।

निष्कर्ष

गवाही	ईश्वरत्व की अपने ज्ञान की गवाही दें, और बच्चों को बताएं कि कितना महत्वपूर्ण है कि आपके पास यह ज्ञान हो । बच्चों को स्वर्गीय पिता, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के प्रति अपने प्रेम का बताएं ।
प्रस्तावित घर पठन	सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में प्रेरितों के काम ७:५४–६० और सिद्धांत और अनुबंध १३०:२२–२३ का अध्ययन करें ।
	समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पतरस और कुरनेलियुस

पाठ
४०

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की समझने में सहायता करना कि स्वर्गीय पिता अपने सभी बच्चों से प्रेम करता है और चाहता है कि सभी के पास यीशु मसीह के सुसमाचार को जानने का अवसर हो ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक प्रेरितों के काम १०:१–११:१८ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियां :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. चित्र ७-४१, इसलिए तुम जाओ (सुसमाचार कला चित्र २३५; ६२४९४) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

निम्नलिखित नामों को चॉकबोर्ड पर लिखें : *कुरनेलियुस, स्वर्गदूत, पतरस* ।

तीन बच्चों में से प्रत्येक को इन तीन लोगों के निम्नलिखित वर्णन को पढ़ने दें । बाकी के बच्चों से उनके हाथों को ऊपर उठाने के लिए कहें जब वे सोचें कि वे उस व्यक्ति के बारे में जानते हैं जिसका वर्णन किया जा रहा है ।

मैं एक संदेशवाहक हूं । परमेश्वर के संदेश को बताने के अलावा, मैं शिक्षा देता हूं, आशीष देता हूं, और उसे करता हूं जिसे परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए मुझे करने की आज्ञा दी गई है । आज आप एक विशेष संदेश के बारे में सीखेंगे जिसे मैं लाया हूं । मैं (एक स्वर्गदूत) हूं ।

मैं गलील के समुद्र पर एक मछुआरा था जब यीशु ने मुझे उसका अनुसरण करने के लिए बुलाया था । मैंने एक दिव्यदर्शन प्राप्त किया था, जिसके बारे में आज आप सीखेंगे, जिसने हर एक के लिए सुसमाचार की शिक्षा का द्वार खोला था । मैं (पतरस) हूं ।

मैं रोम की सेना में एक सूबेदार हूं और ५० से १०० लोगों का अधिकारी हूं । मैं गिरजाघर में आने वाला पहला गैर-यहूदी (कोई जो एक यहूदी नही था) था । आज के पाठ में आप मेरे बपतिस्मा के बारे में सीखेंगे । मैं (कुरनेलियुस) हूं ।

धर्मशास्त्र विवरण

प्रेरितों के काम १०:१–११:१८ से पतरस और कुरनेलियुस की कहानी की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । उपयुक्त समय पर चित्र दिखाएं ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- कुरनेलियुस प्रभु से एक दिव्यदर्शन को प्राप्त करने और बपतिस्मा लेने के योग्य क्यों था ? (प्रेरितों के काम १०:२) । किस तरह से आप गिरजाघर के एक विश्वासी सदस्य बन सकते हैं ?

- कुरनेलियुस के लिए स्वर्गदूत का क्या संदेश था ? (प्रेरितों के काम १०:३–६) ।

- पतरस ने एक दिव्यदर्शन में क्या देखा ? (प्रेरितों के काम १०:११–१६) । दिव्यदर्शन उसे परेशान क्यों कर रहा था ? (प्रभु ने इस्राएल को कुछ निश्चित मांस को खाने से मना किया था, जिसे अशुद्ध माना जाता था देखें [लैव्यव्यवस्था ११]) । आरंभ में पतरस ने इस दिव्यदर्शन को किस तरह से स्वीकार किया था ? (प्रेरितों के काम १०:१४) । किस कारण से उसका मन बदल गया ? (प्रेरितों के काम १०:१५) ।

- पतरस के लिए कुरनेलियुस को सुसमाचार की शिक्षा देना इतना असाधारण क्यों था ? (प्रेरितों के काम १०:२८) । समझाएं कि इस समय तक प्रेरित यहूदी लोगों को सुसमाचार की शिक्षा दे रहे थे, और गिरजाघर के अधिकतर लोगों ने सोचा कि केवल यहूदी लोगों को सुसमाचार की शिक्षा दी जानी चाहिए । परन्तु कुरनेलियुस यहूदी नहीं था । आखिर में पतरस ने क्या जाना कि उस दिव्यदर्शन का मतलब क्या था ?(प्रेरितों के काम १०:३४–३५)। आज सुसमाचार किसे सीखाया जाना चाहिए ? (सभी लोग) ।

- आपके विचार से कुरनेलियुस ने अपने सभी मित्रों और रिश्तेदारों को पतरस की बात सुनने के लिए एकत्रित क्यों किया ? (प्रेरितों के काम १०:२४–२७) । कौन से कुछ सुसमाचार सिद्धांत हैं जिन्हें आप अपने परिवार और मित्रों के साथ बांटना चाहते हैं ?

- अपनी समस्या का समाधान खोजने के लिए कुरनेलियुस ने क्या किया ? (प्रेरितों के काम १०:३०) । आप और आपके परिवार को उपवास और प्रार्थना के कौन से अनुभव हुए हैं ? एक समस्या का समाधान खोजने में प्रभु ने आपकी सहायता कैसे की है ?

- लोगों ने कैसे जाना कि पतरस ने सच बोला था ? (प्रेरितों के काम १०:४४–४५) । हमें क्या करने की आवश्यकता है कि पवित्र आत्मा हमारे लिए सच की साक्षी दे ? (मरोनी १०:४–५) ।

- चेलों ने और अन्य प्रेरितों ने क्या सोचा जब उन्होंने सुना कि पतरस गैर-यहूदियों को शिक्षा दे रहा था ? (प्रेरितों के काम ११:२–३) । पतरस ने अपनी क्रियाओं को कैसे समझाया ? (प्रेरितों के काम ११:४, १७) । चेलों ने और प्रेरितों ने पतरस के दिव्यदर्शन को कैसे स्वीकार किया ? (प्रेरितों के काम ११:१८) । यह हमें स्वर्गीय पिता का उसके बच्चों के प्रति प्रेम के बारे में क्या सीखाता है ? (देखें समृद्धि गतिविधि ५) ।

- आप किस तरह से स्वर्गीय पिता के कुछ बच्चों को सुसमाचार की शिक्षा दे सकती हैं ? बच्चों की उन तरीकों को सोचने में सहायता करें जिससे इस समय वे प्रचारक बन सकते हैं और पूरे-समय के प्रचार कार्य पर सेवा करने की तैयारी वे कैसे कर सकते हैं ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों को छोटे-छोटे दलों में प्रेरितों के काम १०:३६–४३ पढ़ने दें और उन चीजों की एक सूची बनाने दें जिसकी शिक्षा पतरस ने कुरनेलियुस और उसरे परिवार और मित्रों को दी थी । प्रत्येक दल को उनकी सूचियों को पढ़ने दें जब आप उन चीजों को चॉकबोर्ड पर या कागज के बड़े टुकड़ें पर लिखें । निम्नलिखित चीजों में से उसे भरें जिसे शायद बच्चों ने छोड़ दिया हो :

यीशु मसीह सबका प्रभु है (आयत ३६) ।

यीशु मसीह का बपतिस्मा हुआ था (आयत ३७) ।

यीशु मसीह का अभिषेक पवित्र आत्मा और उसकी शक्ति दे द्वारा हुआ था (आयत ३८) ।

यीशु मसीह ने भलाई की थी (आयत ३८) ।

यीशु मसीह ने चंगाई की थी (आयत ३८)।

यीशु मसीह मारा गया था (आयत ३९)।

यीशु मसीह तीसरे दिन जी उठा था (आयत ४०)।

यीशु मसीह ने पतरस को गवाही देने की आज्ञा दी थी कि यीशु को परमेश्वर ने न्यायी ठहराया था (आयत ४२)।

सभी भविष्यवक्ताओं ने यीशु मसीह की साक्षी दी थी (आयत ४३)।

जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं उन्हें उनके पापों से क्षमा मिलेगी (आयत ४३)।

२. अपनी प्राथमिक अध्यक्षा की अनुमति से, प्रचार कार्य से वापस आए हुए एक प्रचारक को कक्षा में आने और उन अनुभवों को बताने के लिए आमंत्रित करें जो स्वर्गीय पिता के सभी बच्चों के प्रति शिक्षा के महत्व का उदाहरण हो।

३ निम्नलिखित वक्तव्य पर चर्चा करें जिसे एल्डर हावर्ड डबल्यु. हन्टर द्वारा एक उद्धरण से अनुकूल बनाया गया है :

हमारे स्वर्गीय पिता के लिए छोटे बच्चे मूल्यवान हैं। वह उन्हें प्रेम करता है और उनकी देखभाल एक ही तरह से करता है चाहे वे कहीं भी रहते हों या किसी भी तरह के कपड़े पहनते हो और कैसे भी दिखाई देते हों। वह काले रंग के बच्चों से, घुंघराले बालों वाले फिजियन बच्चों से, उदार बच्चों से, समोआ में रहने वाले चमकदार पहनावे वाले बच्चों से प्रेम करता है। वह छोटे-छोटे अंग्रेज लड़के लड़कियों से प्रेम करता है जो विद्यालय पर एक ही तरह के कपड़े पहनते हैं। वह जापान में रह रहे बच्चों से प्रेम करता है। वह दक्षिणी अमेरिका के सूरज की तेज किरणों के बीच रहने वाले बच्चों से और लमनायटियों से प्रेम करता है। हमारा पिता सभी जगह पर रहने वाले उसके बच्चों से प्रेम करता है। जब सोने सा समय होता है, सभी स्थान के प्रेमी माता-पिता अपने बच्चों के साथ प्रार्थना करने के लिए घुटने टेकते हैं। वे शायद पर्वतशिखर पर रहने वाले नरम गद्दे पर सोते हों या एक झोपड़ी के फर्श पर एक छोटी सी चटाई पर। परन्तु हमारा स्वर्गीय पिता उन सभी को सुनता और समझता है। (देखें *Friend*, अक्टू. १९७१, पृ. १०)।

४. बच्चों की समझने में सहायता करें कि यद्यपि विभिन्न देश के लोगों की विभिन्न परम्पराएं और प्रथाएं हो सकती हैं, उसमें हम सब एक समान हैं जिसमें परमेश्वर हम सभी से प्रेम करता है और चाहता है कि हम उसके पास वापस जाएं।

बच्चों को कुछ उन चीजों के साथ परिचित कराने के लिए जिसे अन्य देशों में किया जाता है या देखा जाता है, निम्नलिखित से मेल खाता हुआ या इसी के समान एक खेल खेलें।

उस स्थान से मेल करें जहां पर आप अपने प्रचार कार्य की सेवा करना अधिक पसंद करेंगे यदि आपको :

लोगों को

पुष्पमाला	स्कॉटलैंड
लकड़ी के जुते	हवाई
घाघरा	जापान
किमोनोस पहने हुए देखना हो	हॉलैंड

खाना हो

एनचीलाडास	संयुक्त राज्य
सावरब्रैटेन	नॉरवे
एप्पल पाई	प्रांस
क्रेप्स	जर्मनी
पीकल्ड हेरिंग	मेक्सिको

देखना हो

माउंटीस	इटली
बीग बेन	ऑस्ट्रेलिया
लीनीग टावर ऑफ पीसा	कनाडा
कंगारूस	इंग्लैंड

५. समझाएं कि पतरस के दिव्यदर्शन के समान ही कुछ १९७८ में घटा था जब अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने प्रभु के तरफ से एक प्रकटीकरण को प्राप्त किया था कि सभी योग्य पुरूष और लड़के पौरोहित्य को प्राप्त कर सकते हैं और उनके परिवार मन्दिर की आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं (देखें सिद्धांत और अनुबंध में आधिकारिक घोषणा—२) ।

निष्कर्ष

गवाही

अपनी गवाही दें कि परमेश्वर सभी बच्चों से प्रेम करता है और चाहता है कि हम सभी को सुसमाचार की शिक्षा दी जाए, हमारा बपस्तिमा हो, हम अपने अनुबंधों को रखें ताकि हम उसके साथ फिर से रह सकें । सुसमाचार के अपने ज्ञान के प्रति और अपने बपतिस्मा के लिए आभार व्यक्त करें ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में प्रेरितों का काम १०:३६–४३ और ११:१५–१८ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

याकूब हमें अपनी जीभ पर लगाम लगाना सीखाता है

पाठ
४१

उद्देश्य

चीजों को कहने और सोचने पर लगाम लगाना सीखने में बच्चों की सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक मत्ती ५:३३–३७, याकूब १:२६, ३:२–१३, ५:१२, १ पतरस ३:१०, निर्गमन २०:७, और मुसायाह ४:३० का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. कागज के कई टुकड़ों को त्रीकोण के आकार में काटें । निम्नलिखित शब्दों या वाक्यांशों में से प्रत्येक को एक त्रीकोण पर लिखें जो नीचे के तरफ संकेत करता हो : *गपशप, झूठा साक्षी, झूठ, लड़ाई, शपथ लेना, प्रभु का नाम व्यर्थ में लेना, क्रोधित भरे शब्द* । निम्नलिखित शब्दों या वाक्यांशों में से प्रत्येक को एक त्रीकोण पर लिखें जो ऊपर के तरफ संकेत करता हो : *उदार शब्द, प्रशंसा, भद्र शब्द, सच, प्रार्थना, शान्ति बनाना* ।

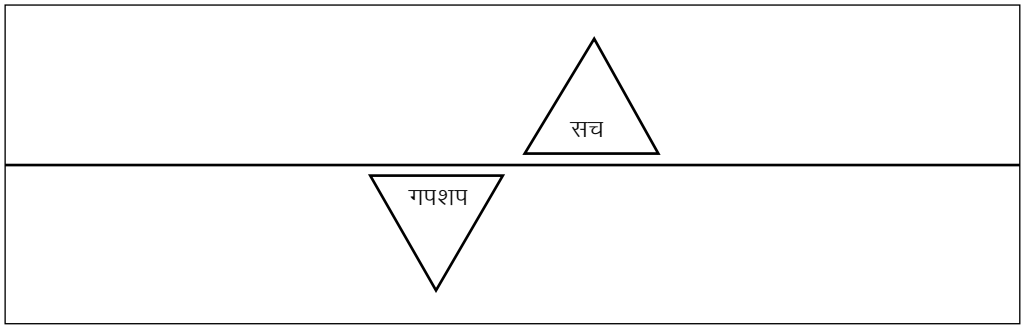

४. आवश्यक सामग्रियां :
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. चॉकबोर्ड पर त्रीकोणों को चिपकाने के लिए टेप (या उसी के समान कुछ और) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

अपनी कक्षा के बच्चों को छोटे-छोटे दलों में विभाजित करें और प्रत्येक दल को नाटकीकरण करने दें कि कैसे एक घोड़े, एक साइकिल, चलते समय एक कुत्ते, एक मोटरगाड़ी, एक नाव, या इन्हीं के समान अन्य चीजों लगाम लगाना है । दूसरे बच्चों को अनुमान लगाने दें कि दल क्या कर रहा है ।

- क्या होगा यदि कोई इन चीजों पर लगाम न लगा सके ?

समझाएं कि इस पाठ में बच्चे उन चीजों पर लगाम लगाने के बारे में सीखेंगे जो सदैव उनके साथ रहती है । यह उनके शरीर का अंग है, परन्तु यह उनका हाथ या पैर नहीं है ।

- आपके विचार से यह क्या हो सकता है ?

जब आप याकूब ३:३–५ पढ़ती हैं तब बच्चों से शरीर के इस अंग को सुनने के लिए कहें ।

- यह धर्मशास्त्र हमें हमारी जीभ के बारे में क्या बताता है ?

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को मत्ती ५:३३–३७, याकूब १:२६, ३:२–१३, और १ पतरस ३:१० में पाये जाने वाले विवरणों की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । समझाएं कि छल-कपट वाली बातें कहने का मतलब है दूसरों को धोखा देने की कोशिश करना । बच्चों की समझने में सहायता करना कि यद्यपि जीभ हमारे शरीर का एक छोटा सा अंग है, उन्हें उसपर लगाम लगाने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- अपने जीभ पर लगाम लगाने का क्या अर्थ है ? (याकूब १:२६) । यदि हम अपनी जीभ पर लगाम लगा लें तो हम अपने पूरे शरीर पर लगाम लगा सकते हैं ? (याकूब ३:२) ।

- एक साधारण सोते के मुंह से दोनों मीठा और कड़वा पानी या खारा और ताजा पानी क्यों नहीं निकल सकता है ? (याकूब ३:११–१२) । याकूब का क्या मतलब था जब उसने कहा था कि एक अंजीर के पेड़ से जैतून या एक दाख की लता में अंजीर नहीं लग सकता है ? (याकूब ३:१२) । इन उदाहरणों से वह हमें क्या सीखाने की कोशिश कर रहा था ? (याकूब ३:१०) ।

- हमें क्या होता है जब हम निष्ठुर चीजें या रूक्ष बातें कहना आरंभ करते हैं ? आपके विचार से यह उन अच्छी चीजों पर कैसे प्रभाव डालता है जिसे हम कहते हैं ?

- हमें क्या बोलना चाहिए और कैसे बोलना चाहिए, के बारे में यीशु ने हमें कौन सी आज्ञाएं दी है ? (मत्ती ५:३३–३७) । आपके विचार से इन आज्ञाओं को मानना हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है ?

चॉकबोर्ड पर एक समतल रेखा बनाएं । त्रीकोणों का मुंह नीचे करते हुए उन्हें मेज पर रखें, और प्रत्येक बच्चे को एक चुनने, उसे पढ़ने, और उसे रेखा के ऊपर चिपकाने दें यदि चिन्ह ऊपर के तरफ संकेत करता हो और रेखा के नीचे चिपकाने दें यदि चिन्ह नीचे के तरफ संकेत करता हो । ("तैयारी" खण्ड में दिखाए गए उदाहरण को देखें) ।

- प्रत्येक शब्द पर चर्चा करें जब बच्चा त्रीकोण को रेखा पर रखता हो । चर्चा करें कि क्यों रेखा के ऊपर की चीजें बोलने में सकारात्मक हैं और रेखा के नीचे की चीजें बोलने में नकारात्मक हैं । आप कैसा महसूस करते हैं जब आप किसी से कुछ उदार बातें कहते हैं या किसी के बारे में उदार बातें बोलते हैं ? आप कैसा महसूस करते हैं जब आप किसी की प्रशंसा करते हैं ? क्यों किसी के बारे में अच्छा कहना हमें हमारे बारे में भी अच्छा महसूस कराता है ?

- दस आज्ञाएं हमें क्या बताती हैं कि हमें प्रभु के बारे में कैसे बोलना चाहिए ? (निर्गमन २०:७) । हमारे लिए यह महत्वपूर्ण क्यों है कि हम स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बारे में केवल श्रद्धापूर्वक बातें ही बोलें ? यह आज्ञा मानना हमें किस तरह से स्वर्गीय पिता और यीशु की तरह अधिक बनने में सहायता करता है ? (पाठ ८ में बताई गई अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल की कहानी को आप फिर से बता सकती हैं) ।

- हम अपनी जीभ और अपनी क्रियाओं पर किस तरह से लगाम लगा सकते हैं ? बच्चों की समझने में सहायता करें कि जिसे हम सोचते और महसूस करते हैं वह उस चीज को निर्धारित करता है कि हम क्या कहते हैं और क्या करते हैं । अपने विचारों पर लगाम लगाने के द्वारा, हम उसपर लगाम लगा सकते हैं जिसे हम कहते हैं । हम अपने विचारों पर लगाम किस तरह से लगा सकते हैं ? निम्नलिखित सुझावों पर चर्चा करें :

स्वयं से पूछें, "इस परिस्थिति में यीशु मुझसे क्या करवाना चाहता है ?"
एक पसंदीदा धर्मशास्त्र के बारे में सोचें ।
एक प्राथमिक गीत को गाएं या गुनगुनाएं या गीत को जोर से गाएं या मन में गाएं ।
सहायता के लिए प्रार्थना करें ।
याद रखें कि आप परमेश्वर के एक बच्चे हो ।
उसके बारे में सोचें जो आपके माता-पिता आपसे करवाना चाहते हैं ।

समृद्धि गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. जोसफ स्मिथ के बारे में निम्नलिखित कहानी बताएं (आप किसी एक से इस कहानी को ऑडियो कैसेट में रिर्काड करने के लिए कह सकती हैं जो अच्छी तरह से पढ़ता हो) ।

उन लोगों के द्वारा जोसफ स्मिथ कई बार जेले में डाले गए जो उन्हें पसंद नहीं करते थे, यद्यपि वे कभी भी सिद्ध नहीं कर सके कि उन्होंने कुछ गलत किया था । एक रात उन्हें और कुछ अन्य लोगों को एक ठंडे और भयानक जेल में रखा गया था जहां उनके टखनों को जंजीरों से जकड़ा गया था और सख्त फर्श पर सोने के लिए कहा गया था । वे सोने का प्रयास कर रहे थे परन्तु पहरेदार जोर-जोर से बात कर रहे थे । वे एक दूसरे के सामने शपथ ले रहे थे और उन भयानक चीजों के बारे में बता रहे थे जिसे उन्होंने गिरजाघर के सदस्यों के साथ किया था ।

इस भयानक बातचीत को सुनने के पश्चात, अचानक जोसफ कूद कर खड़े हो गए और लोगों से कहा कि, "शान्त...यीशु के नाम से मैं तुम्हें डांटता हूं, और तुम्हें चुप रहने की आज्ञा देता हूं; अगले क्षण मैं इस तरह की भाषा नहीं सुनना चाहूंगा" । पहरेदारों ने अपने हथियारों को गिरा दिया और क्षमादान की भीख मांगी । बाकी की रात वे चुपचाप थे । (देखें Parley P. Pratt, *Autobiography of Parley P. Pratt,* पृष्ठ २०९–११) ।

- आप क्या करेंगे यदि आपके आस-पास कोई शपथ लेता हो या एक गंदी कहानी सुनाता हो ?

२. एक लम्बे धागे पर एक छोटा सा रिंग या एक चरखी बांधें और धागे के अंत में एक गांठ बांधें । कक्षा के सदस्यों को एक गोलाई में खड़ें होने दें और धागे को पकड़ने दें । एक बच्चे को गोलाई के बीच में आने के लिए चुनें । अन्य बच्चों को रिंग यी चरखी को एक हाथ से दूसरे हाथ तक बढ़ाने दें । जब आप कहें "रूक जाओ", जिस व्यक्ति के हाथ में रिंग हो उसे उससे उस बच्चे के बारे में कुछ अच्छा कहने के लिए कहें जो बीच में खड़ा हो । तब जो बच्चा बीच में हो उसे उस व्यक्ति के स्थान पर जाने के लिए कहें जिसने उसके बारे में अच्छा कहा हो और खेल को जारी रहने दें । खेल तब तक जारी रखें जब तक कि प्रत्येक बच्चे के बीच में जाने की बारी खत्म न हो जाए । आप शायद प्रत्येक बच्चे के बारे में एक सकारात्मक टिप्पणी देना चाहें । उस बारे में बात करें कि हम कैसे महसूस करते हैं जब हम अच्छी बातें कहते हैं और कैसा महसूस करते हैं जब हमारे बारे में कुछ अच्छा कहा जाता है । (यदि आपकी कक्षा इस गतिविधि के लिए बहुत छोटी हो, प्रत्येक बच्चे को दूसरों के बारे में कुछ अच्छा कहने दें) ।

३. अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने एक युवा लड़के के बारे में कहानी बताई थी जो एक खेत में रहता था, उस कहानी में बताई गई छोटी सी लोहे की पच्चर की तुलना एक बुरे विचार से करें ।

एक दिन जब एक युवा लड़का खेत से आ रहा था, उसने एक लोहे की पच्चर पाई । (समझाएं कि एक पच्चर किस तरह दिखाई देती है) । वह जानता था कि उसे रात्रि-भोज पर देर हो गई थी, इसलिए उस पच्चर को लकड़ी के गोदाम में ले जाने की बजाय जहां का वह था, उसने उसे एक अखरोट के पेड़ की शाखाओं के बीच में रख दिया जिसे उसके पिता ने आगे के द्वार के पास लगाया था । उसने सोचा कि बाद में वह पच्चर को पेड़ से निकालकर उसे गोदाम में दे देगा, परन्तु उसने ऐसा कभी नहीं किया । वर्षों तक पच्चर वहीं पड़ा रहा, और पेड़ उसके आस-पास तब तक बढ़ता रहा जब तक कि वह एक बहुत बड़ा पेड़ नहीं बन गया ।

बहुत वर्षों के बाद एक ठंड की रात में, बर्फ से बढ़ते हुए बारिश के कारण बड़े पेड़ की तीन मुख्य शाखाओं में से एक टूट गया । बाकी का पेड़ अपना संतुलन खो बैठा और नीचे गिर गया । जब तुफान खत्म हो गया, पेड़ की एक टहनी भी नहीं बची थी ।

अगली सुबह एकदम सबेरे, किसान—लड़का बड़ा हो गया था...बाहर गया और नष्ट हुए अखरोट के पेड़ को देखा । उसने सोचा, "एक हजार डॉलर के लिए मैंने ऐसा नही होने दिया होता । उस खाड़ी में वह सबसे सुंदर पेड़ था" ।

किसान उस पच्चर के बारे में भूल गया था, परन्तु वह तब भी वहीं था । यद्यपि पेड़ बहुत बड़ा हो गया था, पच्चर ने उसे कमजोर कर दिया था । अक्सर पेड़ तुफान का सामना करते हुए खड़ा रह सकता था । परन्तु पच्चर के कारण जोकि बहुत वर्षों से वहां पड़ा हुआ था, पेड़ उतना मजबूत नहीं हुआ जितना कि उसे होना चाहिए था । पच्चर के कारण पेड़ गिरकर टूट गया । (देखें Samuel T. Whitman, "Forgotten Wedges," Spencer W. Kimball द्वारा उद्धरित, Conference Report, अप्रैल १९६६, पृष्ठ ७०–७१ में) ।

- किस तरह बुरे विचार एक पच्चर की तरह होते हैं ? जब हममें एक बुरा विचार आता है, वह हमारे मनों में गहराई तर काम कर सकता है, पेड़ में पड़े पच्चर की तरह, और हमारे लिए एक बड़ी समस्या बन सकती है । हमें बुरे विचारों से तुरन्त दूर होना चाहिए ।

४. नीतिवचन २३:७ पर चर्चा करें । चर्चा में उन तरीकों को सम्मिलित करें जिससे बच्चे अपने स्वभाव पर लगाम लगा सकें, जैसे कि जब तकलीफ होती है या जब वे क्रोधित होते हैं तब वे १ से १० तक की गिनती बोलें ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि अपनी जीभ पर लगाम लगाना सीखना उन चीजों में से एक है जिससे हम स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह की तरह अधिक बन सकते हैं । एक अनुभव बताएं जब बुरी बात बोलने की बजाय अच्छी बात को बोलने के कारण आपकी सहायता हुई हो या कोई प्रभु के नजदीक हुआ हो जिसे आप जीनती हैं । बच्चों को उन चीजों पर लगाम लगाने के प्रयास के लिए प्रोत्साहित करें जिसे वे आने वाले सप्ताह के दौरान कहेंगे ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में याकूब ३:३–१० का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

शाऊल का परिवर्तन

पाठ
४२

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे को यीशु मसीह के प्रति पूरी तरह से परिवर्तित होने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक प्रेरितों के काम ७:५७–६०, ८:१–३, ९:१–३०, २६:९–२३, और मुसायाह ५:२ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठन : प्रेरितों के काम २२:३–२१ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियां :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
   ख. पानी से भरा हुआ एक गिलास ।
   ग. चित्र ७-४२, दमिश्क के मार्ग पर शाऊल ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को पानी से भरा हुआ गिलास दिखाएं ।

- क्या होता है जब पानी उबलता है ? (वह भाप में बदल जाता है) ।
- क्या होता है जब पानी जमता है ? (वह बर्फ में बदल जाता है) ।

समझाएं कि जब पानी बर्फ या भाप में बदल जाता है, हम कहते हैं कि इसका "परिवर्तन" हो गया है । इसका रुप पहले वाले पानी से भिन्न हो जाता है ।

- किस तरह से लोग यीशु समीह के सुसमाचार में परिवर्तित होते हैं ? जब वे परिविर्तित होते हैं तब उनका जीवन किस तरह से बदल जाता है ?

चॉकबोर्ड पर शब्द *परिवर्तित* लिखें । समझाएं कि यह पाठ उस मनुष्य के बारे में है जो यीशु मसीह के सुसमाचार में चमत्कारी रूप से परिवर्तित हुआ था ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को प्रेरितों के काम ९:१–२० में पाई जाने वाली उस विवरण की शिक्षा दें जिसमें शाऊल यीशु मसीह के गिरजाघर में परिवर्तित हुआ था । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि यह शाऊल वह मनुष्य नहीं है जो इस्राएल का प्रथम राजा था परन्तु वह मनुष्य है जो महान प्रचारक पौलुस बना था ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- किस तरह से शाऊल गिरजाघर के सदस्यों पर अत्याचार करता था ? (प्रेरितों के काम ७:५७–६०; ८:१–३; ९:१–२) । गिरजाघर के सदस्यों ने उसके बारे में कैसा महसूस किया होगा ? आपको कैसा महसूस होता यदि किसी ने आपको आपके विश्वासी रहने के कारण सताया होता ? हमें कैसे जबाव देना चाहिए जब कोई हमारे साथ ऐसा करता है ? बच्चों को किसी भी अनुभव को बताने के लिए प्रोत्साहित करें जो उन्हें तब हुआ हो जब किसी ने उनका मजाक उड़ाया हो या उनके विश्वासों के कारण उनके प्रति निष्ठुर रहा हो ।

- दमिश्क के मार्ग पर ऐसा क्या हुआ था जिसने शाऊल की समझने में सहायता की थी कि उसे उसके पापों का पश्चाताप करने की आवश्यकता थी ? (प्रेरितों के काम ९:३–६) । इस दिव्यदर्शन में शाऊल ने किससे बात की थी ? (प्रेरितों के काम ९:५) । स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह हमारी जानने में कैसे सहायता करते हैं कि कब हमें पश्चाताप करने की आवश्यकता है ? (पवित्र आत्मा के द्वारा अहसास होता है और अपने माता-पिता,भविष्यवक्ता, और धर्मशास्त्रों से मार्गदर्शन प्राप्त होता है) ।

- "हथियार पर प्रहार करना" का क्या मतलब है ? (प्रेरितों के काम ९:५) (हथियार एक नुकिला भाला होता था जिसका उपयोग लोग जानवरों को हिलाने के लिए करते थे । जब उसे भेदा जाता तब अक्सर जानवर पीछे के तरफ उछलते, जिसके कारण भाले से वे और अधिक घायल हो जाते थे । यीशु मसीह शाऊल को बता रहा था कि किसी भी अन्य चीज से अधिक स्वयं उसके ही कार्य उसे हानि पहुँचाते थे । जब हम उसके विरूद्ध लड़ते हैं जो सही है तो हम अपने आपको सबसे अधिक हानि पहुँचाते हैं) । सच्चाई के विरूद्ध लड़ने के द्वारा कोई किस तरह से चोट खा सकता है ? यदि संभव हो, अपने स्वयं के अनुभव से एक उपयुक्त उदाहरण दें ।

- शाऊल ने पश्चाताप करने के लिए और यीशु मसीह के पास जाने के लिए क्या किया था ? अपने पापों का पश्चाताप करने के लिए हमें क्या करने की आवश्यकता है ? निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करें (आप उन्हें चॉकबोर्ड पर सूचीबद्ध कर सकती हैं) :

  उसने अपने पापों को पहचाना (प्रेरितों के काम ९:६) ।
  क्षमादान के लिए उसने उपवास और प्रार्थना किया (प्रेरितों के काम ९:९, ११) ।
  उसका बपतिस्मा हुआ (प्रेरितों के काम ९:१८) ।
  उसने उन चीजों को सही करने का प्रयास किया जिसे उसने गलत किया था (प्रेरितों के काम ९:२०) ।
  वह बदल गया और लोगों पर कभी भी फिर से अत्याचार नही किया ।

  समझाएं कि शाऊल हृदय से दुष्ट नही था; उसे धोखा दिया गया था । उसे पश्चाताप करने और बपतिस्मा लेने की आवश्यकता थी ।

- जब हम कुछ गलत करते हैं तब हमें पश्चाताप करने की आवश्यकता क्यों होती है ? पश्चाताप से हम कैसा महसूस करते हैं ?

- प्रभु ने हनन्याह से क्या करने के लिए कहा था ? क्यों ? (प्रेरितों के काम ९:१०–१२) । (समझाएं कि यह एक विभिन्न तरीके का हनन्याह है जो बेईमानी के प्रति प्रभावित था) । हनन्याह उसे करने से क्यों डर गया था जिसे करने के लिए प्रभु ने कहा था ? (प्रेरितों के काम ९:१३–१४) ।

- प्रभु ने शाऊल को एक "चुना हुआ पात्र" क्यों कहा है ? (प्रेरितों के काम ९:१५–१६) । स्वर्गीय पिता शाऊल से कौन से महत्वपूर्ण काम करवाना चाहता है ? (प्रेरितों के काम २६:१६, १८) । कौन सी महत्वपूर्ण काम शायद स्वर्गीय पिता आप से करवाना चाहेगा ? इन चीजों के बारे में आप कैसे जान सकते हैं ?

- शाऊल ने अपनी आंखों की रोशनी कैसे खो दी ? (प्रेरितों के काम ९:८; २२:११) । क्या हुआ जब हनन्याह ने शाऊल को आशीषित किया था ? (प्रेरितों के काम ९:१७–१८) ।

- शाऊल के परिवर्तन के पश्चात, जब वह प्रचार करता था तब लोगों ने या चेलों ने उसपर विश्वास क्यों नहीं किया था ? (प्रेरितों के काम ९:२१, २६) । शाऊल को देश क्यों छोड़ना पड़ा था ? (प्रेरितों के काम ९:२३,२९–३०) ।

- स्वर्गीय पिता क्या करता है जब हम अपने पापों का पश्चाताप करते हैं ? (सि. और अनु. ५८:४२) । हम उन अन्य लोगों की सहायता कैसे कर सकते हैं जो पश्चाताप करने का और यीशु के अनुसरण का प्रयास करते हैं ?
- यीशु मसीह के बारे में शाऊल की गवाही क्या थी ? (प्रेरितों के काम ९:२०; २६:२२–२३) । हम कैसे जान सकते हैं कि हम यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रति सच्चे तौर पर परिवर्तित हो गए हैं ? (मुसायाह ५:२) ।

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन, गिरजाघर के तेरहवें अध्यक्ष के द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण पर चर्चा करें : "जब हम इस महान बदलाव के तहत होते हैं, जोकि केवल यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा आया है और हमारे ऊपर पवित्र आत्मा के [काम करने के] द्वारा आया है, यह ऐसा होता है जैसे कि हम नये व्यक्ति हों...आप अपने पापा के जीवन को भूल जाते हैं...और स्वच्छ हो जाते हैं । आपको अपने पुराने दिनों में जाने की [इच्छा] नहीं होती है । वास्तव में आप एक नये व्यक्ति हो जाते हैं" । (*The Teachings of Ezra Taft Benson*, पृ. ४७०) । (बच्चों की उस अनुभव की चुनौती के लिए जिसका वर्णन अध्यक्ष बेनसन ने किया है, आप समृद्धि गतिविधि १ का उपयोग कर सकती हैं) ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. बच्चों से उन चीजों का नाम बताने के लिए कहें जिसके पश्चाताप की आवश्यकता उनकी उम्र के बच्चों को हो सकती है, जैसे कि झूठ बोलना, धोखा देना, क्रोधित होना, गलत भाषा का उपयोग करना, और अपने माता-पिता की अवज्ञा करना । जब उनका वर्णन किया जाए तब इन चीजों को चॉकबोर्ड पर लिखें । बच्चों को बताएं कि आप एक प्रश्नोत्तरी देने जा रही हैं । जब आप सूचीबद्ध की गई चीजों के तरफ संकेत करें, बच्चों को स्वयं से पूछने दें, "क्या इसके लिए मुझे पश्चाताप करने की आवश्यकता है ?" बच्चों को प्रत्येक प्रश्न का उत्तर चुपचाप "हां" या "ना" में देने दें । उन चरणों की समीक्षा करें जिससे शाऊल ने पश्चाताप किया था ।

२. कागज के विभिन्न टुकड़ों पर या कार्डबोर्ड के कटे वर्गों पर वाक्यांश "मन फिराओ और परमेश्वर के तरफ जाओ" (प्रेरितों के काम २६:२०) के प्रत्येक शब्द को लिखें । कागजों के सामने का हिस्सा नीचे करते हुए क्रमानुसार में एक मेज पर रखें । बच्चों को वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर का अनुमान लगाने की बारी लेने दें । जब एक अक्षर का अनुमान लगा लिया जाए जो वाक्यांश के प्रतिकूल हो, उसे पलट दें । समझाएं कि जब हम पश्चाताप करते हैं और परमेश्वर के तरफ जाते हैं, हम परिवर्तित होते हैं ।

३. चौथे विश्वास के अनुच्छेद पर चर्चा करें और उसे याद करें ।

४. प्राथमिक अध्यक्षता की अनुमति पर, एक तत्काल परिवर्तित हुए सदस्य या प्रचार कार्य से वापस आए एक प्रचारक को कक्षा में आने और एक अनुभव बताने के लिए आमंत्रित करें जब किसी का जीवन मसीह में विश्वास, पश्चाताप, और बपतिस्मा के कारण बदल गया हो । उस व्यक्ति को आनन्द और प्रसन्नता के उसके अहसासों के बारे में बताने दें जो सुसमाचार की शिक्षाओं को जीने के द्वारा आई हों ।

५. एक बच्चे से चॉकबोर्ड पर एक खुरदरे सड़क का चित्र बनाने के लिए कहें । दूसरे बच्चे से एक सड़क के ऊपर उस शहर का नाम लिखने के लिए कहें जहां वह जाना चाहता या चाहती हो ।

- आप क्या करेंगे या करेंगी यदि आपने एक गलत मोड़ ले लिया हो और अपने आपको गलत रास्ते पर पाते या पाती हों ?
- क्या आप उस शहर में जा सकते या सकती हैं जहां से आप आए थे या आई थीं ?
- उस शहर में जाने के लिए आप क्या करेंगे या करेंगी जहां आप जाना चाहते या चाहती हैं ?
- पश्चाताप किस तरह से सही सड़क पर जाने के समान है ?

निष्कर्ष

गवाही	अपनी गवाही दें कि हमारे जीवन में पश्चाताप कितना महत्वपूर्ण है और यीशु मसीह के सुसमाचार में सच्चे तौर पर परिवर्तित होना कितना महत्वपूर्ण है । सुसमाचार के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करें ।
प्रस्तावित पाठ विकास	सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में प्रेरितों के काम ९:१–२० का अध्ययन करें ।
	समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पौलुस यीशु मसीह की गवाही देता है

पाठ
४३

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की यीशु मसीह की गवाही में साहसी बनने की इच्छा में सहायता करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक प्रेरितों के काम १३:२–४, १४; और १६:१६–३४ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. पाठ के अन्त में पायी जाने वाली पहेली की एक प्रति तैयार करें । कागज के टुकड़े काटने के पहले उसके पीछे बड़े अक्षरों में शब्द *साहसी* लिख लें ।

४. आवश्यक सामग्रियां :
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. प्रत्येक बच्चे के लिए कागज का एक टुकड़ा और एक पेन्सिल ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

पहेली के टुकड़ों को बच्चों में बांट दें । पहेली पर लिखे हुए प्रत्येक शब्द पर चर्चा करें और उन्हें टुकड़ों को एक साथ व्यवस्थित करने दें । दूसरे शब्द को खोजने के लिए बच्चों को टुकड़ों को फिर से घुमाकर रखने दें और एक साथ व्यवस्थित करने दें । चॉकबोर्ड पर लिखें *साहसी* ।

- साहसी का अर्थ क्या है ? समझाएं कि पहेली के टुकड़ों पर लिखे हुए शब्द वर्णन करने में सहायता करते हैं कि साहसी की क्या अर्थ है ।
- पहेली पर लिखे हुए शब्दों में से कौन सा आपको याद है ? शब्दों को लिखें या शब्द *साहसी* के अंतर्गत पहेली के टुकड़ों को दिखाएं ।

धर्मशास्त्र विवरण

शाऊल का सुसमाचार के प्रति परिवर्तन, पर संक्षिप्त में समीक्षा करें और बच्चों को बताएं कि शाऊल का नाम बदलकर पौलुस हो गया था । पौलुस ने यीशु के अनुसरण करने वालों पर अत्याचार करना बंद कर दिया था और यीशु मसीह के लिए एक साहसी प्रेरित और प्रचारक बन गया था ।

बच्चों को प्रेरितों के काम १३:२–४; १४ में पाये जाने वाले पौलुस और बरनबास प्रचारक के अनुभवों की शिक्षा दें और प्रेरितों के काम १६:१६–३४ में पाये जाने वाले पौलुस और सीलास के बन्दीगृह के अनुभव की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । बच्चों को उन तरीकों को सुनने के लिए कहें जिससे पौलुस, बरनबास, और सीलास ने साहसी होते हुए यीशु मसीह और उसके सुसमाचार की गवाही दी थी ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक

होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- प्रभु ने पौलुस और बरनबास को क्या करने के लिए बुलाया था ? (प्रेरितों के काम १३:२–४) ।
- पौलुस और बरनबास के लुस्त्रा में रह रहे लंगड़े मनुष्य को चंगा करने के पश्चात, लोगों ने क्या सोचा कि वे कौन थे ? (प्रेरितों के काम १४:११–१२) । (समझाएं कि ज्यूस और हिरमेस झूठे परमेश्वर थे लोग जिनकी आराधना करते थे । वे स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बारे में नहीं जानते थे) । पौलुस और बरनबास लोगों को यीशु मसीह के बारे में क्या सीखाने का प्रयास कर रहे थे ? (प्रेरितों के काम १४:१४–१७) ।
- अन्ताकिया और इकुनियुम के यहूदियों का व्यवहार पौलुस के प्रति कैसा था ? (प्रेरितों के काम १४:१९) । आपके विचार से इतनी बुरी तरह व्यवहार किए जाने के पश्चात भी उसने सुसमाचार के प्रचार को क्यों जारी रखा था ?
- मकिदुनी के कुछ लोग परेशान क्यों थे जब पौलुस और सीलास ने एक स्त्री को उसमें से बुरी आत्मा को बाहर निकाने के द्वारा उसे चंगा किया था ? (प्रेरितों के काम १६:१९) । इन लोगों ने पौलुस और सीलास के साथ क्या किया था ? (प्रेरितों के काम १६:२०–२३) ।
- पौलुस और सीलास ने क्या किया था जब वे बन्दीगृह में थे ? (प्रेरितों के काम १६:२५) । आपके विचार से उन्होंने प्रार्थना क्यों किया था और परमेश्वर के प्रति बड़ाई के गाने क्यों गाए थे ? आपके विचार से उनकी क्रियाओं का अन्य कैदियों पर क्या प्रभाव हुआ था ?
- आपके विचार से पौलुस और सीलास बन्दीगृह में ही क्यों रह गए थे जब भूकंप के कारण जेल के दरवाजे खुल गए थे ? (प्रेरितों के काम १६:२७–३१) । उनकी क्रियाओं ने बन्दीगृह के दारोगा और उसके परिवार को कैसे आशीषित किया था ? (प्रेरितों के काम १६:३२–३४) । हमारे पास किस प्रकार के अवसर हैं जिसमें हम दूसरों को यीशु मसीह के बारे में सीखाते और उसकी गवाही देते हैं ?
- बच्चों को प्रेरितों के काम १४:३ और १६:१८, २५, ३१ पढ़ने दें । ये धर्मशास्त्र कैसे दिखाते हैं कि पौलुस जहां कहीं भी जाता था यीशु मसीह की अपनी गवाही में साहसी रहता था ? हम दूसरे लोगों को किस तरह से जानने दे सकते हैं कि हमारे पास यीशु मसीह की मजबूत गवाहियां हैं ?
- कौन सी कुछ चुनौतियां हैं जिसका सामना हम कर सकते हैं जब हम यीशु की गवाही देने में साहसी होने का प्रयास करते हैं ?

बच्चों को उन विशेष चीजों को सोचने की चुनौती दें जिसे वे इस सप्ताह दूसरों को दिखाने के लिए कर सकते हैं कि उनके पास यीशु मसीह की मजबूत गवाहियां हैं । कम से कम उन्हें एक विचार लिखने दें और कागज को उस स्थान पर रखने के लिए कहें जहां से अक्सर वे इसे आसानी से देख सकें । उन्हें उनके कागजों पर पहेली के शब्दों को भी लिखने दें ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. निम्नलिखित शब्दपट्टियों को तैयार करें या उन्हें चॉकबोर्ड पर लिखें :

पौलुस ने निर्भिक होकर यीशु मसीह की गवाही दी थी ।
जीवते परमेश्वर के बारे में सीखाय था ।
प्रार्थना किया था और परमेश्वर के भजन गाए थे ।
बन्दीगृह में रह गए थे और दारोगा को बचाया था ।
दारोगा को प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना सीखाया था ।

कागज की विभिन्न पर्चियों पर निम्नलिखित धर्मशास्त्र सन्दर्भों को लिखें : प्रेरितों के काम १४:३, प्रेरितों के काम १४:१५, प्रेरितों के काम १६:२५, प्रेरितों के काम १६:२८, प्रेरितों के काम १६:३१ ।

शब्दपटिटयों को दिखाएं और धर्मशास्त्र सन्दर्भों को बच्चों में बांटें । बच्चों को एक बार में एक धर्मशास्त्र पढ़ने दें और निश्चय करने दें कि कौन सी शब्दपट्टी किसके साथ मेल खाती है । समझाएं कि पौलुस हमेशा यीशु मसीह का साहसी साक्षी रहा था जहां भी वह गया था और जो भी उसने किया था ।

२. एक बार फिर से पहेली के टुकड़ों पर लिखे हुए शब्दों को पढ़ें और बच्चों को चर्चा करने दें कि किस तरह से वे इन क्षेत्रों में यीशु मसीह की गवाही में साहसी हो सकते हैं । आप शायद कागज के टुकड़ों पर लिखे हुए निम्नलिखित के समान परिस्थितियां चाहें । तब प्रत्येक बच्चे को एक चुनने दें और बताने दें कि किस तरह से इस चुनौती का सामना करने के लिए वह चुनाव करेगा या करेगी ।

एक मित्र आपको चिढ़ाता या चिढ़ाती है क्योंकि आप उसके साथ सब्त के दिन पर तैरने नहीं गए थे या गईं थीं ।

आप एक फिल्म देखने के लिए आमंत्रित हैं जो गिरजाघर के स्तर का नहीं है ।

आपके कुछ मित्र गन्दे चुटकुले और कहानियों को बताना आरंभ करते हैं या करती हैं ।

एक दुकान पर आपका या आपकी मित्र एक अंगुठी लेकर अपनी जेब में रख लेता या लेती है और ऐसा ही करने के लिए आपको प्रोत्साहित करता या करती है ।

आपका या आपकी एक सहपाठी गिरजाघर के सिद्धांतों के बारे में झूठे वक्तव्य देता या देती है ।

परीक्षा के दौरान आप किसी और की उत्तर पुस्तिका में देखने के प्रलोभन में पड़ जाते या जाती हैं ।

३. बच्चों को बन्दीगृह में रह रहे पौलुस और सीलास की कहानी का नाटकीकरण करने दें । तब उन्हें दिखावा करने दें कि वे पौलुस, सीलास, बन्दीगृह में रह रहें लोगों, दारोगा, और उसके परिवार का साक्षात्कार कर रहे हैं । पौलुस और सीलास से पूछें कि उन्हें बन्दीगृह में क्यों डाला गया है और वहां उनके साथ क्या हुआ था । बन्दीगृह में रह रहे दूसरे लोगों से पूछें कि उन्होंने कैसा महसूस किया था जब पौलुस और सीलास ने प्रार्थना किया था और गाया था और भूकंप के कारण बन्दीगृह के दरवाजे खुल गए थे । दारोगा से पूछें कि उसने कैसा महसूस किया था जब उसने बन्दीगृह के दरवाजे को खुला देखा था और क्यों उसने और उसके परिवार ने बपतिस्मा लिया था ।

निष्कर्ष

गवाही

यीशु मसीह की अपनी स्वयं की गवाही दें । यदि उपयुक्त हो, एक समय के बारे में बताएं जब स्वर्गीय पिता ने आपको आशीषित किया था जब आपने साहसी होते हुए यीशु मसीह की गवाही दी थी ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में प्रेरितों के काम १६:१६–३४ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

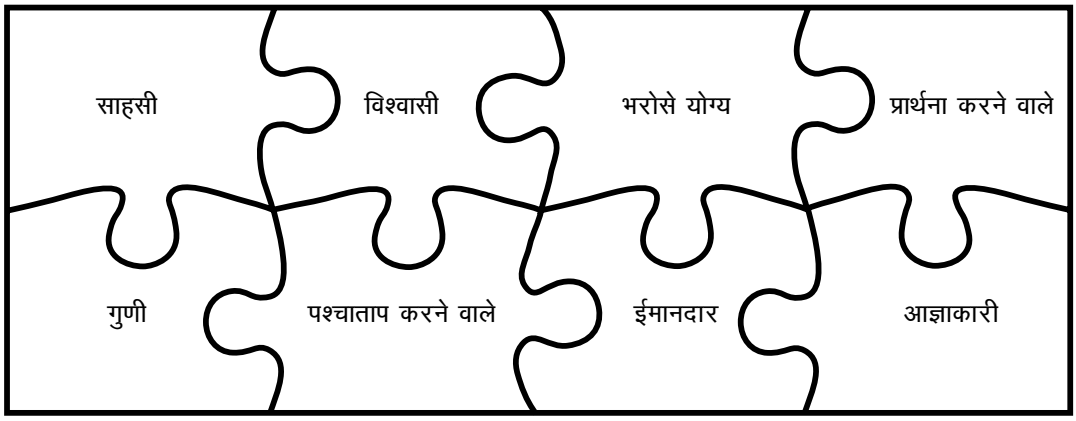

साहसी पहेली

पाठ
४४

पौलुस एक प्रचारक

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे को अभी से एक प्रचारक बनने की तैयारी के लिए और दूसरों के साथ सुसमाचार बांटने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक प्रेरितों के काम २२:१७–३०; २३:१०–२४, ३१–३३; और २६:१–२, २२–२९ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठन : प्रेरितों के काम १९–२६ (पूरे विवरण के लिए) ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्य सामग्रियां :
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. ध्यान गतिविधि में वर्णित की गई सारणी (या आप उसे चॉकबोर्ड पर बना सकती हैं) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों से पूछें कि उन्हें पिठले पाठों से पौलुस के बारे में क्या याद है । (उन्हें याद दिलाएं कि उसका नाम शाऊल से बदलकर पौलुस रखा गया था) । बच्चों को याद दिलाएं कि पौलुस को एक प्रचारक होने के लिए और यीशु मसीह का एक विशेष साक्षी होने के लिए प्रभु के द्वारा बुलाया गया था । (देखें प्रेरितों के काम १३:२; २०:२४) । उसने बाकी का जीवन प्रचार कार्य में बीताया था ।

समझाएं कि जब पौलुस का परिवर्तन हुआ था, यरूशलेम और आस-पास के क्षेत्रों में रह रहे केवल कुछ ही यहूदियों ने यीशु मसीह के बारे में सुना था । पौलुस की चार प्रचारक यात्राएं उसे कई देशों में यहूदी लोगों के पास और गैर-यहूदियों (जो यहूदी राष्ट्र के नहीं थे) के पास ले गईं ।ये गैर-यहूदी लोग स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बारे में नहीं जानते थे । वे झूठे परमेश्वर और मूर्तियों की आराधना करते थे । जहां कहीं भी पौलुस गया वहां उसने यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया था ।

निम्नलिखित के समान एक नक्शे को चॉकबोर्ड पर बनाएं या एक सारणी बनाएं :

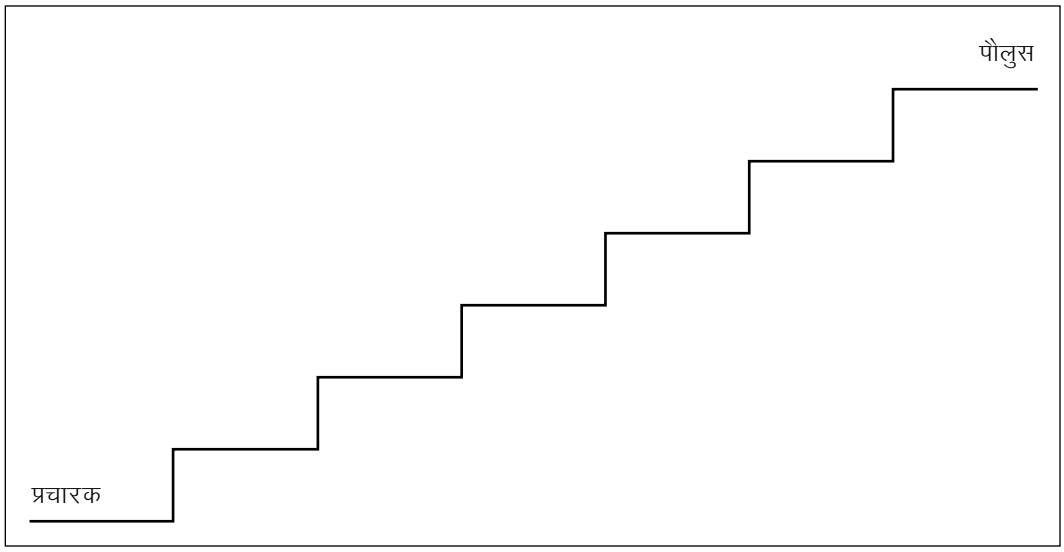

- पौलुस ने एक प्राचारक बनने के लिए कैसी तैयारी की थी ?

पौलुस के प्रचारक कार्य से आरंभ करते हुए एक के बाद एक बच्चों के उत्तरों को लिखें । विचारों को सम्मिलित करना सुनिश्चित करें जैसे कि पश्चाताप किया, यीशु मसीह में विश्वास किया, और बपतिस्मा लिया, पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त किया, सुसमाचार को जाना, और सुसमाचार को जिया ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को उस विवरण की शिक्षा दें जिसमें पौलुस के साथ उसके तीसरी प्रचारक यात्रा के पश्चात क्या हुआ था । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । समझाएं कि पौलुस की यह यरूशलेम की अन्तिम यात्रा थी, और जब वह वहां पर था तो जो यहूदी यीशु में विश्वास नही करते थे वे उसे मारना चाहते थे । क्योंकि वह रोम का एक नागरिक था, सुरक्षा के लिए वह यरूशलेम और कैसरिया में रोम के मार्गदर्शकों के पास गया था । उन्होंने उसकी सुरक्षा एक रोम का बन्दी बनाने के द्वारा किया था और अंततः रोम में उसे परीक्षा के लिए भेज दिया गया था । (पौलुस के रोम की यात्रा के विवरण की शिक्षा पाठ ४५ में दी जाएगी) । समझाएं कि उसकी सभी परिक्षाओं के दौरान, पौलुस ने प्रत्येक अवसर का उपयोग यीशु मसीह की गवाही के लिए किया था ।

चर्चा और लागू हाने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- यहूदी पौलुस से क्रोधित क्यों थे ? (प्रेरितों के काम २२:१७–२१) । बच्चों की समझने में सहायता करें कि पौलुस उन लोगों को यीशु मसीह के एक दिव्यदर्शन की गवाही दे रहा था जो यीशु में विश्वास नही करते थे । पौलुस को नुकसान क्यों नही हुआ था ? (प्रेरितों के काम २२:२४, २९) ।

- पलटन के सरदार ने पौलुस को फिर से स्वयं के बारे में समझाने के लिए यहूदियों के समक्ष उसे जाने की अनुमति दी, और एक बार फिर से उसकी गवाही के कारण यहूदियों ने उसे मारने की कोशिश की । (प्रेरितों के काम २३:१०) । अत्याचार के इस समय के दौरान पौलुस ने किस तरह से साहस और विश्वास को दिखाया था ? आपने कैसा महसूस किया होता यदि आप पौलुस की परिस्थिति में होते ?

- प्रभु ने पौलुस को कैसे सांत्वना दी ? (प्रेरितों के काम २३:११) । आपके विचार से पौलुस ने कैसा महसूस किया जब वह जान गया कि उसे नही मारा जाएगा ? आज प्रभु किस तरह से प्रचारकों को सांत्वना देता है ?

- यहूदियों ने पौलुस को मारने की कैसी योजना बनाई थी ? (प्रेरितों के काम २३:१४–१५) । इस षडयन्त्र से पौलुस को किसने बचाया था ?(प्रेरितों के काम २३:१६) किस प्रकार मुख्य कप्तान ने पौलुस की यहूदियों से बच निकलने में सहायता की थी ? (प्रेरितो के काम २३:२२–२४) । आपके विचार से प्रभु पौलुस की सुरक्षा क्यों कर रहा था ?

समझाएं कि फेलिक्स, रोम के हाकिम ने पौलुस को कैसरिया में दो वर्षों तक के लिए बन्दीगृह में रखा था जब तक कि फेस्तुस नया हाकिम न बन गया । पौलुस ने परीक्षा के लिए रोम के नाम की याचना की, परन्तु रोम जाने से पहले उसने फेस्तुस और राजा अग्रिप्पा को उसके परिवर्तन की कहानी सुनाई और यीशु मसीह की गवाही दी ।

- राजा अग्रिप्पा से बात करते समय पौलुस ने कैसा अनुभव किया ? क्यों ? (प्रेरितों के काम २६:१–३) । उसने राजा और फेस्तुस को क्या सीखाया ? (प्रेरितों के काम २६:२२–२३) ।

- पौलुस की गवाही के प्रति फेस्तुस ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई ? (प्रेरितों के काम २६:२४) । राजा अग्रिप्पा ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई ? (प्रेरितों के काम २६:२८) । कौन से कारण राजा अग्रिप्पा के पास हो सकते थे जिससे वह पूरी तरह से मसीही बनने के लिए पौलुस की गवाही को स्वीकार नहीं किया था ? आज कौन सी कुछ चीजें हैं जो लोगों को सुसमाचार को स्वीकार करने से दूर करती हैं ?

- राजा और हाकिम को प्रचार करने के लिए पौलुस को साहस किसने दिया था ? बच्चों को याद दिलाएं कि पौलुस को यीशु मसीह की एक विशेष साक्षी के लिए बुलाया गया था और उसने उसकी गवाही के लिए प्रत्येक अवसर का दुरूपयोग किया था । आप दूसरों को यीशु की अपनी गवाही को कब बता सकते हैं ? एक प्रचारक बनने के लिए आप अभी से कैसे तैयारी कर सकते हैं ?

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण पर चर्चा करें :

"प्राथमिक के लड़कों, योजना बनाओ और प्रभु के लिए एक पूरे-समय के मिशन पर सेवा करने की तैयारी करो । युवा लड़कियों, यदि तुम्हें बुलाया जाता है तो प्रचारक कार्य करने के लिए तैयार रहो" (Conference Report, अप्रैल १९८९, पृ. १०४; या *Ensign*, मई १९८९, पृ. ८२ में) ।

"हां...अभी से तैयारी करो [जब तुम नौ, दस या ग्यारह के हो] । अपने आपको शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, और आत्मिक तौर पर तैयार करो । हमेशा अधिकारी के प्रति आज्ञाकारी रहो । अपने मिशन के लिए एक बचत खाता खोलो यदि तुमने अभी तक ऐसा नहीं किया है । अपने दसमांश को दो, और अध्ययन और प्रार्थना के द्वारा सुसमाचार की एक गवाही को खोजो" (Conference Report, अप्रैल १९८५, पृ. ४९; या *Ensign*, मई १९८५, पृ. ३७ में) ।

- आपने अभी तक कौन से कदम उठाये हैं जो आपको सुसमाचार बताने के लिए तैयार करता है ? भविष्य में आप कौन से कदम उठाएंगे ?

चॉकबोर्ड पर एक और नक्शा बनाएं या उसके समान एक सारणी बनाएं जिसका उपयोग ध्यान गतिविधि में किया गया था, शब्द *आप पौलुस हैं* को लिखते हुए । *आपको प्रचारक* होने के लिए जिन उत्तरों को बच्चे देते हों उन्हें आरंभ से लिखें । विचारों को सम्मिलित करना सुनिश्चित करें, जैसे कि यीशु में विश्वास करना, बपतिस्मा लेना, पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त करना, पौरोहित्य को प्राप्त करना (लड़कों के लिए), सुसमाचार को जानना, धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना, प्रार्थना करना, गिरजाघर जाना, और घर, विद्यालय, या जहां कहीं भी आप हो सकते हैं वहां सुसमाचार को जीना ।

- आप अभी से कौन सी योग्यताओं और क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं जो प्रभु के लिए एक अच्छा प्रचारक होने में आपकी सहायता करेगा ?

- सुसमाचार की शिक्षा की तैयारी में, खासकर धर्मशास्त्रों का अध्ययन महत्वपूर्ण क्यों होता है ?

उदाहरणों को बताएं कि कैसे तैयार होने के कारण सुसमाचार को बताने में आपकी या किसी व्यक्ति की जिसे आप जानती हैं, सहायता हुई है । बच्चों को उन अनुभवों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें जब उन्हें या उनके परिवारों को दूसरों को सुसमाचार को सीखाने का अवसर मिला हो । यदि आपकी कक्षा में कुछ ऐसे लोग हैं जो परिवर्तित हुए हैं, आप उन्हें बताने दे सकती हैं कि कैसे प्रचारकों या अन्यों ने उन्हें सुसमाचार सीखने में और एक गवाही प्राप्त करने में उनकी सहायता की थी ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. प्रत्येक बच्चे को कागज का एक टुकड़ा और एक पेन्सिल दें और उन्हें कुछ सीढ़ियों को बनाने दें । उन्हें नीचे उनके नाम को और ऊपर *प्रचारक* लिखने दें । सीढ़ियों पर उन्हें उन चरणों को लिखने दें जिसे उन्होंने प्रचारक बनने की तैयारी के लिए अपनाया हो या जिसे अभी वे तैयारी के लिए अपनाएंगे ।

२. प्रत्येक बच्चे के लिए प्रचारकों के प्रति प्रभु द्वारा की गई प्रतिज्ञा की एक प्रति बनाएं जो सिद्धांत और अनुबंध ८४:८८ में पाया जाता है । बच्चों के साथ इस प्रतिज्ञा पर चर्चा करें और उन्हें इसे उनके घरों में प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करें ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि स्वर्गीय पिता और यीशु चाहते हैं कि बच्चे अभी से सुसमाचार की शिक्षा देने की तैयारी कर लें । अपने अहसासों को व्यक्त करें जो उन तरीकों में से एक हो जिससे प्रत्येक दिन यीशु मसीह के सुसमाचार को जीने के लिए वे इसे कर सकते हैं ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में प्रेरितों के काम २३:१०–२४, ३१–३३ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
४५

पौलुस की रोम यात्रा

उद्देश्य

प्रत्येक बच्चे की पवित्र आत्मा के उपहारों के बारे में अधिक जानने में सहायता करना, जोकि पवित्र आत्मा के द्वारा आता है ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक प्रेरितों के काम २७:१–२८:९, १ कुरिन्थियों १२:१–११, और विश्वास के अनुच्छेद १:७ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः *सुसमाचार सिद्धांत*, अध्याय २२ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियां :
क. प्रत्येक बच्चे के लिए एक बाइबिल या एक नया नियम ।
ख. प्रत्येक बच्चे के लिए एक अनमोल मोती या विश्वास के अनुच्छेद की एक प्रति ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

बच्चों को आप एक विशेष उपहार के बारे में बताएं जिसे आपने एक छुट्टी या एक जन्मदिन पर प्राप्त किया हो । तब बच्चों से उन उपहारों के बारे में बताने के लिए कहें जिसे उन्होंने प्राप्त किया हो ।

- कौन से उपहार को हम प्राप्त करते हैं जब हम अन्तिम दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर का सदस्य बनते हैं ? (पवित्र आत्मा का उपहार) ।

बच्चों को बताने दें कि वे पवित्र आत्मा के उपहार के बारे में क्या जानते हैं । समझाएं कि पवित्र आत्मा से सहायता और निर्देश प्राप्त करने के अलावा, यीशु मसीह के गिरजाघर का प्रत्येक सदस्य अन्य आत्मिक उपहारों का अधिकारी है । बच्चों से अनमोल मोती में पाये जाने वाले विश्वास के अनुच्छेद को खोजने दें और उस विश्वास के अनुच्छेद को ढूंढने दें जिसमें आत्मिक उपहारों का वर्णन किया गया है । जब बच्चे सातवें विश्वास के अनुच्छेद को पढ़ते या रटते हैं तब वर्णन किए गए आत्मिक उपहारों को चॉकबोर्ड पर लिखें । बच्चों को पौलुस की रोम की उस यात्रा के विवरण को सुनने के लिए प्रोत्साहित करें जिसमें वह कई उपहारों को खोजने के लिए गया था जिसे उसे प्रदान किया गया था और अन्यों के प्रति जिनके उपयोग में वह समर्थ रहा था ।

धर्मशास्त्र विवरण

संक्षिप्त में पिछले सप्ताह के पाठ की समीक्षा करें ताकि बच्चे याद रखें कि क्यों रोम जाते समय पौलुस को बंदी बनाया गया था । तब बच्चों को प्रेरितों के काम २७:१–२८:९ में पाये जाने वाले पौलुस के रोम की यात्रा के विवरण की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

जब आपने धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा को पूरा कर लिया हो, समझाएं कि पौलुस ने उसकी रोम की यात्रा को जारी रखा था, जहां उसने बंदी होते हुए और एक घर की सीमा में रहते हुए भी दो वर्षो तक यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया था ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भो का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक

होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- पौलुस ने जहाज के लोगों को किस बारे में चेतावनी दी थी ? (प्रेरितों के काम २७:१०) । वह इसे कैसे जानता था ? (पवित्र आत्मा ने उसे प्रकट किया था) । सूबेदार ने किसका विश्वास किया था ? (प्रेरितों के काम २७:११) । कौन सही था ? (प्रेरितों के काम २७:१४, २०) । जब भविष्यवक्ता हमें किसी चीज की चेतावनी देते हैं, हमें क्या करना चाहिए ? क्यों ?

- आपके विचार से जहाज पर बैठे लोगों ने कैसा महसूस किया जब उन्होंने सोचा कि जहाज क्षतिग्रस्त होगी ? पौलुस ने उनसे क्या कहा ? (प्रेरितों के काम २७:२१–२२) । पौलुस कैसे जानता था कि वे बच जाएंगे और रोम में सुरक्षित पहुंच जाएंगे ? (प्रेरितों के काम २७:२३–२५) ।

- जहाज का क्या हुआ था ? (प्रेरितों के काम २७:४०–४१) । सिपाही कैदियों के साथ क्या करना चाहते थे जब जहाज क्षतिग्रस्त हो गई थी ? क्यों ? (प्रेरितों के काम २७:४२) । सूबेदार ने उन्हें ऐसा करने से क्यों रोका ? (प्रेरितों के काम २७:४३) । सूबेदार का व्यवहार पौलुस के प्रति क्यों बदल गया था ? (प्रेरितों के काम २७:११, १४, २१, २५, ३१, ४३) ।

- पौलुस के साथ क्या हुआ था जब वह आग जला रहा था ? (प्रेरितों के काम २८:३) । दूसरे लोग पौलुस के मौत का इन्तजार क्यों कर रहे थे ? (प्रेरितों के काम २८:४–६) । पौलुस सांप के काटने से कैसे बच गया था ?

- पौलुस ने उन लोगों के लिए क्या किया जो बीमार थे ? (प्रेरितों के काम २८:८–९) । पौलुस ऐसा करने में समर्थ क्यों हुआ था ? (पौलुस के पास चंगाई का उपहार था । उसके पास पौरोहित्य भी था और वह एक प्रेरित था जिसे महान आत्मिक उपहार दिए गए थे प्रभु के उस काम को पूरा करने में उसकी सहायता के लिए जिसे उसे करने के लिए दिया गया था । दूसरों की सहायता के लिए आत्मिक उपहारों के उपयोग के महत्व पर बल दें) ।

- पौलुस भविष्य को देखने और बीमारों को चंगा करने में समर्थ क्यों था ? (पौलुस का बपतिस्मा हुआ था और यीशु मसीह के गिरजाघर के एक सदस्य के रूप में उसका पुष्टिकरण हुआ था, इसलिए वह विशेष आत्मिक उपहारों का अधिकारी था) ।

बच्चों की समझने में सहायता करें कि गिरजाघर के सभी सदस्यों को पवित्र आत्मा का उपहार दिया गया है । बच्चों को १ कुरिन्थियों १२:७–११ पढ़ने दें । इन उपहारों पर चर्चा करें, और बल दें कि दूसरों को आशीषित करने के लिए गिरजाघर के प्रत्येक सदस्य को एक उपहार दिया गया है ।

- किन उपहारों का उपयोग पौलुस ने उसकी रोम की यात्रा के दौरान किया था ? स्वर्गीय पिता हमें आत्मिक उपहार क्यों देता है ? (१ कुरिन्थियों १२:७; सि. और अनु. ४६:९, १२, २६) ।

- हम कैसे पता कर सकते हैं कि हमें आत्मा के कौन से उपहार दिए गए हैं ? (अपने विशेष उपहारों का पता करने के लिए हम प्रार्थना और उपवास कर सकते हैं । हमें हमारे कुलपति के आशीर्वादों में भी बताया जा सकता है । जब हम आज्ञाओं का पालन करते हैं और अपने जीवन के द्वारा दूसरों की सेवा करते हैं, हम अपने उपहारों को पहचानेंगे) ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. कागज की एक अलग पर्ची पर १ कुरिन्थियों १२:७–१० में वर्णन किए गए आत्मा के प्रत्येक उपहार को लिखें । उन्हें एक ऐसे बक्से में डाले जिसे एक उपहार के बक्से की तरह सजाया गया हो और प्रत्येक बच्चे को कागज की एक पर्ची लेने और बताने के लिए कहे कि वह उपहार क्या है । प्रत्येक उपहार पर संक्षिप्त में चर्चा करें ।

२. कक्षा को छोटे-छोट दलों में विभाजित करें । प्रत्येक दल को निम्नलिखित में से एक या अन्य उपयुक्त धर्मशास्त्र सन्दर्भों को दें । उन्हें निश्चय करने दें कि आत्मा के किस उपहार का प्रदर्शन किया जाए और कक्षा के साथ उनके विचारों को बांटने दें ।

प्रेरितों के काम ३:१–८ (पतरस और यूहन्ना एक मनुष्य को चंगा करते हैं जो लंगड़ा होता है) । चंगाई का उपहार ।

प्रेरितों के काम १४:८–१० (पौलुस एक लंगड़े मनुष्य को चंगा करता है) । चंगाई का उपहार ।

मरकुस ५:२५–३४ (एक स्त्री यीशु के वस्त्र के किनारे को स्पर्श करती है) । चंगाई के लिए विश्वास ।

लूका २:२५–२६, ३४–३८ (शमौन और हन्नाह ने यीसु की भविष्यवाणी की थी) । भविष्यवाणी का उपहार । भविष्यवाणी के उपहार पर चर्चा करते समय, समझाएं कि यीशु के जन्म, काम, मृत्यु, और पुनरूत्थान से संबंधित अधिकतर घटनाएं उन लोगों के द्वारा पहले से ही बता दी गई थीं जिसने पास भविष्यवाणी कता उपहार था ।

प्रेरितों के काम ९:१–२० (पौलुस यीशु मसीह के सुसमाचार में परिवर्तित हो जाता है) । जानने का उपहार कि यीसु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है ।

प्रेरितों के काम २:४–१८ (पिन्तेकुस्त के दिन पर चेले पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त करते हैं) । भाषा का उपहार और भविष्यवाणी का उपहार ।

- किस तरह से इन उपहारों में से प्रत्येक हमारे जीवन को आशीषित करता है ?

३. आप समझाना चाहें कि शैतान आत्मा के उपहारों की नकल करने की कोशिश करता है । उदाहरण के तौर पर, फिरौन के दरबार के टोनहा करने वाले मूसा और हारून के कुछ चमत्कारों की नकल उतारने में समर्थ हुए थे (निर्गमन ७:१०–१३) । समझाएं कि हमें धार्मिकता से जीना होगा और आत्मा को अपने पास रखना होगा ताकि हमें धोखा नहीं दिया जाएगा । बच्चों को याद दिलाएं कि हमारे जीवन को आशीषित करने के लिए आत्मिक उपहार, पवित्र आत्मा के उपहार के द्वारा आते हैं । (देखें *सुसमाचार सिद्धांत*, अध्याय २२) ।

४. बच्चों की सातवें विश्वास के अनुच्छेद को याद करने में सहायता करें ।

५. निम्नलिखित कहानियों में से एक बताएं :

जेन का उपहार

"एक सुबह बहुत जल्दी जेन ग्रोवर, दादा टैनर, और उनकी पोती ने जंगली गूजबेरी को एकत्रित करने के लिए काउंसिल ब्लफ्स, आईओवा के नजदीक के अपने पथप्रदर्शक शीविर को छोड़ दिया था । दादाजी बहुत जल्दी थक गए और चौपहिया गाड़ी पर आराम करने के लिए वापस चले गए, परन्तु लड़कियों ने कई हरे-हरे रस से भरी हुई गूजबेरी को एकत्रित किया और अपनी बाल्टियों को भरने के लिए रूक गईं ।

"सुबह के शान्त वातावरण को अचानक जंगली ठहाकों ने चीर दिया । गाड़ी के तरफ भागते हुए, अमेरिका के उस आदिवासियों के दल को देखकर लड़कियां डर गईं जो दादाजी के कपड़ें खींच रहे थे । उन्होंने उनकी घड़ी और चाकु ले लिया और घोड़ों को धकेलने की कोशिश करने लगे ।

"एक आदीवासी ने छोटी लड़की को पकड़ लिया, जिसने डर के कारण रोना आरंभ कर दिया, दूसरा जेन पर झपटा और उसे उनसे दूर करने के लिए बुरी तरह से खीचने की कोशिश करने लगा । अपने आपको आजाद करने की कोशिश में, उसने सहायता के लिए एक छोटी सी उत्साही प्रार्थना किया ।

"लगभग तुरन्त ही जेन ने एक शक्ति का अनुभव किया जो किसी भी चीज से आगे था जिसे वह शायद ही जानती थी । अचानक उसने ऐसे स्वर में बोलना आरंभ किया जिसके कारण आदीवासियों ने अपने कैदियों को छोड़ दिया और सुनने के लिए रूक गए । पूरी तरह से चकित कर देने वाली घटना में, उन्होंने उस युवा लड़की को उनके स्वयं की भाषा में बात करते हुए सुना, उनसे उस महान आत्मा को याद करने की याचना करते हुए, जो नहीं चाहती थी कि वे उनके गोरी चमड़ी वाले मित्रों को नुकसान पहुंचायें । दादाजी और छोटी लड़की आश्चर्य के कारण गूंगे हो गए थे । उनके दल का कोई भी इस अजीब भाषा के किसी भी शब्द को नहीं जानता था, यहां पर जेन आसानी से और अधिकार के साथ बोल रही थी जैसे कि वह उसे अपने पूरे जीवन से

जानती थी । आदिवासियों ने अपने सिरों को हिलाया और घड़ी, चाकु और कपड़ों को वापस कर दिया जिसे उन्होंने लिया था । तब उन्होंने सभी के साथ हाथ मिलाया और चुपचाप चले गए" (retold by Lucile C. Reading, "Shining Moments," *Children's Friend,* जुलाई १९४१, पृ. ४१) ।

- जेन ग्रोवर ने कौन से आत्मिक उपहार को प्राप्त किया था ? (भाषा का उपहार) । वह आदिवासियों के साथ उनकी भाषा में बात करने क्यों समर्थ थी ? (उसने स्वर्गीय पिता से सहायता के लिए प्रार्थना किया था; उसने उपहार पाया था) ।

जॉन की चंगाई

"ग्यारह वर्षीय जॉन रूथुफ [गिरजाघर का एक सदस्य था जो] रोटरडैम, हॉलैंड में रहता था । एक समय था जब वह विद्यालय और गिरजाघर जाने में, अपने मित्रों के साथ खेलने में, और उन सारी चीजों को करने में जिसे एक लड़का पसंद करता है, उसे प्रसन्नता होती थी । तभी, बिना चेतावनी के, एक दर्दनाक आंखों की बीमारी ने उससे उसके आंखों की रोशनी छीन ली । अब वह स्कुल नहीं जा सकता था और पढ़ नहीं सकता था । वह इतना भी नहीं देख सकता था कि वह अपने मित्रों के साथ खेल सके । हर दिन अंधकार और दुःख से भरा हुआ था ।

"हॉलैंड में रह रहे अन्तिम-दिनों के सन्तों तक यह बात पहुंची कि अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ [गिरजाघर के छठवें अध्यक्ष] उनसे मिलने के लिए आ रहे थे । जॉन ने इसके बारे में बहुत देर तक सोचा, और तब उसने अपनी मां से कहा, 'भविष्यवक्ता के पास पृथ्वी पर रह रहे किसी भी मनुष्य से अधिक शक्ति होती है । यदि आप सभा में मुझे अपने साथ ले जाएंगी ताकि वह मेरी आंखों में देख सकें, मुझे विश्वास है कि मैं चंगा हो जाऊंगा' ।

"अगले रविवार सभा के अन्त पर, अध्यक्ष स्मिथ छोटे से गिरजाघर पर लोगों का अभिवादन करने और उनसे हाथ मिलाने के लिए गए । बहन रूथुफ ने जॉन की सहायता जिसकी उसकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी, दूसरों के साथ उनके प्रिय मार्गदर्शक से बात करने के लिए ।

"अध्यक्ष स्मिथ ने अंधे लड़के को हाथों से पकड़ा और फिर बहुत ही सावधानी से उसकी पट्टियों को उठाकर जॉन की दर्द-भरी आंखों में देखा । भविष्यवक्ता ने जॉन को आशीषित किया और प्रतिज्ञा किया कि वह फिर से देख सकेगा ।

"घर पहुंचने के बाद जॉन की मां ने पट्टियों को आंखों पर से उतारा ताकि वह नहा सके जैसा कि डॉकटरों ने उससे कहा था । जब वह ऐसा कर रही थी, जॉन खुशी से रो पड़ा, 'ओह, मां, मेरी आंखें ठीक हो गईं । मैं अब अच्छी तरह से देख सकता हूं...और वह भी दूर तक । और मुझे अब कोई दर्द महसूस नहीं होता!' " ("President Smith Took Him by the Hand," *Friend,* अगस्त १९७३, पृ. ३६) ।

- जॉन रूथुफ ने कौन से आत्मिक उपहार को प्राप्त किया था ? (चंगाई के विश्वास को) । किस चीज ने जॉन को चंगा होने के लिए संभव बनाया था ? (उसने चंगाई के उपहार को पाया था और उसे उसमें विश्वास था कि भविष्यवक्ता के पास उसे चंगा करने का उपहार है) ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि हम सभी के पास आत्मा के उपहार हैं जिसे स्वर्गीय पिता ने हम सभी को दिया है । उन उपहारों के प्रति अपने आभार को बताएं जिसे आपने प्राप्त किया है । यदि उपयुक्त हो, एक आत्मिक उपहार के उपयोग के बारे में एक व्यक्तिगत अनुभव बताएं जिसे आपको दिया गया हो (या किसी और को एक व्यक्तिगत अनुभव बताने के लिए आमंत्रित करें) । बच्चों को आत्मा के उन उपहारों को खोजने और उपयोग करने के द्वारा जिन्हें उन्हें प्रदान किया गया है, अच्छा करने की उन क्षमताओं को महसूस करने में उनकी सहायता करें ।

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में प्रेरितों के काम २८:१–११ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पाठ
४६

यीशु मसीह फिर से आएगा

उद्देश्य

उद्धारकर्ता के दूसरे आगमन के चिन्हों से बच्चों को परिचित कराना, और उन्हें अपने आपको को उससे मिलने की तैयारी के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

१. प्रार्थनापूर्वक यशायाह ६३:१–४; मलाकी ४:१; मत्ती २४:३, २३–५१; प्रेरितों के काम १:९–११; और प्रकाशितवाक्य २०:४ का अध्ययन करें । तब पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) ।

२. अतिरिक्त पठनः मत्ती २४:४–२२ और सिद्धांत और अनुबंध ४५:१६–७५, ८८:८७–१०१ ।

३. चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

४. आवश्यक सामग्रियांः

क. बाइबिल, मॉरमन की पुस्तक, और सिद्धांत और अनुबंध की कई कॉपियां ।

ख. रंगीन कागजों के कटे हुए चार अंजीर के पत्ते (नमूने के लिए नीचे देंखें), या चॉकबोर्ड पर बने हुए, प्रत्येक पत्ते पर पर निम्नलिखित शब्दों या वाक्यांशों में से एक लिखा हुआ हो । *झूठे मसीह, एकत्रित इस्राएल, विध्वंश, स्वर्गीय आश्चर्य* ।

ग. कागज या चॉकबोर्ड पर बने हुए एक अंजीर के पेड़ की शाखाओं की एक रूपरेखा ।

घ. टेप या अन्य चिपकाने वाले पदार्थ ।

च. चित्र ७-३, यीशु का जन्म (सुसमाचार कला चित्र किट २००; ६२११६); ७-२५, दूसरा आगमन (६२५६२); ७-४३, यीशु का स्वर्गारोहण (सुसमाचार कला चित्र किट २३६; ६२४९७); और वर्तमान भविष्यवक्ता का एक चित्र ।

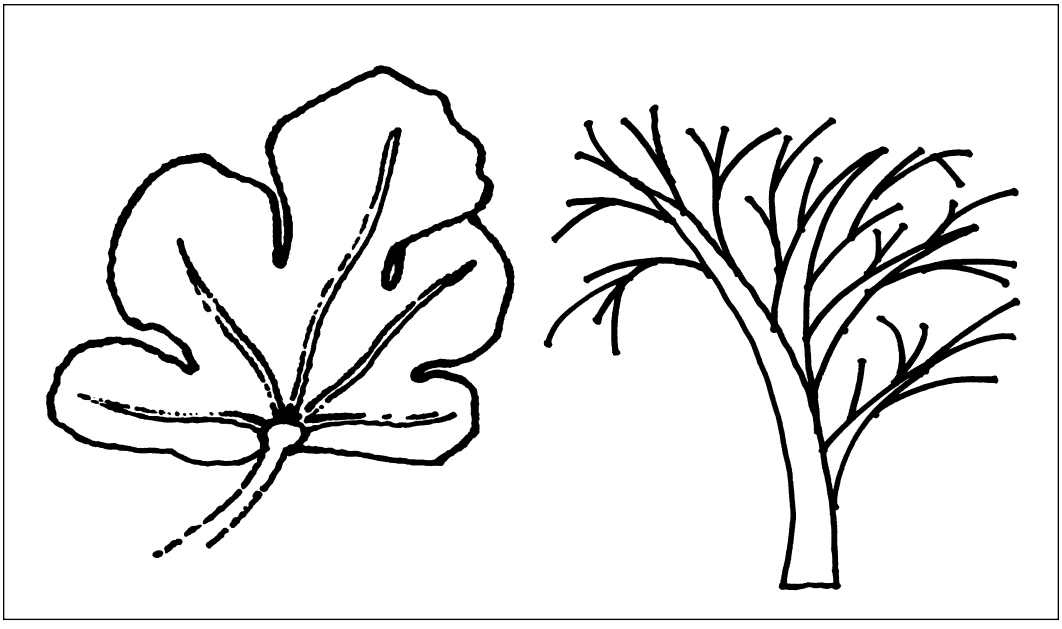

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

यीशु का जन्म और दूसरा आगमन के चित्रों को दिखाएं ।

- पृथ्वी के इतिहास में ये दो चित्र कौन से महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं ?
- किन चिन्हों ने बेतलेहेम में यीशु के जन्म की घोषणा की थी ? (दूतों ने गीत गाया था, एक नया तारा दिखाई दिया था, अमेरिका में बिना अंधेरे के रात थी, इत्यादि) ।
- आपने कैसा महसूस किया होता यदि यीशु के जन्म के समय आप बेतलेहेम में होते ?
- आपके विचार से यह कैसा होगा जब यीशु पृथ्वी पर फिर से आएगा ?

समझाएं कि जब उद्धारकर्ता फिर से आएगा, वह "प्रभु का बड़ा और भयानक दिन होगा" (मलाकी ४:५) । कई चमत्कार होंगे जब मसीह वापस आएगा, और पृथ्वी के सभी लोग जानेंगे कि वही उद्धारकर्ता है । धार्मिक लोगों के लिए यह आनन्दपूर्ण समय होगा क्योंकि वे पृथ्वी पर रहेंगे, यीशु राज्य करेगा, वहां शान्ति होगी, और शैतान उन्हें गलत काम करने के प्रलोभन को देने में समर्थ नहीं होगा । जो दुष्ट हैं वे डरेंगे और यीशु के आने पर दुःखी होंगे । क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नही किया है, उनका नाश होगा (देखें मलाकी ४:१) ।

धर्मशास्त्र विवरण

बच्चों को मत्ती २४:३, २३–५१ में पाये जाने वाले उद्धारकर्ता के दूसरे आगमन के विवरण की शिक्षा दें । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- जब यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वह फिर से आएगा, उसने कैसे वर्णन किया कि उसकी वापसी किसकी तरह होगी ? (मत्ती १६:२७; लूका २१:२७) । यह उस तरीके से विभिन्न कैसे है जब यीशु पहली बार पृथ्वी पर आया था ?
- चेलों के समझ जाने के पश्चात कि यीशु की वापसी उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद होगी, वे क्या जानना चाहते थे ? (मत्ती २४:३) । चेले दूसरे आगमन के बारे में क्यों जानना चाहते थे ? हमारे लिए महत्वपूर्ण क्यों है कि हम दूसरे आगमन के बारे में जानें ? समझाएं कि यीशु चाहता है कि उसके गिरजाघर के सदस्य, या चुने हुए लोग उन चिन्हों को पहचानें जो उसके आने से पहले होंगी ताकि वे ठगे नहीं जाएंगे और उससे मिलने के लिए तैयार होंगे ।
- यीशु ने अपने दूसरे आगमन के चिन्हों को हमें क्यों दिया था ? (मत्ती २४:३१, ३३) । उसने अपने दूसरे आगमन की तुलना एक अंजीर के पेड़ से क्यों की थी ? (मत्ती २४:३२) । (अंजीर के पेड़ के नंगे तनों को दिखाएं या उनकी रूपरेखा चॉकबोर्ड पर बनाएं । चर्चा के बाकी समय के दौरान उपयुक्त समय पर अंजीर के पत्तों को दिखाएं) ।
- झूठा मसीह या झूठा भविष्यवक्ता क्या है ? (मत्ती २४:२३–२४ । ये वे लोग और धर्म हैं जो सच्चे होने का दावा करते हैं और यीशु के सच्चे गिरजाघर से लोगों को दूर करने की कोशिश करते हैं) ।
- झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता क्या करने में समर्थ होंगे ? (मत्ती २४:२४) । कैसे चुने हुए (धार्मिक लोग) ठगे जाने से बच सकते हैं ? (इफिसियों ४:११–१४; २ तीमुथियुस ३:१५–१७) ।

बल दें कि हमें सदैव जीवित भविष्यवक्ता को सुनना चाहिए और ठगे जाने से बचने के लिए उन चीजों का अनुसरण करना चाहिए जिसे वह हमसे करने के लिए कहते हैं । अध्यक्ष विलफोर्ड वुडरफ, गिरजाघर के चौथे

अध्यक्ष, ने कहा था, "प्रभु कभी भी मुझे या किसी अन्य मनुष्य को जो इस गिरजाघर के अध्यक्ष के रूप में खड़ा होता है, आपको दूर ले जाने की अनुमति नहीं देगा" (देखें सिद्धांत और अनुबंध में आधिकारिक घोषणा—१) ।

- जब वह आएगा तब हम कैसे जानेंगे कि वही सच्चा मसीह है ? वह कैसे दिखाई देगा ? (यशायाह ६३:१–४; मत्ती २४:२६–२७; २६:६४; प्रेरितों के काम १:९–११) ।

- इस्राएल का एकत्रित होना क्या है ? (यिर्मयाह ३२:३७; १ नफी १०:१४) । प्रचारक लोग धार्मिक लोगों को गिरजाघर में एकत्रित करने में किस तरह से सहायता कर रहे हैं ? (मत्ती २४:१४) । समझाएं कि परमेश्वर के चुने हुए लोग जिन्हें इस्राएल कहा जाता है, संसार में चारों तरफ रहते हैं । यीशु के दुबारा आने से पहले, प्रचारक संसार में चारों तरफ सुसमाचार की शिक्षा के लिए जाएंगे । जो सच्चाई को स्वीकार करते हैं और जिनका बपतिस्मा होता है वे सिय्योन के स्टेकों में एकत्रित होंगे । किन देशों में हमारे वार्ड (या शाखा) के सदस्य मिशन पर सेवा कर रहे हैं ?

- शब्द विध्वंश का क्या मतलब है ? (घोर विपत्ति, संकट, विनाश, तबाही, दुर्दशा) । किन विध्वंशों के बारे में यीशु कहता है कि उसके आगमन से पहले होंगी ? (मत्ती २४:६–७, १२) । किन विध्वंशों को आपने देखा है या उनके बारे में सुना है ?

- कौन से कुछ स्वर्गीय आश्चर्य हैं जो दूसरे आगमन के तुरन्त पहले दिखाई देंगी ? (मत्ती २४:२९) ।

- किस तरह से पृथ्वी साफ हो जाएगी जब यीशु फिर से आएगा ?(मलाकी ४:१) । पृथ्वी पर राजा के रूप में कितने समय के लिए यीशु राज्य करेगा ? (प्रकाशितवाक्य २०:४) ।

अध्यक्ष ब्रिगहम यंग, गिरजाघर के दूसरे अध्यक्ष द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण पर चर्चा करें :

"पृथ्वी से पाप और उसके डरावने परिणामों को वह [यीशु] निर्वासित कर देगा, प्रत्येक आँख से आंसू पोछ दिए जाएंगे और ऐसा कुछ भी नहीं होगा जो परमेश्वर के सभी पवित्र पहाड़ को तकलीफ पहुँचा सकेगा या उनका नाश कर सकेगा" (*Journal of Discourses*, ११:१२४ में) ।

- दूसरा आगमन कब होगा ? (मत्ती २४:३६, ४२) । यीशु के आगमन के लिए हमें तैयार क्यों रहना चाहिए ? हम कैसे तैयार हो सकते हैं ? (मत्ती २४:४२–४४) । उनका क्या होगा जो यीशु के आने पर तैयार नहीं होंगे ? (मत्ती २४:४८–५१) ।

बल देने के द्वारा सार बनाएं कि यीशु ने हमें उसके आगमन की चिन्हों को दिया है ताकि हम उसके आने को पहचान सकें और तैयार हो सकें । समझाएं कि प्रभु ने कहा है कि यदि हम तैयार होते हैं तो हम नहीं डरेंगे (देखें सि. और अनु. ३८:३०) ।

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन, गिरजाघर के तेरहवें अध्यक्ष द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें :

"क्या हमें इस बात का ज्ञान है कि हम इन चिन्हों और आश्चर्यों के पूरे होने वाले दिनों में रह रहे हैं ? हम उनमें से हैं जो इन भविष्यवाणियों को पूरा होता हुआ देखेंगे...हम उसके आने वाल समय या दिन को नहीं जानते हैं, परन्तु इससे हम आश्वासित हो सकते हैं । हम प्रभु के उस महान दिन के नजदीक हैं!" (*The Teachings of Ezra Taft Benson*, पृ. २०) ।

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं ।

१. प्रत्येक बच्चे के लिए निम्नलिखित वक्तव्यों की एक कॉपी बनाएं । वक्तव्यों को बांटें और कक्षा के सदस्यों को पेन्सिल दें । पहले स्तम्भ के वाक्यांश से दूसरे स्तम्भ में दिए गए सही अन्त तक एक रेखा खींचने के द्वारा उन्हें वक्तव्य के आरंभ को वक्तव्य के अन्त से मिलाने दें । आप शायद चाहें कि बच्चे उन वक्तव्यों के लिए जिन्हें वे नहीं जानते हैं, सन्दर्भों को देख सकते हैं ।

दूसरा आगमन

केवल स्वर्गीय पिता जानता है	सूर्य से भी अधिक चमकता हुआ दिखाई देगा (सि. और अनु. १३३:४९) ।
यीशु का पहनावा	आकाश से नीचे आएगा (प्रेरितों के काम १:११) ।
झूठे मसीह	धार्मिक लोगों के लिए एक महिमपूर्ण दिन होगा (मलाकी ४:५) ।
यीशु	लाल वस्त्र होगा (यशायाह ६३:१–३) ।
दूसरा आगमन	संसार में चारों तरफ करेंगे (मत्ती २४:१४) ।
दुष्टों का	कई लोगों को ठगेंगे (मत्ती २४:२४) ।
जब यीशु आएगा, वह	अंधकार में डूब जाएगा (योएल २:१०, ३१) ।
प्रचारक सुसमाचार का प्रचार	उस सही समय को जब यीशु आएगा (मत्ती २४:३६) ।
विध्वंश	नाश होगा (मलाकी ४:१) ।
सूर्य	युद्ध, अकाल, महामारी, और भूकंप है (मत्ती २४:६–७) ।

२. बच्चों की जानने में सहायता करना कि कितनी अच्छी तरह से वे दूसरे आगमन की तैयारी कर रहे हैं, उनसे निम्नलिखित या इसी के समान प्रश्नों को पूछें । प्रत्येक प्रश्न के पश्चात उन्हें उस बारे में सोचने के समय की अनुमति के लिए रूकें कि उन्होंने उस क्षेत्र में कितनी अच्छी तैयारी की है । बच्चों से जोर से उत्तर देने के लिए न कहें ।

यदि उद्धारकर्ता मेरे घर आता है, क्या मैं :

उन शब्दों को बदलना चाहूंगा जिनका मैं उपयोग करता हूं ?
कुछ पत्रिकाओं, किताबों, या विडियो को छुपाना चाहूंगा ?
टेलिविजन के चैनल को बदलना चाहूंगा या टेलिविजन बंद करना चाहूंगा ?
उस संगीत को बंद करना चाहूंगा जिसे में सुन रहा हूंगा ?
मेरे कपड़ों को बदलकर अधिक शालीन कपड़े पहनूंगा ?
जहां भी जाऊंगा उसे अपने साथ ले जाऊंगा ?
जब मैं अपने मित्रों के साथ रहूंगा तब उसे शामिल करना चाहूंगा ?
जितना मैं अब धर्मशास्त्रों को पढ़ता हूं उससे अधिक पढ़ना चाहूंगा ?
जैसा व्यवहार करता हूं उससे अलग अपने परिवार के साथ व्यवहार करूंगा ?

३. बच्चों के साथ दसवें विश्वास के अनुच्छेद की समीक्षा करें और उसे दोहराएं । समझाएं कि जिन घटनाओं का इस विश्वास के अनुच्छेद में वर्णन किया गया है वे वही उत्साहित करने वाली चीजें हैं जिसे हम यीशु के दुबारा आने के लिए खोज सकते हैं ।

४. समाचार-पत्र और पत्रिकाएं लाएं और बच्चों को उन लेखों को खोजने दें जो संसार में हो रहें विध्वंशों को दिखाती हैं ।

५. पाठ २५ से दस कुंवारियों के दृष्टांत की समीक्षा करें, और उन चीजों पर चर्चा करें जिसके बारे में यह दृष्टांत सीखाता है कि हमें दूसरे आगमन की तैयारी के लिए क्या करना चाहिए ।

६. बच्चों की एक तरीके को समझने में सहायता करना जिससे वे दूसरे आगमन की तैयारी कर सकें, अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण पर चर्चा करें :

"मॉरमन की पुस्तक में हम दूसरे आगमन की तैयारी के एक नमूने को पाते हैं । किताब का अधिकांश हिस्सा कुछ उन दशकों पर प्रकाश डालता है जो यीशु के अमेरिका आने के कुछ ही समय पहले की हैं । उस समय

की अवधि का अध्ययन करते समय ध्यानपूर्वक रहें जहां हम सुनिश्चित कर सकते हैं कि क्यों उसके आगमन से पहले हुए भयानक न्याय में कुछ लोगों का विनाश हुआ था और किस कारण अन्य लोग उदारता की धरती पर मन्दिर में खड़े हो सके थे और अपने हाथों को उसके हाथों और पैरों की घावों में गड़ा सके थे" । (*The Teachings of Ezra Taft Benson*, पृष्ठ ५८–५९) ।

समझाएं कि अगले वर्ष के अध्ययन का पाठ्यक्रम मॉरमन की पुस्तक होगी । यह सीखने के लिए एक अदभूत अवसर होगा कि उद्धारकर्ता के दूसरे आगमन के लिए आत्मिक तौर पर तैयार होने के लिए हमें क्या करना होगा ।

निष्कर्ष

गवाही

गवाही दें कि वे जो आज्ञाओं का पालन करते हैं और धार्मिकता से जीते हैं, आनन्द और खुशी के साथ यीशु मसीह के दूसरे आगमन के आने का इन्तजार कर सकते हैं । बच्चों को हमेशा यीसु मसीह के दूसरे आगमन की चिन्हों के प्रति सतर्क रहने के लिए और इस महिमापूर्ण घटना की आत्मिक तैयारी के लिए प्रोत्साहित करें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में मत्ती २४:४२–५१ का अध्ययन करें ।

समापन प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

पौरोहित्य हमारे जीवन को आशीषित कर सकता है

(पौरोहित्य के लिए तैयारी पाठ)

पाठ
४७

उद्देश्य

इस पाठ को ११ वर्षीय बच्चों की पौरोहित्य की आशीषों और जिम्मेदारियों को समझने में सहायता के लिए लिखा गया है । आपकी कक्षा में किसी भी पहले बच्चे के १२ वर्ष का होने से पहले इसकी शिक्षी दी जानी चाहिए ।

तैयारी

१. मॉरमन की पुस्तक के परिचय में या जोसफ स्मिथ—इतिहास १:२९–५४, ५९, ६६–७२ में पाये जाने वाले "भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ की गवाही"; खण्ड शीर्षक को सम्मिलित करते हुए सिद्धांत और अनुबंध १३; सिद्धांत और अनुबंध १२१:३४–४६ का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें ।

२. पाठ का अध्ययन करें और निश्चय करें कि आप बच्चों को धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा कैसे देना चाहती हैं (देखें "अपने पाठों की तैयारी करना" p. vi पृ., और "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", p. vii पृ.) । चर्चा वाले प्रश्नों और समृद्धि गतिविधियों का चुनाव करें जो बच्चों को शामिल करेगा और पाठ के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनके लिए उत्तम सहायक होगा ।

३. आवश्यक सामग्रियां :
   क. प्रत्येक बच्चे के लिए मॉरमन की एक पुस्तक ।
   ख. एक सिद्धांत और अनुबंध ।
   ग. प्रकाश का एक साधन जैसे कि एक कौंध-बत्ती, बिजली से जलने वाला बल्ब, या एक लालटेन ।
   घ. चित्र ७-१, यीशु ही मसीह है (सुसमाचार कला चित्र किट २४०; ६२५७२); यूहन्ना बपतिस्मा वाला हारूनी पौरोहित्य को प्रदान करता हुआ (सुसमाचार कला चित्र किट ४०७; ६२०१३); और पौरोहित्य की नियुक्ति (६२३४१) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

आरंभिक प्रार्थना करने के लिए एक बच्चे को आमंत्रित करें ।

ध्यान गतिविधि

एक वस्तु दिखाएं जिससे बिजली मिलती हो ।

- इस वस्तु के जलने के लिए किस चीज की आवश्यकता है ? यदि आपके पास एक टॉर्च हो, दिखाएं कि इसके लिए बैटरी की आवश्यकता है, एक बीजली वाला बल्ब, और एक स्वीच जिसकी आवश्यकता लाइट को जलाने के लिए होती है । एक बीजली के बल्ब के लिए अच्छे तन्तु की आवश्यकता होती है और उसे एक सॉकेट में पेंच केद्वारा फिट कर दिया जाता है जोकि शक्ति के साधन के साथ जुड़ी होती है । विद्युत के प्रवाह के लिए स्वीच को भी जलाने की आवश्यकता होती है ।

  अपनी कक्षा के लड़कों को खड़ा होने के लिए कहें । इन लड़कों के पास पौरोहित्य को प्राप्त करने की क्षमता है, जोकि विद्युत से भी एक महान शक्ति है क्योंकि यह शक्ति और अधिकार परमेश्वर के नाम में काम करने के लिए है । इस शक्ति के द्वारा स्वर्गीय पिता के बच्चों को बपतिस्मा और गिरजाघर की नियुक्तियों को दिया जा सकता है । परन्तु इस शक्ति को प्राप्त करने के लिए और इसका उपयोग करने के लिए जैसा कि परमेश्वर चाहता है, एक लड़के को योग्य होना होगा और अच्छी तरह से तैयार होना होगा ।

धर्मशास्त्र विवरण

उपयुक्त समय पर चित्रों का उपयोग करते हुए, "भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ की गवाही" या जोसफ स्मिथ...इतिहास १:२९–५४, ५९, ६६–७२ से उस विवरण की शिक्षा दें जिसमें जोसफ स्मिथ ने स्वर्ण पट्टियों को प्राप्त किया था और हारूनी पौरोहित्य पर उनकी नियुक्ति हुई थी । (धर्मशास्त्र विवरण की शिक्षा के प्रस्तावित

तरीकों के लिए, देखें "धर्मशास्त्रों से शिक्षा देना", पृ. p. vii) । आप शायद कक्षा के साथ संक्षिप्त में उस घटना की समीक्षा करना चाहें जिसमें जोसफ स्मिथ ने स्वर्ण पट्टियों को प्राप्त किया था ।

चर्चा और लागू होने वाले प्रश्न

जब आप अपने पाठ की तैयारी करती हैं तब निम्नलिखित प्रश्नों और धर्मशास्त्र सन्दर्भों का अध्ययन करें । उन प्रश्नों का उपयोग करें जिसे आप महसूस करती हैं कि धर्मशास्त्रों को समझने में बच्चों के लिए उत्तम सहायक होगा और जिनके सिद्धांत उनके जीवन में लागू होंगे । कक्षा में बच्चों के साथ सन्दर्भों का पठन उनकी धर्मशास्त्रों की अन्तर्दृष्टियों को पाने में सहायता करेगा ।

- पहले दिव्यदर्शन के तुरन्त पश्चात जोसफ स्मिथ सोने की पट्टियों का अनुवाद क्यों नहीं कर सके थे, पौरोहित्य को प्राप्त क्यों नहीं कर सके थे, और गिरजाघर को संगठित क्यों नही कर सके थे ? (वह तैयार नहीं थे; उन्हें बुद्धी या ज्ञान में बढ़ने की आवश्यकता थी) ।

- सबसे पहला बड़ा काम कौन सा था जिसे प्रभु ने जोसफ स्मिथ को करने के लिए कहा था ? (सोने की पट्टियों का अनुवाद ताकि हमारे पास मॉरमन की पुस्तक हो सके) ।

- जोसफ उस रात को क्या कर रहे थे जिस रात दूत मरोनी पहली बार उन्हें दिखाई दिया था ? (जोसफ स्मिथ—इतिहास १:२९–३०) । सोने की पट्टियों को पहली बार देखने से पहले मरोनी जोसफ स्मिथ को कितनी बार दिखाई दिया था ? (जोसफ स्मिथ—इतिहास १:३०, ४४–४९; चार बार) । आपके विचार से मरोनी ने अपने पहले संदेश को और तीन बार क्यों दोहराया था ?

- सोने की पट्टियों के अनुवाद को आरंभ करने से पहले जोसफ स्मिथ ने और किस निर्देश को प्राप्त किया था ? (जोसफ स्मिथ—इतिहास १:५३–५४) । उन महान चीजों को जिसे उन्हें करना था, उसमें तैयारी के लिए जोसफ स्मिथ को इस निर्देश ने कैसे सहायता किया ? आप अपने भविष्य की तैयारी के लिए क्या कर रहे हैं ?

- बारह वर्ष पर गिरजाघर के अधिकतर अन्तिम-दिन युवा सन्त पुरूष कौन से विशेष दायित्व को अपने ऊपर लेते हैं ? (वे हारूनी पौरोहित्य को प्राप्त करते हैं और उनकी डिकन के पदों पर नियुक्ति होती है) ।

- जोसफ स्मिथ ने हारूनी पौरोहित्य को कैसे प्राप्त किया था ? (जोसफ स्मिथ—इतिहास १:६८–७०) । आज एक युवा मनुष्य हारूनी पौरोहित्य को कैसे प्राप्त करता है ? (योग्यता के लिए उसका साक्षात्कार लिया जाता है और उसकी नियुक्ति उस एक मनुष्य के द्वारा उसपर हाथों को रखने के द्वारा होती है जिसके पास उसे नियुक्त करने का अधिकार होता है) ।

- लड़कों को किस तरह से पौरोहित्य प्राप्त करने के लिए तैयारी करनी चाहिए ? पौरोहित्य की आशीषों को प्राप्त करने के लिए लड़कियों को स्वयं को किस तरह से तैयार करना चाहिए ? (लड़के और लड़कियां एक ही तरीके से तैयारी करते हैं । वे प्रार्थना करते हैं, उनके पास विश्वास होता है, वे माता-पिता और शिक्षकों से सुसमाचार सीखते हैं, वे योग्य रीति से जीते हैं, वे आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे दूसरों की सेवा करते हैं, और वे ईमानदार होते हैं) । (देखें समृद्धि गतिविधि ४) ।

- गिरजाघर ने डिकनों की क्या जिम्मेदारियां हैं ? (सि. और अनु. २०:५९) । वे इन जिम्मेदारियों को किस तरह से पूरा करते हैं ? (प्रभुभोज को बांटकर, उपवास को भेंटों को एकत्रित कर के, प्रभुभोज सभा में धर्माध्यक्ष के एक संदेशवाहक के रूप में, और एक अच्छा उदाहरण बनकर) ।

- प्रभुभोज को बांटने वाला पहला व्यक्ति कौन था ? (यीशु मसीह) । प्रभुभोज इतना पवित्र क्यों होता है ? (यह एक धर्मविधि है जो उस बलिदान का प्रतिनिधित्व करती है जिसे यीशु मसीह ने हममें से प्रत्येक के लिए दिया था) ।

  एल्डर जेफ्री आर. हॉलैंड द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें या कक्षा के एक सदस्य को पढ़ने दें : "हम हारूनी पौरोहित्य के युवा पुरूषों को उद्धारकर्ता के बलिदान के इन चिन्हों को योग्य रीति से और श्रद्धालु होते हुए तैयार करने, आशीष देने, और बांटने के लिए कहते हैं । इस असाधारण युवा उम्र में दिया गया यह क्या ही असाधारण अवसर और पवित्र विश्वास है! मैं सोच सकता हूं कि इससे अच्छा प्रशंसनीय काम परमेश्वर आपको नहीं दे सकता । हम भी आपसे प्रेम करते हैं । जब आप प्रभु के भोज के प्रभुभोज में हिस्सा लेते हैं, उत्तम

रीति से जीयें और उत्तम काम करें" (Conference Report, अक्टू. १९९५, पृ. ८९; या *Ensign*, नव. १९९५, पृ. ६८ में)।

- हम लोग पौरोहित्य का सम्मान और समर्थन कैसे कर सकते हैं ? (पौरोहित्य मार्गदर्शकों से बुलाहटों को प्राप्त करने; दूसरों की सेवा करने; गिरजाघर के मार्गदर्शकों के प्रति आदरपूर्वक बोलने; और पिताओं, भाइयों, पारिवारिक सदस्यों, और दूसरों के प्रति प्रार्थना करने के द्वारा जिनके पास पौरोहित्य है)। (देखें समृद्धि गतिविधि ३)। इन चीजों को करना किस तरह से आपके पिता या भाई की पौरोहित्य का सम्मान करने में सहायता कर सकता है ? वे आपकी पौरोहित्य को प्राप्त करने या पौरोहित्य की आशीषों को प्राप्त करने में कैसे सहायता कर सकते हैं ?

समृद्धि गतिविधियां

आप निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक का उपयोग पाठ के दौरान किसी भी समय या एक समीक्षा, सार, या चुनौती के रूप में कर सकती हैं।

१. कार्ड या कागज के विभिन्न टुकड़ों पर निम्नलिखित आशीषों को लिखें जो पौरोहित्य के द्वारा आती हैं :

एक नाम और एक आशीष प्राप्त करना
बपतिस्मा लेना
पवित्र आत्मा के उपहार को प्राप्त करना
जब बीमार हों तब एक आशीष प्राप्त करना
प्रभुभोज लेना
एक प्रचार कार्य पर जाना
मन्दिर में विवाह करना

कक्षा को दलों में विभाजित करें और प्रत्येक दल को एक कार्ड दें। प्रत्येक दल के बच्चों को उनके कार्ड पर लिखी हुई आशीषों से संबंधित उपयुक्त व्यक्तिगत और पारिवारिक अनुभवों को बताने के लिए आमंत्रित करें।

२. जितना हो सके उतना कमरे में अंधेरा कर दें। तब बच्चों को पर्यटकों के उस दल की कहानी बताएं जो एक गहरे, अंधेरे गुफा में गए थे। गुफा में एक बार गाईड ने बत्ती बुझा दी थी, कुछ क्षणों के लिए रूका था, और तब प्रत्येक व्यक्ति से बाहर निकलने की दिशा में संकेत करने के लिए कहें। जब बत्ती वापस जल गई, लोग विभिन्न दिशाओं के तरफ संकेत कर रहे थे।

कक्षालय में फिर से बत्ती जला दें, और एल्डर रोबर्ट डी. हेल्स द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण को बताएं : "यदि पौरोहित्य की शक्ति पृथ्वी पर नही होती, बिना किसी रोक टोक के विरोधी कही भी और किसी भी तरह से नियंत्रण कर सकते थे। हमारे मार्गदर्शन और शिक्षा के लिए कहीं कोई पवित्र आत्मा का उपहार नही होगा; प्रभु के नाम में बोलने के लिए कोई भविष्यवक्ता नहीं होगा; कोई मन्दिर नहीं होंगे जहां हम पवित्र, अनन्त अनुबंधों को बना सकें; आशीष या बपतिस्मा देने, चंगा करने या सांत्वना देने के लिए कोई अधिकार नहीं होगा...कहीं प्रकाश, कहीं आशा नहीं होगी...केवल अंधकार होगा" (Conference Report, अक्टू. १९९५, पृ. ४०; या *Ensign*, नव. १९९५, पृ. ३२ में)।

३. निम्नलिखित कहानी को पढ़ें या बताएं जोकि एक पविार की उनके पिता के पौरोहित्य बुलाहट में सहायता के बारे में है।

"मैं [कई वर्षो पहले जनरल सम्मेलन पर] एल्डर एज़ा टफ्ट बेनसन के छः बच्चों के साथ बैठा था, जिसमें से एक मेरे कॉलेज के कमरे में मेरे साथ रहता था। मेरी रूची चरम सीमा पर तब पहुंच गई जब अध्यक्ष मैके खड़े हुए और अगले वक्ता के नाम की घोषणा की। जब एल्डर बेनसन जिनसे मैं अभी तक नहीं मिला था, माइक्रोफोन के तरफ जा रहे थे और मैंने उन्हें आदरपूर्वक देखा। वह एक लम्बे व्यक्ति थे, छः फीट से भी ऊंचे। उनके पास मास्टर की उपाधि थी, अंतर्राष्ट्रीय तौर पर संयुक्त राज्य के कृषि विभाग के सचीव और प्रभु के एक विशेष साक्षी थे, एक मनुष्य जो शान्त और सुनिश्चित प्रतीत होते थे, वे जिन्होंने संसार के सभी दर्शकों

से बात किया था । अचानक एक हाथ ने मेरी बांह को छुआ । एक छोटी लड़की मेरी तरफ झुकी और जल्दी से फुसफुसाई, 'पिता के लिए प्रार्थना करो' ।

"मैं थोड़ा चौंक गया, मैंने सोचा, 'यह संदेश नीचे वाली पंक्ति में बताने के लिए है, और मुझे इसे बताना है । क्या मैं कहूं, "एल्डर बेनसन के लिए प्रार्थना करो" ? क्या मैं कहूं, " आपको अपने पिता के लिए प्रार्थना करना है" ?' तुरन्त इस पर प्रतिक्रिया दिखाते हुए, मैं झुका और साधारणतः फुसफुसाया, 'पिता के लिए प्रार्थना करो' ।

"मैंने देखा कि फुसफुसाहट पंक्ति से होते हुए वहां गई जहां बहन बेनसन पहले से ही अपने सिर को झुकाये हुए बैठीं थीं ।

"उस दिन के बाद से कई बार मैंने उस संदेश को याद किया था...पिता के लिए प्रार्थना करो, घर के कुलपति के लिए । उनके लिए प्रार्थना करो जब वे जिला अध्यक्ष या घर शिक्षक के रूप में सेवा करते हैं । उनके लिए प्रार्थना करो जब वे एक नागरिक दल का कार्यकारी सचीव बन जाते हैं, जब उनका व्यवसाय फलता-फूलता है, या जब उन्हें कम तनख्वाह पर काम करना पड़ता है । प्रार्थना करो जब वह पारिवारिक घरेलू संध्या में सलाह देते हैं । पिता के लिए प्रार्थना करो जो कि घंटों तक काम करते हैं ताकि जेरोल्ड मिशन पर जा सके और कॉलेज जाने के लिए डायना के फीस का इन्तजाम हो सके । उनके लिए प्रार्थना करो जब वे प्रभुभोज सभा में बोलते हैं या मां को आशीष देते हैं कि वह फिर से ठीक हो सके । और शाम को, जब वह थककर घर आते हैं या हतोत्साहित होते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो । पिता के लिए उन सभी में प्रार्थना करो जिसे वह करते हैं...छोटी चीज और महान चीज में ।

"वर्ष बीतते गए, कई जनरल सम्मेलन आए और गए, और प्रत्येक बार अध्यक्ष बेनसन जब बोलने के लिए खड़े हुए, मैंने सोचा, 'उनके बच्चे, जोकि संयुक्त राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में रहते हैं, इस समय वे उनके पिता के लिए प्रार्थना में एक हैं' ।

"और मैंने इस बात पर विश्वास किया है कि संक्षिप्त संदेश जिसे [कई] वर्षों पहले पंक्तियों में बोला गया था वह एक अत्याधिक महत्वपूर्ण संदेश है जिसे एक परिवार बता सकता है । कौन सी अनोखी शक्ति और विश्वास किसी भी मनुष्य के पास पास हो सकती है उसके जीवन की नियमित चुनौतियों का सामना करने के लिए यदि संसार में कहीं भी उसकी बेटी या उसका बेटा फुसफुसाता हो, 'पिता के लिए प्रार्थना करो' " (Elaine McKay, "Pray for Dad," *New Era,* जुन १९७५, पृ. ३३ में) ।

४. जब हम सुसमाचार को जीते हैं तब हम जिम्मेदारियों को स्वीकार करने के लिए और पौरोहित्य की आशीषों को प्राप्त करने के लिए तैयारी होंगे । पढ़ें "मेरे सुसमाचार आदर्श" (*My Achievement Days* booklet [३५३१७], back cover), प्रत्येक का बाद रूकते हुए ताकि बच्चे सोच सकें कि कितनी योग्यता से वे उस स्तर को जी रहे हैं । जब आप सूची का पठन पूरा कर लें, आप उन आदर्शों की समीक्षा उदाहरणों, महत्वपूर्ण शब्दों, या मूकाभिनय के द्वारा भी कर सकती हैं ।

मेरे सुसमाचार आदर्श

१. मैं अपने बपतिस्मा के अनबंधों को याद रखूँगा और पवित्र आत्मा की बात सुनुँगा ।

२. मैं स्वर्गीय पिता, दूसरों और स्वयं के प्रति ईमानदार रहूँगा ।

३. मैं अच्छे दोस्तों को खोजूँगा और दूसरों के प्रति उदार रहूँगा ।

४. मैं स्वर्गीय पिता और स्वयं के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए शालीन कपड़े पहनूँगा ।

५. मैं केवल उन्हीं चीजों को पढ़ूँगा और देखूँगा जो स्वर्गीय पिता को प्रसन्न कर सकेगा ।

६. मैं केवल उसी संगीत को सुनूँगा जो स्वर्गीय पिता को प्रसन्न कर सकेगा ।

७. मैं स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के नाम का उपयोग श्रद्धापूर्वक करूंगा । मैं शपथ नहीं लूंगा और अभद्र शब्दों का उपयोग नही करूंगा ।

८. मैं अपने मन और शरीर को पवित्र और शुद्ध रखूंगा ।

९. मैं उन चीजों का सेवन नहीं करूंगा जो नुकसानदेह हो ।

१०. सब्त के दिन पर मैं उन चीजों को करूंगा जो मुझे स्वर्गीय पिता की नजदीकी का अहसास कराएगा ।

११. मैं सही का चुनाव करूगा । मैं जानता हूं कि जब मैं एक गलती करता हूं तो मैं पश्चाताप भी कर सकता हूं ।

१२. मन्दिर में जाने और एक प्रचार कार्य पर सेवा करने के लिए मैं अब योग्य रीति से जीउंगा ।

१३. मैं अपने प्रति स्वर्गीय पिता की योजना का अनुसरण करूंगा ।

५. अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली, गिरजाघर के पंद्रहवें अध्यक्ष द्वारा दिए गए निम्नलिखित उद्धरण को बताएं : " यह गिरजाघर इसके अध्यक्ष का नहीं है । इसका प्रधान प्रभु यीशु मसीह है, जिसके नाम को हम सभी ने अपने ऊपर ले लिया है [बपतिस्मा पर] । इस महान काम में हम सभी एक साथ हैं । हम यहां पर उसके पिता के काम और उसकी महिमा में सहायता करने के लिए हैं, 'मनुष्य के अमरत्व और अनन्त जीवन को पूरा करने के लिए' (मूसा १:३९) । जिस तरह आपकी जिम्मेदारियों के क्षेत्र में आपका दायित्व गंभीर है बिल्कुल उसी तरह मेरे क्षेत्र में मेरे दायित्व हैं । इस गिरजाघर में कोई भी बुलाहट छोटी या कम परिणाम की नहीं होती है । हम सभी हमारे कर्तव्य के लक्ष्य में दूसरों के जीवन को छूते हैं" (Conference Report, अप्रैल १९९५, पृ. ९४; या *Ensign*, मई १९९५, पृ. ७१ में) ।

निष्कर्ष

गवाही

आप गवाही देना चाहें कि पौरोहित्य की पुनःस्थापना हुई थी और कि यह एक अधिकार है परमेश्वर के लिए काम करने का । हारूनी पौरोहित्य धारक होने के लिए लड़कों को अभी से योग्य जीवन जीने के लिए और सभी कक्षा के सदस्यों को पौरोहित्य की आशीषों को प्राप्त करने में योग्य जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करें । बच्चों को पौरोहित्य मार्गदर्शकों के सम्मान और समर्थन के लिए प्रोत्साहित करें ।

परिवार के साथ बॉटने वाले प्रस्ताव

बच्चों को उनके परिवारों के साथ पाठ के एक विशेष हिस्से को बॉटने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसा कि एक कहानी, प्रश्न, या गतिविधि या उनके परिवारों के साथ "प्रस्तावित घर पठन" पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें ।"

प्रस्तावित घर पठन

सुझाव दें कि बच्चे घर पर इस पाठ की एक समीक्षा के रूप में सिद्धांत और अनुबंध १२१:३४...४६ का अध्ययन करें ।

एक बच्चे को समापन प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित करें ।

THE CHURCH OF
JESUS CHRIST
OF LATTER-DAY SAINTS

HINDI
4 02346 04294 0
34604 294